टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

अंतर्गत

हिंदी विषय में विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध विषय

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : एक अनुशीलन

शोधकर्ता

श्रीमती वर्षा डिसूज़ा

शोध निर्देशिका

डॉ. रजनी रणपिसे

अध्ययन केंद्र

साहित्य आणि ललितकला अभ्यास मंडळ

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे.

नवंबर 2015

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्रीमती वर्षा डिसूज़ा** ने **'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : एक अनुशीलन'** इस विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे की विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है। यह इनकी मौलिक कृति है। इसे परिक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

शोध निर्देशिका

डॉ. रजनी रणपिसे

स्थान : पुणे

तिथि : 20-11-2015

प्रतिज्ञापत्र

मैं, **श्रीमती वर्षा डिसूज़ा,** प्रतिज्ञापूर्वक घोषित करती हूँ कि **'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : एक अनुशीलन'** यह शोध प्रबंध, शोध निर्देशक **डॉ. रजनी रणपिसे** के निर्देशन में, स्वयं ने विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि हेतु लिखकर टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के अंतर्गत प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का कोई भाग अन्यत्र कहीं भी या किसी भी उपाधि अथवा परिक्षण हेतु किसी अन्य विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधकर्ता

श्रीमती वर्षा डिसूज़ा

स्थान : पुणे

तिथि : 20-11-2015

प्रस्तावना

स्वाधीनता संग्राम के समय हम भारतीयों ने विदेशी सत्ता के विरुद्ध जो लड़ाई लड़ी उसमें सबसे अधिक धारदार एवं बलशाली हथियार हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही थी। भारत जैसे बहुभाषी देश में समूचे देश की वाणी का हिंदी ही चिरकाल से प्रतिनिधित्व करती आई है। भारत के जन-जन की भाषा हिंदी है यही कारण है कि हिंदी को भारत की राजभाषा होने का सम्मान भी प्राप्त है। बहुभाषी देश होने के कारण स्वाधीनता के उपरांत अन्य भारतीय भाषाएँ वर्चस्व पाने की होड़ में आपस में ही लड़ पड़ीं परिणामस्वरूप विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक होने के बावजूद भी हम अब तक हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने में असफल रहे हैं। परंतु इतने सारे व्यवधानों के चलते हुए भी हिंदी भाषा की यह निहित शक्ति ही है कि इसकी लोकप्रियता कम न होते हुए निरंतर पूरे भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में बढती ही जा रही है और अब यह विश्व भाषा बनने की कगार में है।

भारत एक सशक्त आर्थिक एवं तकनीकी शक्ति बनकर उभर रहा है अतः विश्व के सभी देश भारत से किसी न किसी तरह जुड़ने की कोशिश में हैं। भारत के साथ व्यापार करने के लिए वे हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में देखते हैं अतः अपने देश के वासियों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप हिंदी की लोकप्रियता चरमसीमा पर पहुँच रही है। हिंदी समाचार पत्रों के पाठकों तथा टेलीविजन चैनलों के दर्शकों की बढती संख्या इस बात का प्रमाण है कि यहाँ भी हिंदी ने अपना वर्चस्व पा लिया है तथा आमजनता हिंदी में ही सोचती, सुनती और समझती है। भारत के कोने-कोने तक पहुँचने के लिए भारत के साथ-साथ विदेशी भी

तकनीक एवं नए उपकरणों में हिंदी को अपना रहे हैं। यह है हिंदी की शक्ति और इस शक्ति को कोई भी नकार नहीं सकता।

हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए विश्व भर में बहुत से कार्य हो रहे हैं और कई व्यक्ति एवं संस्थाएँ पूर्ण रूप से समर्पित हैं एवं इस कार्य के लिए निस्वार्थ रूप से निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं। इस शोध द्वारा शोधकर्ता ने भारत तथा विदेशों में हिंदी की स्थिति, संस्थाओं की जानकारी, हिंदी का अध्ययन-अध्यापन, हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में संलग्न विभिन्न संस्थाएँ, अब तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन तथा हिंदी की वर्तमान गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को स्पष्ट करने की कोशिश की है। आशा है यह शोधकार्य उपादेय सिद्ध होगा।

शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

विषय का चयन एवं शोध की प्रेरणा :-

शोधकर्ता की सर्वदा यही एक प्रबल इच्छा रही है कि वह हिंदी की सेवा में एक सार्थक योगदान दे सके। अतः यह आवश्यक था कि शोध के लिए एक ऐसे विषय का चयन किया जाए जिसपर पहले से कोई शोध कार्य नहीं हुए हों तथा जो वर्तमान एवं भविष्य की दृष्टि से प्रासंगिक हो। शोध विषय 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य-एक अनुशीलन' वर्तमान एवं भविष्य की दृष्टि से बिलकुल प्रासंगिक विषय है। इस विषय पर एक ही जगह इतनी एकत्रित जानकारी कहीं भी उपलब्ध नहीं है। मुख्यतः इस विषय की प्रेरणा शोधकर्ता को उन विदेश यात्राओं से प्राप्त हुई जहाँ विश्व में हिंदी की स्थिति का प्रत्यक्ष रूप शोधकर्ता के समक्ष आया।

बहु-भाषी भारत की राजभाषा हिंदी, एक समृद्ध भाषिक एवं सांस्कृतिक परंपरा है, जो न केवल भारतीय पहचान को सशक्त बनाती है बल्कि अंतरराष्ट्रीय सद्भावना में भी सहायक होती है। आज अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम के रूप में हिंदी का विश्व स्तरीय विकास हो रहा है तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संचार-साधन, सूचना प्रौद्योगिकी तथा शिक्षण के क्षेत्रों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के कारण हिंदी एक विश्वभाषा बनने के लिए अग्रसर है। विश्व में हिंदी की इस स्थिति को देखते हुए शोधकर्ता ने उक्त विषय अपने अनुसंधान के लिए चयनित किया।

विषय का महत्त्व :-

(क) भारत आज एक सशक्त विश्वशक्ति के रूप में उभर रहा है। हिंदी, भारत की भाषा होने के नाते बड़ी तेज़ी से अपना अस्तित्त्व विश्वपटल पर स्थापित कर

रही है और विश्वभाषा बनने की कगार पर है। अतः विश्व के सशक्त देश, हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

(ख) हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर आज तक ऐसी जानकारी एक ही जगह उपलब्ध नहीं है अतः इस शोध प्रबंध के द्वारा यह एकत्रित रूप में उपलब्ध हो सकेगी।

(ग) वर्तमान और परवर्ती अध्येताओं के लिए ये शोध कार्य निश्चय ही मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

(घ) हिंदी का वर्तमान वैश्विक स्वरूप अध्येताओं के सामने रखना उद्देश्य है।

(ङ) भारत सरकार का पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा योगदान है इस बात पर प्रकाश डालना आवश्यक लगा।

(च) हिंदी शिक्षण में आधुनिक माध्यमों का प्रयोग इस शोध प्रबंध द्वारा स्पष्ट हो सकेगा।

उपर्युक्त मुद्दों ने तथा मेरी विदेशी यात्रा के दौरान उन देशों में हुए हिंदी विषय के अनुभवों ने मुझे इस विषय का चयन करने के लिए प्रेरित किया ताकि मैं इन सभी तथ्यों पर प्रकाश डाल सकूँ और एक महत्त्वपूर्ण सामग्री मेरे शोध-प्रबंध द्वारा प्रस्तुत कर सकूँ। हिंदी भाषा के अध्येता, प्रेमी एवं जिज्ञासुओं को यह शोध-प्रबंध कई महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है।

शोध कार्य का उद्देश्य :-

(क) विश्व स्तर पर हिंदी के महत्त्व को स्पष्ट करना।

(ख) विश्व के देशों में हिंदी का इतिहास, वर्तमान स्वरूप, हिंदी शिक्षण, हिंदी की संस्थाएँ आदि की जानकारी देना।

(ग) भारत सरकार द्वारा इन देशों के समक्ष आने वाली हिंदी से संबंधित समस्याओं के निवारण पर प्रकाश डालना।

(घ) अब तक हुए विविध विश्व सम्मेलनों की जानकारी तथा उनके कारण हुए हिंदी के वैश्विक प्रचार का विवरण देना।

(ङ) विश्व की हिंदी संस्थाओं का हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान तथा उनके उद्देश्य को स्पष्ट करना।

(च) हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा के योगदान पर प्रकाश डालना।

(छ) अंतरजाल पर हिंदी की पत्रिकाएँ एवं इ-पत्रिकाओं पर प्रकाश डालना।

(ज) पूरे विश्व में हिंदी के संदर्भ में उठाए गए नए कदम एवं उन तथ्यों को उजागर करना।

(झ) आजकल हिंदी के संदर्भ में प्रचूर मात्रा में लिखे गए समाचारों पर दृष्टिक्षेप करना।

शोध का सर्वेक्षण :-

(क) सबसे पहले भारत में उपलब्ध विषय से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन किया।

(ख) वैश्विक परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में भारत में ग्रंथ अपर्याप्त लगे तो विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा प्राप्त सामग्री के आधार पर सर्वेक्षण किया।

(ग) विषय से संदर्भित अध्ययन यात्रा के दौरान अनेक देशों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर सर्वेक्षण।

(घ) विदेशी भूमि से प्राप्त विषय से संदर्भित कुछ पत्रिकाओं का अध्ययन करके सर्वेक्षण।

(ङ) 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन, जोहान्सबर्ग, 2012 में विषय के संदर्भ में अन्वेषण करने के लिए सहभागिता के साथ कई विदेशियों से साक्षात्कार किया।

शोध की सीमाएँ :-

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की सीमाएँ निम्नलिखित हैं -

(क) प्रस्तुत शोध कार्य हिंदी की भाषा विधा तक ही सीमित है।

(ख) अति व्याप्ति के दोष को टालने के लिए विश्व के साहित्य एवं साहित्यकारों का विवरण इस शोध-प्रबंध में जानबूझकर नहीं दिया गया है।

(ग) प्रस्तुत शोध कार्य विदेशों में हो रहे हिंदी शिक्षण, उस देश की हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्वरूप, प्रकाशन, मीडिया तथा हिंदी की संस्थाओं तक ही सीमित रखा है।

(घ) विदेशों में हो रहे हिंदी के प्रकाशन एवं पत्र-पत्रिकाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी यहाँ अति व्याप्ति के दोष को टालने के लिए नहीं दी गई है।

अनुसंधान पद्‌धतियाँ :-

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित अनुसंधान पद्‌धतियाँ प्रयुक्त की गईं हैं -

(क) गवेषणात्मक पद्‌धति से अनुसंधान किया गया है।

(ख) अनुसंधान कार्य सर्वेक्षणात्मक, शास्त्रीय प्रविधियों का पालन करते हुए संपन्न किया गया है।

(ग) सामग्री संकलन

(घ) साक्षात्कार

(ङ) ऐतिहासिक पद्‌धति

(च) सूचनात्मक पद्‌धति

ऋणनिर्देश

इस शोध अध्ययन को पूरा करने के लिए मेरी श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. रजनी रणपिसे जी की ओर से निरंतर प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं स्नेह मुझे बल देता रहा। आपके आशीर्वाद के कारण ही यह शोध कार्य संपन्न होने जा रहा है। आपके कुशल एवं मौलिक निर्देशन में शोधकार्य करने का अवसर, मेरे लिए गर्व की बात है। आपके मातृतुल्य स्नेह एवं वात्सल्य के लिए मैं आपकी सदैव ऋणी हूँ।

विद्यापीठ के तत्कालीन असिस्टंट रजिस्ट्रार श्री जगदीश साल्वे जी ने मेरी मनोकामना को समझा एवं मुझे शोध करने के लिए प्रेरित किया। मुझमें विश्वास रखने के लिए मैं आपको नमन करती हूँ। विद्यापीठ के इंडोलोजी तथा भाषा विभाग के अधिष्ठाता डॉ. श्रीपाद भट्ट की स्नेहिल पूछताछ, समय-समय पर यथाशीघ्र सहायता देने, हमेशा शोध के लिए प्रेरित करने एवं मुझपर अडिग विश्वास रखने के लिए मैं आपकी सदा ऋणी रहूँगी।

विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल जी तथा उनके कार्यालयीन कर्मचारियों के यथोचित एवं निरंतर सहृदय, सखुशी सहयोग के लिए उनके प्रति मैं आभार ज्ञापित करती हूँ।

इस शोध की मुख्य प्रेरणा मेरी माताश्री श्रीमती रेवा चौधरी एवं मेरे पिताश्री स्व. राजेंद्र प्रसाद चौधरी हैं। मेरी पूज्य माताश्री का यह स्वप्न रहा है कि मैं हिंदी में ही शोध करूँ अतः उनके इस स्वप्न को पूर्ण करना मुझे निरंतर प्रेरित करता गया, इस शोध में उनका सहकार्य भी निरंतर मुझे मिलता रहा। मेरे पिताश्री स्वतः एक हिंदी के विद्वान् थे जो एक कवि तथा लेखक थे अतः हिंदी नाटकों के मंच को सदा समर्पित थे। वे हिंदी के विषय को लेकर शोध करना चाहते थे किंतु उनकी असामयिक

मृत्यु के कारण, उनकी यह मनोकामना अपूर्ण ही रह गई अतः मेरा यह शोध-प्रबंध उनकी मृत्यु के अट्ठाईस वर्षों बाद उनके चरणों में समर्पित है। ऐसे माता-पिता पाकर मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

मेरे जीवन को निरंतर सही राह दिखाना, पिता के अभाव को मिटाना, खुद के स्वप्नों से अधिक मेरे स्वप्नों पर लक्ष्य केंद्रित करना, मेरे जीवन में आने वाली सारी कठिनाइयों को चुटकी में दूर करना, मेरी सारी जिम्मेदारियों का खुद निर्वाह करना ऐसे हैं मेरे पतिदेव श्री एलेक्स डिसूज़ा। स्वयं अहिंदी-भाषी होते हुए भी इन्होंने मुझे हिंदी भाषा के प्रति मेरी आस्था को हमेशा जीवित रखा और बढचढकर हिंदी की सेवा करने में मेरा साथ दिया । इनके अमूल्य सहयोग के बिना यह शोध कार्य करना असंभव ही था। इन्होंने मुझे निरंतर खुद पर विश्वास रखना सिखाया, शोधकार्य के लिए दुर्लभ पुस्तकों को उपलब्ध कराया, हिंदी के महानुभावों से मिलाया, अपने खर्च पर शोधकार्य के अध्ययन के लिए कई देशों की यात्रा करवाई और मेरी अनुपस्थिति में, जबकि वे विदेश में कार्यरत हैं, स्वयं भारत में आकर परिवार को संभाला । मेरे शोधकार्य हेतु अनंत सहायता करने के लिए मैं आजन्म उनकी ऋणी रहूँगी। मेरे इस स्वप्न में मेरे बच्चों का सहयोग भी अनंत रहा है। शोध अध्ययन से संबंधित अनेकानेक यात्राओं में मेरी अनुपस्थिति के दौरान उनके साथ हुई दुर्घटनाओं में भी उन्होंने मुझे सूचित नहीं किया ताकि मेरा कार्य में दुर्लक्ष्य न हो। ऐसी कई परिस्थितियों में उन्होंने निरंतर मेरा साथ दिया। इसलिए इस प्रबंध की पूर्ति का श्रेय मेरे परिवार को ही मैं दूंगी।

मेरे मित्र डॉ. सुनील चव्हाण, डॉ. विनय गुदरे, संध्या नौसाह-अन्चराज़, रेजी एडम जैसे मित्रों ने हमेशा मुझे शोध के लिए प्रेरित किया। इनका तथा ऐसे अन्य कई अनगिनत मित्रों का स्नेह मेरे लिए अनमोल है।

इस शोध प्रबंध को अत्यंत सुचारू ढंग से टंकण तथा संरूपण करने के लिए मेरे पतिदेव ने दिन-रात कडा परिश्रम किया इसलिए मैं उनको धन्यवाद देती हूँ।

अंततः मैं अपने ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे असीम प्यार एवं आशीर्वाद दिया और मुझे ऐसे गुरुवर्य, परिवार तथा मित्रों का वरदान दिया जिन्होंने मेरे स्वप्न को पूर्ण करने में निरंतर मेरा साथ दिया। अतः मैं अपने ईश्वर को स्मरण करते हुए, यह शोध-प्रबंध हिंदी साहित्य सेवा में अर्पण करती हूँ।

विनीत

(श्रीमती वर्षा डिसूज़ा)

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	अध्याय के नाम	पृष्ठ संख्या
	मुखपृष्ठ प्रमाणपत्र प्रतिज्ञापत्र प्रस्तावना शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा ऋणनिर्देश विषयानुक्रमणिका	I II III IV V VI VII
अध्याय एक	हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास	1
अध्याय दो	विदेशों में हिंदी (गिरमिटिया देश एवं एशिया के संदर्भ में)	22
अध्याय तीन	विदेशों में हिंदी (अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों के संदर्भ में)	121
अध्याय चार	हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में संलग्न संस्थाएँ	229
अध्याय पाँच	विश्व हिंदी सम्मेलनों का परिचय	271
अध्याय छः	हिंदी की वर्तमान गतिविधियाँ	313
	उपसंहार	343
	प्रस्तुत अनुसंधान	345
	उपलब्धियाँ	349
	आधुनिक प्रासंगिकता	351
	भावी शोध की संभावनाएँ	352
	अब तक संपन्न कार्य	354
	शोध द्वारा समाज को लाभ	355
	समग्र निष्कर्ष	356
	परिशिष्ट	357

अध्याय एक

हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास

प्रस्तावना

1.1 हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास

1.1.1 भाषा के रूप

1.1.1.1 मौखिक भाषा

1.1.1.2 लिखित भाषा

1.1.1.3 देवनागरी लिपि तथा उसके गुण

1.1.1.4 व्याकरण

1.1.1.5 वर्ण

1.1.1.6 अक्षर

1.1.2 हिंदी की विशेषताएँ एवं शक्ति

1.1.3 हिंदी - मानक वर्तनी

1.1.4 भाषा के भेद

1.1.4.1 मातृभाषा

1.1.4.2 राजभाषा

1.1.4.3 राष्ट्रभाषा

1.1.5 हिंदी भाषा के महत्त्वपूर्ण पहलू

1.1.5.1 अनुवाद

1.1.5.1.1 पाठ पठन

1.1.5.1.2 पाठ विश्लेषण

1.1.5.1.3 भाषांतरण

1.1.5.1.4 समायोजन

1.1.5.2 जनसंचार साधन

1.1.5.2.1 रेडियो प्रसारण में हिंदी

1.1.5.2.2 टेलीविज़न में हिंदी

1.1.5.2.3 हिंदी विज्ञापन

1.1.5.2.4 हिंदी सिनेमा

1.1.5.2.5 हिंदी पत्रकारिता

1.1.5.2.6 अंतरजाल और सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी

1.1.5.2.6.1 अंतरजाल या इंटरनेट में हिंदी

1.1.5.2.6.2 सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी

1.1.5.2.7 वेब-पत्रकारिता में हिंदी

1.1.5.2.8 ब्लॉग में हिंदी

1.1.6 संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी - पृष्ठभूमि, प्रस्ताव और पहल

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय एक

हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास

प्रस्तावना :-

हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा है और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी और उसकी बोलियाँ मुख्यतः उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। भारत और अन्य देशों में लगभग 80 करोड़ लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। दुनिया की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी भाषा का स्थान द्वितीय है लेकिन हाल ही के कुछ उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार यह अंदाजा लगाया जा सकता कि विश्व की सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा में हिंदी का स्थान अब प्रथम हो गया है।

हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा, सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा से बढ़कर अब विश्वभाषा बनने का रही है। विज्ञान, तकनीक, वाणिज्य तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा अपनी मजबूत स्थिति बनाती जा रही है। भारत की आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्र में प्रगति भारत को शीघ्र ही एक विश्वशक्ति बनाने जा रहा है। हाल ही के 'कुल घरेलू उत्पाद' (जी.डी.पी. - ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट) वृद्धि अनुमान या जी.डी.पी. के पूर्वानुमान के अनुसार सन् 2050 तक भारत पूरी दुनिया में आर्थिक दृष्टि से प्रथम स्थान पर होगा।

1.1 हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास :-

अपने भावों तथा विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए तथा उनकी बात समझने के लिए, भाषा का माध्यम उपयुक्त होता है।

1.1.1 भाषा के रूप :-

1.1.1.1 मौखिक भाषा :-

हम मौखिक रूप से जब हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं तो इसका आधार ध्वनि या आवाज़ होता है।

जैसे - संभाषण करना, गीत गाना, भाषण देना, गीत गाना, समाचार सुनाना आदि।

1.1.1.2 लिखित भाषा :-

लिखित रूप में जब हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं तो इसका आधार लिपि होती है। जैसे - पुस्तकें, पत्र, समाचार पत्र आदि।

1.1.1.3 देवनागरी लिपि तथा उसके गुण :-

किसी भाषा को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम लिपि है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि है। कई भाषाएँ ऐसी हैं जो एक ही लिपि में लिखी जाती हैं। जैसे देवनागरी लिपि एक ऐसी लिपि है जिसमें लगभग 120 इंडो-आर्यन भाषाएँ लिखी जाती हैं अदाहरानार्थ - हिंदी, संस्कृत, मराठी, कोंकणी, पालि, कश्मीरी, सिंधी, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, नेपाली तथा अन्य नेपाली उपभाषाएँ, डोगरी, गढ़वाली, संथाली आदि भाषाएँ। देवनागरी लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है तथा ब्राहमी लिपि से इसका विकास हुआ है। देवनागरी लिपि प्रचलित लिपियों जैसे कि अरबी, चीनी, रोमन आदि, में सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। भारत की अन्य लिपियाँ जैसे बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि देवनागरी से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं। भारतीय लिपियों का परस्पर परिवर्तन, वर्तमान के कंप्यूटर सॉफ्टवेयरों के कारण बहुत आसान हो गया है। देवनागरी लिपि में किसी भी शब्द या ध्वनि को ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है तथा लिखे पाठ का लगभग उसी तरह उच्चारण भी किया जाता है जबकि ऐसा अन्य लिपियों में असंभव है।

हिंदी भाषा में कुल 11 स्वर और 34 मूल व्यंजन + 3 संयुक्त व्यंजन मिलाकर 37 व्यंजन, अर्थात कुल मिलाकर 48 वर्ण हैं। ब्राहमी लिपि से विकसित होने

के कारण, भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं पर उच्चारण व वर्ण-क्रम, उर्दू को छोडकर, देवनागरी लिपि के समान ही हैं अतः इन लिपियों का परस्पर आसानी से लिप्यन्तरण हो सकता है। देवनागरी लिपि लेखन में सरल, सौंदर्य में सुंदर तथा वाचन में सुपाठ्य लिपि है। देवनागरी अंकों को विश्व ने उनकी वैज्ञानिकता के कारण सहर्ष स्वीकृत किया है। देवनागरी अंक इस प्रकार लिखे जाते हैं - ० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

1.1.1.4 व्याकरण :-

व्याकरण किसी भाषा के उचित और शुद्ध प्रयोग को सिखाने वाले नियमों का समूह है। व्याकरण भाषा को बिगड़ने से बचाता है तथा हर भाषा का अपना एक व्याकरण होता है।

1.1.1.5 वर्ण :-

वर्ण, भाषा की सबसे छोटी इकाई है और इन वर्णों को मिलाकर ही शब्द बनते हैं। इन्हीं शब्दों को वाक्य में पिरोकर हम अपने विचार व्यक्त करते हैं। वर्ण का शाब्दिक अर्थ 'रंग' है। हम अपनी बातों को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए किसी न किसी रंग की स्याही का उपयोग करते हैं तथा इस प्रकार के लिखित रूप का कोई न कोई वर्ण या रंग ज़रूर होता है। अतः ऐसे लिखित अक्षर का नाम 'वर्ण' पड़ा।

1.1.1.6 अक्षर :-

ब्रह्म या ईश्वर को अक्षर की संज्ञा दी गई है क्योंकि ईश्वर नश्वर हैं अर्थात अक्षर भी नश्वर है। किसी बात को जब हम लिखित रूप देते हैं तब वह बात अमिट हो जाती है। आज हम सबको अगर अपनी प्राचीन सभ्यता का ज्ञात है तो इसका श्रेय भी प्राचीन शिलालेख, पुस्तकें, ताम्रपत्र आदि को जाता है जोकि अक्षरों में लिखे गए

थे इसीलिए नष्ट नहीं हुए। इस प्रकार जो वर्णों में लिखा गया है वह अक्षर है को कभी नष्ट नहीं होता। इसी कारण वर्ण अक्षर भी कहलाते हैं।

1.1.2 हिंदी की विशेषताएँ एवं शक्ति :-

हिंदी संसार की सभी भाषाओं में सबसे अधिक सरल, व्यवस्थित और लचीली भाषा है। हिंदी विश्व भाषा का पूर्ण अधिकार रखती है क्योंकि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन हैं। हिंदी की देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है तथा इसे संस्कृत शब्दसंपदा एवं नवीन शब्द रचना सामर्थ्य विरासत में मिली है। हिंदी दूसरी भाषाओं व अपनी बोलियों से शब्द लेने में कोई संकोच नहीं करती। हिंदी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है जबकि अंग्रेजी के मूल शब्दों की संख्या लगभग 10,000 है। विश्व में हिंदी बोलने एवं समझने वाली जनता वर्तमान में लगभग अस्सी करोड़ है। हिंदी साहित्य हर दृष्टि से एक समृद्ध साहित्य है। हिंदी आम जनता की भाषा है, विशेषतः भारत एवं भारत के पडोसी देश एवं विश्व के कई देशों के लोग आपस में हिंदी में ही बातचीत करना पसंद करते हैं।

1.1.3 हिंदी - मानक वर्तनी :-

'मानक' शब्द का अर्थ है किसी भी वस्तु, विषय या संदर्भ का वह परिनिष्ठित तथा श्रेष्ठ रूप, जो अपने आप में आदर्श एक हो। हिंदी भाषा की अपनी एक परिनिष्ठित भाषिक संरचना है तथा उसमें जब एकरूपता होगी तभी प्रयोजनमूलक हिंदी में कार्य कर सकेगी। हिंदी भाषा की देवनागरी लिपि में कुछ अक्षर दो-दो रूप में प्रचलित हैं। इससे हिंदी अध्येताओं को परेशानी का सामना करना पड़ता था तथा इन समस्याओं का निवारण करने के लिए हिंदी का मानक रूप प्रचलित हुआ।

वर्णों का मानक रूप बनाए रखने की दृष्टि से भारत सरकार ने वर्तनी संबंधी कुछ नियम बनाए हैं। जिन्हें सन् 1967 में नागरी लिपि तथा 'हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' (केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली - 110066) शीर्षक पुस्तिका में

व्याख्या तथा उदाहरण सहित प्रकाशित किया गया था। वर्तनी सबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं -

नियम 1 - खड़ी पाई वाले व्यंजनों (उदा, ख,ग, व, श, च आदि) का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए। जैसे - ख्याति, लग्न, व्यास, श्लोक, कच्चा, छज्जा, कुत्ता, सभी, प्यास, राष्ट्रीय, आदि। संयुक्त व्यंजन 'र' के प्रचलित रूप यथावत रहेंगे। जैसे प्रकार, राष्ट्र, धर्म आदि।

नियम 2 - 'क' और 'फ' जैसी बीच की खड़ी पाईवाले व्यंजनों के संयुक्ताक्षर - संयुक्त, पक्का, दफ्तर इस तरह बनाए जाएँ।

नियम 3 - ङ, छ ट, ठ, ड, ढ, द और ह आदि व्यंजनों के संयुक्ताक्षर हलंत चिह्न, लगाकर ही बनाए जाएँ। जैसे - वाङ्मय, चिट्ठी, विद्या, बुद्दा आदि। हलंत चिह्न से युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा। जैसे - द्वितीय, बुद्धिमान आदि।

नियम 4 - सभी प्रकार की संज्ञाओं के साथ आने वाले कारक या विभक्ति चिह्न हर स्थिति में उनसे पृथक लिखे जाएँ। जैसे - राम ने, राम को, राम से, स्त्री ने, स्त्री को स्त्री से आदि।

सर्वनामों के साथ आने वाले कारक या विभक्ति चिह्न उनके साथ मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे - इसका, उसका, जिसका और उसपर आदि।

सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति चिह्न हों तो पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाए। जैसे - उसके लिए, इसमें से आदि।

सर्वनाम और विभक्ति के बीच 'ही' या 'तक' आदि अव्यय आते हों, तो विभक्ति को पृथक ही लिखा जाए। जैसे - आप ही के लिए, मुझ तक को आदि।

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक-पृथक लिखी जाएँ। जैसे - पढ़ा करता था, आ सकता है, जाया करता था, खाया करता था, जा सकता है, खेला करेगा आदि।

द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफन रखा जाए। जैसे - राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती, खेल-कूद आदि।

सा, जैसा आदि समानार्थसूचक शब्दों से पूर्व हाइफन रखा जाए। जैसे तुम-सा, राम-जैसा, चाकू-सा तीखा आदि।

तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वहीँ किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो। जैसे - भूतत्व (भू-तत्त्व) आदि। बाकी सामान्यतः तत्पुरुष समास में हाइफन लगाने की आवश्यकता नहीं है। जैसे - राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी आदि।

अरबी-फारसी के नुक्ते वाले (.) शब्दों के प्रयोग में अर्थभेद दर्शाने के लिए नुक्ते का प्रयोग किया जाए। जैसे - राज/राज़, जाया/ज़ाया आदि।[1]

1.1.4 भाषा के भेद :-

1.1.4.1 मातृभाषा :-

हर बच्चा अपनी माँ के मुख से जो भाषा सबसे पहले सुनता है तथा उस भाषा को बच्चा अपने आप सीखता जाता है वही मातृभाषा होती है। अर्थात माँ द्वारा बोली तथा सिखाई जाने वाली भाषा ही मातृभाषा होती है। सभी की कोई न कोई मातृभाषा जरूर होती है।

1.1.4.2 राजभाषा :-

सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा, राजभाषा कहलाती है। राजभाषा वह भाषा है जो अंतरप्रादेशिक गुणों से युक्त भाषा है और जिसमें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक विचारों को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता रखती है। हिंदी भाषा इस

दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध, सशक्त और वैज्ञानिक सर्वगुण संपन्न भाषा है यही वजह है कि हिंदी को भारत की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त है। भारतेंदु ने कहा था - "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल"। यह कथ्य आज भी प्रासंगिक है। भारत की प्रगति में हिंदी के योगदान पर विचार करें तो देश की उन्नति के लिए जिस भाषा को निज भाषा कहकर भारतेंदु ने रेखांकित किया है, वह हिंदी ही है। संविधान ने न केवल हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है बल्कि हिंदी को राजकाज की भाषा बनाते हुए उसे सामासिक संस्कृति की वाहिका का मान भी दिया है। इस तरह राष्ट्रीय प्रगति को दृढता सामासिक संस्कृति को दृढ करने से ही प्राप्त होगी।

1.1.4.3 राष्ट्रभाषा :-

राष्ट्रभाषा वह भाषा है जो किसी देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। किसी भी देश में बहु धार्मिक, बहु भाषिक तथा बहु सांस्कृतिक लोग हो सकते हैं तथा इन्हें आपस में राष्ट्रभाषा ही जोडती है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है अतः सम्पूर्ण भारत में हिंदी बोलने तथा समझने वाले लोग हैं।

1.1.5 हिंदी भाषा के महत्त्वपूर्ण पहलू :-

1.1.5.1 अनुवाद :-

'पुनःकथन' अनुवाद का मूल अर्थ है। एक भाषा में किसी के द्वारा कही गई बात का किसी दूसरी भाषा में पुनः कथन अनुवाद कहलाता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद प्रक्रिया के पाँच चरण माने हैं।

1.1.5.1.1 पाठ पठन :-

किसी अनुद्य सामग्री को पढ़ना पाठ पठन का अर्थ है। यह पाठ भाषिक अर्थ तथा विषय की दृष्टि से होता है। पाठ पठन के अंतर्गत जो भाषा कठिन हो और उसे समझने की आवश्यकता हो तो इसके लिए उस भाषा के भाषाविद या कोश से मदद ली जा सकती है।

1.1.5.1.2 पाठ विश्लेषण :-

अनुवाद की दृष्टि से इस चरण में पाठ का विश्लेषण होता है। आवश्यकतानुसार पाठ पर निशान लगाए जाते हैं। तथा इस विश्लेषण में मुख्य बल इन बातों पर दिया जाता है कि कहाँ शब्द का अनुवाद करना है, कहाँ पदबंध का, कहाँ उपवाक्य का और कहाँ एक वाक्य को एकाधिक वाक्यों में तोड़कर अनुवाद करना है, तथा कहाँ एकाधिक वाक्यों को जोड़कर अनुवाद करना है।

1.1.5.1.3 भाषांतरण :-

इस तीसरे चरण में, दूसरे चरण के पाठ-विश्लेषण के आधार पर विभक्त स्रोत भाषा की इकाइयों का लक्ष्य भाषा की इकाइयों में अंतरण होता है।

1.1.5.1.4 समायोजन :-

इस चरण में आकर अंतरित पाठ का, लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समायोजन करते हैं। भाषा का प्रवाह सहज हो तथा उस पर स्रोत भाषा की छाया न हो इस बात पर समायोजन करते समय ध्यान देना चाहिए।

1.1.5.2 जनसंचार साधन :-

संचार माध्यमों का विकास मानवीय सभ्यता के विकास पर निर्भर करता है। संचार माध्यमों की माँग में तेज़ी यूरोप की औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप आई है। इसी क्रांति के फलस्वरूप संचार माध्यमों के विकास का मार्ग खुल गया और वर्तमान में स्थिति यह है कि आज जनसंचार के अनेक साधन उपलब्ध हो चुके हैं। जनसंचार के साधन जैसे फिल्म, टेलीविजन, रेडियो, समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, अंतरजाल आदि। कम्प्यूटर के आगमन ने संचार साधन को अपनी परम सीमा पर पहुँचा दिया है।

वस्तुतः स्वयं भाषा ही संचार का माध्यम है और साहित्य तथा पत्रकारिता की अभिव्यक्ति में भाषा ही अधिक अनिवार्य है। विश्व में हिंदी की विकास यात्रा शीघ्र

गति से बढ़ रही है तो इसका श्रेय हिंदी सिनेमा, टेलीविज़न, अंतरजाल, इ-पत्रिकाएँ, ब्लॉग, रेडियो, टेलीफोन, मोबाइल फ़ोन आदि जनसंचार माध्यमों को जाता है। हिंदी का वर्चस्व दिन-ब-दिन इन क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ रहा है। हिंदी समाचार-पत्र, टेलीविज़न पर हिंदी समाचार एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक समाचार माध्यम, अब हिंदी में ही समाचार प्रस्तुत करते हैं न कि अंग्रेजी समाचारों का अनुवाद करते हैं। सूचना एवं प्रौद्योगिकी तकनीक के उपकरणों से विश्व की दूरियाँ घट गई हैं। हिंदी के वैश्वीकरण में जनसंचार की अहम् भूमिका है।

1.1.5.2.1 रेडियो प्रसारण में हिंदी :-

रेडियो की भूमिका जनसंचार के माध्यमों में हमेशा से ही प्रमुख रही है। रेडियो कई वर्षों से निरंतर विकसित हो रहा है। रेडियो में हिंदी भाषा के प्रसारण का वर्चस्व हमेशा से ही रहा है। रेडियो ने अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया है। आज भी पूरे विश्व में हिंदी कार्यक्रमों के श्रोताओं का एक अच्छा ख़ासा समुदाय हैं जो बड़े चाव से ये कार्यक्रम सुनता है। भारत से हिंदी भाषा में उच्चस्तरीय कार्यक्रम प्रस्तुत होते हैं और इनका प्रसारण आकाशवाणी और कई अन्य एफ.एम. स्टेशन करते हैं। भारत के अलावा विश्व के कई देश हैं जहाँ से हिंदी प्रसारण होते हैं। उनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - ब्रिटेन का 'बी.बी.सी. हिंदी', अमेरिका से 'वोइस ऑफ़ अमेरिका', जापान से 'एन एच', जर्मनी से 'डोयचे वेले', रूस से 'आर यू वी आर', ईरान से 'आई बी', दुबई से कई रेडियो 'ऍफ़ एम' स्टेशन, रेडियो मॉरीशस आदि। इन सबका हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा हाथ है।

1.1.5.2.2 टेलीविज़न में हिंदी :-

हिंदी भाषा को जन-जन तक पहुँचाने का श्रेय रेडियो के साथ-साथ टेलीविज़न को भी जाता है जिसने अपने विभिन्न कार्यक्रमों तथा विज्ञापनों द्वारा जनता का दिल जीत लिया है। एक समय था जब प्रत्येक घर में महँगाई के कारण टेलीविज़न

नहीं था तथा हिंदी चैनल पहुँच संपूर्ण भारत में पहुँच नहीं पाते थे, परंतु आजकल इतनी कंपनियाँ आ गई हैं कि प्रतियोगिता की होड़ में टेलीविज़न बहुत सस्ते हो गए हैं और सुलभता से उपलब्ध भी हैं तथा सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों ने इन हिंदी के कार्यक्रमों को विश्वविख्यात बना दिया है। टेलीविजन पर प्रसारित समाचारों, मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रमों तथा विज्ञापनों में हिंदी भाषा का ही वर्चस्व है और एक अच्छी स्तरीय हिंदी सुनने का अवसर मिलता है। हिंदी भाषा के कारण आज टेलीविजन का उद्योग अरबों रुपयों का हो गया है। इस टेलीविजन उद्योग क्रांति के साथ-साथ हिंदी भाषा की भूमिका भी बढ़ी। टेलीविज़न के कारण हिंदी भाषा की एक नई पहचान बनी और हिंदी सुनने, बोलने तथा देखने वाली भाषा बन गई।

1.1.5.2.3 हिंदी विज्ञापन :-

समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, न्यूज चैनल, टेलीविजन चैनल, रेडियो, सिनेमा आदि जनसंचार के माध्यमों में विज्ञापन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादों को हिंदी विज्ञापनों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए हिंदी भाषा का अध्ययन तथा सर्वेक्षण करती हैं तथा हिंदी के माध्यम से विज्ञापन करती हैं। इन्हें ज्ञात है कि यदि भारत के कोने-कोने तक अपने उत्पाद उन्हें पहुँचाने है तो विज्ञापन तथा हिंदी ही सबसे अच्छा मार्ग है। अतः वे अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण भी दिलवाती हैं।

1.1.5.2.4 हिंदी सिनेमा :-

जनसंचार माध्यमों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका सिनेमा की रही है। हिंदी सिनेमा को समझने तथा देखने के लिए देश तथा विदेश में लोग हिंदी सीखते हैं। अधिकतर विदेशी हिंदी सिनेमा देख-देखकर ही हिंदी सीखें हैं। हाल ही में आयोजित नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरीशस के तत्कालीन कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुखेश्वर चुनी जी ने अपना वक्तव्य शुद्ध हिंदी में देते हुए कहा कि उन्होंने

हिंदी में शिक्षा हासिल नहीं की है लेकिन हिंदी सिनेमा देख-देखकर हिंदी बोलनी सीखी है। उनके वक्तव्य में हिंदी के प्रति असीम प्रेम तथा श्रद्धा झलक रही थी। आज हिंदी सिनेमा की एक अंतरराष्ट्रीय छवि बनी है। इसलिए प्रवासी भारतीय तथा अन्य विदेशी लोगों के लिए हिंदी सिनेमा उनके मनोरंजन का साधन तथा भारत से जुड़े रहने का साधन बना हुआ है। अमेरिका की फिल्म नगरी हॉलीवुड के गाइड पर्यटकों से कहते हैं कि पूरी दुनिया में हॉलीवुड की तुलना में बॉलीवुड अधिक प्रचलित है और इसे चाहने वालों की संख्या भी बहुत अधिक है। नई-नई तकनीकों के कारण हिंदी सिनेमा तथा हिंदी गीतों की लोकप्रियता और व्यापकता पूरे विश्व में इतनी बढ़ गई है कि विश्व के कई प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता, निर्देशक, साहित्यकार तथा कवि इनकी लोकप्रियता की ओर आकर्षित हो रहे हैं। पंडित हरिप्रसाद चौरसिया, स्व. पंडित रविशंकर, स्व. उस्ताद अली अकबर खान, उस्ताद अमजद अली खान, उस्ताद झाकिर हुसैन आदि कई ऐसी हस्तियाँ हैं जो पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति की अनुभूति कराते आए हैं और अपने संगीत के माध्यम से हिंदी का प्रसार करते हैं। हाल ही में नई पीढ़ी के पथप्रदर्शक, संगीतकार ए.आर. रेहमान ने हॉलीवुड का सर्वोच्च पुरस्कार 'ऑस्कर' पाकर भारतीय संगीत को विश्वपटल पर एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान कर दिया है। भारत के सुप्रसिद्ध अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन ने कुछ वर्ष पुर्व आयोजित अंतरराष्ट्रीय कान्स फिल्म फेस्टिवल में अपनी रुबाबदार आवाज़ और शुद्ध हिंदी में वक्तव्य देकर यह सिद्ध कर दिया कि बॉलीवुड हिंदी के प्रचार प्रसार में हमेशा तत्पर है। श्री अमिताभ बच्चन सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. हरिवंश राय बच्चन के सुपुत्र हैं अतः हिंदी सिनेमा द्वारा तथा अन्यत्र भी वे हिंदी की सेवा निरंतर करते आए हैं, उनकी भाषा अतिपरिनिष्ठित एवं अनुकरणीय है। हिंदी सिनेमा का स्तर उच्चकोटि का है तथा यहाँ विभिन्न विषयों एवं समस्याओं पर हिंदी में फिल्में बन रही हैं और पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

1.1.5.2.5 हिंदी पत्रकारिता :-

हिंदी पत्रकारिता कई दशकों से भारत की सेवा में निरंतर रत है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता का बहुत ही बड़ा योगदान था। उस समय हिंदी पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों द्वारा स्वतंत्रता विषयक संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाए जाते थे। वर्तमान में भी हिंदी पत्रकारिता का स्तर बहुत ही अच्छा है और इसका पाठक समुदाय भी विशाल है। आधुनिक साहित्य की तरह हिंदी पत्रकारिता भी अब एक नई कोटि की हो गई है जिसमें मुख्यतः मध्यवित्त वर्ग की राजनीतिक सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक हलचलों का साक्षात्कार होता है।

1.1.5.2.6 अंतरजाल और सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी :-

1.1.5.2.6.1 अंतरजाल या इंटरनेट में हिंदी :-

इंटरनेट के विश्वव्यापी बाजार में अमेरिका, चीन, जापान, फ्रांस और जर्मनी जैसे विश्व के सशक्त देशों में से केवल अमेरिका की साइबर भाषा अंग्रेजी है, बाकी देशों में साइबर भाषा उनकी अपनी देश की भाषा है लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने लाभ के लिए, हिंदी भाषा को अपना रही हैं। उसमें गूगल, मैक्रोसोफ्ट, आई.बी.एम., याहू, ओराकल जैसी अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने हिंदी भाषा अपनाई है क्योंकि इन्हें व्यापार में संभावित लाभ की दृष्टि से हिंदी में अपार क्षमता दिखती है। अरबों की आबादी वाले भारत में व्यापार के क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं से बहुत सारा लाभ हो सकता है इसीलिए ये कंपनियाँ हिंदी को अपना रही हैं। हाल ही में अमेरिका की कंपनी एप्पल ने भी हिंदी के महत्त्व को समझा है और अब उन्होंने भी अपने कम्प्यूटरों में हिंदी को स्थान देना शुरू कर दिया है। आधुनिक संचार माध्यम में विश्व स्तर पर लाखों कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ने का काम इंटरनेट का नेटवर्क करता है।

इस समय इंटरनेट पर लाखों करोड़ों सर्वर कम्प्यूटर हैं, जो कि किसी न किसी प्रकार की सूचना या सेवा प्रदान कर रहे हैं। विश्व के फलक पर 'वेब दुनिया' के प्रवेश से देवनागरी लिपि भी रूपांतरित हो चुकी है। भारतीय भाषाओं को जो इससे उपलब्धि प्राप्त हुई वह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

1.1.5.2.6.2 सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी :-

सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। हमारे जीवन के हर पहलू में इसका उपयोग हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी से हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी अधिकाधिक सुविधा जनक बन चुकी है। यह तेजी से बदलती दुनिया और उसकी तरक्की के साथ कंधे से कंधा मिलाए चल रही है। इसीलिए वर्तमान का बहुचर्चित विषय सूचना प्रौद्योगिकी है। सूचना प्रौद्योगिकी जिसे सब आय.टी. या इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी के नाम से जानते हैं, दुनिया में छाई हुई है। हर वर्ग एवं उम्र के व्यक्ति इसे प्रयोग करना जानते हैं। बिल अदाएगी, बैंक से संबंधित काम, घर की वस्तु जो रिमोट कंट्रोल से चलती है, किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ, शिक्षण आदि सब आय.टी. के कारण सहजता से उपलब्ध है।

इक्कीसवीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी का विज्ञान, शिक्षा, बैंकिंग, कृषि, भाषा आदि क्षेत्रों में विकास हुआ है। मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में आय.टी. ने अपना वर्चस्व सिद्ध कर दिया है तथा कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनका विकास उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच चुका है जिसका प्रमुख उदाहरण भाषा क्षेत्र है। भाषा तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास की प्रक्रिया एक-दूसरे के लिए पूरक है। वर्तमान में, भाषा के बिना सूचना प्रौद्योगिकी का और सूचना प्रौद्योगिकी के बिना भाषा का विकास नहीं। भाषा के जरिए ही समाज अपने भावों-विचारों का आदान-प्रदान करता है।

सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते वर्चस्व ने व्यवसाय, शिक्षा, विज्ञापन, मंत्रालय, निगम, निकाय, प्रशासन, विधि-चिकित्सा, न्याय, विभिन्न संस्थान, स्कूल-कॉलेज,

विश्वविद्यालय, खेल, शिक्षा, तकनिकी आदि विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा का अस्तित्त्व सिद्ध कर दिया है। अब हिंदी मातृभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, मानक भाषा से विकसित होकर सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा बन गई है।

मशीनी अनुवाद (गूगल ट्रांसलेशन आदि) द्वारा हिंदी का साहित्य विविध भाषाओं में तथा विभिन्न भाषाओं का साहित्य हिंदी में आसानी से उपलब्ध हो रहा है। लेकिन अब भी इसमें बहुत सारी सुधारना होनी बाकि है। यह माध्यम अभी तक शिशु अवस्था में होने के कारण अनुवाद पूरी तरह से सटीक नहीं हो पा रहा है लेकिन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की कोशिश अविरल जारी है तथा जल्दी ही हमें इसका सटीक रूप अवश्य मिल पाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी के मशीनी अनुवाद तंत्र बहु भाषी व्यक्तियों को एक दूसरे के समीप ले आया है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भाषा कला, प्रशिक्षण, ध्वनि लिप्यंतरण, मुद्रण सहयोगिता, डाटा भंडारण, संपादन, संचालन, संख्यांकन, ग्रामर चेक, मशीनी अनुवाद आदि भाषिक कार्य आसानी से संभव हो रहे हैं।

भारत के अरबों की जनसंख्या की भाषा हिंदी है। भारत का व्यापारी वर्ग हिंदी भाषी है अतः उनके साथ अच्छे व्यापारिक संबंध स्थापित करने के लिए विदेशी हिंदी सीखने की कोशिश कर रहे हैं। जब से नवयुगीन मोबाइल फ़ोन में देवनागरी लिपि का उपयोग होने लगा है तब से भारत की अरबों की जनसंख्या को राहत मिली है और मोबाइल फ़ोन उद्योग भी प्रचूर मात्रा में बढ़ा है। मोबाइल फ़ोन सूचना प्रौद्योगिकी का एक अभिन्न अंग है और इसीलिए इसका वर्चस्व इतना बढ़ा है।

विज्ञान, शिक्षा,बैंकिंग, कृषि, गणित जैसे कई क्षेत्रों में भी हिंदी सोफ्टवेअरों का निर्माण हो चुका है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ माइक्रोसॉफ़्ट, सी-डैक और आई.बी.एम. ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई है। इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया के अंतर्गत

बहुमुखी मार्ग प्रशस्त हुए हैं। सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा जनता को अद्यतन जानकारी निरंतर उपलब्ध होती रहती है।

भारतीय भाषाओं में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रचार-प्रसार हेतु भारत के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने भारतीय भाषाओं के फॉन्ट को विश्व में नि:शुल्क उपलब्ध कराया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और सरकारों ने मिलकर सन् 1988 में यूनिकोड कंसोर्टियम नाम की संस्था गठित की थी। सन् 1991 में यूनिकोड का पहला वर्ज़न प्रस्तुत हुआ जिनमें भारत की कई भाषाएँ शामिल थीं। उसमें हिंदी भाषा हिंदी भाषा का समावेश था। यूनिकोड के आगमन से विश्व की लगभग 250 भाषाओं को कम्प्यूटर ने जाना। यूनिकोड एक कोडिंग प्रणाली है, जिसमें विभिन्न भाषाओं के अक्षरों को नंबर प्रदान किए गए हैं ऐसा करने से फॉन्ट की समस्या दूर हो गई है। जून 2005 में हिंदी सॉफ्टवेअर साधन और फॉन्ट जारी किए गए।

1.1.5.2.7 वेब-पत्रकारिता में हिंदी :-

सूचना क्रांति के इस युग वेब-पत्रकारिता का नवीनतम अध्याय खुल गया है तथा इसने हिंदी वेब-पत्रकारिता को एक वैश्विक रूप दे दिया है। आज मुद्रित माध्यम से पत्रकारिता करने वाली संस्थाओं की भी अब अपनी वेबसाइट है। कम्प्यूटरों के बढ़ते उपभोक्ता तथा फेसबुक के फैलाव के कारण युवा पीढ़ी अब समाचारों, मनोरंजन तथा विचारों एवं सूचनाओं के लिए अपनी-अपनी वेबसाइट पर ही जाना पसंद करते हैं। ब्रॉडबैंड, वाय फाय, डेटा कार्ड आदि उपकरणों ने इंटरनेट इतनी आसानी से उपलब्ध करा दिया है कि घर, ऑफिस या रास्ते पर भी हम इंटरनेट से दुनिया की हर जानकारी हासिल कर सकते हैं। अब हिंदी अखबार भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं तथा पाठकगण अंतरजाल पर ही समाचार पढना पसंद करते हैं।

आज हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की विभिन्न वेबसाइट उपलब्ध हैं, जो पूरे विश्व में हिंदी-भाषी लोगों तक नवीनतम जानकारी तथा सूचनाएँ भेजने में महत्त्वपूर्ण भूमिका

निभा रही हैं। ई-लाइब्रेरियों के विकास से विभिन्न किताबें आसानी से अंतरजाल पर उपलब्ध हैं इससे विश्व में हिंदी अध्ययन-अध्यापन में बहुत सहायता मिली है एवं हिंदी के अध्येता ऑनलाइन शब्दकोश से लाभान्वित हो रहे हैं।

अंतरजाल पर विश्व से निरंतर नई-नई पत्र-पत्रिकाएँ आ रहीं है; जिनमें विश्व हिंदी पत्रिका, अभिव्यक्ति, अनुभूति, सृजनगाथा, प्रवक्ता, हंस, वागार्थ, छाया, शब्दांजलि, हिंदी नेस्ट, कालायन, वेब दुनिया, निरंतर, गर्भनाल, ज्योति आदि शामिल हैं। साथ ही प्रभात खबर, आज, हिंदुस्तान, पंजाब केसरी, नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, लोकमत समाचार, नई दुनिया जैसे कई समाचारपत्रों के नेट संस्करण निकलने लगे हैं। अपनी-अपनी वेबसाइटों के माध्यम से विभिन्न विषयों जैसे - विश्व समाचार, राष्ट्रीय समाचार, विज्ञान, खेल जगत, मनोरंजन, धर्म संसार, कला और साहित्य तथा संस्कृति, कारोबार, अविष्कार, सामयिक घटनाएँ, मल्टी मीडिया आदि समाचार पूरी दुनिया में पहुँचा रहे हैं जिससे विश्व में हिंदी की स्थिति सशक्त बनती जा रही है और हिंदी भाषा पूरे विश्व में फ़ैल गई है जिसके फलस्वरूप संबंधित कंपनियों को बहुत सफलता मिली है एवं आर्थिक लाभ भी हो रहा है।

1.1.5.2.8 ब्लॉग में हिंदी :-

विश्व में 44 प्रतिशत लोग हिंदी में इंटरनेट का उपयोग करते हैं यह इंटरनेट उपभोक्ताओं द्वारा किए गए सर्वेक्षण से यह बात उभर कर आई है। इंटरनेट पर हिंदी बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही है और इसकी गति को बढाने में हिंदी वेबसाइट्स तथा सोशल मीडिया के साथ-साथ ब्लॉग लेखन की भी बहुत बड़ी भूमिका है। ब्लॉग को हिंदी में चिट्ठाकारी भी कहा जाता है। यह एक प्रकार की निजी डायरी है जिसमें चिट्ठाकार अपनी कविताएँ, उपन्यास, समाचार, कहानी आदि टंकित करते हैं। इसके अलावा ब्लॉग पर प्रसिद्ध कवि, पत्रकार, लेखक अपने विचारों से हिंदी भाषा को और

समृद्ध बना रहे हैं। वर्तमान में लोग नियमित रूप से या तो ब्लॉग लिखते हैं या पढ़ते हैं। अतः ब्लॉगिंग के माध्यम से हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति का एक नया आयाम सामने आया है जिसके परिणामस्वरूप विषय, तकनीक और अनुभव से लेकर भाषा शैली तक हिंदी भाषा के विविध रूप हिंदी ब्लॉग द्वारा देखने को मिल रहे हैं। हर महीने हजारों नए हिंदी के चिट्ठाकार पैदा हो रहे हैं इसी से हिंदी ब्लॉग की प्रसिद्धी का अनुमान लगाया जा सकता है।[2]

1.1.6 संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी - पृष्ठभूमि, प्रस्ताव और पहल :-

संयुक्त राष्ट्र एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसके मुख्य उद्देश्य हैं अंतरराष्ट्रीय कानून को सुविधाजनक बनाना, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, मानव अधिकार, और विश्व शांति। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 24 अक्तूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र अधिकार-पत्र पर 50 देशों के हस्ताक्षर होने के साथ हुई। इसकी 6 आधिकारिक भाषाएँ हैं - अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पॅनिश, रूसी, मैंडरिन और अरेबिक। संयुक्त राष्ट्र के अन्य उद्देश्य हैं - युद्ध रोकना, मानव अधिकारों की रक्षा करना, अंतरराष्ट्रीय कानून को निभाने की प्रक्रिया जुटाना, सामाजिक और आर्थिक विकास उभारना, जीवन स्तर सुधारना और बिमारियों से लड़ना आदि।[3]

संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक एवं कार्य-संचालन की भाषाओं में हिंदी का समावेश होना आवश्यक हो गया है क्योंकि अब संघ की सदस्य संख्या 51 से बढ़कर 193 हो गई है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी, विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है इसलिए हिंदी को यह न्यायोचित अधिकार मिलना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ को भारत की तरफ से निरंतर संपूर्ण सहयोग मिलता आया है अतः हाल ही में भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ के 192 देशों (चुनाव के समय 192 सदस्य देश थे) में से 187 सदस्य

देशों का समर्थन प्राप्त हुआ और दो वर्षों के लिए भारत को सुरक्षा परिषद् का अस्थायी सदस्य बनाया गया।

भारत के साथ-साथ विश्व के कई ऐसे हिंदी प्रेमी देश तथा व्यक्ति हैं जो हिंदी को न्यायोचित स्थान दिलाने में निरंतर प्रयत्नशील हैं। विश्वपटल पर आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भारत का विशिष्ट स्थान बन रहा है। अतः यह अत्यंत उपयुक्त समय है जब हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के प्रयासों में गति लानी आवश्यक है। वर्तमान में इस दिशा में जोर-शोर से प्रयत्न चल रहे हैं और लगता है सभी हिंदी प्रेमियों का स्वप्न जल्दी ही पूरा होगा।[4]

निष्कर्ष :-

वैश्वीकरण के दौर में आज मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सूचना प्रौद्योगिकी की भाषा हिंदी विश्वभाषा बनने में तीव्र गति से अग्रसर है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने हिंदी को विश्व स्तर पर एक नई पहचान दी है। आज हिंदी धर्म, साहित्य, अध्यात्म की ही भाषा नहीं अपितु शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, मनोरंजन, व्यवसाय, धनोपार्जन तथा रोजगार की भाषा भी बन चुकी है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने हिंदी को विश्व स्तर पर नई पहचान दिलवाई है तथा टेलीविजन पर प्रसारित विविध कार्यक्रमों को हिंदी भाषा ने विश्वव्यापी बनाया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिंदी की लोकप्रियता को देखकर उसे आर्थिक जगत की भाषा बना दिया है तथा हिंदी जगत को उससे लाभ कमाने की नीति दी है। इस प्रकार संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी ने समयानुसार अपने रूप को बदलकर हिंदी में जिजीविषा के कई आयाम सामने खड़े कर दिए हैं तथा हिंदी अध्येताओं के सामने से जिजीविषा को लेकर उठ कई प्रश्नों का हल ढूंढ निकाला है। हिंदी ने अपने व्यावहारिक रूप से विश्व के अधिकाधिक लोगों को अपना पाठक, श्रोता तथा दर्शक बनाकर अंततः उन्हें हिंदी-भाषी बना दिया है।

संदर्भ संकेत

1. **हिंदी व्याकरण रचना**, दाभोलकर गो. म. - डॉ. कामत अशोक, पृष्ठ क्र. 18
2. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, शर्मा दधीच बालेंदु, पृष्ठ क्र. 245
3. वेबसाइट - **https://hi.wikipedia.org/wiki/संयुक्त_राष्ट्र**
4. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, शर्मा कुमार नारायण, पृष्ठ क्र. 232

अध्याय दो

विदेशों में हिंदी
(गिरमिटिया देश एवं एशिया के संदर्भ में)

गिरमिटिया देश

प्रस्तावना

2.1 मॉरीशस में हिंदी

2.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.1.2 वर्तमान स्वरूप

2.1.3 मॉरीशस में हिंदी शिक्षण

2.1.3.1 प्राथमिक हिंदी शिक्षण

2.1.3.2 माध्यमिक हिंदी शिक्षण

2.1.3.3 उच्च स्तरीय हिंदी शिक्षण

2.1.4 मॉरीशस की हिंदी सेवी संस्थाएँ

2.1.4.1 सनातन धर्मियों द्वारा हिंदी-शिक्षण में योगदान

2.1.4.2 गीता मंडल

2.1.4.3 हिंदू महासभा

2.1.4.4 तिलक विद्यालय

2.1.4.5 हिंदी प्रचारिणी सभा

2.1.4.6 आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा

2.1.4.7 गहलोत राजपूत महा सभा

2.1.4.8 मानव सेवा निधि

2.1.4.9 हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन)

2.1.5 मीडिया

2.1.6 आधुनिक तकनीक का प्रयोग

2.2 दक्षिण अफ्रीका

2.2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.2.2 वर्तमान स्वरूप

2.2.3 दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षण

2.2.4 संस्था - हिंदी शिक्षा संघ

2.2.5 मीडिया

2.3 फीजी

2.3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.3.2 वर्तमान स्वरूप

2.3.2.1 फीजी हिंदी

2.3.2.2 मानक हिंदी

2.3.3 वर्तमान में फीजी सरकार की भाषा नीति के अंतर्गत हिंदी शिक्षण

2.3.4 हिंदी शिक्षण में गैर-सरकारी संस्थाओं का सहयोग

2.3.4.1 हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी

2.3.4.2 आर्य प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी

2.3.4.3 सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी

2.3.4.4 भारतीय दूतावास

2.3.4.5 अन्य धार्मिक संस्थाएँ

2.3.5 मीडिया

2.3.6 आधुनिक तकनीक का प्रयोग

2.4 सूरीनाम

2.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.4.2 सूरीनाम में हिंदी का वर्तमान स्वरूप

2.4.3 सूरीनाम में हिंदी शिक्षण

2.4.4 सूरीनाम की हिंदी सेवी संस्थाएँ

2.4.5 मीडिया

2.5 ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो

2.5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.5.2 वर्तमान स्वरूप

2.5.3 ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो में हिंदी शिक्षण

2.5.4 ट्रिनिडाड की प्रमुख हिंदी सेवी संस्थाएँ

2.5.4.1 आर्य समाज

2.5.4.2 भारतीय विद्‌या संस्थान

2.5.4.3 हिंदी निधि

2.5.4.4 सनातन धर्म महासभा

2.5.4.5 कबीर पंथ

2.5.4.6 भारतीय दूतावास

2.5.5 मीडिया

2.6 जमैका

2.6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.6.2 वर्तमान स्वरूप

2.6.3 जमैका में हिंदी शिक्षण

2.6.4 हिंदी संस्थाएँ

2.6.4.1 प्रेमा सत्संग ऑफ़ जमैका

2.6.4.2 हिंदी क्लब ऑफ जमैका

2.6.4.3 भारतीय उच्चायोग

2.6.5 मीडिया

2.7 गयाना

2.7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.7.2 वर्तमान स्वरूप

2.7.3 गयाना में हिंदी शिक्षण

2.7.4 गयाना की हिंदी प्रचारक संस्थाएँ

2.7.4.1 गयाना हिंदी प्रचार सभा

2.7.4.2 गयाना विश्वविद्यालय

2.7.4.3 भारतीय सांस्कृतिक केंद्र जार्जटाउन

2.7.5 मीडिया

निष्कर्ष

एशियाई देश

प्रस्तावना

2.8 रूस

2.8.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.8.2 वर्तमान स्वरूप

2.8.3 रूस में हिंदी शिक्षण

2.8.4 मीडिया

2.9 उज्बेकिस्तान

2.9.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.9.2 वर्तमान स्वरूप

2.9.3 उज्बेकिस्तान में हिंदी शिक्षण

2.9.4 अनुवाद

2.10 जापान

2.10.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप

2.10.2 जापान में हिंदी शिक्षण

2.10.3 जापान में हिंदी संस्थाएँ

2.10.4 मीडिया

2.10.5 जापान का समृद्ध पुस्तकालय

2.11 चीन

2.11.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.11.2 वर्तमान स्वरूप

2.11.3 चीन में हिंदी शिक्षण

2.12 दक्षिण कोरिया

2.12.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.12.2 वर्तमान स्वरूप

2.12.3 दक्षिण कोरिया में हिंदी शिक्षण

2.12.3.1 हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज

2.12.3.2 सिओल नॅशनल यूनिवर्सिटी

2.12.3.3 बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़

2.12.4 प्रकाशन

2.12.5 अनुवाद

2.13 थाईलैंड

2.13.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.13.2 थाईलैंड में हिंदी शिक्षण

2.13.3 हिंदी अध्ययन के उद्देश्य

2.13.4 थाईलैंड में हिंदी शिक्षण की समस्याएँ

2.13.5 मीडिया

2.14 नेपाल

2.14.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.14.2 वर्तमान स्वरूप

2.14.3 नेपाल में हिंदी भाषा शिक्षण एवं हिंदी साहित्य

2.14.4 मीडिया

2.15 श्रीलंका

2.15.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.15.2 वर्तमान स्वरूप

2.15.3 श्रीलंका में हिंदी शिक्षण

2.15.4 मीडिया

2.16 भूटान

2.16.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.16.2 वर्तमान स्वरूप

2.16.3 भूटान में हिंदी शिक्षण

2.16.4 मीडिया

2.17 म्यांमार (बर्मा)

2.17.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप

2.17.2 बर्मा की हिंदी सेवी संस्थाएँ एवं हिंदी शिक्षण

2.17.2.1 बर्मा हिंदी साहित्य सम्मेलन

2.17.2.2 आर्य समाज

2.17.3 मीडिया

2.18 पाकिस्तान

2.18.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.18.2 वर्तमान स्वरूप

2.18.3 पाकिस्तान में हिंदी शिक्षण

2.18.4 मिडिया

2.19 इंडोनेशिया

2.19.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.19.2 वर्तमान स्वरूप

2.19.3 इंडोनेशिया में हिंदी शिक्षण

2.19.4 इंडोनेशिया की हिंदी प्रचारक संस्था - 'बाली-इंडियन फाउंडेशन'

2.19.5 मीडिया

2.20 वियतनाम

2.20.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप

2.20.2 वियतनाम में हिंदी शिक्षण

2.20.3 हिंदी की संस्था

2.20.4 मीडिया

2.21 सिंगापूर

2.21.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.21.2 वर्तमान पृष्ठभूमि

2.21.3 सिंगापूर में हिंदी शिक्षण

2.21.4 सिंगापूर की हिंदी प्रचारक संस्थाएँ

2.21.4.1 हिंदी सोसाइटी

2.21.4.2 आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी.हिंदी स्कूल

2.21.5 मीडिया

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय दो

विदेशों में हिंदी
(गिरमिटिया देश एवं एशिया के संदर्भ में)

गिरमिटिया देश :-

प्रस्तावना :-

गिरमिट शब्द अंग्रेजी के अग्रीमेंट शब्द का अपभ्रंश है तथा गिरमिटिया भारतीय मूल के वे शर्तबंद मजदूर हैं जो जीविकोपार्जन के लिए सन् 1834 से सन् 1911 तक अंग्रेजी, डच और अन्य यूरोपीय उपनिवेशों में गए। मॉरीशस, ट्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, गयाना, फीजी जमैका आदि देशों में ये गिरमिटिया अर्थात शर्तबंद मजदूर बस गए।

इनका जीवन दुस्सह्य जीवन था - कितने तो उस गुलामी के जीवन से ऊबकर नदी में डूब मरे, कितने फाँसी की डोरी पर झूल पडे और कितने ही विषपान कर अपमान से छुटकारा पा गए।

ऐसी कठिन परिस्थितियों में उन भारतीय श्रमिकों ने विविध चुनौतियों का सामना करके अपनी भाषा को जीवित रखा।

शर्तबंद मजदूर अशिक्षित थे, पर उनके पास सांस्कृतिक निधि थी - रामायण, गीता, महाभारत। मौखिक परंपरा सदा ही एक प्रबल साधन थी, जो अशिक्षितों को भी आसानी से ज्ञान देती थी। विशेषतः रामचरितमानस के दोहों-चौपाइयों को वे हृदयंगम कर चुके थे। यह उन सभी देशों के लिए सत्य है जहाँ गिरमिटिया मजदूर बसे हैं। रामचरितमानस की धार्मिक-सांस्कृतिक शक्ति ने ही हिंदी भाषा को गरिमा प्रदान की थी। दक्षिण अफ्रीका में आज भी लोग रामचरितमानस पढ़ने के लिए हिंदी सीखते हैं जैसे पहले रामचरितमानस के द्वारा प्रवासी लोग हिंदी सीखते थे। उस समय भाषा

का विकास अनिश्चित और अनियमित ढंग से हो रहा था। अनुसंधान द्वारा पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हुआ कि भाषा और संस्कृति का परस्पर संबंध है और भाषा ही संस्कृति की वाहिका है। अतः धीरे-धीरे रामचरितमानस ने अशिक्षितों को शिक्षित बना दिया। संभवतः तुलसीदास जी ने भी कल्पना नहीं की होगी कि उनका रामचरितमानस आगे चलकर भारत के बाहर सिर्फ हिंदू धर्म की रक्षा ही नहीं, बल्कि हिंदी सीखने का माध्यम भी बनेगा। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जहाँ-जहाँ हिंदीभाषी बसे हैं वहाँ-वहाँ हिंदी भाषा और हिंदू धर्म की रक्षा करने के अतिरिक्त भाषा और धर्म के ज्ञान की अभिवृद्धि में रामचरितमानस का सबसे बडा श्रेय है - रामचरितमानस ने प्रवासियों की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति की। धर्मग्रंथ होने के कारण वह आध्यात्मिक जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत था, उसकी कथा और घटनाएँ मनोरंजन का साधन बनीं और रामचरितमानस हिंदी सीखने के लिए पाठ्यपुस्तक के रूप में उपयोगी सिद्ध हुआ, जिससे सैंकडों लोग निरक्षरता से साक्षरता की ओर प्रवृत्त हुए।

हिंदी भाषा में ही उनकी संस्कृति, मूल्य और परंपरा केंद्रित थी। आज उन भारतीय श्रमिकों की संतान चौथी और पाँचवीं पीढी में है और अब तक वे अपने धर्म का पालन कर रही है।

डेढ़ सौ साल बीत जाने पर भी भारतवंशियों की संतानें हिंदी भाषा के पठन-पाठन में बहुत ही दिलचस्पी दिखाती हैं क्योंकि इनके मन में अब भी भारत की मधुर स्मृतियाँ रची-बसी हैं। अंग्रेजी, फ्रेंच स्पेनिश लैटिन क्रियोल या अन्य और विदेशी भाषाएँ बोलते हुए तथा पश्चिमी सभ्यता में पलते-बढ़ते हुए भी ये भली-भांति यह जानते हैं कि भारतीय संस्कृति के बिना अपनी अस्मिता की पहचान संभव नहीं है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने का इनका यह अदम्य मोह ही इन्हें हिंदी तथा भारतीयता से सुदृढ़ पाश से बांधे हुए है।

2.1 मॉरीशस में हिंदी :-

2.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

भारतीय गिरमिटिया मजदूर भारी संख्या में सन् 1834 में 'एटलस' नामक जहाज पर मॉरीशस लाए गए थे।[1] मॉरीशस पहुँचकर उन्हें उनकी दयनीय स्थिति का ज्ञात हुआ किंतु इतनी निराशाजनक स्थिति में भी वे हिम्मत नहीं हारे तथा कड़ी मेहनत कर मॉरीशस का भविष्य गढ़ने में जी जान से लग गए। उन्हें इस बात की चिंता नहीं थी कि उनके पास रोटी, कपड़ा और मकान नहीं था बल्कि उनकी चिंता का विषय उनके बच्चे तथा बच्चों का शिक्षण था क्योंकि उनके शिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी। वे जानते थे कि बच्चों की शिक्षण द्वारा ही वे उनका तथा आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुधार सकेंगे। अतः दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद भी वे अपने बच्चों को पेड़ के नीचे, झोपड़ियों में या जहाँ जगह मिले वहाँ रामचरितमानस एवं हनुमान-चालीसा का पाठ पढ़ाने लगे। सन् 1901 में महात्मा गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय विश्राम करने के लिए मॉरीशस रुके तो अपने इन भारतीय भाई-बहनों की दयनीय अवस्था देख अत्यंत दुखी हो गए। उन्होंने इन भारतीय मजदूरों को सलाह दी कि वे अपनी संतानों को भाषा, संस्कृति और धर्म की शिक्षा दें। उन्हीं की सलाह पर इन गिरमिटिया मजदूरों ने सायंकालीन पाठशालाओं की शुरुआत की तथा इन पाठशालाओं को 'बैठका' के नाम से जाना जाने लगा। ये बैठका, शिक्षा के अलावा भारतीय संस्कृति के केंद्र भी बने तथा यहाँ हिंदी भाषा के साथ-साथ भगवद् चर्चा, रामायण पाठ, भजन-कीर्तन भी होने लगे। यहीं हिन्दू त्यौहार भी मनाए जाने लगे। राम गति देहू सुमति से यहाँ हिंदी शिक्षण का प्रारंभ होता था और अध्यापक बड़ी लगन तथा सेवा-भावना से हिंदी पढाते थे।

2.1.2 वर्तमान स्वरूप :-

अध्यापकों की यह चौथी या पाँचवीं पीढ़ी है जो अपने पूर्वजों की भाषा, संस्कृति तथा धर्म की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। अध्यापकों की इस सेवा को मान्यता देते हुए मॉरीशस सरकार आजकल सायंकालीन पाठशालाओं में पढ़ानेवाले इन अध्यापकों को उनकी शैक्षिक योग्यता के अनुकूल मानधन देती है। वर्तमान में यहाँ हिंदी शिक्षण बैठका से लेकर विश्वविद्यालय तक की यात्रा तय कर चुका है। अपने हिंदी प्रचार के कार्यक्रमों द्वारा हिंदी शिक्षण को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने का श्रेय मॉरीशस के सरकारी स्कूलों, बैठकाओं, सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों के अलावा कुछ संस्थाओं जैसे हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा आदि को भी जाता है।

2.1.3 मॉरीशस में हिंदी शिक्षण :-

मॉरीशस सरकार ने सभी स्तरों पर अर्थात प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चस्तर पर हिंदी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था की है। प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयीन स्तर के लिए महात्मा गाँधी संस्थान (एम.जी.आय.) हिंदी पाठ्यक्रम, अध्यापक प्रशिक्षण, पाठ्य-पुस्तक लेखन आदि क्षेत्रों में पिछले तीन दशकों से सक्रिय है तथा हिंदी का विधिवत शिक्षण हो रहा है। प्रशंसनीय बात यह है कि सन् 1977 से प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के स्तर पर शिक्षा निःशुल्क है।

2.1.3.1 प्राथमिक हिंदी शिक्षण :-

प्राथमिक हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में एम.जी.आय. तथा पाठशालाओं के अलावा स्वैच्छिक संस्थाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनमें विशेष उल्लेखनीय हैं - हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा और राजपूत महासभा। हिंदी की सायंकालीन कक्षाएँ लगभग 300 गैर-सरकारी विद्यालयों में लगती हैं, तथा इनमें करीब-करीब 800 अध्यापक कार्यरत हैं। प्राथमिक पाठशालाओं में हिंदी का विधिवत पठन-पाठन लगभग सन् 1935 से प्रारम्भ हुआ। सन् 1961 में प्रो.

रामप्रकाश के आगमन से हिंदी शिक्षण तथा प्रशिक्षण ने तीव्र गति प्राप्त की। आज 254 विद्यालयों में हिंदी की पढाई हो रही है।

2.1.3.2 माध्यमिक हिंदी शिक्षण :-

सन् 1973 में माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी का प्रवेश हुआ तथा इस समय लगभग 125 विद्यालयों में हिंदी शिक्षण हो रहा है। लगभग बीस हजार छात्र माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं तथा करीब डेढ सौ अध्यापक हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं। महात्मा गाँधी संस्थान का यह प्रयास रहा है कि मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को एक ठोस नींव दी जाए। अतः एम.जी.आय, का माध्यमिक हिंदी शिक्षण-क्षेत्र में बहुविध योगदान रहा है जैसे कि हिंदी की पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना, संबंधित अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, हिंदी शिक्षण पर वार्षिक विचार-गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन करना आदि।

संस्थान की ओर से हिंदी शिक्षण के स्तर को ऊँचा उठाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। एस.एस.सी. परीक्षा में जो परीक्षार्थी हिंदी विषय में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आते हैं, उन्हें भारत सरकार की ओर से उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है। हिंदी प्रचारिणी सभा, मानव सेवा निधि आदि संस्थाएँ भी हर वर्ष योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती हैं। माध्यमिक हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में सवैच्छिक संगठनों का भी योगदान रहा है, जिनमें आर्य-सभा और हिंदी प्रचारिणी सभा विशेष उल्लेखनीय हैं। हिंदी प्रचारिणी सभा हर साल हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की निम्नलिखित परीक्षाओं का आयोजन करती है। परिचय, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा प्रथम खंड और उत्तमा द्वितीय खंड। इन परीक्षाओं में प्रतिवर्ष 2000 से ऊपर छात्र भाग लेते हैं। आज मॉरीशस में करीब 20 ऐसे माध्यमिक शिक्षण-केंद्र हैं, जहाँ अंशकालिक रूप में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पाठ्यक्रमानुसार हिंदी भाषा एवं

साहित्य के पठन-पाठन का प्रबंध है। माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को विकासोन्मुख स्थिति तक पहुँचाने में स्वैच्छिक संस्थाओं, मॉरीशस सरकार तथा महात्मा गाँधी संस्थान का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

2.1.3.3 उच्च स्तरीय हिंदी शिक्षण :-

महात्मा गाँधी संस्थान, मॉरीशस का एक ऐसा संस्थान है जहाँ हिंदी की शिक्षा हर स्तर पर दी जाने की व्यवस्था है। सन् 1990 में हिंदी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में पहली बार मॉरीशस विश्वविद्यालय में हिंदी को स्थान प्राप्त हुआ। हिंदी का स्नातक त्रिवर्षीय तथा द्विवर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स कई वर्षों से मॉरीशस के विश्वविद्यालय में, महात्मा गाँधी संस्थान के सक्रिय सहयोग से चल रहा है। इनके आरंभ हो जाने से यहाँ के छात्रों को मॉरीशस में ही रहकर हिंदी भाषा तथा साहित्य का गहरा अध्ययन करने का अवसर मिल गया है अन्यथा छात्रों को भारत जाकर पढ़ना पड़ता था जोकि आर्थिक दृष्टि से कई छात्रों के लिए असंभव हो जाता है। विश्वविद्यालय स्तर पर पूर्वी भाषा शिक्षण के लिए इस संस्थान की पूरे देश में विशेष पहचान है। हिंदी शिक्षण को यहाँ तक पहुँचाने के लिए संस्थान ने काफ़ी लम्बी तथा संघर्षशील यात्रा को तय किया है। संस्थान के हिंदी विभाग में छः प्रवक्ता हैं तथा अन्य विभागों के कुछ प्रवक्ता जिनके पास हिंदी की उच्च डिग्री है हिंदी शिक्षण के कार्य में सहयोग देते हैं। सन् 2014-2015 में विश्वविद्यालय स्तर पर संस्थान में तीन वर्षीय स्नातक कोर्स में कुल मिलाकर 113 छात्र हैं एवं दो वर्षीय स्नातकोत्तर कोर्स में कुल 5 हिंदी में पीएच.डी. तथा एम.फिल. करने वाले छात्रों की संख्या इक्कीस है। 5 छात्र पीएच.डी. पूरी कर चुके हैं और 5 छात्रों की पीएच.डी. लगभग पूरी हो चुकी है। एवं ओपन यूनिवर्सिटी से 6 छात्र पीएच.डी. कर रहे हैं। पी.जी.सी.इ. (पोस्ट ग्रजुएट सर्टिफिकेट इन एजुकेशन) के 31 छात्र हैं। महात्मा गाँधी संस्थान के अलावा डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज (सम्प्रति ऋषि दयानंद संस्थान) भी स्नातक एवं स्नातकोत्तर कोर्स चलाती है।

सन् 2014-2015 के आंकड़ों के अनुसार स्नातक में 26 एवं स्नातकोत्तर में 10 छात्र हिंदी का शिक्षण ले रहे हैं। मॉरीशस में एम.ई.एस. (मॉरीशस एग्ज़ामिनेशन सिंडीकेट) ने राष्ट्रीय परीक्षा सी.पी.ई. (सर्टिफिकेशन ऑफ़ प्राइमरी एजुकेशन) पी.जी.सी.इ. (पोस्ट ग्रजुएट सर्टिफिकेट इन एजुकेशन), एस.सी. (सेकंडरी स्कूल), एच.एस.सी. (हायर सेकंडरी स्कूल) की अच्छी व्यवस्था कर रखी है। एस.सी. एवं एच.एस.सी. केम्ब्रिज बोर्ड की परीक्षाएँ हैं। विश्वसनीयता और वैज्ञानिकता की दृष्टि से इसे काफी सफलता मिली है। अफ्रीकी तथा अन्य देश एम.ई.एस. के लंबे अनुभवों से अवश्य लाभ उठा सकेंगे।

मॉरीशस में हिंदी भाषा शिक्षण के लिए दृश्य-श्राव्य सामग्री का प्रचूर मात्रा में प्रयोग हो रहा है। कंप्यूटर का प्रयोग प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं में हो रहा है। इसे कारगर रूप से प्रयोग करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया है। हिंदी शिक्षकों की संख्या में वृद्धि बहुत हुई है।

महात्मा गाँधी संस्थान अन्य प्रवासी देश जैसे रीयूनियन और फ़्रांस में फ्रेंच भाषा के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। रीयूनियन में कामकाजी हिंदी पर बल दिया जा रहा है न कि पारंपरिक हिंदी के पठन-पाठन पर। अन्य अफ़्रीकी देशों में भी इस प्रकार के हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य आरंभ हो चूका है।

2.1.4 मॉरीशस की हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

2.1.4.1 सनातन धर्मियों द्वारा हिंदी-शिक्षण में योगदान :-

भारतीय अप्रवासन् के आरंभिक दशकों में हिंदी का पठन-पाठन कार्य हस्तलिखित पुस्तकों द्वारा होता था। मॉरीशस सनातन धर्म मंदिर परिषद् हिंदी के माध्यम से कई वर्षों से भावी पुरोहितों को प्रशिक्षण दे रहा है। प्रशिक्षण के समय हिंदी

में कथा-वार्ता करना आवश्यक है अतः इस तरह सनातन धर्मियों द्वारा हिंदी का अनौपचारिक शिक्षण हो रहा है।

2.1.4.2 गीता मंडल :-

गीता मंडल की स्थापना सन् 1920 में हुई। इस मंडल का मुख्य उद्देश्य गीता का प्रचार-प्रसार करना था तथा हिंदी भाषा ही इस कार्य का माध्यम थी। अतः इसके कारण लोगों को हिंदी में कथा-वार्ता करने, हिंदी सीखने की प्रेरणा मिली और उत्साह भी बढ़ा। वर्तमान में भी गीता पाठ चल रहे हैं।

2.1.4.3 हिंदू महासभा :-

सन् 1925 में हिंदू महासभा की स्थापना हुई। गीता और रामायण जैसे ग्रंथों को पढने के लिए लोगों ने हिंदी पढना शुरू किया। इसे बढ़ावा देने के लिए इस संस्था ने गीता और रामायण से संबंधित परीक्षाएँ आरंभ कीं।

2.1.4.4 तिलक विद्यालय :-

श्री गिरधारी भगत और रामलाल मंगर भगत जी के सहयोग से 12 जून 1926 को मोंताई लौंग ग्राम में तिलक विद्यालय की स्थापना हुई। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य हिंदी शिक्षण था।

2.1.4.5 हिंदी प्रचारिणी सभा :-

24 दिसंबर 1935 को तिलक विद्यालय में ही हिंदी प्रचारिणी सभा की शुरुआत हुई। इस संस्था ने अपने स्थापना-काल से अब तक मुख्यतः व्याकरण सम्मत और साहित्यिक हिंदी का प्रचार-प्रसार किया तथा आज भी पूर्ण रूप से सक्रीय है एवं मॉरीशस की सुप्रसिद्ध संस्थाओं में से एक है। हिंदी प्रचारिणी सभा ने परिचय, प्रथमा और उत्तमा की परीक्षाएँ आरंभ की तथा मॉरीशस सरकार ने इन परीक्षाओं को मान्यता भी दी। इन परीक्षाओं मे उत्तीर्ण सैकड़ों लोग सरकारी हिंदी अध्यापक हैं। हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रमुख कार्यकर्ता श्री अजामिल माताबदल हैं।

2.1.4.6 आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा :-

सन् 1930 में आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई तथा सन् 1934 में यह पंजीकृत हुई। सभा ने अपने कार्यों को सुचारू रूप से करने के लिए कई समितियों का गठन किया है इनमें से विशेष उल्लेखनीय हैं हिंदी शिक्षा विभाग समिति एवं धार्मिक प्रशिक्षण विभाग। हिंदी शिक्षा विभाग के अंतर्गत हिंदी का अध्ययन होता है। वर्तमान में इस सभा की तीस शाखाओं में हिंदी अध्ययन हो रहा है। यहाँ एक से लेकर छः तक की कक्षाएँ नियमित रूप से चलती हैं तथा इसके अलावा वे छात्रों को प्रवेशिका, परिचय, प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा की परीक्षाओं के लिए भी तैयार करते हैं। पिछले एक दशक में लगभग पंद्रह हज़ार विद्यार्थी प्राथमिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके हैं और माध्यमिक परीक्षाओं में लगभग तीन हज़ार छात्र-छात्राएँ उत्तीर्ण हुए हैं। आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा के धार्मिक प्रशिक्षण विभाग द्वारा भावी पुरोहितों को वैदिक कर्मकांड और वैदिक दर्शन की शिक्षा दी जाती है इस प्रशिक्षण का माध्यम हिंदी है तथा यह तीन वर्षों का कोर्स है। ये पुरोहित हिन्दू धर्म का प्रचार हिंदी के माध्यम से ही करते हैं अतः इसके द्वारा हिंदी का अनौपचारिक प्रचार हो रहा है।[2]

2.1.4.7 गहलोत राजपूत महासभा :-

गहलोत राजपूत महासभा का मुख्य कार्यालय मॉरीशस के पोर्ट लुई में है। सभा की स्थापना सन् 1964 में हुई। इस सभा का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के माध्यम से हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार है। इस सभा में भावी पुरोहितों को हिंदी के माध्यम से वैदिक दर्शन तथा कर्मकांड का पाठ पढ़ाया जाता है तथा शिक्षा दी जाती है।

गहलोत राजपूत महासभा की अनेक शाखाओं हैं और इनमें से कई शाखाओं में हिंदी शिक्षण होता है। हिंदी प्राथमिक स्तर पर सिखाई जाती है तथा इन कक्षाओं के बाद छात्रों को हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा संचालित परिचय प्रथमा, मध्यमा

आदि हिंदी की परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। अब तक इस संस्था ने अपने स्थापना-काल से अब तक हिंदी शिक्षण-कार्य में प्रशंसनीय कार्य किया है।

2.1.4.8 मानव सेवा निधि :-

मानव सेवा निधि एक स्वयंसेवी संस्था है। यह संस्था रामायण-गान तथा भजनों द्वारा नई पीढ़ी को हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति एवं धर्म से जुड़े रखने के लिए प्रेरित करती रही है। यह संस्था कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करती आई है तथा सभी कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण हिंदी भाषा में ही होता है। रामचरितमानस पर आधारित एक साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम भी इस संस्था द्वारा नियमित रूप से प्रसारित होता है। कई वर्षों तक कई वर्षों तक 'स्वदेश' नामक हिंदी पत्र भी इस सभा द्वारा प्रकाशित होता।

2.1.4.9 हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) :-

हिंदी संगठन की स्थापना सन् 1994 में हुई और तब से लेकर अब ता यह संगठन निरंतर हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई है। हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) के मुख्य उद्देश्य हैं हिंदी का विकास, हिंदी का प्रचार-प्रसार, हिंदू संस्कृति की रक्षा करते हुए सर्वोन्नति के लिए कार्य करना। हिंदी संगठन के इन उद्देश्यों को सार्थक करने के लिए तथा इस संगठन को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष मॉरीशस सरकार द्वारा दो मिलियन रुपयों का प्रावधान भी किया गया है।

अब हिंदी संगठन द्वारा 'सुमन' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है तथा हिंदी का एक राष्ट्रीय पुस्तकालय खोलने की बृहत योजना पर कार्य हो रहा है। हिंदी संगठन मॉरीशस में हिंदी के पूर्ण विकास, प्रचार-प्रसार और जीवंत गतिविधियों को अपना परम उदे्श्य मानकर कार्य का सफल प्रयास कर रहा है। मॉरीशस के हिंदी भाषाविद श्री अजामिल माताबदल हिंदी संगठन के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। इनके काबिल हाथों में हिंदी का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। श्री माताबदल एक ऐसे हिंदी

भाषाविद हैं जो हिंदी के प्रचार में बड़ी निष्ठा से समर्पित हैं। उनके इसी समर्पण का फल है कि हाल ही में हुए 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्हें विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

2.1.5 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा तथा हिंदी गीत मॉरीशस में अत्यंत प्रचलित हैं। यहाँ के सिनेमाघरों में नियमित रूप से हिंदी सिनेमा चित्रित किए जाते हैं। हिंदी सिनेमा देखकर ही कई लोगों ने बिना कोई औपचारिक हिंदी शिक्षण के, हिंदी सीखी। मॉरीशस की जो बात अत्यंत सराहनीय एवं अनुकरणीय है वह यह है कि वे सिनेमा या गीत के ऐसे सभी अंश काट दिए जाते हैं जो अश्लील हों या भारतीय संस्कारों से परे हों। वे भारतीय संस्कृति को इतना सहजते हैं। चूँकि बच्चे और युवा हिंदी सिनेमा देखकर हिंदी सीखते हैं अतः यह आवश्यक हो जाता है कि वे उचित फिल्में ही देखें। यहाँ भारतीय टी.वी. धारावाहिक घर-घर में देखे जाते हैं। हिंदी के कई रेडियो स्टेशन हैं। मुख्यतः एम.बी.सी. (मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) जो कि मॉरीशस का राष्ट्रीय रेडियो है, निरंतर हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। टी.वी. एवं रेडियो में निरंतर हिंदी गाने, हिंदी में साक्षात्कार, हिंदी नाटिका, हिंदी के कार्यक्रम एवं हिंदी शिक्षण संबंधी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

2.1.6 आधुनिक तकनीक का प्रयोग :-

मॉरीशस की सभी स्तर की पाठशालाओं में कम्प्यूटर उपलब्ध हैं। हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक यानी कम्प्यूटर, हिंदी सॉफ्टवेयर, अंतरजाल का प्रयोग होता है। विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गाँधी संस्थान आदि संस्थानों द्वारा नियमित रूप से प्राथमिक एवं माध्यमिक पाठशालाओं के समस्त अध्यापकों के लिए आय.सी.टी. (इन्फोर्मेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलोजी) की कार्यशालाओं का आयोजन

होता है। वर्तमान में स्थिति यह है कि सन् 2015 में मॉरीशस के सौ प्रतिशत अध्यापक आय.सी.टी. प्रशिक्षित हैं।

2.2 दक्षिण अफ्रीका :-

2.2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मजदूरों का पदार्पण सन् 1860 में हुआ। ये मजदूर हिंदी की उपभाषा भोजपुरी में वार्तालाप करते थे। बीसवीं सदी के प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका में भारतवंशियों ने स्वैच्छिक धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना की और तब से इन संस्थाओं द्वारा बच्चों को हिंदी सीखने का अवसर मिलने लगा। अन्य गिरमिटिया देशों की तरह दक्षिण अफ्रीका पहुँचे उन गिरमिटिया मजदूरों की भी स्थिति उतनी ही दयनीय एवं जीवन दुस्सह्य था। वे अनपढ़ थे तथा मजदूरी करके अपना जीवन सुधारने की मंशा से दक्षिण अफ्रीका आए थे। वे अपने साथ अपनी धरोहर अपनी भाषा, संस्कृति, धर्म एवं धार्मिक ग्रंथ लाए थे। वे अपनी संतानों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखना चाहते थे तथा वे जानते थे कि शिक्षण ही उनकी संतानों को एक सदृढ़ भविष्य प्रदान कर सकता है किंतु उनकी संतानों को स्कूल जाने का अवसर नहीं दिया जाता था। अतः इसका हल उन्होंने इस प्रकार निकाला कि अपनी संतानों को उन्होंने घर पर ही हिंदी भाषा, धर्म तथा संस्कृति का पाठ पढ़ाना शुरू किया। यही उन गिरमिटिया मजदूरों के जीवन का मूल उद्देश्य बन गया।

सन् 1927 में भारतीयों के उत्थान के लिए 'केपटाउन अग्रीमेंट' बना जिसमें भारतीयों को शिक्षा दिलवाने के लिए स्वीकृति दी गई लेकिन स्कूली शिक्षा में भारतीय भाषाओं को सम्मिलित नहीं किया गया। नाना प्रकार की कोशिशों के बावजूद हिंदी को सरकारी स्कूलों के पाठ्यक्रम में स्थान नहीं मिला। सन् 1947 तक यही स्थिति रही। सन् 1947 में भारत से पंडित नरदेव वेदालंकार का दक्षिण अफ्रीका में आगमन हुआ। तब तक वहाँ अध्यापकों की सूझ-बूझ के अनुसार हिंदी भाषा का अध्यापन होता था।

पंडित नरदेव ने दक्षिण अफ्रीका में आते ही हिंदी भाषा का भाग्य पलट दिया। पंडित नरदेव जी ने अपनी विद्वत्ता, मृदुल स्वभाव, हिंदी भाषा-प्रेम और हिंदू भावना से लोगों के हृदय में शीघ्र ही स्थान बना लिया। पंडित जी की शिक्षा-दीक्षा गुजराती में थी किंतु उन्होंने वैदिक ज्ञान हिंदी और संस्कृत में भी प्राप्त किया था। इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा में पंडित जी हिंदी अध्यापक का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। अतः दक्षिण अफ्रीका में पंडित जी ने हिंदी शिक्षा संघ की पाठशालाओं में हिंदी पाठ्यक्रम तथा शिक्षण की व्यवस्था की। उन्होंने पाठ्यक्रम में सुधार करवाते हुए उपयुक्त पुस्तकें तैयार करवाईं। आधुनिक प्रशिक्षण एवं परीक्षण पद्धति का समावेश करवाया और विद्यार्थियों का राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं में प्रवेश दिलवाया।

2.2.2 वर्तमान स्वरूप :-

नई शिक्षा नीति के आधार पर हिंदी की पढ़ाई आरंभ हुई। वर्तमान में हिंदी शिक्षा संघ द्वारा पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी तैयार की जाती हैं तथा उनका प्रकाशन भी होता है। हाल ही में, मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गाँधी संस्थान की सहायता से, हिंदी अध्यापाकों के लिए आय.सी.टी. की कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

2.2.3 दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1961 से डर्बन वेस्टविल विश्वविद्यालय में हिंदी स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएच.डी. तक पढाई जाती थी। प्रारंभ में भारत के विद्वान् श्री आचारयुलु हिंदी पढाया करते थे। फिर दक्षिण अफ्रीका के प्रो. रामभजन सीताराम ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर, पीएच.डी. प्राप्त कर, कुछ ही वर्षों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन स्तर को भारत के स्तर तक पहुँचा दिया।[3] फलस्वरूप, असंख्य लोगों को हिंदी का उच्च ज्ञान प्राप्त हुआ। सन् 1977 से सरकारी स्कूलों में भारतीय

भाषाओं का प्रवेश हुआ परंतु इनके अध्ययन-अध्यापन का मार्ग अपेक्षित रूप से प्रशस्त नहीं हुआ। दक्षिण अफ्रीका के नए संविधान में भारतीय भाषाओं को सम्मान दिलाने की बात रखी गई है, परंतु शिक्षा व्यवस्था जो रूप धारण कर रही है, उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय भाषाएँ स्कूलों में सार्थक रूप से प्रगति नहीं कर रही हैं। इसका मुख्य कारण है दक्षिण अफ्रीका के संविधान में ग्यारह अधिकारिक भाषाआँ या राजभाषाओं को स्वीकृति दी गई है। हरेक प्रांत में अंग्रेजी और अफ्रीकांस के साथ एक अफ़्रीकी भाषा पढ़ाई जा रही है। इससे भारतीय भाषाओं को उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है। सन् 1998 में डरबन वेस्टविल विश्वविद्यालय का भारतीय भाषा विभाग बंद कर दिया गया अतः इसके कारण हिंदी के विकास में बाधा पड गई है। परिणामतः स्वैच्छिक संस्थाओं का उत्तरदायित्व और महत्त्व एक बार फिर से बढ गया है।

2.2.4 संस्था - हिंदी शिक्षा संघ :-

25 अप्रैल, 1948 को हिंदी शिक्षा संघ की स्थापना हुई। हिंदी शिक्षा संघ की स्थापना में पंडित नरदेव जी वेदालंकार की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण थी। दक्षिण अफ्रीका का हिंदी शिक्षा संघ, हिंदी की सेवा सन् 1948 से निरंतर कर रहा है। और सम्प्रति यह एक अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण संस्था है। उसकी संचालन व्यवस्था, हिंदी शिक्षा पद्धति तथा कार्यक्रम और भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का संकल्प एवं प्रयास अपने आप में ही अनुकरणीय है। हिंदी भाषी भारतीयों के लिए यह एक प्रकाश स्तंभ का काम करता है। सन् 1948 से आज तक सहस्त्रों विद्यार्थी हिंदी शिक्षा संघ द्वारा हिंदी शिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। हिंदी शिक्षा संघ दक्षिण अफ्रीका में हिंदी प्रचार की प्रमुख स्वैच्छिक संस्था है। हिंदी शिक्षा संघ हिंदी भाषा, साहित्य, शिक्षण पद्धति और धर्मशिक्षा की कक्षाएँ चला रहा है। दक्षिण अफ्रीका के हिंदी-भाषी भारतीयों के लिए यह संस्था गौरव और आशा का प्रतीक है।

2.2.5 मीडिया :-

दक्षिण अफ्रीका में दो रेडियो स्टेशन हैं जिन पर हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं और जिनका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। एक सरकारी रेडियो, लोटस एफ.एम., जो दक्षिण अफ्रीका में प्रयुक्त सभी भारतीय भाषाओं में संगीत प्रसारित करता है। यह स्टेशन सप्ताह में केवल डेढ घंटे के लिए हिंदी भाषा के माध्यम में प्रसारण करता है। दूसरा स्टेशन हिंदवाणी है, जो हिंदी की प्रगति के लिए हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका द्वारा स्थापित किया गया है। अपनी भाषा तथा संस्कृति संबंधी उद्देश्यों को आगे बढाने के लिए सन् 1998 में संघ ने हिंदवाणी नाम से दक्षिण अफ्रीका का प्रथम हिंदी रेडियो स्टेशन स्थापित किया। हिंदी संप्रेषण में प्राण लाने के लिए हिंदवाणी के कार्यक्रमों में रामचरितमानस, कबीर, सूर और मीरा के पद तथा हनुमान चालीसा इत्यादि को स्थान दिया जाता है। विविध कार्यक्रमों में, कम-से-कम पचास प्रतिशत हिंदी भाषा का प्रयोग अनिवार्य है। हिंदवाणी पर मनोरंजन के लिए गीत-संगीत के कार्यक्रम, जीवनोपयोगी स्वास्थ्य, भोजन, प्रसाधान, सुरक्षा, समाज-सुधार तथा अन्य लाभकारी विषय प्रसारित किए जाते हैं। इससे हिंदवाणी के श्रोताओं और संघ के विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होती है। सार्वजनिक क्षेत्र में हिंदी की कोई खास उपयोगिता न होने से इस भाषा का लोप हो सकता था। किंतु धार्मिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में हिंदी के उपयोग से और हिंदवाणी तथा संघ के सतत प्रयत्न से यह स्थिति टल गई। दक्षिण अफ्रीका की नवीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भारतीय संस्कृति के लिए द्वार खोल दिए हैं। यहाँ के हिंदी और संस्कृत प्रेमियों के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं। एक और तथ्य है जो वर्षों से भारतीय लोगों में हिंदी के प्रति रुचि, स्नेह और लगाव जीवित रख रहा है और वह है हिंदी सिनेमा। वर्तमान काल में जिन घरों में हिंदी माध्यम के दूरदर्शन के कार्यक्रम आते हैं, उन घरों के बच्चे और युवक-युवतियाँ हिंदी भाषा, हिंदू धर्म और संस्कृति के प्रति रुचि

अभिव्यक्त करते हैं, उन्हें पूरे फिल्मी गीतों के शब्द याद हैं, उन्हें भारतीय वस्त्राभूषण पसंद हैं और वे हिंदी के प्रति आकर्षित हैं। यह भविष्य के लिए एक सकारात्मक प्रतीक है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार साधनों में सिनेमा और दूरदर्शन महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

2.3 फीजी :-

2.3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

फीजी में हिंदी भाषा तथा भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का आगमन 15 मई 1879 को जहाज़ लिओनीदास द्वारा हुआ। इस तरह 37 वर्षों तक लगभग 87 जहाज़ फीजी पहुँचे। इसके बाद गिरमिट प्रथा समाप्त हो गई। ये मजदूर अपने साथ अपने देवी-देवता, अपनी प्रांतीय विचार-धाराएँ, पुरातन तथा बहुमूल्य सांस्कृतिक परम्परा और अपनी भाषा लेकर आए थे। ये मजदूर निरक्षर थे पर उनमें अपनी संस्कृति और अपनी भाषा को कायम रखने की ललक थी। अपना कुली काल पूरा करने पर उन्होंने अपने बल पर छोटे-छोटे केंद्र स्थापित किए और यहाँ से हिंदी तथा हिन्दू संस्कृति की शिक्षा देना शुरू किया। शिक्षा का माध्यम हिंदी और संस्कृत हुआ करती थी। जो भी पुस्तक उपलब्ध होती थी वही पाठ्य पुस्तक के रूप में काम में लाई जाती थी जैसे कि चाणक्य नीति दर्पण। सन् 1884 में शर्तबंदी में पंडित भगवानदत्त पांडे आए थे। कुली काल पूरा होने के बाद वूसी नामक ग्राम में अपनी छोटी सी कुटी बना कर रहने लगे और यही कुटी हिंदुओं के लिए धार्मिक शिक्षा का केंद्र बन गई। आगे चलकर यहीं पर स्कूल का निर्माण किया गया।

2.3.2 वर्तमान स्वरूप :-

आज फीजी में हिंदी भाषा निरंतर तरक्की कर रही है। अन्य भाषाओं के साथ-साथ जैसे कि अंग्रेजी और फीजियन, हिंदी भाषा को फीजी संविधान में समान अधिकार प्राप्त है। व्यावहारिक दृष्टि से भी राष्ट्रीय स्तर पर फीजी में तीनों भाषाओं

को मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में फिजी में हिंदी भाषा पूर्ण सुरक्षित और समृद्ध है। फीजी में हिंदी के दो रूप देखने को मिलते हैं -

2.3.2.1 फीजी हिंदी :-

पहला रूप है फीजी हिंदी जो कि फीजी बात के नाम से जाना जाता है। फिजी बात में भारत के विविध प्रान्तों से लाए गए अप्रवासी मजदूरों की अलग अलग भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है जैसे कि भोजपुरी, मलयालम, तेलुगू, तमिल, गुजराती, बिहारी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी भाषाएँ आदि। यह भाषा एक बोली है जो व्यावहारिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है।

2.3.2.2 मानक हिंदी :-

दूसरा रूप है मानक हिंदी। फीजी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और शिक्षा मंत्रालय द्वारा निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम भाषा मानक हिंदी है। इसका लिखित रूप पूर्णतः देवनागरी लिपि है। यहाँ कक्षा एक से लेकर कक्षा आठ तक प्राथमिक पाठशालाएँ हैं और कक्षा नौ से लेकर कक्षा तेरह माध्यमिक पाठशालाएँ हैं।[4]

मानक हिंदी फीजी में औपचारिक तौर पर काम में लाई जाने वाली सक्षम भाषा है। लेकिन फीजी में मानक हिंदी का स्तर भारत जितना उच्च नहीं है।

2.3.3 वर्तमान में फीजी सरकार की भाषा नीति के अंतर्गत हिंदी शिक्षण :-

शिक्षा समिट 2000 की रिपोर्ट के सुझावों के अनुसार मातृभाषा के महत्त्व को समझा गया और इसके पठन-पाठन पर अधिक जोर दिया जाने लगा। बच्चों के चरित्र निर्माण में मातृभाषा महत्त्वपूर्ण भाग अदा करती है। इसी के परिणाम स्वरूप फीजी के शिक्षा मंत्रालय ने निम्न कदम उठाना अनिवार्य समझा। यह भी आवश्यक समझा गया कि सभी बच्चों को स्कूली शिक्षा के अंतर्गत तीन भाषाओं में विचारों के आदान-प्रदान की योग्यता प्राप्त होनी चाहिए। पहली उसकी अपनी मातृभाषा, दूसरी वार्तालापीय भाषा/फीजियन तथा तीसरी अंग्रेजी भाषा।

फीजी में शिक्षा मंत्रालय द्वारा भाषा को बढ़ावा देने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जा रहा है - प्राथमिक पाठशालाओं में कक्षा एक से आठ तक हिंदी अनिवार्य कर दी गई है। माध्यमिक पाठशालाओं में कक्षा नौ और दस के लिए हिंदी अनिवार्य है। वर्ष ग्यारह, बारह और तेरह के बच्चों के लिए वैकल्पिक चयनात्मक विषय के तौर पर हिंदी पाठ्यक्रम उपलब्ध है। पठनपाठन का माध्यम मानक हिंदी और देवनागरी लिपि है। समस्त हिंदू छात्रों के लिए हिंदी अनिवार्य है। वार्तालापीय हिंदी पाठ्यक्रम समस्त प्राथमिक और माध्यमिक पाठशालाओं के गैर हिंदुस्तानी बच्चों के लिए अनिवार्य है। वार्तालापीय हिंदी शिक्षण का माध्यम रोमन लिपि है। मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान जीतनी सक्षमता से कर लेता है वह उतनी ही उन्नति करता है। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए फीजी सरकार एवं फीजी के शिक्षा मंत्रालय द्वारा वार्तालापीय हिंदी फीजियन पाठ्यक्रम को तैयार किया गया। सन् 2000 से सभी पाठशालाओं में अनिवार्यतः एवं नियमित रूप से कार्यान्वित किया गया है।

2.3.4 हिंदी शिक्षण में गैर-सरकारी संस्थाओं का सहयोग :-

फीजी सरकार के पूर्ण सहयोग के साथ-साथ हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अनेक गैर-सरकारी, धार्मिक संस्थाएँ तन-मन-धन से कार्यरत हैं -

2.3.4.1 हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी :-

इसकी स्थापना सन् 2000 में की गई। यह पंजीकृत संस्था है। इसके विभिन्न केंद्र इस प्रकार हैं - हिंदी टीचर्स असोसिएशन ऑफ फीजी नॅशनल बॉडी, हिंदी टीचर्स असोसिएशन पश्चिमी विभाग, हिंदी टीचर्स असोसिएशन उत्तरी विभाग, हिंदी टीचर्स असोसिएशन केंद्रीय विभाग।

इनके मुख्य कार्य हैं सभी अध्यापकों के लिए कार्यशाला आयोजित करना, हिंदी संबंधित मुख्य बातों पर विचार-विमर्श करना, हिंदी दिवस आयोजन करना आदि।

2.3.4.2 आर्य प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी :-

स्वामी दयानंद जी के सिद्धांतों और वैदिक सिद्धांतों पर आधारित होने के कारण संस्कृत और हिंदी भाषा की उन्नति आर्य समाज के नियमों में एक मुख्य नियम है। सन् 1904 में फीजी में सत्य सनातन वैदिक संस्कृति का झंडा लहराया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्राथमिक, माध्यमिक पाठशाला, विश्वविद्यालय, मेडिकल और लॉ के विद्यालय भी हैं। इन सभी में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।[5]

2.3.4.3 सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी :-

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ऑफ फीजी हिंदी की प्रगति के लिए वचनबद्ध है। फीजी सेवा आश्रम संघ, फीजी-हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में लगी संस्था है। स्कूली बच्चों के लिए कविता पाठ, रामायण पाठ, लेखन, भाषण और अनेक प्रतियोगिताएँ आदि करना, संस्कृत-हिंदी कक्षाएँ आयोजित करना आदि।

2.3.4.4 भारतीय दूतावास :-

भारतीय दूतावास का फीजी-हिंदी के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा सहयोग है। हिंदी पुस्तकों का वितरण, कार्यशालाओं के आयोजन में सहयोग देना आदि।

2.3.4.5 अन्य धार्मिक संस्थाएँ :-

अन्य धार्मिक संस्थाएँ भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे रहीं हैं। गुजरात संस्था, सिख संस्था, संगम संस्था, कबीर पंथी, बहाई धर्म, ऐसी अनेक भारतीय मूल की संस्थाएँ भारतीय संस्कृति, हिंदी भाषा को फीजी में कायम रखे हुई हैं।

2.3.5 मीडिया :-

फीजी में छः रेडियो स्टेशन्स हैं जहाँ चौबीस घंटे हिंदी कार्यक्रम चलते हैं। टी.वी. चैनल्स जैसे कि फिजी-1, एफ.बी.सी. अर्थात फीजी ब्रॉडकास्टिंग आदि। हिंदी सिनेमा तथा गीत काफी प्रचलित हैं और पसंद किए जाते हैं।

2.3.6 आधुनिक तकनीक का प्रयोग :-

सन् 2000 तक फीजी की पाठशालाओं में हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी अर्थात हिंदी सॉफ्टवेयर आदि के प्रयोग का चलन न के बराबर था। शिक्षा विभाग के हिंदी अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से कार्यशालाओं के माध्यम से प्राथमिक एवं माध्यमिक पाठशालाओं के समस्त अध्यापकों को हिंदी टाइप सेटिंग की योग्यता उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता रहा है। फीजी स्थित भारतीय दूतावास के हिंदी अधिकारियों द्वारा सभी पाठशालाओं को सहायक सामग्री प्रदान की गई, कार्याशालाएँ आयोजित की गईं। वर्तमान में हिंदी भाषा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी का प्रयोग और उसकी सुविधाएँ सर्वत्र उपलब्ध हैं। विभिन्न हिंदी सोफ्टवेयर भी उपलब्ध हैं।

2.4 सूरीनाम :-

2.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

भारतीय गिरमिटिया मजदूर ब्रिटिश उपनिवेश द्वारा 5 जून, 1873 में 'लालारुख' नामक जहाज पर पहली बार सूरीनाम लाए गए और बाद में सन् 1916 तक अन्य जहाजों से उतारे गए कुल 34,304 मजदूर। उन्हें देश के विभिन्न भागों में खेतों में काम करने और बौक्साईट की खुदाई में लगाया गया। प्रवासी भारतीयों को अपनी भाषा सीखने, पढ़ने के लिए यहाँ सन् 1928 तक कोई व्यवस्थित योजना नहीं थी। मात्र सायंकालीन बैठकों एवं मंचों में कुछ मौखिक कार्य अवश्य हुए। भारतीय मजदूर किसानों के साथ आई कहानियाँ, किस्से और लोकगीत ही हिंदी-साहित्य थी, जो वाचिका परंपरा से चलती रही। इसी तरह से रामलीला और रासलीला का प्रचलन सन् 1920 से प्रारंभ हुआ। इनके लिए भारत से मँगवाई पुस्तकों की भाषा का उपयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त हरीश्चंद्र तारामती, रूप बसंत, रास रंग बहार, भक्त प्रल्हाद, हकीकत राय, श्रवण कुमार, नवलखाहार, कृष्णावतार, महाभारत, गरीबों की

पुकार आदि नौटंकियों का भी मंचन हुआ। जो प्रायः भारत के हिंदी साहित्य की देन रही। सन् 1918 के बाद धार्मिक सत्संगों में हिस्सा लेनेवाले प्रचारकों द्वारा पर्चे लिखे जाते थे, जबकि हिंदी लिपि जानने वाले अल्पसंख्यक थे। सन् 1940 के बाद आर्य समाज, सारामाका के हिंदी कार्यकर्ताओं द्वारा साइक्लोस्टाइल पर्चे वितरित किए जाने लगे और सन् 1945-46 से उसी तरह की पत्रिकाएँ प्रकाशित की गईं जिसमें भजन, कविता और एक पृष्ठ के लेखों का ही चलन था। टंकण और मुद्रण यंत्रों के अभाव में हिंदी का विकास बहुत कठिनाई से हुआ। पंडित लक्ष्मीप्रसाद बलदेव ने सत्यदर्शक पुस्तक लिखी, जिसकी पाँच सौ प्रतियाँ प्रकाशित हुईं।

2.4.2 सूरीनाम में हिंदी का वर्तमान स्वरूप :-

सूरीनाम में हिंदुस्तानियों की संख्या लगभग चालीस प्रतिशत है। हिंदुस्तान से आए होने के कारण यह अपने को हिंदुस्तानी कहलाना पसंद करते हैं और न कि भारतवंशी। अपनी संवाद भाषा को भी वे प्रायः हिंदुस्तानी कहते हैं। आधुनिक भारतवंशी अपनी वाणी को सरनामी कहते हैं। सूरीनाम के भारतवंशियों द्वारा प्रायः मानक हिंदी का प्रयोग नहीं होता है, इसका प्रयोग विशेष स्थितियों एवं अवसरों पर किया जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, हिंदी शैक्षिक केंद्रों, रेडियो, टेलिविजन, मंदिर, मसजिद, नाटक, कविता पाठ एवं संगीत के अवसरों पर मानक हिंदी का प्रयोग होता है। सरकारी स्कूलों में हिंदी भाषा नहीं पढाई जाती है। इसके अतिरिक्त इस देश में हिंदी भाषा में कोई भी पत्रिका या अखबार प्रकाशित नहीं होते हैं। हिंदी भाषा की पुस्तकों का कोई प्रकाशन नहीं होता। भजनावली और हिंदू तिथियों के कैलेंडर आदि का प्रकाशन वर्ष में एक बार होता है। प्रकाशन, पत्रिका, समाचार पत्र के अभाव के कारण पेशेवर लेखकों की भी कमी है।[6]

सूरीनाम देश की आजादी के बाद निबंध एवं आलेख लिखने में प्रगति हुई। सूरीनाम के लेखकों को प्रायः तीन भाषाओं से नियमित गुजरना पडता है - डच,

सरनामी, हिंदी। वे एक साथ तीन भाषाओं में लिखने का अभ्यास करते हैं, जिसमें हिंदी भाषा में लिखने की आदत कम-से-कम है, क्योंकि एक तो इस लिपि के भाषा के पाठकों की संख्या कम है, दूसरे उसकी इनके जीवन और संस्कृति में न के बराबर आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त टंकण, मुद्रण यंत्रों का अभाव है और हिंदी का कोई प्रकाशक नहीं हैं। सरस्वती नाम से एक प्रकाशन ने सन् 2000 से कुछ कार्य प्रारंभ किया है लेकिन वह अत्यधिक महँगा है।

सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर (2003) पर हिंदी लॉन स्थित मार्ग पर बन रहे सूरीनाम हिंदी परिषद् के नए भवन के कक्ष में बाबू लक्ष्मण सिंह की मूर्ति पूर्व विदेश राज्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह के करकमलों द्वारा स्थापित हुई। जिनके प्रत्यक्षदर्शी संरक्षण में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य संपन्न होता है। सन् 2006 से सूरीनाम हिंदी परिषद् की गतिविधियाँ उसी भवन में केंद्रित हैं जहाँ से प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, परिचय और प्रवेशिका के स्तर की कक्षाएँ होती हैं और प्रतिवर्ष 26 जनवरी के आस-पास वार्षिक परिक्षाएँ संपन्न होती हैं। उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए उनके क्षेत्र के मंदिरों के उत्सवों में प्रमाण-पत्र वितरण समारोह संपन्न होता है।

हिंदी अध्यापन के लिए प्रसिद्ध माता गौरी संस्थान की स्थापना स्व. रघुनंदन ब्रहमा तिवारी की दानशीलता एवं तत्कालीन भारत के सांस्कृतिक प्रवक्ता श्री महातम सिंह की प्रेरणा के फलस्वरूप, सूरीनाम की समग्र जनता के सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए 12 जून, सन् 1968 में हुई। संस्थान हिंदी भाषा और साहित्य के अध्यापन, प्रशिक्षण और अनुसंधान की दिशा में व्यवस्था करता है। साथ ही संस्कृत की प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करता है। संस्थान हिंदी भाषा और साहित्य से संबंधित गतिविधियाँ नियमित बनाए रखने का प्रयत्न करता है। यहाँ प्रो. विद्यानिवास मिश्र और प्रो. विष्णुकांत शास्त्री के नेतृत्व में विशेष हिंदी महोत्सव और तुलसीदास के महत्व पर सम्मेलन हुआ था।

अगस्त, 2001 में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने साहित्यिक लेखन की क्षीणता को देखते हुए, वहाँ के कवि-लेखकों के समुदाय को, भूतपूर्व सूरीनाम हिंदी परिषद् के निदेशक रह चुके भाषाकर्मी श्री हरिदेव सहतू के आवास पर एकत्रित किया। प्रत्येक शनिवार-रविवार के अवकाशी दिनों में बैठक करके साहित्य मित्र संस्था का 25 नवंबर 2001 को गठन किया। वर्ष भर बाद उनके संपादन में 'शब्द शक्ति' पत्रिका का प्रथम अंक जनवरी, 2003 को प्रकाशित हुआ। इसके बाद यह संस्था प्रो. पुष्पिता अवस्थी के नेतृत्व में निकेरी, सरमका के अनेकानेक क्षेत्रों में साहित्यिक सभा और गोष्ठियों का आयोजन करने लगीं और सूरीनाम में इस तरह से साहित्यिक सक्रियता पुनः जागृत हुई।

सूरीनाम देश में भारतवंशियों के प्रयत्न से सन् 1980 से सन् 1990 के बीच होली, दीपावली के अवसर पर 16 या बीस पृष्ठों की पत्रिका प्रकाशित होती थी, जो पर्याप्त नहीं थी। ऐसे में प्रो. अवस्थी ने अपने कार्यकाल में 'हिंदी शब्द शक्ति' और 'हिंदीनामा' पत्रिका का प्रकाशन कार्य प्रारंभ किया, जिससे (हिंदी लिपि) देवनागरी लिपि में हिंदुस्तानियों को पढ़ने और लिखने की आदत बने। इस प्रयत्न से बहुत सफलता भी प्राप्त हुई।

2.4.3 सूरीनाम में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1977 में 'सूरीनाम हिंदी परिषद् परिषद्' नामक संस्था की स्थापना सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में हुई। इस केंद्र में हिंदी की पढ़ाई प्रतिदिन शाम को होती है। इस केंद्र में परिचय, प्रथमा, मध्यमा का अध्ययन अविराम चल रहा है।

सूरीनाम में 56 प्रतिशत स्वैच्छिक संस्थाओं की पाठशालाएँ हैं, जिसके अंतर्गत कैथोलिक, आर्य-समाजी और सनातनी संस्थाएँ आती हैं। जिसमें सरनामी, देवनागरी लिपि और हिंदी की शिक्षा प्रदान की जाती है। जिनके अध्यापकों का संबंध सूरीनाम

हिंदी परिषद् से होता है। जिसके शिक्षण और प्रशिक्षण का काम सूरीनाम हिंदी परिषद् द्वारा प्रतिवर्ष संपन्न होता है।

2.4.4 सूरीनाम की हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

23 अप्रैल, 1889 ई. श्री लक्ष्मण सिंहजी सूरीनाम गंगा-1 नामक जहाज से आए। सूरीनाम देश में जमीनें खरीदीं और धार्मिक, सांस्कृतिक केंद्र, मंदिर, पाठशालाओं के लिए अपनी संपत्ति दान कर दी। भारत से आए हिंदुस्तानियों के कल्याण के लिए अनेक संगठन बनाए, जिसमें सूरीनाम अप्रवासी संगठन प्रमुख है। सन् 1910 में इसी संस्था ने भारतोदय संस्था के नाम से अपना रूपांतरण किया। श्री लक्ष्मण सिंहजी की उपस्थिती सूरीनाम के अप्रवासी भारतवंशियों के लिए वरदान सिद्ध हुई। श्री लक्ष्मण सिंहजी के जनवत्सल और कल्याणकारी आचरण के कारण एवं उनके दृढ चरित्रबल और आत्मबल के परिणामस्वरूप उस समय डच सत्ताधारियों का बडा-से-बडा अधिकारी, दिल से उनका सम्मान करता था और वे जहाँ से भी गुजरते थे, सम्मानस्वरूप सब नतमस्तक हो जाते थे। कई बडे सत्ताधारियों से उन्होंने भारतवंशियों की प्राणरक्षा की। सन् 1922, 10 जनवरी में बंबई में श्री लक्ष्मण सिंह का निधन हुआ, तो उनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए भारत से लक्ष्मण सिंहजी की मूर्ति बनवाकर मंगवाई गई। भाई लक्ष्मण सिंहजी की भूमि और संपत्ति को अनेक मंदिरों और संस्कृतिकर्मियों में बाँट दिया गया था, जिनके द्वारा धर्म-संस्कृति के कार्य चलाए और बढाए जा रहे हैं, जिसमें सूरीनाम हिंदी परिषद् का भवन प्रमुख है।[7]

सूरीनाम की हिंदी सेवी संस्थाएँ इस प्रकार है -

सनातन धर्म महासभा, आर्य समाज और आर्य दिवाकर महासभा, बाबू महातम सिंह, माता गौरी संस्थान, सूरीनाम हिंदी परिषद्, सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था, हिंदी प्रचार समिति एवं भारतीय राजदूतावास।

2.4.5 मीडिया :-

सन् 1970 से सन् 1985 के बीच प्रसिद्ध सामाजिक नाटक दूसरी बीबी, आजकल और आज, हाय रे पैसा, बहु भी बेटी है, मैं औरत हूँ, सैनिक के पिता, प्रवासी, कृष्ण और सुदामा, प्रवासी, रक्षाबंधन आदि लिखे गए और अनेकानेक बार मंचित हुए। हिंदुस्तानी बोली और हिंदी भाषा के मिले-जुले स्वरूप ने जन-मन को बहुत आकृष्ट किया। जिन्हें पुस्तक के रूप में जनता तक पहुँचाया गया।

2.5 ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो :-

2.5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

तीस मई 1845 को भारतीय गिरमिटिया मजदूरों से भरा 'फत्तैलरोजक' नामक जहाज़ 16 फरवरी 1845 को कोलकता से चलकर साढ़े तीन महीने की यात्रा पूरी करके ट्रिनिडाड के नेल्सन द्वीप पहुँचा। यह यात्रा अत्यंत दुखद, संघर्षपूर्ण और कष्टप्रद थी। किसी को विश्वास नहीं था कि वे सही सलामत पहुँचेंगे। इन तीन महीनों में उनके कई संगी साथी छुट गए थे। द्वीप पर पहुँचने वाले केवल 227 लोग थे। यहाँ पहुँचे भारतीय, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से थे और वे यहाँ गन्ने की खेती व बागवानी के लिए बंधक बनकर आए थे। पाँच वर्ष के बंधक-काल के बाद कुछ लौट गए परंतु बहुत से विविध कारणों से यहीं बस गए। वे अंग्रेजी नहीं जानते थे अतः उनसे बातें करने के लिए अभारतीयों को उनकी हिंदी भाषा, टूटी फूटी ही सही, सीखनी पढ़ी।

2.5.2 वर्तमान स्वरूप :-

संप्रति देश की तकरीबन 40 प्रतिशत आबादी की पुश्तैनी भाषा हिंदी है। ट्रिनिडाड स्पेनिश और ट्रिनिडाड फ्रेंच, क्रियोल की भांति ट्रिनिडाड भोजपुरी - हिंदी और बहुसंख्यक आबादी की भाषा हुआ करती थी। लकिन आज यह केवल बुजुर्गों द्वारा बोली जानेवाली भाषा बन गई है। ये बुजुर्ग जन भी बड़ी छोटी संख्या में ग्रामीण समुदायों में बिखरे पडे हैं। उनके लिए हिंदी उनकी मातृभाषा है। आज ट्रिनिडाड में

सभी हिंदीभाषी, हिंदी व ट्रिनिडाड अंग्रेजी बोलते हैं। भारतीय समुदाय की तीसरी पीढी के युवा सदस्य एकलभाषी हैं। अधेड उम्र के कुछ सदस्य अधकचरी हिंदी बोलते हैं और उस भाषा का मिले-जुले रूप में इस्तेमाल करते हैं। इन दोनों पीढ़ियों के हाथों हिंदी भाषा की शब्द संपदा और वाक्यों के व्याकरणिक विन्यास का भारी नुकसान हुआ है। भारतीय समुदाय में किशोरों का हिंदी ज्ञान तो खाने-पीने की चीजों, बरतनों, गीतों, स्थानों, समारोहों और रिश्ते-नाते बतानेवाले शब्दों तक ही सीमित है। इस दशा में जब तक कि सामाजिक-भाषिक चलन की दिशा मोड़ी नहीं जाती है तब तक लगता है कि देश में हिंदी बिलकुल लुप्त हो जाएगी, क्योंकि यह केवल वयस्कों के बीच ही सिमटकर रह गई है। और ऐसे भी लोग आज कुछ ही रह गए हैं।

निःसंदेह हिंदी ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो की द्वितीय भाषा है। ट्रिनिडाडी अंग्रेजी की शब्दावली में भी इसकी अच्छी घुसपैठ है। नस्ल व जातियों के इतर देश के सभी नागिरकों की भाषा में हिंदी उपस्थित है। रोटी, साडी, दुलहिन और नानी जैसे शब्दों का प्रयोग सामान्य तौर पर किया जाता है। यह एक जीवंत भाषा है और फ्रेंच अथवा स्पेनिश से अधिक बोली जाती है। किंतु विडंबना है कि अधिकांश वरिष्ठ विद्यालयों में ये दोनों विदेशी भाषाएँ पढाई जाती हैं। ट्रिनिडाड के सभी नागिरकों का रोजाना हिंदी भाषा से संपर्क होता है। घर में बडे-बूढों से उन्हें हिंदी में बातचीत करनी पडती है। पंडितों के उपदेश व भजन-कीर्तन हिंदी में सुनने पडते हैं।

ट्रिनिडाड में हिंदी कैरोनी, कूवा, चौगुआनाज और सेन फर्नांदो जैसे क्षेत्रों में बोली जाती है। इन क्षेत्रों में हिंदुओं व मुसलमानों की घनी आबादी है। इसाई भारतीयों की बडी आबादी भी हिंदी का पहली या दूसरी भाषा के रूप में इस्तेमाल करती है। भारत को ट्रिनिडाड के भारतवंशी 'नानी माता पुकारते हैं। हिंदी इनके लिए भाषा मात्र न होकर संस्कृति की संवाहिका है तथा यहाँ के भारतवंशियों के दुःख-दर्द, भाई-चारे की भाषा रही है। भारतीय संस्कृति की बलवती धारा 'रामायण' और 'हनुमान चालीसा'

के जरिए ट्रिनिडाडवासियों की शिराओं में बहती रहती है। ट्रिनिडाड के मंदिर पूजा पाठ के आयोजनों के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं - हिंदी कक्षाओं, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन। ट्रिनिडाड में लगभग 400 मंदिर हैं, जिनमें अधिकांश में हिंदी पढाई जाती है। यहाँ हिंदी पढ़ाने का कार्य अधिकांशतः पंडित करते हैं। हिंदी व भारतीय संस्कृति पर संगोष्ठियों, प्रतियोगिताओं, नाटकों, गीत व कवि सम्मेलनों का आयोजन भी होता रहता है।

2.5.3 ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1910 में ट्रिनिडाड की पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में भोजपुरी हिंदी शामिल की गई थी। सन् 1911 तक कनाडाई मिशन स्कूल की सभी शाखाओं में यह भाषा अनिवार्य विषय थी और शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रत्येक शिक्षक को उसे सीखना पडता था। किंतु विषय के रूप में यह अत्यंत सीमित थी। गाने व प्रार्थना में इसका उपयोग किया जाता था। आज भी हिंदी एक भाषा के रूप में पढाई जाती है, भले ही सीमित रूप से इसका पठन-पाठन किया जाता हो। सनातन धर्म महासभा (एस.डी.एम.एस.) के नियंत्रण में सभी प्राथमिक व उच्चस्तर विद्यालयों में इसका अध्ययन किया जाता है। भारतीय विद्या संस्थान (बी.वी.एस.) के 25 केंद्रों में लगभग 4000 विद्यार्थी हैं। उच्चस्तर पर दस सरकारी विद्यालयों में ट्रिनिडाड व टोबॅगो के हिंदी निधि न्यास की देख-रेख में हिंदी पढाई जाती है।

2.5.4 ट्रिनिडाड की प्रमुख हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

ट्रिनिडाड की प्रमुख हिंदी सेवी संस्थाएँ निम्नलिखित हैं - आर्य समाज, भारतीय विद्या संस्थान, हिंदी निधि, सनातन धर्म महासभा, कबीर पंथ आदि। सन् 1992 से यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज़ में स्नातक स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन आरंभ हो गया। इसके आलावा ट्रिनिडाड के एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा संस्थान 'नीहेर्स्ट' के

स्कूल ऑफ लैंग्वेजेज़ में भी हिंदी कक्षाएँ चलाई जाती हैं। कुछ अन्य संस्थाएँ भी हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

2.5.4.1 आर्य समाज :-

अपने धर्म, संस्कृति और मातृभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए सन् 1904 में आर्य समाज की स्थापना हुई। इसके माध्यम से वैदिक संस्कृत के साथ हिंदी के प्रयोग को बल मिला। सन् 1934 में दीपावली के अवसर पर यहाँ भव्य आर्य समाज मंदिर की नींव रखी गई, जिसमें हिंदी और संस्कृत की सायंकालीन रविवारीय कक्षाएँ चलती हैं। इस समय पूरे देश में दस स्कूलों में और पच्चीस सभागारों में हिंदी के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था है। सेंट जोसफ स्कूल में आर्य प्रतिनिधियों ने पहला हिंदी स्कूल खोला था और यहीं से आर्य संदेश नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। सन् 1952 में हिंदी एज्युकेशन बोर्ड की स्थापना हुई जो गाँव-गाँव में हिंदी की पाठशाला खुलवाकर परीक्षा और अध्यापन का कार्य करता है।

2.5.4.2 भारतीय विद्‌या संस्थान :-

सन् 1906 में भारतीय विद्‌या संस्थान की स्थापना प्रो. हरिशंकर आदेश ने की थी। प्रो. आदेश जो भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली द्‌वारा यहाँ हिंदी अध्यापन के लिए आए थे, लेकिन कालांतर में वे वहीं के निवासी हो गए और अब तक इस संस्थान से जुड़े हैं। इस संस्थान में हिंदी, संस्कृत के साथ गायन, वादन, नृत्य आदि की शिक्षा दी जाती है और हिंदी के प्रचार-प्रसार में इसका भरपूर योगदान है। इस संस्थान की हिंदी पाठ्‌यपुस्तक 'हिंदी विवेक' दो भागों में प्रकाशित हो चुकी है तथा 'ज्योति' नाम की द्‌वैभाषिक हिंदी-अंग्रेजी पत्रिका का प्रकाशन भी होता है।

2.5.4.3 हिंदी निधि :-

ट्रिनिडाड में हिंदी निधि नामक संस्था चंका सीताराम के नेतृत्व में सन् 1986 से हिंदी के पठन-पाठन का कार्य मनोयोग से करती चली आ रही है। इस संस्था ने

ट्रिनिडाड के स्कूलों में स्पेनिश, फ्रेंच व लैटिन की भांति हिंदी को भी वैकल्पिक स्थान दिलाया। इसके द्वारा प्राइमरी से लेकर माध्यमिक स्तर तक हिंदी की पढ़ाई होती है तथा कई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जैसे हिंदी निधि एवं हिंदी परिचय। इन्होंने 'विदेशी हिंदी प्राइमर' भी प्रकाशित करवाया। इस संस्था ने सन् 1992 में प्रथम अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसकी सफलता से प्रेरित होकर इन्होंने भारतवंशियो के आगमन के 150वें वर्ष पर पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन भी आयोजित किया।

2.5.4.4 सनातन धर्म महासभा :-

हिंदी के माध्यम से सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों को गतिशील बनाने में सनातन धर्म महासभा का प्रमुख स्थान है। इस समय यहाँ 45 महासभा कार्य कर रही हैं। जहाँ मानस, गीता, भागवत, दुर्गा पूजा आदि के समय हिंदी को ही प्राथमिकता मिलती है। सन् 1979 में एक भारतीय प्रकाशन संस्था ने हिंदी पाठ्यपुस्तकों की 3000 प्रतियाँ छपवाकर यहाँ बँटवाईं थीं। यहाँ के प्रत्येक मंदिर में सायंकालीन हिंदी पाठशालाएँ चलती हैं तथा हिंदी की गतिविधियों का आयोजन होता रहता है। हिन्दू पर्वों एवं त्यौहारों पर इसका विशेष महत्त्व होता है जिसके द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार स्वाभाविक रूप से होता रहता है।

2.5.4.5 कबीर पंथ :-

ट्रिनिडाड में कबीर पंथियों का एक प्रमुख समूह है जहाँ कबीर की वाणी, सबद, रमैनी, साखी और दोहों का पाठ होता है। इसके माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार होता ही है साथ ही निर्गुण मत पर चर्चा भी होती है। इस समय ट्रिनिडाड में इसकी कुल तीन पाठशालाओं में हिंदी की पढ़ाई पंथ की देखरेख में होती है। कबीर वाणी पुस्तिका का प्रकाशन भी हो चुका है। कबीर पंथी साधू ही अपने व्याख्यानों से भारतीय संस्कृति की व्याख्या करते हैं तथा हिंदी में पूरा आयोजन होता है।

2.5.4.6 भारतीय दूतावास :-

ट्रिनिडाड में हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय दूतावास एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।[8]

2.5.5 मीडिया :-

ट्रिनिडाडवासी हिंदी फिल्म तथा हिंदी गीतों को अत्यधिक पसंद करते हैं और यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा का भी बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी की फिल्में सिनेमाघरों में तथा वीडियो पर बहुत देखी जाती हैं। रेडियो तथा टी.वी पर हिंदी के गीतों के अतिप्रिय प्रसारण होते हैं। ट्रिनिडाड में हिंदी को रेडियो से पढ़ाने का प्रयत्न हुआ जिसकी गति कभी तेज तो कभी मंद रही। देश में दो रेडियो स्टेशनों से सप्ताह में आठ बार भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। पाँच रेडियो स्टेशन चौबीसों घंटे और हफ्ते के सातों दिन भारतीय संगीत का प्रसारण करते हैं। ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो टेलीविजन (टी.टी.टी.) शनिवार को मस्ताना बहार तथा - अथवा एम.टी.वी. इंडिया-चिट-ओ-चैट का और रविवार को एम.टी.वी.इंडिया का प्रसारण करता है।

2.6 जमैका :-

2.6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

जमैका में भारतीय मजदूर सर्वप्रथम 10 मई 1845 को मैडस्टोन नामक जहाज से आए। ये मजदूर आए तो थे एक एग्रीमेंट पर किंतु एग्रीमेंट खत्म होने पर कुछ ही भारतवर्ष लौटे, अधिकतर वहीं बस गए। जमैका में 1930 के बाद भारत से व्यापारी (सिंधी और गुजराती) और पेशेवर (डॉक्टर, अर्थशास्त्री, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर आदि) लोग भी गए। इस देश में भारतीयों की संख्या, कुल आबादी के केवल एक प्रतिशत ही है। भारतीय मजदूर अधिकतर उत्तर प्रदेश और बिहार से थे, अतः हिंदी ही उनकी भाषा थी। ये अपने साथ रामायण, श्रीमद्भगवत, कबीर, सूरदास

आदि की पुस्तकें और गाने-बजाने के लिए झांझर-मजीरा, तबला, हारमोनियम वगैरह ले गए थे। जब फुर्सत मिलती रामायण, गीता आदि पढ़ते, भजन-गीत गाते, किस्से कहानी कहते-सुनते, सब हिंदी में ही। किंतु जमैका में ये मजदूर बहुत थोडी संख्या में आए थे। एक तो संख्या में थोडे थे, उस पर अंग्रेज मालिकों द्वारा इनके परिवारों को एक साथ नहीं रखा जाता था। प्रशासन् और चर्च का दबाव इतना अधिक और इस प्रकार का था कि बहुत सारे मजदूर इसाई हो गए। शासन् द्वारा अंग्रेजी सीखना जरूरी कर दिया गया था। धर्म-परिवर्तन, अंग्रेजी भाषा का प्रयोग, वर्ण, शादी-विवाह के कारण इन गिरमिटिया मजदूरों के लिए अपनी संस्कृति और भाषा को बचाना बहुत मुश्किल हो गया। हिंदी पढ़ने-पढ़ाने की बात तो दूर, बोलचाल में भी हिंदी कुछ घरों तक ही सीमित होकर रह गई। वैसे आजा-आजी, भैया-भौजी, खटिया-बिछौना, धोती-साड़ी, कुरता-पैजामा, भात-दाल, रोटी-तरकारी, हलवा-फुलौरी, पाँवलागी भाई जी, जै रामजी आदि हिंदी शब्द तो इन गिरमिटिया मजदूरों की दूसरी-तीसरी पीढ़ी में आज भी सुनने को मिलते हैं।

2.6.2 वर्तमान स्वरूप :-

कुछ व्यक्तियों एवं धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संगठनों ने संस्कृति को बचाए रखने की भरसक कोशिश की है, पर हिंदी भाषा तो लुप्त-सी हो गई है। किंग्सटन, जमैका में दो मंदिर हैं सनातन धर्म मंदिर और प्रेमा सत्संग मंदिर - जहाँ पूजा-पाठ, भजनादि हिंदी में ही होते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन पर हिंदी में ही गीत नृत्यादि होते हैं। अजीब बात तो यह है कि भजन, गीत जो ये लोग गाते हैं सबकुछ रोमन लिपि में लिखा होता है, और जो रोमन लिपि में लिखा होता है वह भी हिंदी के शब्दों को विकृत करके। लोग अर्थ नहीं जानते हैं किंतु जिस तरह धुन और लय में भाव-विभोर होकर ये गाते हैं वह मनमुग्ध कर देता है।

2.6.3 जमैका में हिंदी शिक्षण :-

जमैका में हिंदी की पढाई के लिए उचित कदम पहली बार भारतीय उच्चायोग की ओर से हुआ। 1991 में उच्चायोग के तत्कालीन प्रथम सचिव श्री आर. पी. करे का ध्यान प्रो. सीताराम पोद्दार की ओर गया, जो उच्चायोग का या सामाजिक/सांस्कृतिक/धार्मिक संस्थाओं का कोई भी समारोह हो या कोई अन्य अवसर हो, सदैव हिंदी में ही बात करना पसंद करते थे। श्री करे ने, यह नोट किया और एक दिन उनको अपने ऑफिस में बुलाया और हिंदी पढ़ाने का प्रस्ताव रखा।[9] वे पेशे से मेडिकल डॉक्टर हैं। उस समय वे युनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज, मोना (जमैका) के शरीर-रचना विभाग में वरीय व्याख्याता के पद पर काम कर रहे थे। उन्हें हिंदी पढ़ाने का (जो उनकी मातृभाषा है) शुभ अवसर मिल रहा था, सो उन्होंने खुशी-खुशी हामी भर दी। भारतीय उच्चायोग की अनुशंसा पर भारत सरकार के हिंदी विभाग द्वारा उन्हें हिंदी शिक्षण की नियुक्ति मिल गई। तब से वे जमैका में हिंदी शिक्षण एवं प्रचार में लगे हैं। हिंदी पढ़ाने के लिए क्लब इंडिया (किंग्सटन की एक भारतीय सामाजिक संस्था) में सुविधाजनक स्थान मिल गया। वे उस समय उस क्लब के सचिव थे, अतः प्रबंधक समिति से आसानी से स्वीकृति मिल गई। जमैका में भारत के उच्चायोग की ओर से हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था का होना सभी के लिए, खासकर जमैकन-भारतीय (गिरमिटिया मजदूरों के वंशज) और प्रवासी भारतीयों के लिए बडी खुशी की बात होनी चाहिए थी किंतु प्रवासी भारतीयों ने जो विरोध किया उसकी कल्पना उन्होंने स्वप्न में भी नहीं की थी। कुछ भारतीयों ने कहा कि क्लब में हिंदी ही क्यों, मराठी, गुजराती, तमिल भी पढाई जानी चाहिए। जब हिंदी कक्षाएँ चलती थीं तब कुछ भारतीय परिवार के बच्चे बाहर शोरगुल करते और जोर-जोर से अ-आ, इ-ई गुरुजी बोलकर परेशान करते। जो हिंदी पढ़ने आते उन्हें तंग करते। खुद भारतीयों द्वारा इस कदर हिंदी भाषा की उपेक्षा एवं उसका तिरस्कार आश्चर्यजनक घटना थी। जमैका में हिंदी पढाना एक बहुत बडी चुनौती है। गिरमिटिया मजदूरों के वंशज तो

रोमन लिपि में लिखे भजन और गीतों से ढोलक और हरमोनियम पर गाकर-नाचकर मस्ती से फगुआ और दीवाली मना लेते हैं, पूजा-पाठ कर लेते हैं, शादी-विवाह भी रचा लेते हैं। प्रवासी भारतीयों के बच्चे हिंदी सीखना निरर्थक समझते थे इसका एक और कारण था कि उनके माता-पिता ही हिंदी को महत्त्व नहीं देते थे क्योंकि उनका सारा काम अंग्रेजी से हो जाता था।

शुरू-शुरू में केवल दो-तीन इंडो-जमैकन या इंडियन बच्चे हिंदी पढ़ने आ जाते थे। जमैका में हिंदी की पढाई होती है इसकी व्यापक रूप से जानकारी देने के लिए एक एफ्रो-जमैका हिंदी विद्यार्थी की राय पर स्थानीय अखबारों में हिंदी शिक्षण कार्यक्रम के बारे में विज्ञापन देने का बहुत अच्छा असर पडा। एक साप्ताहिक संडे हेराल्ड में हिंदी के बारे में लेख भी निकला। इन सबसे हिंदी के प्रचार में मदद मिली। इसके बाद से हिंदी पढ़ने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। अब हर वर्ष हिंदी में नामांकन के लिए विज्ञापन निकलता है। संडे हेराल्ड हिंदी समारोह की रिपोर्ट भी छापता है।

जमैका में हिंदी विद्यार्थियों में अधिकतर एफ्रो-जमैकन होते हैं। ये विविध क्षेत्रों से आते हैं - कोई सूचना एवं पर्यटन विभाग में काम करता है तो कोई विदेश विभाग में जहाँ हिंदी का ज्ञान उनके काम में भारतीयों से संपर्क में सहायक होगा। कोई भारत दर्शन के इच्छुक हैं, इसलिए हिंदी पढ रहा है तो कोई हिंदी फिल्मी गानों का अर्थ जानने के लिए। इन विद्यार्थियों के लिए हिंदी बिलकुल विदेशी भाषा है, क्योंकि इनकी कोई हिंदी की पृष्ठभूमि नहीं होती है।

हिंदी पढ़ाने के लिए कोई आधुनिक सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। वही पुराने तरीकों का प्रयोग होता है जैसे कि श्याम पट्ट, खडिया और झाडन से काम चलता है। जिन किताबों की जरूरत होती है, वे आसानी से नहीं मिलती। अपने बनाए नोट्स और उनकी प्रतिछवियों (ज़ेरॉक्स) से काम निकाला जाता है। हिंदी क्लब परिवार इस दिशा

में काफी सहायक सिद्ध हो रहा है। पूर्व और वर्तमान हिंदी विद्यार्थियों में हिंदी को आगे ले जाने के लिए उत्साह है। प्राप्त सुविधाओं से ही उन्होंने प्रारंभिक और उन्नत पाठ्यक्रम का विकास किया है और अब हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा पाठ्यक्रम का भी विकास किया गया है। जमैका में जो हिंदी भाषा में दक्षता प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए ये डिप्लोमा अति उपयुक्त है, क्योंकि केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की छात्रवृत्ति मिलना किसी जमैकन छात्र के लिए आसान नहीं है। प्रारंभिक पाठ्यक्रम 1 वर्ष का, उसके बाद उन्नत पाठ्यक्रम 2 वर्ष का और उसके बाद डिप्लोमा पाठ्यक्रम 2 वर्ष का है। हिंदी की पढाई सप्ताह में दो दिन शनिवार और रविवार को 2 घंटे, सुबह 10 बजे से 12 बजे दोपहर तक होती है। हिंदी पढ़ने - लिखने और वार्तालाप करने में विद्यार्थी योग्य हो इसकी चेष्टा की जाती है। वर्ष के अंत में परीक्षाएँ होती हैं और सफल विद्यार्थियों को भारत के स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के शुभ अवसर पर उच्चायुक्त द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते हैं।

2.6.4 हिंदी संस्थाएँ :-

2.6.4.1 प्रेमा सत्संग ऑफ़ जमैका :-

गयाना के कुछ गिरमिटिया मजदूरों के वंशज, जो जमैका में बस गए हैं, जिनमें डॉ. हेमचंद्र परसौद का नाम उल्लेखनीय है, उन्होंने 1960 के दशक में जमैका में हिंदी पढ़ाने की कोशिश की थी, किंतु ज्यादा समर्थन नहीं मिलने के कारण वह समाप्त हो गई। प्रेमा सत्संग ऑफ जमैका (धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्था) जिसके संस्थापकों में डॉ. परसौद भी हैं, की अभी भी कोशिश हिंदी को बढावा देने की रहती है। गर्मियों की छुट्टियों में वे लोग शिक्षण शिबिरों का आयोजन करते रहते हैं, जिसमें हिंदी शिक्षण का कार्यक्रम भी रखते हैं।

2.6.4.2 हिंदी क्लब ऑफ जमैका :-

हिंदी सीख लेने के बाद हिंदी में बातचीत के अभ्यास के लिए हिंदी परिवार जैसा उपयुक्त वातावरण हो इसके लिए जनवरी 2004 में ‘हिंदी क्लब ऑफ जमैका’ की स्थापना की गई। प्रो. सीताराम पोद्दार ने ‘हिंदी में बातचीत कीजिए’ पुस्तक भी लिखी। हिंदी कलब में विद्यार्थियों के बीच मेलजोल, भाईचारा, हिंदी परिवार जैसे वातावरण को बढावा दिया जाता है, ताकि वे आपस में हिंदी में बात करें। पिकनिक का आयोजन भी किया जाता है जिसमें भारतीय उच्चायोग के स्टाफ भी शामिल होते हैं। उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के बीच हिंदी में बातचीत करने में जो झिझक होती है वह दूर हो।

2.6.4.3 भारतीय उच्चायोग :-

यहाँ के हिंदी सेवियों का मानना है कि जमैका जैसी जगह में यदि भारतीय उच्चायोग का ध्यान नहीं गया होता तो हिंदी शिक्षा की शायद ही कोई व्यवस्था कभी हो पाती। व्यवस्था की शुरुआत करा देने के बाद उसे सँभालने और विकसित करने की भी जरूरत होती है। उच्चायक्त-राजदूत यदि अपने यहाँ आयोजित समारोहों में हिंदी का प्रयोग करें तो उससे ही हिंदी का महत्त्व लोगों को समझ में आता है और हिंदी के प्रचार में सहायता मिलती है। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर भारतवर्ष के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री के भाषण हिंदी में ही पढे जाते हैं।

जमैका में हिंदी की पढाई जुलाई-अगस्त 1991 में शुरू हुई। प्रो. पोद्दार और उनका साथ देने के लिए उनकी पत्नी, ने हिंदी शिक्षण कार्यक्रम अविराम चलता रहे इसलिए, वर्षों संघर्ष किए हैं। हिंदी पुस्तकों के लिए बार-बार आग्रह करने पर कभी-कभी सफलता मिली। सन् 1991 के बाद सन् 2005 में एक उच्चायुक्त श्री कैलाश लाल अग्रवाल की नियुक्ति जमैका में हुई। वे मार्च 2005 में आए और जुलाई 2007 में सेवानिवृत्त होने के बाद चले गए। अपने सेवाकाल में वे जो हिंदी के लिए कर गए, वैसा पहले किसी ने नहीं किया। उनके प्रयास से पहली बार जमैका में विश्व हिंदी

दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हिंदी में कविता, कहानी, लेख, गीत गायन, नृत्य, हास्य वार्ता का आयोजन किया गया और सफल छात्र-छात्राओं को पुरस्कार दिए गए। इस समारोह में इन छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसकी सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की। लोग यह देखकर दंग थे कि एफ्रो-जमैकन छात्रगण भी इतनी शुद्ध हिंदी, बोल सकते हैं और इतना सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं। विश्व हिंदी दिवस मनाने के लिए गत कुछ वर्षों से अनुदान मिल रहा है और वे हर वर्ष हिंदी दिवस मना रहे हैं। हिंदी प्रतियोगिताओं में अब उन भारतीयों के बच्चे भी भाग लेते हैं जो शुरू में उनका मज़ाक उडाया करते थे। जमैका के हिंदी शिक्षण कार्यक्रम की सराहना हो रही है।

हिंदी क्लब द्वारा जब भी पिकनिक का आयोजन किया गया भारतीय उच्चायोग के स्टाफ और उनके परिवार ही नहीं, उच्चायुक्त श्री अग्रवाल ने स्वयं भी शामिल होकर उत्साह बढ़ाया। हिंदी पाठ्यक्रम के विकास को भी प्रोत्साहन दिया। सन् 2008 में एक हिंदी छात्रा ने हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा परीक्षा में उत्तीर्ण होकर जमैका के हिंदी पाठ्यक्रम को स्थापित करने में अहम् भूमिका निभाई है।

2.6.5 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा एवं हिंदी गीत यहाँ काफी पसंद किए जाते हैं। टी.वी में हिंदी सिनेमा एवं गीत देखे जाते हैं। हिंदी गीत यहाँ के रेडियो स्टेशन में लगते हैं। भारतीय संस्कृति से जुड़े रहने के लिए उनके पास यही कुछ महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं।

2.7 गयाना :-

2.7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

13 जनवरी, 1838 को 'टिवी' नामक जहाज 249 श्रमिकों को लेकर तथा ठीक उससे 16 दिन बाद 'हेसपरस' नामक जहाज 165 श्रमिकों को लेकर कोलकता से गयाना के लिए विदा हुआ। इन 414 यात्रियों में से 14 की मृत्यु यात्रा के दौरान हो

गई, जिनके शव समुद्र में फेंक दिए गए। दोनों जहाज 5 मई, 1838 को डेमररा (गयाना की वर्तमान राजधानी जार्जटाउन) पहुँचे। इनमें से 150 मजदूरों की भरती छोटानागपुर (संथाल परगाना) के आदिवासी इलाके से की गई थी, जिन्हें अँगरेज़ हिल कुली कहते थे, तथा शेष मजदूर बंगाल के वर्धमान और बांकुरा जिले के थे। उन्हें कुछ भी नहीं मालुम था कि वे कहाँ जा रहे हैं। बाद में बिहार, उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण भारत के कुछ राज्यों के मजदूर गयाना भेजे गए। इन गिरमिटया मजदूरों ने ऐसे बैठका बना लिये थे जहाँ वे रामायण और हनुमान चालिसा का पाठ करते थे तथा डिबिया जलाकर अपने बच्चों को हिंदी पढाते थे। जाहिर है कि भारत से सन् 1838 में तथा उसके बाद गिरमिटिया मजदूर बनकर जानेवाले लोग बहुत शिक्षित और विद्वान नहीं थे, लेकिन बागान मालिकों के अत्याचार और अनाचार से तंग आकर अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्त्व को बचाने के लिए वे संकटमोचक के रूप में हिंदी भाषा और भारतीय जीवन-पद्धति की ओर मुडे थे।

सन् 1838 से सन् 1917 के बीच जो मज़दूर भारत से गयाना आए, वे अपने साथ भारतीय रीति-रिवाज, परंपरा, धर्म, भाषा और संस्कृति लाए, जो आज भी न्यूनाधिक मात्रा में गयाना में सुरक्षित है।[10] यही कारण है कि भारतीय भोजन, भारतीय त्यौहार, जन्मोत्सव, मुंडन, विवाह-संस्कार, श्राद्ध आदि की परंपरा भारतवंशियों के बीच विद्यमान है। दीपावली, फगवा (होली), ईद जैसे त्यौहार गयाना में राष्ट्रीय त्यौहार माने जाते हैं। गंगा स्नान तथा रमजान देशभर में निष्ठापूर्वक मनाए जाते हैं। यद्यपि हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन को ब्रिटीश उपनिवेशिक व्यवस्था के अंतर्गत मान्यता मिल गई थी। लेकिन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भारत के धार्मिक-सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। भारत के महान् क्रांतितिकारी तथा समाज सुधारक भाई परमानंद तथा महात्मा गाँधी के अनन्य सहयोगी दीनबंधू सी.एफ.एंड्रयू के सदप्रयासों से गयाना के सभी आर्यसमाज मंदिरों एवं

भारतवंशियों के अन्य समाजसेवी संगठनों में हिंदी की शिक्षा प्रारंभ हो गई थी। इन हिंदी विद्यालयों के शिक्षकों को बागान मालिक मामूली वेतन भी देते थे। गयाना के स्वतंत्र होने से पहले ही भारत सरकार गयाना में भारत से हिंदी तथा संस्कृत पढ़ाने के लिए अध्यापक भेजती थी जो देश के सुदुरवर्ती क्षेत्रों में हिंदी पढाते थे। आज भी गयाना के भारतीय समुदाय में श्रीमती रत्नमयी दीक्षित, श्री योगिराज, श्री महातम सिंह के नाम आदर से लिए जाते हैं। 30 दिसंबर, 1974 को भारत तथा गयाना के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान समझौता संपन्न होने के बाद हिंदी शिक्षण को अधिकारिक रूप से बल मिला। सन् 1973 में गयाना की राजधानी जार्जटाऊन में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की स्थापना हो चुकी थी। सन् 1974 से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् में भी हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की गई तथा गयाना विश्वविद्यालय में भी विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया। गयाना के कुछ सेकेंडरी स्कूलों में भी पहले हिंदी पढाई जाती थी।

गयाना में सामान्य रचनात्मक स्तर पर भी कुछ भारतवंशियों ने लेखन कार्य किया है, जिनमें पं. रिपुदमन प्रसाद, पं. रामलाल, पं. कूपचंद, पं. दुर्गाप्रसाद, रंडल बूटी सिंह, के.डी.तिवारी, बी.डी.मिसिर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। लेकिन इनके लेखन में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, भारत माता की वंदना, हिंदू देवी-देवताओं की उपासना, भारतीय महापुरुषों की प्रशंसा और यशोगान की ही प्रधानता है। साहित्यिक दृष्टि से इनके लेखन का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। यहाँ के भारतवंशियों ने कुछ भोजपुरी और हिंदी लोकगीतों की रचना की है, जो देश भर में ही नहीं, बल्कि अन्य पडोसी देशों में भी लोकप्रिय हैं।

2.7.2 वर्तमान स्वरूप :-

गयाना में सन् 1838 में हिंदी का प्रवेश हुआ था। आज हिंदी यहाँ व्यवहार की भाषा नहीं बल्कि भारतवंशियों की अस्मिता और पहचान की भाषा बन गई है।

भारतवंशियों की चौथी पीढी अपनी पहचान की तलाश में भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना चाहती है। इन्हें अब यह अनुभव हो रहा है कि जिस हिंदी भाषा से वे बिल्कुल अलग-थलग हो गए हैं, उसके बिना वे अपने स्वाभिमान और अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकते। गयाना में हिंदी भारतवंशियों की अस्मिता के लिए एक अनिवार्य तत्त्व बन गई हैं। भारतीय श्रमिकों की पहली पीढ़ी ने यातना एवं प्रताडना झेलकर अपने बच्चों को शिक्षित किया, जिसके कारण उनकी दूसरी तथा तीसरी पीढी ने सरकार तथा प्रशासन् के उच्च पदों पर विराजमान होकर भारतीय समुदाय का सम्मान बढ़ाया। डॉ. छेदी गन यहाँ के राष्ट्रपति बने तो श्रीदत्त रामफल कॉमनवेल्थ के महासचिव चुने गए तथा सैय्यद शाहबुद्दीन अतंरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश, पं. रिपुदमन प्रसाद, श्री यशप्रसाद, कामनीशंकर जैसे अनेक नाम हैं जो सरकार, व्यापार और कृषि के क्षेत्रों में शीर्ष पदों पर हैं। लेकिन गयाना के उन श्रमिकों की चौथी पीढी अपनी भाषा भूल चुकी है तथा भाषा के बिना संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को बचाए रखना कठिन प्रतीत होता है।

2.7.3 गयाना में हिंदी शिक्षण :-

गयाना हिंदी प्रचार सभा की अध्यक्षा सुश्री वर्षिनी उधो सिंह जो कि गयाना के स्कूलों में हिंदी शिक्षण लाने का भरसक प्रयास कर रही हैं का कहना है कि गयाना के स्कूलों में अंग्रेजी के अतिरिक्त फ्रेंच और स्पेनिश भाषाओं की शिक्षा तो दी जाती है, लेकिन हिंदी नहीं पढाई जाती। यहाँ के विद्यालयों में वैकल्पिक विषय के रूप में फ्रेंच तथा स्पेनिश के साथ-साथ हिंदी शिक्षण की भी व्यवस्था की जानी चाहिए तथा गयाना विश्वविद्यालय एवं भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में पुनः उच्च स्तर पर अत्याधुनिक वैज्ञानिक शिक्षण पद्धति से हिंदी पढाई जानी चाहिए। गयाना के विद्यालयों में तो भारत के केंद्रीय हिंदी संस्थान से, हिंदी की शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश वापस जानेवाले छात्र भी हिंदी पढा सकते हैं। इससे उन्हें भी हिंदी प्रशिक्षण की

सार्थकता सिद्ध होगी और आर्थिक लाभ भी मिलेगा। गयाना विश्वविद्यालय और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में, भारत सरकार भारतीय सांस्कृतिक सबंध परिषद् की ओर से प्राध्यापक भेजे जाने चाहिए, जो पूरे देश में हिंदी शिक्षण को सही दिशा प्रदान करेंगे तथा हिंदी शिक्षण में समन्वय स्थापित करेंगे।

वैश्वीकरण के बढते प्रभाव और शिक्षण की सुविधा के अभाव में आज गयाना में हिंदी का अस्तित्त्व समाप्त हो रहा है। लेकिन पं. रिपुदमन प्रसाद अपने भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में तथा नेशनल सेंटर फॉर एज्युकेशनल रिसर्च के निदेशक मोहनदत्त गुलशरण और गयाना हिंदी प्रचार सभा के सदप्रयत्नों से हिंदी भाषा के शिक्षण एवं प्रचार-पसार का कार्य गयाना में चल रहा है। न्यूयॉर्क में जुलाई, 2007 में आयोजित आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में गयाना का प्रतिनिधित्व करते हुए तत्कालीन गयाना के राष्ट्रपति की पत्नी, सुश्री वार्शिनी जगदेव ने, यह विचार व्यक्त किया था कि उनकी यह हार्दिक इच्छा है कि उनके देश में पाँच वर्षों के अंदर लोग हिंदी बोलने लगें। उन्होंने इसके लिए एक तेरह सूत्री सुझाव भी दिया था, जो अत्यधिक व्यावहारिक और उपयोगी है। भारत सरकार और गयाना सरकार को इन सुझावों पर तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए।

संप्रति गयाना के कुछ धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा हिंदी के अनौपचारिक शिक्षण की व्यवस्था की गई हैं। गयाना आर्य प्रतिनिधि सभा, गयाना हिंदू धार्मिक सभा, महात्मा गाँधी संगठन, गयाना हिंदी प्रचार सभा द्वारा संचालित हिंदी विद्यालय की कक्षाओं में पाँच वर्ष से अस्सी वर्ष के शिक्षार्थी हिंदी भी पढ़ने आते हैं। इन कक्षाओं में सब्जी विक्रेता से लेकर उच्च प्रशासनिक अधिकारी तक शामिल हैं। हिंदी कक्षा प्रारंभ होने से पहले छात्रगण प्रार्थना के रूप में हिंदी ध्वज गीत गाते हैं, जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

गयाना का हिंदी ध्वज गीत

"जय हिंदी जय भाषा माँ, तू है देश की आशा माँ।

उठो बचाओ माँ का मान, गूँजे तन मन प्राण जहान,

यही धर्म कर्तव्य सुजान, सत्य-सभ्यता दया-महान।

आओ भाषा-ध्वज फहराएँ, माँ पूजा से जग सरसाएँ,

माँ की ममता मेल की भाषा, परम पुनीत है हिंदी भाषा।

जय हिंदी जय भाषा माँ, तू है देश की आशा माँ।"

गयाना हिंदी प्रचार सभा का यह ध्वज गीत वहाँ के भारतीय समुदाय के लिए सिर्फ प्रार्थना या वंदना नहीं बल्कि उनके मन में हिंदी के प्रति स्नेह और सद्भाव का प्रतीक है।

एक अन्य हिंदी प्रेमी पं. कूपचंद ने हिंदी सीखो, हिंदी बोलो नामक इस गीत के माध्यम से हिंदी शिक्षण को लोकप्रिय बनाया -

हिंदी सीखो, हिंदी बोलो गीत

"आओ बच्चों हिलमिल गाओ,

रक्षा करो ईमान की,

हिंदी सीखो-हिंदी बोलो,

यह भाषा स्वाभिमान की।"

इस प्रकार भारतवंशी हिंदी को गयाना में ईमान और स्वाभिमान की भाषा मानते हैं। आज भी प्रायः सभी धार्मिक एवं सामाजिक उत्सवों में हिंदी का प्रयोग होता है। हिंदी को वे अपनी मातृभाषा नहीं बल्कि अपने पुरखों की मातृभाषा मानकर श्रद्धा और सम्मान देते हैं।

2.7.4 गयाना की हिंदी प्रचारक संस्थाएँ :-

2.7.4.1 गयाना हिंदी प्रचार सभा :-

गयाना हिंदी प्रचार सभा सन् 1955 से कार्य कर रही है। यह संस्था प्राथमिक, माध्यमिक एवं राष्ट्रभाषा की परीक्षाएँ आयोजित करती आ रही हैं जो कि जनवरी एवं अगस्त में होती हैं। पूर्व राष्ट्रपति की पत्नी सुश्री वर्षिनी उधो सिंह इसकी अध्यक्षा हैं और हिंदी भाषा को सरकार द्वारा सम्मानजनक स्थिति दिलाने में अथक प्रयास कर रही हैं। हिंदी भाषा को विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में स्थान दिलाने का उनका प्रयत्न सराहनीय है। उनके पिता श्री बेनी, जिनकी उम्र अस्सी वर्ष के आस-पास है, गाँव-गाँव में जाकर हिंदी शिक्षण देते हैं तथा हिंदी के शिक्षकों को प्रशिक्षण देते हैं। उन्होंने हिंदी अध्यापन के लिए कई हस्तलिखित हिंदी की पुस्तिकाएँ बनाई हैं। उन्हें एवं उनकी सुपुत्री को यह भय है कि गयाना से कहीं हिंदी भाषा का अस्तित्त्व न मिट जाए। हिंदी भाषा का अंत का अर्थ होगा उनके पुरखों की भारतीय संस्कृति का अंत। चूँकि गयाना में हिंदी भाषी अस्सी वर्षों के आस-पास के व्यक्ति ही रह गए हैं। सुश्री वर्षिनी का कहना है कि वह इन बुजुर्गों की आँखें बंद होने के पहले हिंदी भाषा की स्थिति दृढ बनाकर ही रहेंगी और इस दिशा में उनके कदम सराहनीय ही नहीं अनुकरणीय भी हैं। और उनके इस महान कार्य में सहायता करने के लिए विश्व के कई विद्वान दिलचस्पी भी लेने लगे हैं।

2.7.4.2 गयाना विश्वविद्यालय :-

गयाना विश्वविद्यालय में, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् से प्रतिनियुक्त प्रो. शेरबहादूर झा तथा उनकी धर्मपत्नी ने हिंदी फिल्मों के लोकप्रिय गीतों के आधार पर हिंदी शिक्षण का प्रयोग किया था, जो अत्यंत सफल रहा।

2.7.4.3 भारतीय सांस्कृतिक केंद्र जार्जटाउन :-

मुंबई विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रामजी तिवारी ने रामचरितमानस के दोहों और चौपाइयों को आधार बनाकर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र जार्जटाउन में जब हिंदी पढ़ाने की एक नई शुरुआत की, तो इतने लोग वहाँ हिंदी

पढ़ने के लिए आने लगे कि छोटे कमरे से बदलकर बडे सभागार में हिंदी कक्षा लगानी पडी। गयाना के भारतवंशियों में हिंदी की प्रासंगिकता इसलिए भी है कि यह उनके संघर्ष, शौर्य और मुक्ति की भाषा है। आज भी उपनिवेशवाद में विश्वास रखनेवाले लोग गयाना में हिंदी का विरोध करते हैं।

2.7.5 मीडिया :-

गयाना में हिंदी गीत, भजन और सिनेमा अत्यधिक लोकप्रिय हैं। गयाना हिंदी प्रचार सभा की सुश्री वर्शिनी उधोसिंह बहुत जल्द ही टी.वी. तथा रेडियो द्वारा हिंदी शिक्षण के कार्यक्रम शुरू करना चाहती हैं।

निष्कर्ष :-

इस तरह गिरमिटिया देशों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानकार उनके दुस्सहय जीवन की झलक दिखाई देती है। इतन संघर्षमय जीवन होते हुए भी किस तरह उन्होंने धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों से अपनी मातृभूमि की मधुर स्मृतियों को जीवंत रख हर कष्ट सहे। अनपढ़ होते हुए भी किस तरह मातृभूमि से दूर अपनी संस्कृति, भाषा एवं धर्म को संजोए रखा इसका ज्वलंत उदाहरण इन देशों की वर्तमान स्थिति है। आज भी, उनकी चौथी पीढ़ी में, अपनी संस्कृति, भाषा एवं धर्म के प्रति वही प्रेम तथा कसक दिखती है। बैठका से शुरू हुआ यह हिंदी सफ़र आज पीएच.डी. स्तर तक पहुँच गया है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं हिंदी शिक्षण में गिरमिटिया देशों का योगदान अतुलनीय है।

एशियाई देश :-

प्रस्तावना :-

नब्बे के दशक में भारत 'विश्व व्यापार संगठन' का सदस्य बना और इसके साथ ही देश में उदारीकरण एवं निजीकरण का दौर प्रारंभ हुआ जिसके कारण भारत के आर्थिक-सामजिक-सांस्कृतिक विकास में तेज़ी आने लगी। विदेशी पूँजी एवं विदेशी कंपनियों को भारत में आमंत्रित किया गया जिससे उदारीकरण की प्रक्रिया विधिवत शुरू हुई। हिन्दुस्तानियों ने विदेशी भाषा को और विदेशियों ने हिंदी बोलने-पढ़ने-लिखने की जरूरत को महसूस किया। विशेष रूप से दक्षिण एशियाई देशों में हिंदी की पढ़ाई कई विश्वविद्यालयों ने शुरू की। कुछ विदेशी विश्वविद्यालयों में तो काफी पहले से ही हिंदी अध्ययन की सुविधा उपलब्ध थी। एशियाई देशों में हिंदी की स्थिति का आकलन करने के लिए यह आवश्यक है कि हम इन देशों में हिंदी की स्थिति पर विचार करें।

2.8 रूस :-

2.8.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

रूस में सन् 1917 में अक्तूबर समाजवादी क्रांति होने के बाद ही, जब मध्य एशिया के कई राज्य सोवियत संघ में शामिल हो गए, तब भारत समेत पूर्वी देशों की संस्कृति और भाषाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में लेनिनग्राद (अब पीटर्सबर्ग) विश्व विद्यालय के उर्दू-हिंदी विभाग के अध्यक्ष अकादमीशियन श्री अ.प.वारानिकोव ने उर्दू तथा हिंदी भाषाओं और इन भाषाओं में साहित्य के अध्ययन में काई बडा योगदान दिया। उन्होंने इन दोनों भाषाओं में कई लेख लिखे, सन् 1926 में हिंदुस्तानी यानी हिंदी-उर्दू में एक पुस्तक छपवाई जिसे रूसी में इन भाषाओं के अध्ययन की पहली पुस्तक माना जाता है। उसके पश्चात् तो हिंदी भाषा के व्याकरण तथा साहित्य पर अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए।

सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने और सन् 1955 में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू की सोवियत संघ की सरकारी यात्रा और उसी वर्ष के अंत में सोवियत नेताओं निकीता खुश्चेव तथा वुल्गानिव की भारत-यात्रा के बाद, दोनों देशों में आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक और तकनीकी संबंध बहुत तेजी से बढने लगे और तभी हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य में सोवियत विद्वानों और साहित्य सेवियों की रुचि में तीव्रता आई।[11] उसी प्रकार भारत में रूसी भाषा और साहित्य में अधिकाधिक दिलचस्पी ली जाने लगी। कहा जा सकता है कि पिछली शताब्दी के पचास के दशक से नब्बे के दशक सोवियत भारत मैत्री के बहुत ही महत्त्वपूर्ण वर्ष थे। इन वर्षों में भारतीय संस्कृति, कला, दर्शन तथा हिंदी समेत कई प्रमुख भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य का तीव्र गति से प्रचार-प्रसार हुआ। इस प्रचार-प्रसार की तीन दिशाएँ थीं - हिंदी भाषा का पठन-पाठन, हिंदी साहित्य का रूसी व तत्कालीन कई सोवियत भाषाओं में अनुवाद तथा शोध-कार्य।

2.8.2 वर्तमान स्वरूप :-

संघ के विघटन के बाद लगभग एक दशक तक कुछ राजनीतिक कारणों के फलस्वरूप रूस में हिंदी या भारतीय भाषाओं के अध्ययन, अनुवाद और शोध कार्य में कुछ क्षति हुई है, तथापि श्री पुतिन के राष्ट्रपति बनने के बाद गत वर्षों में वातावरण में परिवर्तन हुआ है।

2.8.3 रूस में हिंदी शिक्षण :-

हिंदी भाषा का पठन-पाठन मास्को विश्वविद्यालय, मास्को राजकीय अंतरराष्ट्रीय संबंध संस्थान, प्राच्य विद्या संस्थान, लेनिनग्राद, पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय, व्लादीवोस्तोक विश्वविद्यालय, रेज़ान तथा कज़ान विश्वविद्यालय में होता था। इन संस्थाओं में अब भी हिंदी का पठन-पाठन होता है।

रूसी भाषा में हिंदी साहित्य का प्रचूर मात्रा में अनुवाद हुआ है। विद्यापति, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, कबीर रसखान, मीराबाई तथा आधुनिक काल के भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, मुक्तिबोध, शिवमंगलसिंह सुमन, अज्ञेय, हरिवंशराय बच्चन आदि के काव्य से रूसी चीर-परिचित हैं। इसी प्रकार गद्य के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद के लगभग सभी सुपरिचित उपन्यासों, कहानियों और यशपाल, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, अमृतराय, कमलेश्वर, मोहन राकेष, धर्मवीर भारती, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्रकुमार तथा भीष्म साहनी आदि के उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद हो चुका है। हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान रखनेवाले रूसी अनुवादकों ने उक्त कवियों-लेखकों की रचनाओं को रूसी पाठकों तक पहुँचाया है। इसी प्रकार महाकवि अलेम्साद्र पुश्किन, लेर्मोनतोन, मयाकोव्स्की, चुकोव्स्की का काव्य, लेव तोल्स्तोय, दोस्तोयेव्स्की, तुर्गेनेव, गोर्की, चेरकेव, कुप्रिन, शोलोखोव, रसूल हम्ज़ातोव, चंगीज़ आइत्मातोव आदि विश्व-विख्यात लेखकों की रचनाएँ हिंदी में अनुदित हुई हैं, जिन्हें अब भी भारतीय हिंदी-पाठक बडे चाव से पढते हैं। सोवियत संघ के विघटन से पहले मास्को के 'प्रगति' और 'रादुगा' प्रकाशन गृहों ने उक्त तथा कई अन्य लेखकों के बडे सुंदर हिंदी संस्करण प्रकाशित किए थे। सन् 1992 में सोवियत संघ के विघटन के बाद मास्को के प्रकाशनगृहों ने हिंदी तथा भारत की बारह अन्य भाषाओं में अपने प्रकाशन बंद कर दिए क्योंकि सोवियत सत्ताकाल में उन्हें राज्य की ओर से आर्थिक सहायता मिलती थी और उस सहायता के अभाव में उनके लिए भारत में पुस्तकें भेजना और कुछ लाभ कमाना असंभव हो गया।

शोध के क्षेत्र में सोवियत और रूसी विद्वानों ने बहुत ही प्रशंसनीय काम किया है। हिंदी के कवियों, लेखकों और आलोचकों, समीक्षकों की रचनाओं पर शोध-कार्य हुआ है और अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

2.8.4 मीडिया :-

रूस में हिंदी सिनेमा बहुत ही अधिक लोकप्रिय है। राज कपूर की फिल्मे आज भी बडे चाव से यहाँ देखी जाती हैं। हिंदी गीत भी काफी प्रचलित हैं। हिंदी सिनेमा को समझने के लिए यहाँ के लोग हिंदी सीखते हैं।

राज कपूर रूस के सबसे अधिक पसंदीदा बॉलीवुड कलाकार हुआ करते थे और आज भी है। कुछ वर्षों पुर्व उन्हीं के सुपुत्र श्री ऋषी कपूर को भी रूसी सरकार ने, सिनेमा में उनके बहुमुल्य योगदान के लिए पुरस्कृत किया।

2.9 उज्बेकिस्तान :-

2.9.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में सरकारी प्राच्य विद्या इंस्टिट्यूट है। सन् 1944 से इस इंस्टीटयूट के दक्षिण भाषाओं के विभाग में हिंदी तथा उर्दू भाषाओं का अध्ययन होता आ रहा है। पूरे मध्य एशिया में यह एक ऐसा इंस्टिट्यूट है जहाँ हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन में विद्यार्थी स्नातक से लेकर शोध तक की डिग्री प्राप्त कर सकते हैं।

वैसे उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा से काफी पहले हिंदी साहित्य में रुचि शुरू हुई। 20वीं सदी के दूसरे दशक में उज्बेक पाठकों का भारतीय साहित्य से पहला परिचय शुरू हुआ, जब अखबारों में रविन्द्रनाथ टैगोर की कविताएँ उज्बेक भाषा में छपी थीं। उस समय के जाने-माने साहित्यकार श्री चुलपान, टैगोर की इन कविताओं से प्रभावित हुए कि टैगोर के व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति उनकी रुचि पैदा हुई। उज्बेक पाठकों को टैगोर से परिचय कराने के उद्देश्य से चुलपान अंग्रेजी और रूसी में छपे टैगोर के बारे में आलेख और पुस्तकों का अध्ययन करके टैगोर के बारे में एक अच्छा सा आलेख पत्रिका में छपवाते थे।

साहित्य की दुनिया में हमेशा नवीनता को ढूँढनेवाले चुलपान के लिए टैगोर की कविताएँ रात को चमके सूरज की तरह लगीं और उन्होंने टैगोर को पूर्व और पश्चिम

के साहित्य में एक 'सोने का पुल' बताया। यह था उज्बेक लोगों का भारतीय साहित्य से पहला परिचय।

2.9.2 वर्तमान स्वरूप :-

वर्तमान में इस विभाग में हिंदी तथा हिंदी की बोलियों पर प्रो. आज़ाद रामातोव, संस्कृत तथा हिंदी भाषाओं पर डॉ. जरीफा बेगीजोवा, आधुनिक हिंदी साहित्य पर डॉ. तमारा खोदजायेवा, हिंदी भाषा पर बयात रखमातोव, मवजूदा सादिकोवा, डॉ. सिराजीद्दीन नुर्मातोव जैसे हिंदी के विद्वान् अध्यापन कर रहे हैं।

2.9.3 उज्बेकिस्तान में हिंदी शिक्षण :-

हिंदी भाषा ताशकंद की 'संसार की भाषाएँ' नामक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के स्नातक कोर्स में पढ़ाई जाती है।

हिंदी की सबसे पुरानी पाठशाला ताशकंद में स्थित 24 नंबर की पाठशाला है जहाँ हिंदी लगभग 50 साल से पढ़ाई जा रही है। सन् 1974 को इस पाठशाला को लाल बहादुर शास्त्री का नाम दिया गया। पाठशाला के सामने स्थापित शास्त्री जी की मूर्ति के उद्घाटन समारोह में भारत के जाने-माने फ़िल्मी कलाकार स्व. राज कपूर भी पधारे थे।[12]

ताशकंद में स्थित लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र भी आजकल हिंदी का बड़ा केंद्र बन गया है, जहाँ सन् 2002 से हिंदी के छः महीने और एक साल का कोर्स जारी किया गया था। वहाँ प्राच्य विद्या इंस्टिट्यूट के अध्यापक हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं। आज तक केंद्र की तरफ से लगभग 400 के आस-पास छात्रों को हिंदी में डिप्लोमा या सर्टिफिकेट मिल चुके हैं। इस हिंदी कोर्स के कई छात्र हर साल हिंदी को आगे बढाने के लिए आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान में भी भेजे जाते हैं। वर्तमान में उज़्बेकिस्तान के चार स्कूलों में हिंदी का शिक्षण हो रहा है।

2.9.4 अनुवाद :-

भारतीय साहित्य का रूसी से उज्बेक में अनुवाद छपना शुरू हुआ और इसमें उज्बेक कवि, लेखक और साहित्यकारों का योगदान बहुत बड़ा रहा। इनमें सबसे पहले तोहतासीन जालिलोव का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने टैगोर को दो उपन्यास और कई कहानियों का उज्बेक में अनुवाद किया। सन् 1961 को संसार भर में जब टैगोर के जन्मशताब्दी की तैयारी हो रही थी, उज्बेकिस्तान में कई कवि, लेखक और अनुवादकों ने मिलकर टैगोर की रचनाओं का संपूर्ण संग्रह रूसी से उज्बेक में अनुवाद करके इसे 8 भागों में छपवाया।

रूसी से अनुवाद में आई 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे महाकाव्यों को भी उज्बेक लोग अच्छी तरह जानते और उन्हें बहुत पसंद भी करते हैं। 'रामायण' को जाने-माने उज्बेक कवि मुहम्मद अली ने रूसी से अनुवाद किया। उन्होंने जब 'रामायण' को रूसी से पढ़ा तो उनको सबसे पहले इस बात का अफ़सोस हुआ कि वे हिंदी नहीं जानते हैं, नहीं तो वे रामायण का हिंदी से उज्बेक में सीधा अनुवाद कर देते। इसके बाद उन्हें खुशकिस्मती से भारत जाने का, राम की जन्म भूमि अयोध्या दर्शन करने का मौका मिला। भारत यात्रा से वापस आते ही मुहम्मद अली ने 'रामायण' का रूसी से अनुवाद शुरू कर दिया और यह अनुवाद एक बड़ी किताब के रूप में सामने आया। यह अनुवाद सन् 1983 में छपा। 'महाभारत' का अनुवाद इससे काफी पहले उज्बेक भाषा में हो चुका था।

हिंदी साहित्य में महाकथाओं के बाद 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश' जैसी रचनाओं का दौर आता है। इस क्षेत्र में पंचतंत्र और हितोपदेश का अनुवाद सीधे हिंदी से उज्बेक में हुआ और इसमें हिंदी के बड़े विद्वान् अनासारुद्दीन इब्राहिमोव का योगदान काफी सराहनीय है।

हिंदी साहित्य को उज्बेक लोगों तक पहुंचाने में अनुवादक अमीर फैय्जुल्ला का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अनुवाद के क्षेत्र में उनकी प्रसिद्धता का मुख्य

कारण यह है कि उन्होंने महाभारत और रामायण जैसे टी.वी के धारावाहिकों का उज्बेक भाषा में बहुत ही सुंदर और सरल अनुवाद प्रस्तुत किया। अमीरुल्ला 'संसार का साहित्य' नामक पत्रिका के मुख्य संपादक के रूप में कार्य करते हैं और हिंदी साहित्य से जो भी अनुवाद होते हैं, उसे सबसे पहले इस पत्रिका में छपवाते हैं। आज तक उन्होंने प्रेमचंद, यशपाल, रविंद्रनाथ टैगोर, कृष्ण चन्द्र जैसे जाने-माने लेखकों की कहानियाँ तथा उपन्यासों का अनुवाद उज्बेक लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। इनमें रविंद्रनाथ टैगोर की 'दो भाई', 'बाढ़', 'एक रात' और 'किनारे की कहानी', प्रेमचंद का 'गोदान' जैसी कहानियों का नाम मुख्य है।

प्राच्य विद्या इंस्टिट्यूट में भी विद्यार्थी हर साल स्नातक तथा स्नातकोत्तर की डिग्री का डिप्लोमा लेने के लिए भाषा या साहित्य से संबंधित शोध कार्य प्रस्तुत करते हैं। इसमें आज तक अनेक विद्यार्थी रविंद्रनाथ टैगोर, कमलेश्वर, अमृता प्रीतम, यशपाल, प्रेमचंद, कृष्णचन्द्र, मुक्तिबोध, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, मिर्ज़ा ग़ालिब, मध्य काल के महाकवि सूरदास, तुलसीदास, कबीर, अमीर खुसरो जैसे कवियों की रचनाओं पर शोधकार्य प्रस्तुत कर चुके हैं।

2.10 जापान :-

2.10.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप :-

भारत और जापान के सांस्कृतिक संबंध को 107 साल हो गए हैं। भारत से, बौद्ध धर्म के साथ-साथ भारतीय मिथक, लोक-कथाएँ तथा पौराणिक साहित्य एवं भारतीय मूल की भाषाएँ जैसी पालि, संस्कृत भी जापान में पहुँची।

सन् 1908 में हिंदुस्तानी और तमिल भाषा की पढ़ाई, तोक्यो विदेशी भाषा विद्यालय (तोक्यो स्कूल ऑफ फॉरेन लँग्वेजेस - टी.एस.एस.एल.) में शुरू की गई। उस समय ये दोनो भाषाएँ सर्टिफिकेट और डिप्लोमा के स्तर तक पढाई जाती थीं। सन् 1911 तक हिंदुस्तानी भाषा को स्वतंत्र विभाग का दर्जा प्राप्त हो गया और इसके

साथ ही स्नातक की पढ़ाई शुरू हो गई। तब से अब तक (प्रथम और द्वितीय विश्वयुदध के समय भी बिना अवरोध) पढ़ाई जारी है। सन् 1949 में टी.एस.एस.एल. का नाम बद्लकर तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज (टी.यू.एफ.एल.) हो गया। सन् 1961 में हिंदुस्तानी विभाग उर्दू और हिंदी के दो स्वतंत्र विभागों में विकसित हो गया तथा सन् 1966 में स्नातकोत्तर तथा सन् 1992 में पीएच.डी. स्तर का अध्यापन भी शुरू हो गया। जापान में हिंदी अध्ययन-अध्यापन का विधिवत कार्य पचास-साठ के दशक में शुरू हुआ।[13]

सन् 1950 के आस-पास प्रो. एइजो सावा ने हिंदी की तीन पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण कर उन्हें प्रकाशित करवाया जोकि जापान में हिंदी का प्रथम पाठ्यक्रम बना। आगे चलकर प्रो. दोई ने भी इस कार्य को आगे बढ़ाया और जापान में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अतुलनीय कार्य किया।

2.10.2 जापान में हिंदी शिक्षण :-

उर्दू (हिंदुस्तानी) के साथ हिंदी भाषा का भी पठन-पाठन टोकियो और ओसाका के विदेशी भाषा विश्वविद्यालयों में आरंभ हुआ। वर्तमान में ओसाका, ओतानी, टोकियो और रयुकोकू विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी पढाई जा रही है।

ओसाका में प्रो. एइजो सावा ने हिंदी की कक्षाएँ चलायीं। प्रो. एइजो ने सन् 1948 में 'हिंदी प्रेविशिका' नामक एक पुस्तक लिखी, जो जापान की देवनागरी में लिखी गई प्रथम पुस्तक मानी जाती है। जापान के प्रमुख हिंदी विद्वान् प्रो. कात्सुरो कोगा तथा प्रो. क्युया दोई हैं। वर्तमान में प्रो. त्सुजि नाओशिरो, डॉ. त्युयोशि नारा, प्रो. तेईजि साकाता, प्रो. तोमिओ मिजोकामी, प्रो. तोशीओ तानाका, प्रो. काजुहिको माचिदा, डॉ. नोरिहिको उचिदा आदि हिंदी के विद्वान हैं। इन लोगों ने भारत से हिंदी शिक्षण किया और जापान में हिंदी का प्रचार-प्रसार किया।

2.10.3 जापान में हिंदी संस्थाएँ :-

जापान में हिंदी का पठन-पाठन सरकारी संस्थाओं में होता है लेकिन उसके साथ-साथ कई गैर-सरकारी संस्थाएँ एवं सांस्कृतिक केंद्र भी हैं जहाँ विधिवत हिंदी का शिक्षण होता है। प्रमुख संस्थाएँ जैसे एशिया-अफ्रीका अकादमी, सिल्क रोड अनुसंधान केंद्र, निचि-इन क्योकाइ इत्यादि हैं जहाँ हिंदी का शिक्षण नियमित रूप से हो रहा है। ये सभी संस्थाएँ टोकियो में स्थित हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार में बड़ी लगन से लगी हुई हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, टोकियो में लगभग चार सौ और कान्साइू प्रांत में लगभग एक सौ विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं।

2.10.4 मीडिया :-

जापान में हिंदी साहित्य का अनुवाद कार्य भी प्रचूर मात्र में हुआ है। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का अनुवाद जापानी भाषा में हो चुका है। शब्दकोशों का भी निर्माण हुआ है। प्रो. कोगा ने हिंदी-जापानी शब्दकोश 1472 पृष्ठों में लिखा है। डॉ. दोई द्वारा रचित पुस्तकों में हिंदी-जापान शब्दकोश हिंदी-जापानी और जापानी-हिंदी शब्दकोश, हिंदी प्रचार अभ्यास पुस्तिका, जापानी भाषा प्रवेश (देवनागरी लिपि में, जो उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के आदेश पर विशेष रूप से प्रकाशित की थी) अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने हिंदी की अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाओं का जापानी भाषा में अनुवाद भी किया है जिनमें प्रेमचंद के अमर उपन्यास गोदान, जैनेंद्रकुमार की प्रतिनिधि कहानियाँ, सुमित्रानंदन पंत कृत स्वर्णकिरण तथा महादेवी की कुछ कविताओं के अनुवाद विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय हैं। जापानी भाषा में जापान से प्रकाशित पत्रिका इंदोगाकु-बुककयोगाकु केनकयु में भी उनके शोध-पत्र व आलेख प्रकाशित होते रहते थे, जिनमें से एशियाई बुद्ध धर्म का इतिहास, हिंदी क्रिया विशेषण, हिंदी भाषा में ह, आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

डॉ. त्सुजि नाओशिरो द्वारा अनुदित 'ऋग्वेद', 'अथर्ववेद', 'शकुंतला', एवं श्रीमद्भगवत क्रमशः सन् 1970, 1979, 1977 व 1980 में इवानाती शोतेन द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं। 'मनु स्मृति' के भी तीन अनुवाद जापानी में उपलब्ध हैं। वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि के कई जापानी अनुवाद उपलब्ध हैं। सी.राजगोपालाचारी के कुछ साहित्य का अनुवाद डॉ. त्सुयोशि नारा ने किया है। यहाँ तक कि जापान में कामसूत्र कथा सरित सागर जैसी कृतियाँ भी अनुदित हो चुकी हैं। हितोपदेश, पंचतंत्र और जातक कथाओं के भी जापानी अनुवाद हो चुके हैं।

जापान में आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रति भी जिज्ञासा देखने को मिलती है। मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, निर्मल वर्मा, रघुवीर सहाय, प्रेमचंद, मोहन राकेश, यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि की रचनाओं का अनुवाद जापानी में हो चुका है। यहाँ तक कि नामवर सिंह की प्रसिद्ध आलोचना कृति 'छायावाद क्या है' का भी अनुवाद हो चुका है, यह अनुवाद प्रस्तुत किया है वातानाबे तोमिओ ने।

डॉ. एइजो सावा को ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी-शिक्षण का जनक माना जाता है। इन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है -

संक्षिप्त उर्दू व्याकरण - 1943, जापानी-हिंदी-कोष - 1947, हिंदी-जापानी बातचीत - 1947, हिंदी व्याकरण - 1948-1951 गुलिस्ताँ (यह अनुवाद की गई रचना है), हिंदी व्याकरण - 1960। डॉ. सावा जी की महत्त्वपूर्ण पुस्तक इंदो बुन्तेन पूरे जापान में बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक के माध्यम से हिंदी पढ़नेवाले छात्रों को बहुत सहायता मिली।

ओसाका विश्वविद्यालय भाषा शिक्षण के लिए अति महत्त्वपूर्ण प्रयोगशाला है। यहाँ एक समृद्ध और सबसे बडा पुस्तकालय है जहाँ पाठक अपनी सुविधा के अनुसार बैठकर पढता है। हर विषय पर पुस्तकें उपलब्ध हैं। कॉमनरूम, ऑडिटोरियम,

आलीशान दफ्तर और कैंटीन है। हर प्रकार की सरकारी सुविधा के साथ हर अध्यापक अपना पाठ्यक्रम तैयार करता है। अपनी जरूरत के अनुसार कक्षा से संबंधित पुस्तकें, सामग्री आदि अपने बजट से मँगा सकता है।

2.10.5 जापान का समृद्ध पुस्तकालय :-

तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज (टी.यू.एफ.एल.) का पुस्तकालय में लगभग 7 लाख किताबें हैं जिनमें भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की संख्या कुल मिलाकर 45000 के आस-पास है। इनके अलावा 200 से अधिक भारतीय पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह है साथ ही कई विशेष संकलन भी हैं। इन सब पुस्तकों का डाटा अब यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय के वेब केटालॉग (ऑनलाइन पब्लिक ॲक्सेस केटालॉग) में उपलब्ध हो गया है।

2.11 चीन :-

2.11.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

आधुनिक समय में चीन में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की विधिवत शुरुआत सन् 1942 में यूनान प्रांत के पूर्वी भाषा और साहित्य कॉलेज में हिंदी विभाग की स्थापना के साथ हुई। सन् 1945 में हिंदी विभाग यूनान प्रांत से स्थानांतरित होकर छोंगछिन में आ गया और साल भर में हबी हिंदी चीन की राजधानी में स्थित पीकिंग विश्वविद्यालय के विदेशी भाषा विद्यापीठ में आसन हुई और तब से निरंतर यहीं फलती-फूलती रही।

2.11.2 वर्तमान स्वरूप :-

पीकिंग विश्वविद्यालय में भारत अध्ययन केंद्र की स्थापना हुई है। इसके पूर्व चार वर्षों में एक बार हिंदी के विद्यार्थियों को हिंदी के पाठ्यक्रम में प्रवेश मिलता था अब उस योजना को बदल दिया है और अब हर दूसरे वर्ष नए विद्यार्थी प्रवेश ले सकते हैं। पीकिंग विश्वविद्यालय में हिंदी सर्व सुलभ भाषा की श्रेणी में स्थान पा गई

है। इसका अर्थ यह है कि मुख्य विषय के अलावा, हिंदी अब कोई भी विद्यार्थी पढ सकता है।[14]

2.11.3 चीन में हिंदी शिक्षण :-

आज यहाँ हिंदी स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएच.डी. स्तर के विद्यार्थी हैं और ऐसे भी विद्यार्थियों की संख्या बहुत है जो भारत के बारे में अन्य विषयों (सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक इत्यादी) पर गहन अध्ययन करते हैं और साथ-ही-साथ हिंदी भी सीखते हैं। हिंदी के अध्यापन के लिए पीकिंग विश्वविद्यालय में तीन प्रकार की पाठ्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है। यह पाठ्य सामग्री वह है जिसमें भाषा तथा भाषा से संबंधित अन्य सामग्री, जैसे निबंध, लेख, नाटक, कहानी आदि सम्मिलित हैं। हरेक पाठ विस्तृत अभ्यास पर आधारित रहता है। पाठ पढ़ने के बाद अभ्यास करना विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। पाठ्य सामग्री में हर पाठ के अंत में दिए गए अभ्यासों में अनुवाद (चीनी से हिंदी में/हिंदी से चीनी में) भी सम्मिलित होता है। प्रकाशित पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त हिंदी वर्तमानपत्र भी पाठ्य सामग्री के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं ताकि भाषा के बदलते और उपयोगी रूपों से विद्यार्थी अवगत हों। भाषा के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति और साहित्य के पर्चे में विद्यार्थी रामायण, महाभारत तथा भारत के विभिन्न दर्शनों व धर्मों का भी अध्ययन करते हैं। दूसरे प्रकार की पाठ्य सामग्री श्रव्य माध्यम है। विद्यार्थी श्रव्य स्टूडियो में हिंदी भाषा को सुनते हैं, समझते हैं, लिखते हैं। ऐसा करने से हिंदी का उच्चारण, टोन, लय आदि से विद्यार्थियों का परिचय होता है। तीसरे प्रकार की पाठ्य सामग्री दृश्य-श्रव्य माध्यम की है। इसमें विद्यार्थी हिंदी पाठ्यक्रमों पर बनी वीडियो की फीचर फिल्में देखते हैं। इससे वे हिंदी की अभिव्यक्ति से परिचित होते हैं अतः हिंदी सीखने का यह सरल एवं मनोरंजक माध्यम है। निश्चय ही यह माध्यम बहुत प्रभावी है।

2.12 दक्षिण कोरिया :-

2.12.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

कोरिया में हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की शुरुआत करने का श्रेय सियोल के हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज को जाता है जहाँ सन् 1971 में हिंदुस्तानी भाषा विभाग खोला गया तथा सन् 1973 से यह विभाग हिंदी विभाग के नाम से जाना जाने लगा।

सन् 1972 के पहले सत्र में 30 कोरियाई छात्रों को हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के चार वर्षीय हिंदी स्नातक कार्यक्रम में प्रवेश मिला था। उस समय श्री पाक के अतिरिक्त हिंदी प्रशिक्षण का भार सुश्री अलका गुप्ता ने संभाला, जो कोरिया में उच्च शिक्षा के लिए पहले से ही आई हुई थीं। कोरियाई भाषा और संस्कृति का उनका ज्ञान छात्रों के लिए एक वरदान साबित हुआ।

सन् 1978 के बाद से हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के हिंदी विभाग के विकास का एक नया दौर शुरू हुआ जब इस विभाग के पहले बैच के कुछ छात्र भारत से हिंदी की उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटे। श्री सह हैंग जंग, श्री ली जंग हो और सुश्री किम वू जो ने दूसरी पीढ़ी के प्राध्यापकों के रूप में हिंदी शिक्षण का संपूर्ण उत्तरादायित्व सँभाला।

2.12.2 वर्तमान स्वरूप :-

आजकल भारत में बाजारीकरण के इस दौर में भाषा से संबंधित एक विशेष बात देखने को मिल रही है कि कोरिया की कुछ कंपनियाँ भारत में भारतीय भाषाओं का प्रयोग कर उनके व्यापारिक प्रसार में एक अभूतपूर्व भूमिका निभा रही हैं। व्यापार के विस्तार और अपने ग्राहकों से नजदीकी संबंध बढाने के लिए भारत में घरेलू काम में आनेवाली कोरियन इलेक्ट्रीकल और इलेक्ट्रॉनिक मशीनों के इलेक्ट्रॉनिक डिसप्ले पैनल पर सैमसंग ने पहली बार अंग्रेजी की जगह हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग करना प्रारंभ किया है जो देशी व्यापार जगत में एक अभूतपूर्व

पहल है। भविष्य में कोरिया में हिंदी साहित्य और भाषा विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि भारत संबंधित सभी विषयों पर अध्ययन और शोध कार्य में और भी तेजी आएगी और अभूतपूर्व सफलता भी मिलेगी। साथ ही हर साल सौ से भी अधिक स्नातक छात्रों के रोजगार की समस्या की चुनौती भी सामने आएगी।

2.12.3 दक्षिण कोरिया में हिंदी शिक्षण :-

एशिया महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में स्थित दक्षिण कोरिया में हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन और शोध कार्य का इतिहास अब धीरे-धीरे पाँचवें दशक की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

सियोल के हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज और बुसान में स्थित बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के हिंदी विभाग में हिंदी भाषा की पढाई एवं अन्य संबंधित विषयों के अध्ययन एवं शोध का सिलसिला जारी है।[15] हन्गुक एवं बुसान विश्वविद्यालयों में लगभग एक सौ कोरियाई छात्र हर वर्ष प्रवेश लेते हैं जहाँ चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम चल रहे हैं। इन विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम को दृश्य-श्रव्य माध्यमों से सिखाए जाने की व्यवस्था है जिनमें फिल्मों और गानों का पाठ्य-सामग्री के रूप में प्रयोग होता है।

2.12.3.1 हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज :-

दक्षिण कोरिया की राजधानी सिओल में कई विश्वविद्यालय हैं, इन्हीं में से सन् 1954 में स्थापित एक विदेशी भाषाओं के अध्ययन का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फ़ॉरेन स्टडीज़ है। सन् 1972 में सिओल परिसर में इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इसका एक अन्य परिसर ग्लोबल कैंपस के नाम से जाना जाता है जो शहर से कोई पचास किलोमिटर की दूरी पर स्थित है। सन् 1984 में स्थापित इस ग्लोबल परिसर के भारतीय अध्ययन विभाग में हिंदी पढाई जाती है। दक्षिण कोरिया हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के ये दो विभाग, हिंदी के

अध्ययन को निरंतर बढ़ावा देते चले आए हैं। भाषा के माध्यम से दूसरे देश और उसकी संस्कृति को जानने एवं समझने की प्रवृत्ति विभाग को निरंतर सक्रिय बनाए हुई है।

हन्गुक विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में पिछले चालीस वर्ष से हिंदी पढ़ाई जा रही है। यहाँ विद्यार्थी के लिए दो मुख्य विषय लेकर पढने का नियम है अर्थात हिंदी के विद्यार्थियों को एक अन्य प्रमुख विषय को लेकर मेजर करना पढता है। कोरिया की कंपनियाँ जैसे ह्यूंदै, सैमसंग और एल.जी. तथा अब कुछ बैंक भी, कामकाज के लिए भारत भेजे जाने वाले अपने कर्मचारियों को हिंदी सीख कर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। इस उद्देश्य से इस विश्वविद्यालय में विशिष्ट समूह के लिए निश्चित अवधी की हिंदी कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। इस तरह हिंदी को भारत के प्रवेश-द्वार के रूप में भी देखा जा रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा तीन वर्ष हिंदी पढ़ लेने वाले विद्यार्थी के समक्ष चौथे वर्ष में हिंदी की विदेशी भाषा परीक्षा (फॉरेन लैंग्वेज एग्ज़ामिनेशन फ्लैक्स) पास करने का लक्ष्य रखा गया है। हिंदी सीख लेने के बाद विद्यार्थी सांस्कृतिक केंद्रों, दूतावासों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और पर्यटन केंद्रों में नौकरी पा सकते हैं। यहाँ भारतीय अध्ययन संस्थान और एरिया स्टडीज़ जैसे विभागों में भी स्नातक स्तर पर हिंदी विषय अनिवार्यतः लेने वाले छात्र हैं। हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति, कला, वाणिज्य, व्यापार आदि को जानने की जिज्ञासा छात्रों में दिखाई देती है। हन्गुक विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की छात्राओं ने दो नृत्य क्लब बनाए हैं जिनके अंतर्गत वे मिलकर भारतीय फिल्मों से प्रेरित समसामयिक नृत्य का अभ्यास करती हैं और विभागीय उत्सवों पर उनकी प्रस्तुति भी देती हैं। इस तरह इस देश में भारतीय फिल्में भी हिंदी की समझ और छात्र वर्ग के भाषिक जुड़ाव को बढ़ावा देने का माध्यम बनती हैं।

कोरिया गणतंत्र में हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़ के अतिरिक्त दो और प्रमुख स्थानों पर हिंदी पढाई जा रही है, ये हैं सिओल नॅशनल यूनिवर्सिटी और बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़।

2.12.3.2 सिओल नॅशनल यूनिवर्सिटी :-

सिओल नॅशनल यूनिवर्सिटी में भारतीय संस्कृति और हिंदी की कक्षाएँ चल रही हैं। सन् 1984 में देश के दक्षिण में स्थित बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़ में हिंदी विभाग की स्थापना हुई। यहाँ हिंदी का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संख्या अच्छी खासी है।

कोरिया में प्रतिवर्ष विभिन्न स्थानों पर सौ से अधिक विद्यार्थी हिंदी पढ़ते हैं और लाभान्वित होते हैं। हिंदी पढ़ने वाले छात्र अपने ही धन से या कोरियाई छात्रवृत्ति पाकर या भारत सरकार की योजना के तहत भारत जाकर हिंदी का अध्ययन भी करते हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय या केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और दिल्ली के छात्र के रूप में जाते हैं। भारतीय प्राध्यापक भी हिंदी-शिक्षण के लिए हन्गुक यूनिवर्सिटी द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

हन्गुक विश्वविद्यालय में हिंदी और भारतीय अध्ययन विभाग के अधिकतर कोरियाई मूल के प्राध्यापक भारत में हिंदी का विशिष्ट अध्ययन करके आए हैं जिसमें हिंदी स्नातकोत्तर पदवी और पीएच.डी की उपाधियाँ शामिल हैं। ये प्राध्यापक हिंदी के विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं जैसे कि भाषा विज्ञान, व्याकरण, मध्यकालीन और आधुनिक हिंदी कविता, हिंदी उपन्यास और कथा-साहित्य, हिंदी नाटक, भारतीय दर्शन एवं कलाएँ तथा संस्कृत साहित्य। वे हिंदी की पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन के प्रति भी सजग हैं। इसलिए छात्रों के लिए हिंदी वार्तालाप, भारत परिचय, हिंदी व्याकरण और मिश्रित हिंदी पाठों (कविता, कहानी, निबंध, वार्तालाप) के अभ्यास सहित कई पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें हिंदी के साथ कोरियाई भाषा का प्रयोग किया गया है। ये

पुस्तकें प्रकाशन संबंधी गुणवत्ता के कारण भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। विभागीय प्राध्यापक कोरियाई-हिंदी और हिंदी-कोरियाई शब्दकोश के निर्माण में भी दीर्घ अवधी तक संलग्न रहे और अब ये ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तकों के अतिरिक्त हन्गुक यूनिवर्सिटी से प्रकाशित जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज़ के अंक भी हिंदी आलेखों से संवर्धित हुए हैं।

हिंदी के लिए समर्पित भाव से काम करने वाले विशिष्ट और वरिष्ठ कोरियाई विद्वान प्राध्यापक भारत सरकार द्वारा सम्मानित भी किए जा चुके हैं।

भारत और हिंदी के बारे में छात्रों की दिलचस्पी और प्रतिस्पर्धा लगातार बढ रही है जिसके लिए इन दोनों ही स्थानों में प्रवेश के इच्छुक छात्रों के लिए हर परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होना अत्यावश्यक है। पिछले तीन दशक में कोरिया की आर्थिक उन्नति और भारत के साथ बढते संबंध भी प्रोत्साहन के मुख्य कारण बने हैं। आजकल भारत जाकर हिंदी का प्रशिक्षण और सीधी जानकारी लेने वाले कोरियाई छात्रों की संख्या भी हर साल बढती नजर आ रही है।

अन्य देशों की तुलना में कोरिया में प्रवासी भारतीयों की संख्या को लगभग न ही के बराबर कहा जा सकता है। फिर भी हिंदी भाषा का यहाँ अन्य एशियाई देशों की तुलना में बहुत तेज़ी से विकास हो रहा है।

2.12.3.3 बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़ :-

कोरिया के दूसरे बडे शहर बुसान में सन् 1983 में बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज में हिंदी विभाग खोला गया और डॉ. को हांग गन ने, इस विभाग का भार सँभाला। डॉ. को हांग गन प्रथम कोरियाई नागरिक हैं जिन्होंने इंडियन स्टडीज में पीएच.डी. की। शीघ्र ही श्रीमती नो यंग जा को भी हिंदी विभाग में शामिल किया गया। ये दोनों भी श्री सह हैंग जंग, श्री ली जंग हो, और सुश्री किम वू जो के साथ ही हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज के हिंदी विभाग के प्रथम बैच के छात्र रह

चुके थे। सन् 1984 में पहली बार इस विभाग में 50 छात्रों ने दाखिला लिया। शुरू में श्री नरेंद्र मोहन पंकज, प्रोफ़ेसर पी.एन. सिंह ने भारतीय प्राध्यापक के रूप में कार्यभार सँभाला। सन् 1989 से उनकी जगह प्रोफ़ेसर आलोक कुमार राय यहाँ हिंदी, इंडियन स्टडीज का प्राध्यापन और शोध कार्य सँभाल रहे हैं।

कुछ वर्षों में ही दूसरी और तीसरी पीढ़ी के कुशल कोरियाई प्रशिक्षकों को साथ लेकर बेहतर तैयारी के साथ हिंदी विभाग के प्रसार का काम सुचारू रूप से चलने लगा। हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज ने सियोल के बाहर कयोंगिदो प्रोविंस में स्थित नए कैंपस योंग इन में सन् 1984 में नया हिंदी विभाग खोला जिसमें 25 छात्र हर साल दाखिला ले रहे हैं।

नौवें दशक में दक्षिण कोरिया में हिंदी-शिक्षण में यथोचित विकास देखा गया। इस दौरान अनेक महत्त्वपूर्ण हिंदी पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन शुरू हुआ। सन् 1995 में हन्गुक यूनिवर्सिटी और फॉरेन स्टडीज़ के प्रकाशन विभाग ने शिक्षा मंत्रालय की आर्थिक सहायता से 'हिंदी-कोरियाई शब्दकोश' का प्रकाशन किया। इस दौरान विभिन्न कोरियाई हिंदी विद्वानों ने हिंदी भाषा और साहित्य पर शोधपरक निबंध लिखे जिसे वहाँ की स्थानीय पत्रिकाओं में स्थान मिला।

नब्बे के दशक ने भारत में आर्थिक उदारीकरण की नीति से भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में भारत का एक शक्ति के रूप में उदय हुआ। कोरिया और भारत के बीच बढ़ते वाणिज्य-व्यापार को देखते हुए सन् 2005 में बुसान यूनिवर्सिटी ऑफ फोरेन स्टडीज़ में 'रूस-भारत वाणिज्य-व्यापार केंद्र' और बुसान में स्थित यंसन् यूनिवर्सिटी में 'भारत व्यवसाय विभाग' खुल गया, जहाँ हिंदी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जानी शुरू हो चुकी है। इन दोनों देशों के बीच व्यवसाय विकसित करने में हिंदी और कोरियाई भाषा ने अपनी अहम् भूमिका निभाई। कोरिया में हिंदी सीखने और भारत में कोरियन सीखने की एक ललक का जन्म हुआ।

2.12.4 प्रकाशन :-

दक्षिण कोरिया में समय-समय पर हिंदी शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन भी नियमित हो रहा है। हाल ही में प्रो. स हो जंग की 'हिंदी उच्चारण प्रवेशिका', प्रो. ई जंग हो की 'हिंदी व्याकरण', किम ऊ जो की 'हिंदी भाषा की प्रवेशिका' आदि उल्लेखनीय प्रकाशित कृतियाँ हैं। सन् 1995 में प्रो. ई जंग हो के निर्देशन व संपादन में प्रथम 'हिंदी-कोरियाई शब्दकोश' और सन् 2008 में किम ऊ जो के संपादन में 'कोरियाई-हिंदी शब्दकोश' प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त कई प्रकार की 'हिंदी वार्तालाप' पुस्तकें प्रकाशित हैं।

2.12.5 अनुवाद :-

प्रो. ई जंग हो ने 'तमस' और 'भारतीय लोककथाएँ' का अनुवाद किया। किम ऊ जो ने 'अपना मोर्चा' और 'भारतीय छोटी कहानियाँ' शीर्षक से अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। इसी तरह प्रो. ईउन गू ने 'निर्मला' और प्रेमचंद की छोटी कहानियाँ' का अनुवाद किया है। इस तरह और भी कई कोरियाई हिंदी विद्वान अनुवाद कार्य में लगे हुए हैं।

जाहिर है बहुत-सी मुश्किलों के बावजूद पिछले चालीस वर्षों के दौरान कोरिया में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्य में काफी प्रगति हुई है जिसका श्रेय भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त दूसरी और तीसरी पीढ़ी के भाषाविदों और शोधकर्ताओं को जाता है। सह हैंग जंग, ली जंग हो, किम वू जो, नो यंग जा, छवे जोंग छान, इन्म गुन दोंग, ली उन गु आदि कोरियाई भाषाविदों का योगदान इस क्षेत्र में विशेष महत्त्व रखता है।

2.13 थाईलैंड :-

2.13.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

थाईलैंड में हिंदी अध्यापन सबसे पहले थाई-भारत संस्कृति आश्रम में शुरू हुआ, जिसकी स्थापना सन् 1943 में स्वामी सत्यानंदपुरी ने की थी। आचार्य डॉ.

करुणा कुशलासाय जी पहले थाई विद्वान थे, जो हिंदी पढ़ने भारत गए। उन्होंने थाईलैंड लौटकर थाई-भारत संस्कृति आश्रम में हिंदी पढाना शुरू किया तथा बैंकॉक के भारतीय दूतावास में नौकरी करने लगे।

सन् 1989 में शिलपाकोन विश्वविद्यालय के पुरातत्वविज्ञान संकाय के प्राच्य भाषा विभाग के स्नातकोत्तर कोर्स के लिए संस्कृत का पाठ्यक्रम बनाया गया। विद्यार्थी मुख्य विषय में संस्कृत एवं चयनात्मक पाठ्यक्रम में हिंदी के 8 यूनिट पढ सकते थे -

हिंदी व्याकरण - 2 युनिट, हिंदी पढना - 2 युनिट, हिंदी वार्तालाप - 2 युनिट, हिंदी लेखन - 2 युनिट

उस समय आचार्य डॉ. चम्लोंग सारफद्नूक हिंदी शिक्षक थे और उन्होंने 'हिंदी भाषा' पुस्तिका (थाई भाषियों के लिए स्व-सीखनी) का निर्माण किया।[16]

2.13.2 थाईलैंड में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1993 में धमसात विश्वविद्यालय में थाईलैंड के भारतीय व्यापारियों के सहयोग से भारत अध्ययन केंद्र की स्थापना की गई। यहाँ के आम लोगों के लिए 40 घंटे हिंदी पाठ्यक्रम चलता था। पूज्य आचार्य डॉ. करुणा कुशलासाय, आचार्य डॉ. चिरफद प्रफनविद्या एवं आचार्य डॉ. चम्लोंग सारफद्नूक हिंदी का अध्यापन करते थे। सन् 1998 में डॉ. बम्रु खाम ने शिलपाकोन विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण की बागडोर संभाली और विद्यार्थियों के लिए एक चयनात्मक पाठ्यक्रम बनाया, वह इस प्रकार है -

चयनात्मक पाठ्यक्रम (18 युनिट) -

हिंदी लेखन - 3 युनिट, हिंदी सुनना एवं वार्तालाप - 3 युनिट, हिंदी व्याकरण - 3 युनिट, हिंदी व्याकरण - 3 युनिट, हिंदी सुनना एवं वार्तालाप - 3 युनिट, हिंदी अनुवाद - 3 युनिट

स्वतंत्र पाठ्यक्रम (12 युनिट) -

पाठावली - 3 युनिट, हिंदी साहित्य का इतिहास - 3 युनिट, उत्कृष्ट हिंदी साहित्य - 3 युनिट, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन - 3 युनिट, समकालीन हिंदी साहित्य अध्ययन - 3 युनिट, व्यापारिक हिंदी तथा पर्यटन - 3 युनिट

जो विदयार्थी हिंदी पढ़ने के इच्छुक हैं, उन्हें थाईलैंड में भारतीय व्यापारियों से छात्रवृत्ति मिलती है। यहाँ के आम आदमियों के लिए भी पाठ्यक्रम (50 घंटे) बने हैं। थाई तथा भारतीय अध्यापक हिंदी का अध्यापन करते हैं। कक्षा का समय शाम को साढे पाँच बजे से साढ़े सात बजे तक रहता है और एक हफ्ते में दो कक्षाएँ लगती हैं। यहाँ दो प्रकार के कोर्स चलते हैं -

प्राथमिक हिंदी - (बेसिक हिंदी व्याकरण, बेसिक पढना, बेसिक लेखन तथा बेसिक हिंदी वार्तालाप)

माध्यमिक हिंदी - (उच्च हिंदी व्याकरण, उच्च हिंदी पढना, उच्च हिंदी लेखन, उच्च हिंदी वार्तालाप)

2.13.3 हिंदी अध्ययन के उद्देश्य :-

जो छात्र हिंदी पढ़ने आते हैं, उनके उद्देश्य भी अलग-अलग हैं -

(क) पढाई के लिए भारत जाना।

(ख) भारतीय संस्कृति को जानना।

(क) व्यापार करना।

(ख) अपने काम में एवं हिंदू देवी-देवताओं के बारे में जानकारी लेना।

(ग) किसी नई भाषा को पढ़ने का सुख प्राप्त करना।

2.13.4 थाईलैंड में हिंदी शिक्षण की समस्याएँ :-

थाईलैंड में हिंदी के छात्र कम हैं, इसके प्रमुख कारण हैं -

(क) शिलपाकोन विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वविज्ञान संकाय के प्राच्य भाषा विभाग में केवल चयनात्मक पाठ्यक्रम ही है।

(ख) विश्वविद्यालय में हिंदी पाठ्यक्रम के बारे में छात्रों को कोई सूचना नहीं होती है।

(ग) हिंदी के कार्यक्रम कम होते हैं जैसे सेमिनार, हिंदी नाटक, भारतीय सांस्कृतिक नृत्य व हिंदी फिचर फिल्म आदि।

(घ) केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने की छात्रवृत्ति भी कम मिलती है।

(ङ) हिंदी सामग्री कम मिलती है।

(च) रोजमर्रा के काम में हिंदी भाषा का प्रयोग करना आवश्यक नहीं है।

आम आदमी के लिए जो पाठ्यक्रम है उसमें काफी कम उपस्थिति हैं। थाईलैंड के मूल भारतवंशियों की उपस्थिति इस कोर्स के लिए कम है।

सन् 1991 से अब तक आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने गए छात्रों की संख्या लगभग 30 हो गई है।

आजकल हिंदी की पढाई चयनात्मक पाठ्यक्रम के रूप में कई विश्वविद्यालयों में की जा रही हैं। जैसे दो बौद्ध भिक्षु के विश्वविद्यालय - महाचुलालोड्लोनराजिवद्याय व महामुकुटराजिवद्यालय, राजखामहैड् विश्वविद्यालय, बैंकाक, छिअमाई विश्वविद्यालय, छिअमाई प्रदेश तथा बूरफाविश्वविद्यालय - जोलबुरी प्रदेश।

किसी ज़माने में हस्तलिखित पाठ बनाए जाते थे लेकिन अब हिंदी की सामग्री प्राप्त हो रही है। जैसे कि हिंदी-थाई व्याकरण, हिंदी-थाई वार्तालाप (डी.वी.डी. के साथ) व हिंदी-थाई शब्दकोश आदि।

शिलपाकोन विश्वविद्यालय में आम आदमियों का हिंदी पाठ्यक्रम संस्कृत अध्ययन केंद्र तथा थाई-भारत संस्कृति आश्रम के द्वारा आयोजित किया गया है अतः

छात्र हिंदी का शिक्षण बहुत कम खर्च में कर पाते हैं। शिलपाकोन विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वविज्ञान संकाय के प्राच्य भाषा विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष व संस्कृत अध्ययन केंद्र के निदेशक आचार्य डॉ. चिरफत प्रफनविद्या हिंदी अध्यापन में सहायता भी करते हैं और हिंदी कक्षा चलाने में वित्तिक सहायता भी देते हैं।

थाईलैंड के एक भारतीय व्यापारी श्री सुशील कुमार की धर्मपत्नी श्रीमती इंदु 2 साल से हिंदी पढ़ाने में सहायता दे रहीं हैं।

2.13.5 मीडिया :-

कुछ हिंदी सीरियलों और फीचर फिल्मों के लिए अनुवाद का कार्य करते हैं, जैसे रामायण, महाभारत, गणेश, हनुमान आदि।

2.14 नेपाल :-

2.14.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

भारत और नेपाल पडोसी देश हैं और इन दोनों देशों की प्रगाढ़ मित्रता है। नेपाल और भारत दो अलग-अलग संप्रभुता संपन्न देश हैं फिर भी इनके बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक धरातल पर बहुत गहरी साम्यता दिखाई देती है। नेपाली और हिंदी भाषा की एक ही लिपि, देवनागरी लिपि है। नेपाली भाषा की हिंदी भाषा के साथ समानता किसी भी अन्य विदेशी भाषा से अधिक है। अतः विचारों का परस्पर आदान-प्रदान सहज-स्वाभाविक ढंग से संभव है। इस दिशा में किए गए प्रयास इन दोनों पडोसी देशों के घनिष्ट संबंध को और भी मजबूत बनाने में सहायक हैं।

नेपाल में हिंदी का प्रयोग लगभग 600 वर्षों से भी अधिक समय से होता आया है, नेपाल के शिलालेखों, अभिलेखों, ताम्रपत्रों, लोक-साहित्य, संस्थागत पुस्तकालय तथा व्यक्तिगत रचनाओं में देखा जा सकता हैं। इतना ही नहीं आदिकाल से ही नेपाल में संगीत, नाट्यमंच, औषध विज्ञान, शिक्षा, पत्राचार, तथा प्रचार आदि

के कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग अनवरत रूप से होता आया है। नेपाल के शहरी क्षेत्र में हिंदी भाषा का दूसरा स्थान है।[17]

उन्नीसवीं शताब्दी में पठन-पाठन की दृष्टि से नेपाली भाषा का क्षेत्र विस्तृत हुआ। भारतीय विश्वविद्यालयों में नेपाली भाषा एक विषय के रूप में रखी जाने लगी। परिणामस्वरूप नेपाली भाषा के पाठ्यक्रम पर भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का प्रभाव पडा अर्थात् नेपाली भाषा में भी हिंदी की तरह ही अंग्रेजी का प्रयोग होने लगा। इस प्रभाव को रोकने के लिए नेपाल में झर्रोवाद आंदोलन भी चला।

2.14.2 वर्तमान स्वरूप :-

नेपाल में हिंदी व्यापक तौर पर जनसंपर्क की भाषा है।

2.14.3 नेपाल में हिंदी भाषा शिक्षण एवं हिंदी साहित्य :-

नेपाल में हिंदी भाषा अत्यंत लोकप्रिय है अतः लोग हिंदी भाषा अच्छी तरह से समझ लेते हैं। नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय के केंद्रीय हिंदी विभाग में स्नातकोत्तर तक की हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है तथा यहाँ हिंदी के कई विद्यार्थियों ने शोध किए हैं और कर रहे हैं।

हिंदी लेखन में गोपाल सिंह नेपाली को विशेष प्रसिद्धि मिली है। नेपाल में जिन साहित्यकारों ने हिंदी भाषा में रचना की है उनमें स्व. केदार भान व्यथित का नाम अग्रणी है। स्व. व्यथित ने हिंदी भाषा में ही अपनी कविता का श्रीगणेश तथा इति श्री चाँद नामक कविता से की थी। हिंदी साहित्य में उनके चार कविता संग्रह अति प्रचलित हैं और वे हैं - 'हमारा देश-हमारा स्वप्न', 'अग्नि श्रृंगार', त्रयी तथा 'तेवर कविता का-संदर्भ आज का'। केवल नेपाल के कवि और साहित्यकारों ने ही नहीं बल्कि विभिन्न विषयों से जुड़े व्यक्तियों ने भी खुलकर हिंदी साहित्य की रचना की है। नेपाल के प्रथम निर्वाचित प्रधानमंत्री स्व. विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला की प्रकाशित तीन लघुकथाएँ 'वहाँ', 'पथिक' और 'अपनी ही तरह' हैं। इसी तरह रामहरि जोशी ने

'नेपाली हिंदी पद्य संग्रह' का संपादन, 'नया सबेरा' तथा 'नेपाल के अमर शहीद' शीर्षक कृतियों का प्रकाशन करके हिंदी साहित्य की अपूर्व सेवा की है। इनके आलावा निम्नलिखित हिंदी साहित्यकारों का अविस्मरनीय योगदान रहा है - प्रो. ढुण्डीराज भंडारी, डॉ. ध्रुवचंद गौतम, उत्तम नेपाली, मोदनाथ प्रश्रित, लोकेंद्र बहादुर चंद, प्रो. मोहन राज शर्मा, स्व. चंद्रदेव ठाकुर, बुन्नी लाल, स्व. प्रो. डॉ. कृष्णचंद्र मिश्र, किशोर नेपाली, प्रो. डॉ. सूर्यनाथ गोप, डॉ. बामदेव पहाडी, डॉ. गौरी शंकर सिंह, डॉ. मथुरा दत्त पांडे, स्व. धुस्वा सायमी, डॉ. तुलवसी भट्टराई, चेतन कार्की, लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, मोतीराम भट्ट, हृदयसिंह प्रधान आदि। इसी तरह विभिन्न क्षेत्रों से जुडी महिलाओं ने भी हिंदी साहित्य लेखन में विशेष योगदान दिया है जैसे - सुश्री भद्र कुमारी घले, प्रो. डॉ. उषा ठाकुर, डॉ. आशा सिंह और प्रो. मृदुला शर्मा।

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लोकेंद्र बहादुर चन्द्र लिखित 'इन्द्रधनुष' शीर्षक कविता-संग्रह सन् 1993 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कविताएँ अत्यंत प्रेरणादाई, प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी हैं।

आज भी नेपाल के बहुल जनसंख्या वाले तराई क्षेत्र में हिंदी विषय की पढाई प्रारंभिक कक्षा से लेकर उच्चशिक्षा तक होती है। काठमांडू घाटी में भी कतिपय स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में हिंदी की पढाई अभी भी हो रही है।

2.14.4 मीडिया :-

नेपाल में हिंदी फिल्में, गीत-संगीत, भजन-कीर्तन, ग़ज़ल सुनने वालों की अपार संख्या है।

हिंदी दैनिक 'नेपाली' के संपादक उमाकांत दास का हिंदी पत्रकारिता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 'लोकमत' पत्रिका के संपादक, 'नेपाल में हिंदी की अवस्था' तथा 'हिंदी कवि और कविताएँ' शीर्षक पुस्तकों का संपादन करके राजेश्वर नेपाली ने हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

यद्यपि नेपाल में राजनीतिक और सामाजिक कारणों से हिंदी भाषा की उन्नति अपेक्षानुरूप न हो पाई। परंतु नेपालियों ने कभी-भी हिंदी को अलग नहीं समझा। रेडियो नेपाल की स्थापना होने पर हिंदी भाषा में से प्रसारण भी हुआ था। प्रतिदिन हिंदी भाषा में समाचार का प्रसारण रेडियो नेपाल से होता है। हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ भी निकल रही हैं। हिंदी साहित्य संगम (जो बाद में हिंदी कला साहित्य संगम के नाम से जाना गया) तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद् नेपाल आदि जैसी संस्थाएँ भी हैं जो समय-समय पर हिंदी से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं। परंतु हिंदी-नेपाली तथा नेपाली-हिंदी अनुवाद की दिशा में अभी न्यून मात्रा में ही कार्य हुआ है जबकि भाषिक शैली और मौलिकता की परख तथा मूल्यांकन के लिए यह अत्यावश्यक है कि दोनों भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं का अनुवाद अधिकाधिक संख्या में हो। नेपाल और भारत की मित्रता को साहित्यिक तौर पर भी सुमधुर और अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनुवाद कार्य को भाषिक सेतु के रूप में प्रयोग करने की आवश्यकता है।

2.15 श्रीलंका :-

2.15.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

वास्तव में श्रीलंका में हिंदी अध्ययन तथा अध्यापन का लगभग पाँच दशकों से अधिक समय का इतिहास दृष्टिगत होता है।

भारतीय आदर्शों से प्रेरित अनेक लंकावासी विभिन्न विषयों, जैसे हिंदी भाषा साहित्य ललित कला, आर्युर्वेद आदि का ज्ञान प्राप्त करने भारत जाने लगे। जब वे स्वदेश लौटे, तभी से श्रीलंका में सर्वप्रथम हिंदी अध्ययन-अध्यापन शुरू हुआ। तत्कालीन शिक्षा संस्थानों में पिरिवन को महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य मिल गया था, जहाँ बौद्ध भिक्षुओं को शिक्षा दी जा रही थी। तदयुगीन प्राच्य विषयों के अध्ययन-अध्यापन के संदर्भ में विशेषतः बौद्ध भिक्षुओं की भूमिका अत्यंत स्तरीय थी।

19वीं सदी के मध्य में प्राचीन भाषोपकार समिति द्वारा प्राच्य भाषाओं की, विशेषतः हिंदी भाषा की परीक्षाओं का आयोजन पिरिवनों में किया गया। हिंदी भाषा तथा उत्तर भारतीय संस्कृति का उचित प्रचार-प्रसार हो इसलिए उपर्युक्त हिंदी परीक्षाओं से उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को सरकारी पाठशालाओं में हिंदी अध्यापकों के रूप में नियुक्त किया गया। हिंदी की शिक्षा दिए जानेवाले पिरिवनों में विद्यालंकार पिरिवन, विद्योदय पिरिवन, सरस्वती पिरिवन आदि प्रमुख थे।

प्राच्य-शिक्षा का स्तर बढाने हेतु उपर्युक्त प्रमुख पिरिवनों में से विद्यालंकार तथा विद्योदय को विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया गया और इन दोनों विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन पर विशेष ध्यान दिया गया। परिणामतः विद्यालंकार विश्वविद्यालय में एक हिंदी विभाग की स्थापना की गई। विद्यालंकार विश्वविद्यालय (वर्तमान में कॅलणिय विश्वविद्यालय) में हिंदी अध्ययन तथा अध्यापन कार्य का श्रीगणेश हिंदी के प्रोफ़ेसर के रूप में पूज्य भिक्षु आनंद कौसल्यायन थेरा द्वारा किया गया, जबकि विद्योदय विश्वविद्यालय (वर्तमान में श्री जयवर्धनपूर विश्वविद्यालय) में पूज्य भिक्षु गलगदर प्रज्ञानंद थेरा द्वारा किया गया।

चेन्नई स्थित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा तथा वर्धा स्थित राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित हिंदी परीक्षाओं में भाग लेने का अवसर श्रीलंका के हिंदी विद्यार्थियों को दिया गया। सरकारी पाठशालाओं में हिंदी से संबंधित परीक्षाओं का संचालन करने हेतु श्री के. एन. डब्लिव, कुरुप्पु जी को एक सरकारी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। साथ-साथ उनके सहायक अधिकारी के रूप में श्री विमवधर्म जी को भी नियुक्त किया गया। इसी तरह सरकार की भरपूर सहायता मिलने के कारण हिंदी शिक्षण का कार्य विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं, पिरिवनों तथा आयुर्वेदिक संस्थानों में शीघ्र फैलने लगा। भारत सरकार ने इसमें भरपूर साथ दिया। पुस्तकालयों में आवश्यक पुस्तकों तथा अन्य सामग्रियों को उपलब्ध कराना और

भारतीय विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा तथा साहित्य का अध्ययन करने हेतु छात्रवृत्तियाँ दिलाना आदि।

विभिन्न भारतीय कला संस्थानों में से शिक्षा प्राप्त कर जो कलाकार वापस लंका लौटे, उन्हें उन भारतीय कला विषयों को पढ़ाने हेतु सरकारी स्कूलों में नियुक्त किया गया। कुछ कलाकारों ने निजी रूप में कई संस्थान स्थापित किए। इन्हीं संस्थानों के जरिए हिंदी भाषा तथा संस्कृति का प्रचार तीव्र हो गया।

हिंदी भाषा के प्रचलन के साथ-साथ उसका अध्ययन करने हेतु सिंहली भाषा में हिंदी शिक्षा ग्रंथों का प्रकाशन होने लगा। उन ग्रंथों के रचनाकारों में से पूज्य भिक्षु प्रोफ़ेसर बबँरेंदे सिरि सीवली थेरो, पूज्य भिक्षु गलगदर प्रज्ञानंद थेरो, पूज्य भिक्षु गिरिधर सुमनजोति थेरो तथा श्री ए. दसनायक जी प्रमुख थे। तदयुगीन मुद्रण तकनीक के अनुकूल जब भी जिन हिंदी अक्षरों की आवश्यकता हुई, तब उन्हें भारत से आयात किए जाने की व्यवस्था की गई।

तदनंतर विभिन्न शास्त्रीय कार्यों में रत जो भारतीय विद्वान यहाँ रहे, उन्होंने अनेक सिंहली तथा पालि भाषाओं में रचित ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया। उनमें से पूज्य भिक्षु प्रोफ़ेसर आनंद कौसल्यायन थेरो तथा पूज्य भिक्षु जगदीश काश्यप थेरो प्रमुख रहे। साथ-साथ पूज्य भिक्षु प्रोफ़ेसर बबँरॅन्दे सिरि सीवली थेरो, पूज्य भिक्षु मैत्री मूर्ति थेरो, श्री डी. बी. तवरप्परुम तथा श्री मुदियन्से रत्नायक आदि ने हिंदी ग्रंथों का सिंहली में अनुवाद किया। कुछ हिंदी ग्रंथों का अनुवाद उनके अंग्रेजी अनुवादों के जरिए सिंहली में किया गया। सन् 1968 में श्री चंद्रसिरि प्रियगुरू द्वारा सिंहली भाषा में कृत 'हिंदी भाषावसह साहित्य' (हिंदी भाषा तथा साहित्य) इस विषय से संबंधित प्रथम मौलिक ग्रंथ माना जा सकता है।

2.15.2 वर्तमान स्वरूप :-

70 दशक के उत्तरार्ध जनसंचार का नया माध्यम टेलीविजन का आगमन हुआ। इस माध्यम से जब हिंदी फिल्में, गाने आदि प्रसारित किए जाने लगे, तभी से हिंदी अध्ययन से संबंधित नए रास्ते खुलने लगे। कयोंकि हिंदी पढनेवाले नए छात्रों के लिए यह एक अच्छा हिंदी का माध्यम था, जिससे वे पहले वंचित रहे।

80 वे दशक में विश्वविद्यालयों में हिंदी-अध्ययन-क्षेत्र का भरपूर विस्तार हुआ है। कॅलणिय विश्वविद्यालय (पहले विद्यालंकार विश्वविद्यालय) में आधुनिक भाषा विभाग के अंतर्गत हिंदी विषय से संबंधित सामान्यवेदी उपाधि पाठ्यक्रम तथा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अलावा एक विशेषवेदी उपाधि पाठ्यक्रम का परिचय कराया गया। इस संबंध में डॉ. (श्रीमती) इंद्रा दसनायक जी ने अहम् भूमिका निभाई। इस पाठ्यक्रम के बाह्य परीक्षक लखनऊ विश्वविद्यालय से हैं अतः इन परीक्षकों के पास उत्तरपत्र तथा शोध-प्रबंध भेजे जाने से स्तरीय हिंदी शिक्षा दिलाने का गौरव इस विभाग को मिला है।

डॉ. इंद्रा दसनायक जी के द्वारा प्रस्तुत किए गए एक प्रस्ताव के अनुसार, सन् 1995 में आधुनिक भाषा विभाग से पृथक होकर एक नए विभाग के रूप में हिंदी अध्ययन विभाग की स्थापना की गई, जो श्रीलंका में स्थापित एकमेव पूर्ण हिंदी अध्ययन विभाग है। वर्तनाम में हिंदी के प्रोफ़ेसर के रूप में (श्रीमती) इंद्रा दसनायक जी इस विभाग में कार्यरत हैं। यह भी कहना उचित होगा कि अभी तक दूसरे विश्वविद्यालयों में (श्री जयवर्धनपूर विश्वविद्यालय तथा सबरगमुव विश्वविद्यालय) हिंदी केवल किसी दूसरे विभाग के एक विषय के रूप में ही पढाई जाती है। इसके अतिरिक्त पिरिवनों, आयुर्वेदिक संस्थानों तथा कुछ सरकारी पाठशालाओं में भी हिंदी शिक्षण दिया जाता है। साथ-साथ भारतीय उच्चायोग से संबंधित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए हिंदी शिक्षण दिया जाने लगा। यहाँ वर्तमान में आगरा स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान के पाठ्यक्रमों का

संचालन किया जा रहा है। श्रीलंका हिंदी समाज, हिंदी निकेतन आदि निजी संस्थाओं से भी हिंदी की शिक्षा विभिन्न स्तरों पर दी जा रही है। साथ-साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार में श्रीलंका हिंदी सम्मेलन तथा अखिल श्रीलंका हिंदी संघ आदि संस्थाओं का योगदान भी अविस्मरणीय है।

सन् 1998 में भारतीय तथा श्रीलंकाई 50वें स्वतंत्रता दिवस मनाने हेतु कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने श्रीलंका स्थित भारतीय उच्चायोग के अनुग्रह से एक हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य अतिथि के रूप में इसमें भाग लेने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर प्रभाकर शुक्ल जी को निमंत्रण दिया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम हिंदी शास्त्रीय संग्रह-1 संज्ञक पत्रिका का लोकार्पण किया गया, जिसमें हिंदी, सिंहली तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में रचित चौदह लेख प्रकाशित हुए। यह श्रीलंका में हिंदी-शिक्षण से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जा सकती है। हिंदी शास्त्री संग्रह-2 का प्रकाशन सन् 2007 में किया गया है, जिसमें एक हिंदी लेख तथा सात सिंहली लेख प्रकाशित हुए। साथ-साथ मौलिक हिंदी से सिंहली में अनूदित अनेक कहानी संकलनों का प्रकाशन भी होने लगा। इनकी विशेषता यह रही कि पहले सिंहली में हिंदी से संबंधित जिन कृतियों का अनुवाद किया गया, उनकी भाषा मौलिक भाषा न होकर अंग्रेजी ही थी। लेकिन इस नई प्रक्रिया से सिंहली पाठकों को अत्यंत लाभ यह होता है कि वे मौलिक हिंदी से सिंहली में अनूदित कृतियों का रसास्वादन कर सकते हैं।

2.15.3 श्रीलंका में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1980 के दशक में हिंदी अध्ययन के क्षेत्र में नया मोड़ दिलाने हेतु भारतीय सरकार ने एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया। उस कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई.सी.सी.आर.) द्वारा आगरा तथा दिल्ली में स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थानों में हिंदी अध्ययन करने हेतु श्रीलंकाई विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ

दी गईं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वर्तमान में भी श्रीलंकाई छात्र हिंदी अध्ययन हेतु भारत जाते रहते हैं।

वर्तमान में कॅलणिय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन विभाग में हिंदी में स्नातकोत्तर शोधकार्य करने की सुविधाएँ भी उपलब्ध की गई हैं।[18] साथ-साथ भविष्य में हिंदी तथा सिंहली साहित्य से संबंधित तुलनात्मक शोध अध्ययन संपन्न कराने के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाने की भी आशा है।

श्रीलंका के विद्यालयों में प्राच्य संगीत के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा है, जिसमें छात्रों को सिंहली लोकसंगीत के साथ-साथ अधिकांशतः उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है। उन विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा का अध्ययन अत्यंत लाभदाई है।

श्रीलंका का आयुर्वेद विज्ञान भारतीय आयुर्वेद शास्त्र से प्रभावित है। इसकी उन्नति के लिए समय-समय पर भारत की सहायता मिलती रहती है। श्रीलंका के आयुर्वेदिक शिक्षाविदों व विद्यार्थियों को भारत जाकर आयुर्वेदिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। दूसरे, वर्तमान समय में उत्तर भारत में उक्त विषय से संबंधित पुस्तकों का प्रकाशन अधिकांशतः हिंदी भाषा में ही उपलब्ध है। अतः श्रीलंका के आयुर्वेदिक शास्त्र के अध्येताओं द्वारा एक भाषा-माध्यम के रूप में हिंदी का अध्ययन किया जाना अधिक उपयोगी होता है।

इसके अतिरिक्त सैनिक प्रशिक्षण के लिए भारत भेजे जाने वाले सैनिकों एवं सेना अधिकारियों के लिए तथा बौद्ध तीर्थ यात्रियों को ले जाने वाले व्यवस्थापकों के लिए हिंदी का ज्ञान होना आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों से भारतीय विश्वविद्यालयों में श्रीलंकन छात्रों में वृद्धि हुई है।

श्रीलंका के परीक्षा विभाग द्वारा संचालित उच्चतम पाठशाला प्रमाणपत्र परीक्षा के लिए हिंदी भी एक विषय के रूप में सम्मिलित है। साथ ही परीक्षा विभाग द्वारा

संचालित प्राचीन भाषोपकार की कई परीक्षाओं में भी हिंदी का स्थान है। छात्रों को यहाँ के कई विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित बाह्य परीक्षाओं में उपाधि स्तर पर हिंदी विषय में बैठने की सुविधा प्राप्त है।

इसके अलावा श्रीलंका स्थित भारतीय दूतावास द्वारा भी हिंदी की कक्षाएँ चलाई जाती हैं। कुछ व्यक्तिगत संस्थाएँ भी यह कार्य करती हैं।

2.15.4 मीडिया :-

राष्ट्रीय रेडियो सिलोन पर हिंदी के गाने प्रसारित होने लगे तब से ही यह रेडियो प्रसारण पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गया। श्रीलंका में हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन देश भर के सिनेमाघरों में होता है तथा श्रीलंकावासियों में ये काफी प्रचलित हैं। कई सिनेमाघरों में कुछ फिल्में दो से लेकर चार वर्षों तक लगातार प्रदर्शित की गईं। इससे यह स्पष्ट होता है हिंदी के प्रति श्रीलंकावासियों में कितनी बडी माँग और गहरी लगन है।

2.16 भूटान :-

2.16.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

भूटान में हिंदी के प्रचार-प्रसार की अधिकारिक शुरुआत बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में हुई थी, जब सन् 1930 के दशक में हा तथा बुमथांग के विद्यालयों में हिंदी को शिक्षण का माध्यम बनाया गया। इसके बाद भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू के प्रयासों के फलस्वरूप छठे दशक के शुरुआत में प्रारंभ किए गए औपचारिक शिक्षण व्यवस्था में भी हिंदी ही शिक्षण का माध्यम बनी।

भारत के सहयोग से भूटान में विभिन्न परियोजनाओं का कार्य चलता रहा है। इन परियोजनाओं के संपादन हेतु भूटान में भारतीयों की उपस्थिति सदैव बनी रही है, जिसने हिंदी के प्रसार को निरंतर गति प्रदान की है। विभिन्न सरकारी संगठनों तथा केंद्रीय जल आयोग, भारतीय सैन्य प्रशिक्षण दल (इमट्राट), वापकोस, सीमा सडक

संगठन (बी.आर.ओ.) राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम (एन.टी.पी.सी.) तथा गैर सरकारी संगठनों जैसे जे. पी. ग्रुप, एच.सी.सी., गैमन इंडिया आदि की उपस्थिति ने भूटान में हिंदी के प्रसार में अनुपम योगदान दिया है। निपुण तथा अर्धनिपुण भारतीय श्रमिकों की भूटान में बहुलता, जो कि सडक निर्माण, भवन-निर्माण तथा उत्पाद क्षेत्रों से जुड़े हैं, ने भी हिंदी को आम भूटानवासी तक पहुँचाया है और हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने में अथाह योगदान दिया है। दैनिक क्रियाकलापों में भूटानी तथा भारतीयों के बीच विचार-विनिमय का मुख्य माध्यम हिंदी ही रही है। भूटान में भारतीय व्यावसायिकों की बहुलता तथा भूटानियों की निर्भरता ने भी हिंदी का प्रसार किया है।

2.16.2 वर्तमान स्वरूप :-

भारत हमेशा ही भूटान के उत्थान तथा विकास का मुख्य सहयोगी देश रहा है और इसके सर्वमुखी विकास हेतु निरंतर प्रयासरत रहा है। भूटान में हिंदी संपर्क भाषा के साथ-साथ व्यावसायिक भाषा का भी स्थान प्राप्त कर चुकी है।

भूटान में हिंदी का प्रचार-प्रसार चिरकाल से औपचारिक तथा अनौपचारिक तौर पर चलता आया है और आज भूटान में हिंदी का जो स्वरूप विद्यमान है, उसमें औपचारिक प्रयासों की तुलना में अनौपचारिक माध्यम का योगदान अद्वितीय है।

2.16.3 भूटान में हिंदी शिक्षण :-

भूटान में अच्छे विद्यालयों, शिक्षण संस्थानों, खासकर उच्च तथा व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों की कमी रही है अतः भूटानवासी शिक्षा हेतु मुख्यतः भारतीय संस्थानों पर ही निर्भर रहते हैं। शिक्षा के अतिरिक्त भारत में नौकरी, व्यवसाय की स्वतंत्रता तथा अवसर ने भी भूटान में हिंदी के प्रसार को आगे बढ़ाया। भारतीय समाज, संस्कृति, शास्त्रीय नृत्य तथा संगीत के प्रति प्रेम तथा जिज्ञासा ने भी भूटानवासियों को हिंदी के प्रति प्रेरित किया है।[19]

भूटानी मुख्यतः बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं, अतः बौद्ध धर्म के उद्गम स्थल भारत से इनका संपर्क चिरकालीन है। इस धर्म के मुख्य तीर्थस्थल जैसे बोधगया, सारनाथ, साँची, कुशीनगर आदि भारत के हिंदी के हृदयस्थल अर्थात् बिहार तथा उत्तर प्रदेश में हैं। भूटानवासी इन तीर्थस्थलों की यात्रा आदिकाल से करते आए हैं। तीर्थ के दौरान उन्हें भारतवासियों, भारतीय संस्कृत तथा भारतीय धरोहरों को देखने और समझने के लिए हिंदी का ज्ञान आवश्यक है। भूटान में स्वास्थ्य सेवाओं की भी नितांत कमी रही है अतः इस दृष्टि से भी भारत पर निर्भरता ने उन्हें हिंदुस्तान और हिंदी के करीब लाने का काम किया है।

भूटान की राजभाषा जोंखा है। आज के वैश्वीकरण के युग में भूटान में जोंखा के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। भूटान में परिनिष्ठित हिंदी का प्रयोग काफी कम होता है क्योंकि यह बोलचाल तथा संपर्क की भाषा के रूप में ही प्रयोग में लाई जाती है अतः यह व्याकरण की दृष्टि से नियंत्रित नहीं रह पाई है। भूटानवासियों के भारत तथा भारतीयों से निरंतर संपर्क की वजह से जोंखा में हिंदी के कई शब्दों का समावेश हो गया है। जैसे हफ्ता, गाड़ी, पूरा, पक्का, छुट्टी, बाजार आदि। भूटान में हिंदी जन-साधारण की भाषा बनकर राष्ट्रीय विकास में संपर्क सहायक की भूमिका निभा रही है।

2.16.4 मीडिया :-

भारतीय फिल्म उद्योग ने भी भूटान में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है। हिंदी चलचित्र (फिल्म), धारावाहिक तथा हिंदी गाने भूटान में अत्यंत लोकप्रिय हैं तथा दर्शकों की संख्या में उत्तरोत्तर बढोत्तरी हो रही है। दूसरी तरफ डिस्कवरी, कार्टून, पोगो, स्टारगोल्ड आदि चैनलों के हिंदी में ध्वन्यारोपण (डबिंग) का भी हिंदी के प्रसार में बहुत बड़ा हाथ है।

सूचना प्रोद्योगिकी के विकास से भूटान भी अछूता नहीं रहा है। हिंदी में माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, ई-बे जैसे वेबसाइट तथा फेसबुक इत्यादि की देवनागरी लिपि में उपलब्धता ने भी भूटान में हिंदी को बढावा दिया है।

2.17 म्यांमार (बर्मा) :-

2.17.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1937 तक यह भारतीय सीमा में माना जाता था। ब्रह्मदेश के नाम से प्राचीन भारत में गरिमा के साथ इसका नाम लिया जाता था। वर्तमान में इसके नाम म्यांमार है। इस राष्ट्र में लाखों मूल भारतीय वंशज रहते हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इस देश में अनेक स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं, जहाँ हिंदी, संस्कृत, पालि अध्यापन की व्यवस्था है।

2.17.2 बर्मा की हिंदी सेवी संस्थाएँ एवं हिंदी शिक्षण :-

2.17.2.1 बर्मा हिंदी साहित्य सम्मेलन :-

इसकी स्थापना सन् 1950 में हुई थी। यहाँ हिंदी की शिक्षा, कार्यक्रम तथा हिंदी की प्रतियोगिताओं का आयोजन करने का प्रयास किया जाता है। प्रौढ़ महिलाओं को हिंदी शिक्षा का कार्य 'प्रौढ़ शिक्षण योजना' के अंतर्गत बहुत दिनों तक चला। इसी संस्था द्वारा प्रयाग के हिंदी साहित्य सम्मेलन की विशारद, साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न, शिक्षा विशारद, वैद्य विशारद आदि की परीक्षाओं के व्यवस्था होती थी। सन् 1985 तक डॉ. ओमप्रकाश केंद्र व्यवस्थापक रहे। हिंदी प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं का भी संचालन यहाँ होता था। रंगून और जियावाडी, चौतगा नगर में इसके केंद्र थे। सन् 1936 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मंद्रास का केंद्र भी यहाँ खुला। सन् 1940-41 में द्वितीय महायुद्ध के समय सारी व्यवस्थाएँ अस्त-व्यस्त हो गईं। फलतः इन संस्थाओं पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। 'शारदा सदन' नाम से

बालिकाओं में हिंदी शिक्षण के लिए इसकी स्थापना हुई। कुछ वर्षों बाद यह भी बंद हो गई।

2.17.2.2 आर्य समाज :-

इस संस्था की स्थापना सन् 1927 में हुई। वैदिक धर्म का प्रचार हिंदी माध्यम से होता है। अखिल बर्मा आर्यन लीग के अंतर्गत लगभग 15 आर्य समाज इस समय कार्यरत हैं। जहाँ हिंदी, संस्कृत आदि की शिक्षा दी जाती है। रंगून, जियावाड़ी में इसके बड़े कार्यालय हैं।

2.17.3 मीडिया :-

म्यांमार में हिंदी सिनेमा एवं गीत बहुत प्रचलित हैं। 'आर्य युवक जागृति' पत्रिका का प्रकाशन होता है। इससे भी हिंदी प्रचार को बल मिलता है।

सन् 1953 में 'ब्रह्म भूमि' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। 'बर्मा समाचार', 'प्राची कलश', 'साप्ताहिक प्रवासी', 'दैनिक नवजीवन' आदि पत्रों का प्रकाशन इन्हीं संस्थाओं के सहयोग से हुआ था। वर्तमान समय में राजनीतिक अस्थिरता के कारण हिंदी के कार्यक्रमों में अप्रत्याशित रूप से बाधा आ रही है।

2.18 पाकिस्तान :-

2.18.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

कराची में 1880 के दशक में अहमद हमेश साहेब न हिंदी अकादमी की स्थापना की। यहाँ की हिंदी अकादमी में अनुवाद का कार्य भी होता रहा। सन् 1885 में जब वे दिल्ली आए तो दिल्ली हिंदी अकादमी में उनका स्वागत किया गया। वह हिंदी में कविता भी लिखते हैं। रेडियो पाकिस्तान देशांतर सेवा से हिंदी में समाचार भी पढते थे।

2.18.2 वर्तमान स्वरूप :-

पाकिस्तान में हिंदी शिक्षण को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - सरकारी स्तर तथा निजी स्तर।

सरकारी स्तर पर पाकिस्तान में हिंदी शिक्षण तीन विश्वविद्यालयों में होता है। क्रमशः नॅशनल यूनिवर्सिटी ऑफ मॉडर्न लैंग्वेजेस, इस्लामाबाद; यूनिवर्सिटी ऑफ़ पंजाब, लाहौर; यूनिवर्सिटी ऑफ़ कराची, कराची।

2.18.3 पाकिस्तान में हिंदी शिक्षण :-

इस्लामाबाद स्थित नॅशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉडर्न लैंग्वेजेस की स्थापना सन् 1970 में एक इंस्टिट्यूट के रूप में हुई थी, जिसे सन् 1999 में यूनिवर्सिटी का स्वरूप प्रदान किया गया। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों में विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य आपसी समझ, सामंजस्य स्थापित करना, सम्प्रेषण का अवसर उपलब्ध करवाना; तथा संस्कृतियों के मध्य स्नेह का भाव, भाईचारे का रंग भरना प्रमुख है। इस विश्वविद्यालय में 23 आधुनिक भाषाओं का अध्यापन कार्य होता है जिसमें एक विभाग हिंदी भाषा का भी है।

लाहौर स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ़ पंजाब में हिंदी शिक्षण की स्थिति सराहनीय है। यहाँ सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी भाषा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त त्रैमासिक हिंदी भाषा संभाषण पाठ्यक्रम की योजना शीघ्र प्रारंभ की जाने वाली है। श्रीमती शबनम रियाज़ हिंदी विभाग की प्रमुख हैं।[20]

कराची स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ़ कराची की स्थापना जून 1951 में हुई थी। इस विश्वविद्यालय में कला संकाय में विभिन्न देशी व विदेशी भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था है। यहाँ सर्टिफिकेट व डिप्लोमा स्तर पर अरबी, सिंधी, उर्दू, हिंदी, फारसी, बांग्ला, स्पेनिश आदि भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं।

इन कक्षाओं में सर्वप्रथम हिंदी का अक्षर ज्ञान प्रदान किया जाता है। द्वितीय वर्ष में बालबोध, तृतीय वर्ष में रामायण का पाठ, चतुर्थ वर्ष में गीता का ज्ञान व

पंचम वर्ष में श्रीमद्भगवत गीता का अध्ययन किया जाता है। तत्पश्चात संतों की वाणी में पारंगत होते हैं, यह अध्यापन कार्य निःशुल्क चलता है। वर्ष के अंत में अर्थात जून माह में वार्षिक परीक्षा ली जाती है। जिसके लिए प्रत्येक छात्र-छात्रा से मात्र पाँच रुपये परीक्षा शुल्क लिया जाता है। परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को श्रीफल, बालरामायण, गीता तथा संतों की वाणी उपहार स्वरूप भेंट की जाती है। हिंदी का यह शिक्षण कार्य संपूर्ण वर्ष चलता है। कक्षाएँ सायंकाल में चलती हैं तथा ग्रीष्म ऋतु में 6 से 8 तक तथा शरद ऋतु में 5 से 7 बजे तक लगती हैं।

अधिकांश हिंदी पढ़ानेवाली महिलाएँ ही हैं। इनको कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पडता है। भारत की धर्म-संस्कृति को समझने के लिए यह दूरदर्शन के धारावाहिकों से विद्यार्थियों को परिचित कराती हैं। पीएच.डी. की व्यवस्था भी यहाँ हो चुकी है। तीनों विश्वविद्यालय एक-दूसरे के सहयोग से काम चला रहे हैं।

2.18.4 मिडिया :-

देशांतर सेवा के लिए आज रेडियो इस्लामाबाद से हिंदी समाचार पढे जाते हैं। पाकिस्तान में बॉलीवुड की हिंदी फिल्में, दूरदर्शन के धारावाहिक बहुत लोकप्रिय रहे हैं और आज भी बडे चाव के साथ देखे जाते हैं। यहाँ के बहुत से लोग, बच्चे-बडे फिल्मों और धारावाहिकों और समाचार आदि देख-सुनकर हिंदी बोलने और समझने लगे हैं। कभी-कभी वे आनंद लेने के लिए भी हिंदी बोल लेते हैं। हिंदी के कुछ शब्द उनकी बोलचाल में रच-बस गए हैं, जैसे आदर्श, गंभीर, समस्या, प्रकाश आदि। वैसे भी उर्दू में बहुत ध्वनियाँ, अक्षर शब्द और मुहावरे आदि हिंदी से गए हैं और उस भाषा में बस गए हैं।

पाकिस्तान में हिंदी सिनेमा अत्यंत प्रचलित है तथा कई सिनेमाघरों में ये निरंतर प्रदर्शित होते हैं। हिंदी गीत तो बहुत पसंद हैं ही और इन्हें पाकिस्तान के गायक गाना पसंद करते हैं।

2.19 इंडोनेशिया :-

2.19.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

इंडोनेशिया में हिंदी का आगमन सन् 1950 के आस-पास हुआ, जब भारत के एक विद्वान पंडित ने सर्वप्रथम बाली में यहाँ के मूल निवासियों को गायत्री मंत्र का पाठ पढ़ाया तथा संस्कृत व हिंदी का उल्लेख किया। पाश्चात्य विद्वान जे. गोंडा ने 'संस्कृत इन इंडोनेशिया' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें इस महान भाषा के दक्षिण पूर्व देशों पर प्रभाव का वर्णन है। दक्षिण पूर्व देश संस्कृत को अच्छी तरह जानते थे तथा यहाँ की भाषाएँ जो वर्तमान में हैं जैसे थाई, मलय, बहासा इंडोनेशिया, आलो एवं कंबोडिया, ये सभी भाषाएँ न्यूनाधिक रूप में संस्कृत से निकलती हैं।

2.19.2 वर्तमान स्वरूप :-

आज इंडोनेशिया में लगभग चालीस हज़ार भारतीय हैं। इंडोनेशिया में हिंदी भाषा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और इसके दो मुख्य कारण हैं - भारतीय फिल्मों की चाहत और भारत का एक आर्थिक शक्ति में विकास।

2.19.3 इंडोनेशिया में हिंदी शिक्षण :-

इंडोनेशिया के बाली प्रांत में सर्वप्रथम सन् 1986 में इंडोनेशियाई सरकार ने दो विद्यार्थियों को हिंदी सीखने के लिए छात्रवृत्ति दी। इन विद्यार्थियों ने आगे चलकर हिंदी में शोधकार्य किए।[21]

2.19.4 इंडोनेशिया की हिंदी प्रचारक संस्था - 'बाली-इंडियन फाउंडेशन' :-

हाल ही में इंडोनेशिया में 'बाली-इंडियन फाउंडेशन' की स्थापना हुई है। यह संस्था हिंदी और संस्कृत भाषा अध्ययन हेतु डिप्लोमा तथा डिग्री पाठ्यक्रम संचालित करने के प्रयास में है।

2.19.5 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा व गीत यहाँ काफी पसंद किए जाते है तथा हिंदी शिक्षण इसका आधार लिया जाता है।

2.20 वियतनाम :-

2.20.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप :-

वियतनाम में सन् 2000 में वियतनामी विश्वविद्यालय और भारतीय दूतावास के सौजन्य से भारतीय शिक्षण विभाग का शुभारंभ हुआ।[22]

2.20.2 वियतनाम में हिंदी शिक्षण :-

वर्तमान में वियतनामी भाषा के माध्यम से वियतनाम में हिंदी का शिक्षण व प्रशिक्षण कार्य सुश्री साधना सक्सेना कर रही हैं। वियतनाम में यही एकमात्र विश्वविद्यालय है जहाँ हिंदी भाषा को यहाँ के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। यहाँ प्रति दो वर्ष में दो सत्र होते हैं। कुल मिलाकर छात्रों को छः सत्र करने पड़ते हैं। वियतनामी छात्रों की रुचि भारतीय संस्कृति में अत्यधिक है। छात्र हिंदी गाने, हिंदी कविताएँ व नृत्य सीखने में विशेष रुचि रखते हैं। वियतनाम में हिंदी की स्थिति देखें तो पाते हैं कि हिंदी यहाँ सिर्फ हो ची मिन्ह तक ही सीमित नहीं है, यह पूरे देश में फैल चुकी है। इसका प्रमाण पिछले दिनों चाविन्ह प्रांत में हिंदी-शिक्षण कार्यक्रम के आयोजन से मिलता है जहाँ लगभग तीन सौ वियतनामी विद्यार्थी सहभागी हुए थे। यह आयोजन भारतीय दूतावास एवं चाविन्ह विश्वविद्यालय के संयुक्त आयोजन में हुआ। वियतनामी विश्वविद्यालय छात्रों में हिंदी के प्रति ललक पैदा करने के लिए समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। वियटनाम में आयोजित 'त्यौहार 2010' में, वियतनामी छात्रों ने भारतीय पोशाखों का प्रदर्शन किया था। इसी तरह 'विश्व पकवान समारोह 2010' का आयोजन हुआ था जिसमें भी वियतनामी छात्रों ने बहुत ही बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।

2.20.3 हिंदी की संस्था :-

वियतनाम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'इंडियन कौंसलावास' नामक संस्था का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यह संस्था यहाँ के हिंदी शिक्षण में लगने वाली संपूर्ण सामग्री की व्यवस्था करती है। इसी संस्था के सहयोग से वियतनाम में प्रतिवर्ष हिंदी दिवस का आयोजन भी किया जाता है। नॅशनल यूनिवर्सिटी ऑफ वियतनाम और इंडियन कौंसलावास छात्रों को पुरस्कृत-सम्मानित भी करती हैं।

नॅशनल यूनिवर्सिटी ऑफ वियतनाम हिंदी शिक्षण, प्रशिक्षण और उसके प्रचार-प्रसार में पूरी तरह समर्पित है। इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष एशियाई त्यौहारों का आयोजन भी किया जाता है, जिसमें 'भारतीय शिक्षा विभाग' के छात्र 'इंडियन स्टॉल' लगाते हैं, यहाँ भारतीय संस्कृति और समाज से जुडी वस्तुओं का प्रदर्शन किया जाता है जिससे उसे देखने वालों के मन में भारत को और जानने की इच्छा पैदा हो।

हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति, परंपरा और सभ्यता को जानने में वियतनामी बहुत रुचि लेते हैं। हो ची मिन्ह के अतिरिक्त और भी कई विश्वविद्यालय हैं जो अपने पाठ्यक्रम में हिंदी को सम्मिलित करने के लिए उत्सुक हैं। वियतनाम में हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अब भी बहुत कुछ करना शेष है। अब तक यहाँ पर वियतनामी-हिंदी तथा हिंदी-वियतनामी शब्दकोश नहीं बन पाए हैं। इंडियन कौंसलावास इस दिशा में कार्यरत जरूर है। इससे विद्यार्थियों को हिंदी सीखने में बहुत सहायता मिलेगी।

2.20.4 मीडिया :-

वियतनामी लोगों को हिंदी सिनेमा में बड़ी रुचि है। इन्हें फ़िल्मी गीत एवं नृत्य में अत्यंत रुचि है। यहाँ हुए कार्यक्रमों में उनकी यह रुचि सामने आती है।

2.21 सिंगापूर :-

2.21.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

दयानंद एंग्लो-वेदिक (डी.ए.वी.) हिंदी स्कूल के वर्तमान प्रधानाचार्य श्री ओमप्रकाश राय के अनुसार सन् 1957 में इस स्कूल ने हिंदी, अंग्रेजी तथा गणित की कक्षाएँ शुरू की। उस समय स्कूल में केवल 8 छात्र थे और श्री शंकर शर्मा स्कूल के आचार्य थे। इसके अलावा नेताजी हिंदी हाईस्कूल भी छात्रों को हिंदी की शिक्षा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा था। इस स्कूल में श्री वशिष्ठ राय हिंदी पढाते थे, जिन्होंने सिंगापुर में हिंदी के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने न केवल इस देश में हिंदी भाषा को जीवित रखा, बल्कि 'प्यार की दुनिया' तथा 'पहली अप्रैल' नामक दो उपन्यास भी लिखे। उस समय के हिंदी के सक्रिय कार्यकर्ताओं में राजेंद्र पांडेय, छेदी शर्मा तथा उमाशंकर दुबे के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

डी.ए.वी. हिंदी स्कूल के सचिव श्री राजेश राय के अनुसार सन् 1960 के दशक में राजकपूर, शम्मी कपूर, देव आनंद, मधुबाला, नर्गिस तथा सुरैया की सफल हिंदी फिल्मों ने लोगों को हिंदी सीखने की ओर आकर्षित किया। तब अनेक मलय तथा चीनी लोग डी.ए.वी. हिंदी स्कूल द्वारा चलाई जानेवाली कक्षाओं में हिंदी पढ़ने आने लगे। इस स्कूल में उस समय हिंदी की शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी और तब सरकार ने हिंदी को आधिकारिक मातृभाषा के रूप में मान्यता प्रदान नहीं की थी। जहाँ तक छात्रों का सवाल था, वे सीनियर केम्ब्रिज में तीसरी भाषा के रूप में हिंदी ले सकते थे। लेकिन, सरकारी मान्यता के अभाव में हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य केवल कुछ उत्साही कार्यकर्ताओं तक ही सीमित रहा। तब एक युवा समूह ने कुछ समय तक संदेश नामक एक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित की।

उस समय तक सिंगापूर में द्वितीय भाषा के रूप में केवल मलय, तमिल तथा चीनी भाषाएँ ही पढाई जाती थीं। अन्य किसी भाषा को सरकारी मान्यता प्राप्त नहीं थी, अतः हिंदीभाषी बच्चों को मजबूरन इनमें से ही कोई एक भाषा पढनी पडती थी। इस कमी को पूरा करने के लिए जनवरी, 1989 में सिंगापुर उत्तर भारतीय हिंदू

एसोसिएशन ने आर्य समाज तथा श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्रबंधकों और कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण लोगों की एक कार्यवाहक समिति का निर्माण करने के लिए आमंत्रित किया। श्री शिवाकांत तिवारी को इस समिति का अध्यक्ष चुना गया।

श्री तिवारी 4 अक्तूबर, 1989 को तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. टोनी तान से मिले और उन्होंने उनके समक्ष सिंगापुर में हिंदीभाषियों के बच्चों की समस्याएँ प्रस्तुत करते हुए उनके लिए हिंदी का शिक्षण शुरू करने तथा उसे द्वितीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया।[23] डॉ. तान ने तिवारी जी की मांग को स्वीकार करते हुए सभी माध्यमिक स्कूलों में 10 वीं कक्षा तक बंगाली, गुजराती, पंजाबी तथा उर्दू सहित हिंदी का शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में शुरू करने की घोषणा की। इस अनुमति के बाद हिंदी की पहली कक्षाएँ सिंगापुर के बेंग वान प्राइमरी स्कूल में प्रारंभ की और इस प्रकार इस देश में हिंदी शिक्षण की शुरूआत हुई।

2.21.2 वर्तमान पृष्ठभूमि :-

सिंगापुर में बसे भारतीय मूल के लोगों के सामने सबसे बडी समस्या अपनी संस्कृति तथा भाषा को सुरक्षित बनाए रखने की है। दैनिक जीवन में उनके बच्चों को सतत एक विदेशी सभ्यता तथा भाषा के संपर्क में रहना पडता है। अकसर माता-पिता, दोनों ही नौकरी करते हैं, ऐसे में बच्चों को घर पर वे संस्कार नहीं मिल पाते जो उनकी अपनी संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं।

भाषा संस्कृति का वाहन है, अतः अगर उन्हें अपनी मातृभाषा पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो जाती है, तो वे विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से अपनी संस्कृति से संबंध बनाए रख सकते हैं।

2.21.3 सिंगापूर में हिंदी शिक्षण :-

सिंगापुर की दो संस्थाएँ, हिंदी सोसाइटी तथा आर्यसमाज मंदिर द्वारा संचालित डी.ए.वी. हिंदी स्कूल, हिंदी केंद्रों के माध्यम से भावी पीढी को हिंदी की

विधिवत् शिक्षा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। तीन तरह के लोग सिंगापुर में हिंदी पढते हैं, एक तो वे हैं जो एक नई भाषा सीखने की भावना से प्रेरित होकर हिंदी की कक्षाओं में आते हैं दूसरे प्रकार के लोग वे हैं जो बॉलीवुड की फिल्मों का आस्वाद लेने के लिए हिंदी सीख रहे हैं और तीसरी श्रेणी में वे हैं जो भारत के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी सीखना जरूरी समझते हैं।

2.21.4 सिंगापूर की हिंदी प्रचारक संस्थाएँ :-

2.21.4.1 हिंदी सोसाइटी :-

4 अगस्त, 1990 को हिंदी सोसाइटी, सिंगापुर का पंजीकरण हुआ और इसके अगले दिन से ही इस संस्था ने अपनी हिंदी की कक्षाएँ भी शुरू कर दीं, जो केवल 7वीं कक्षा से 10 वीं कक्षा के छात्रों के लिए ही थीं। बाद में 25 मार्च, 1991 को सरकार ने 12 वीं कक्षा के छात्रों के लिए तथा 23 जुलाई, 1993 को पहली से छठी कक्षा तक के छात्रों के लिए हिंदी कक्षाएँ चलाने की अनुमति दे दी। वर्तमान में 47 स्कूलों में हिंदी पढाई जा रही है। हिंदी के अंको को अन्य विषयों के अंकों के साथ जोडने की अनुमति भी मिल गई है। स्कूलों में ही हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था के साथ-साथ छुट्टी के दिन चलनेवाली हिंदी की कक्षाएँ भी चल रही है। जिन स्कूलों में हिंदी की कक्षाओं की व्यवस्था नहीं है वहाँ के छात्र रविवार को चलने वाली कक्षाओं में पढ़ते है।

सोसाइटी को हिंदी पढ़ाने के लिए सरकार से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती है। छुट्टी के दिन हिंदी की कक्षा चलाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने सरकारी स्कूलों की इमारतें जरूर उपलब्ध कराई हैं। सोसाइटी को हिंदी शिक्षकों की कमी कभी महसूस नहीं हुई। इसका कारण यह है कि अनेक इंजीनियर, डॉक्टर तथा अन्य क्षेत्रों में काम करनेवाले लोग सिंगापुर में आकर बस गए हैं। उनकी शिक्षित पत्नियों ने यहाँ हिंदी पढ़ाना शुरू किया।

सन् 2008 से एक नया प्राइमरी हिंदी पाठ्यक्रम लागू किया गया है, जिसके अंतर्गत प्राथमिक स्कूलों में हिंदी पढ़ाने के लिए हिंदी सेंटर के अध्यापकों ने नई पाठ्य सामग्री तैयार की। पिछले कुछ वर्षों से सोसाइटी नर्सरी हिंदी कोर्स भी चला रही है। इसके अतिरिक्त वयस्क को हिंदी पढ़ाने के लिए अलग से कक्षाएँ चलाई जाती हैं। अनेक चीनी तथा मलय इन कक्षाओं में हिंदी पढ़ने आते हैं। अनेक भारतीय मूल के लोग जिन्हें हिंदी नहीं आती, वे भी यहाँ हिंदी सीखते हैं।

हिंदी सोसाइटी एक वार्षिक पत्रिका 'साधना' का प्रकाशन भी करती है, जिसमें हिंदी पढ़नेवाले छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त शिक्षकों की रचनाएँ भी प्रकाशित होती हैं। इस प्रकार यह पत्रिका अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों को हिंदी में सृजन करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। आमतौर पर हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होता रहता है। हिंदी शिक्षण के अतिरिक्त सोसाइटी, भारतीय त्यौहार भी सामूहिक रूप से मनाती है और इन अवसरों पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। संस्था का अपना एक नाट्य समूह भी है, जिसमें पूर्व तथा वर्तमान छात्रों के साथ-साथ सिंगापुर के अन्य हिंदीभाषी भी भाग लेते हैं। सिंगापुर में हर साल एक नाटक मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ मलय तथा चीनी भाषाओं के नाटकों का मंचन भी किया जाता है।

2.21.4.2 आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी.हिंदी स्कूल :-

हिंदी को सरकारी मान्यता प्राप्त हो जाने के बाद आर्य समाज द्वारा संचालित डी.ए.वी.हिंदी स्कूल भी इस काम में पीछे नहीं रही। इसके अंतर्गत आज हिंदी की 70 से अधिक कक्षाएँ चलाई जाती हैं, जिनमें लगभग 60 अध्यापक हैं। वर्तमान में यहाँ पढ़नेवाले छात्रों की संख्या 300 से बढकर 1800 तक पहुँच गई है। हिंदी सोसाइटी की ही तरह यह संस्था भी अनेक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन तो करती है ही,

साथ ही यह त्यौहारों का सामूहिक आयोजन तथा विशेष अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। इसकी वार्षिक पत्रिका का नाम है 'दृष्टि'।

उक्त दोनों संस्थाओं के अतिरिक्त सिंगापूर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में डॉ. पीटर जेराल्ड फ्रीडलैंडर के नेतृत्व में हिंदी की कुछ विशेष कक्षाएँ चलाई जाती हैं।

2.21.5 मीडिया :-

हिंदी फिल्मों ने भी सिंगापुर में हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफी योगदान दिया है। इसके अलावा टी.वी. चैनलों पर भी अकसर भारतीय फिल्में दिखाई जाती हैं। इन फिल्मों ने चीनियों तथा मलयभाषियों में भी हिंदी को लोकप्रिय बना दिया है।

निष्कर्ष :-

इन एशियाई देशों में हिंदी के इतिहास को जानने के बाद यह तो स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ के कुछ देशों में हिंदी का अस्तित्व कितने प्राचीन काल से है और किस तरह भारतीय संस्कृति की और ये देश आकर्षित थे। उस ज़माने में हिंदी भारतीय संस्कृति को करीब से जानने और समझने के लिए सीखी जाती थी और अब वर्तमान में भारत से व्यापारिक संबंध बढाने के लिए हिंदी का शिक्षण जोर-शोर से हो रहा है। भविष्य में हिंदी को चरम सीमा तक पहुँचाने में, हिंदी शिक्षण के लिए प्रयुक्त अत्याधुनिक संचार माध्यम, इस दिशा में सहायक आधार हो सकते हैं।

संदर्भ संकेत

1. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2010**, टेंगर सत्यदेव, पृष्ठ क्र. 69
2. **गगनांचल - 2012**, डॉ. कमलेश कामता, पृष्ठ क्र. 102
3. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. शुक्ला उषा देवी, पृष्ठ क्र. 28
4. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. वर्मा विमलेश कांति, पृष्ठ क्र. 13
5. **गगनांचल - 2012**, डॉ. कमलेश कामता, पृष्ठ क्र. 103
6. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2010**, सक्सेना भावना, पृष्ठ क्र. 30
7. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, सिंह कुणाल, पृष्ठ क्र. 350
8. **गगनांचल - 2012**, डॉ. कमलेश कामता, पृष्ठ क्र. 105
9. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. पोद्दार सीताराम, पृष्ठ क्र. 166
10. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, कुमार नारायण, पृष्ठ क्र. 24
11. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. मधु मदनलाल, पृष्ठ क्र. 57
12. **गगनांचल - 2012**, डॉ. मुहीबोवा उल्फल, पृष्ठ क्र. 92
13. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2012**, प्रो. फुजिइ तोकेशि; श्री आदाची क्योसुके, पृष्ठ क्र. 33
14. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. चिंगश्वुए च्यांग, पृष्ठ क्र. 65
15. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2010**, ऊजो किम, पृष्ठ क्र. 49
16. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. श्वामीक बमरुंग, पृष्ठ क्र. 110
17. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, सिंह विशाल, पृष्ठ क्र. 316
18. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. हेवावितानगमगे उपुल रंजीत, पृष्ठ क्र. 145
19. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. नटराजन अ., पृष्ठ क्र. 159
20. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. असद माजदा, पृष्ठ क्र. 148

21. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, श्रीवास्तव रेखा, पृष्ठ क्र. 360

22. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, श्रीवास्तव रेखा, पृष्ठ क्र. 355

23. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, मित्तल जितेंद्र कुमार, पृष्ठ क्र. 98

अध्याय तीन

विदेशों में हिंदी

(अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों के संदर्भ में)

प्रस्तावना

3.1 अमेरिका

- 3.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- 3.1.2 वर्तमान स्वरूप
- 3.1.3 अमेरिका में हिंदी शिक्षण
- 3.1.4 अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाएँ
  - 3.1.4.1 हिंदी यू.एस.ए.
  - 3.1.4.2 युवा हिंदी संस्थान
  - 3.1.4.3 विश्व हिंदी समिति
  - 3.1.4.4 भारतीय विद्या भवन
- 3.1.5 मीडिया

3.2 कनाडा

- 3.2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- 3.2.2 वर्तमान स्वरूप
- 3.2.3 कनाडा में हिंदी शिक्षण
- 3.2.4 कनाडा की हिंदी सेवी संस्थाएँ
  - 3.2.4.1 हिंदी परिषद्
  - 3.2.4.2 हिंदी लिटरेसी सोसायटी ऑफ कनाडा
  - 3.2.4.3 क्यूबेक हिंदी संघ

3.2.4.4 मैनीटोबा हिंदी परिषद्

3.2.4.5 भारतीय विद्या संस्थान

3.2.4.6 हिंदी साहित्य सभा

3.2.4.7 हिंदी प्रचारिणी सभा

3.2.4.8 हिंदी लिटरेरी सोसायटी ऑफ कनाडा

3.2.5 मीडिया

3.3 इटली

3.3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.3.2 वर्तमान स्वरूप

3.3.3 इटली में हिंदी शिक्षण

3.3.3.1 ओरियंटल विश्वविद्यालय

3.3.3.2 रोम विश्वविद्यालय

3.3.3.3 वेनिस विश्वविद्यालय

3.3.3.4 टूरिन (तोरीनो) विश्वविद्यालय

3.3.3.5 मिलान विश्वविद्यालय

3.3.4 मीडिया

3.4 ब्रिटेन

3.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.4.2 वर्तमान स्वरूप

3.4.3 ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण

3.4.4 ब्रिटेन की हिंदी सेवी संस्थाएँ

3.4.4.1 भारतीय उच्चायोग लंदन

3.4.5 मीडिया

3.5 ऑस्ट्रेलिया

3.5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.5.2 वर्तमान स्वरूप

3.5.3 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षण

3.5.4 हिंदी प्रचारक संस्था

3.5.5 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी मीडिया

3.6 अर्मेनिया

3.6.1 ऐतिहासिक परिदृश्य

3.6.2 वर्तमान स्वरूप

3.6.3 अर्मेनिया में हिंदी शिक्षण

3.6.4 अर्मेनिया की हिंदी सेवी संस्था - भारतीय दूतावास

3.6.5 मीडिया

3.7 इज़रायल

3.7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.7.2 वर्तमान स्वरूप

3.7.3 इज़रायल का हिंदी शिक्षण

3.7.4 मीडिया

3.8 ऑस्ट्रिया

3.8.1 ऐतिहासिक परिदृश्य

3.8.2 वर्तमान स्वरूप

3.8.3 ऑस्ट्रिया में हिंदी शिक्षण

3.8.4 मीडिया

3.9 क्रोएशिया

3.9.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.9.2 वर्तमान स्वरूप

3.9.3 क्रोएशिया में हिंदी शिक्षण

3.9.4 मीडिया

3.10 चेक गणराज्य

3.10.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.10.2 वर्तमान स्वरूप

3.10.3 चेक गणराज्य में हिंदी शिक्षण

3.11 जर्मनी

3.11.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.11.2 वर्तमान स्वरूप

3.11.3 जर्मनी की बॉन विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण

3.11.4 मीडिया

3.12 स्कैंडिनेवियन देश

3.12.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.12.2 वर्तमान स्वरूप

3.12.3 स्कैंडिनेविया का हिंदी शिक्षण

3.12.4 नोर्वे तथा फ़िनलैंड में हिंदी की स्थिति

3.12.4.1 नॉर्वे

3.12.4.2 फ़िनलैंड

3.12.5 प्रमुख हिंदी सेवी संस्था

3.12.6 मीडिया

3.13 नीदरलैंड

3.13.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.13.2 वर्तमान स्वरूप

3.13.3 हिंदी भाषा का शिक्षण एवं इसके लिए संस्थाओं का योगदान

3.13.4 मीडिया

3.14 न्यूज़ीलैंड

3.14.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.14.2 वर्तमान स्वरूप

3.14.3 न्यूज़ीलैंड में हिंदी शिक्षण

3.14.4 न्यूज़ीलैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभिन्न संस्थाओं का योगदान

3.14.5 मीडिया

3.15 पोलैंड

3.15.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.15.2 वर्तमान स्वरूप

3.15.3 पोलैंड में हिंदी शिक्षण

3.15.4 मीडिया

3.16 फ्रांस

3.16.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप

3.16.2 हिंदी शिक्षण

3.16.2.1 इनालको

3.16.2.2 एक्स-ओं-प्रोवोंस विश्वविद्यालय

3.16.2.3 जाँ मुलाँ विश्वविद्यालय

3.16.3 मीडिया

3.17 बुल्गेरिया

3.17.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्वरूप एवं हिंदी शिक्षण

3.17.2 बुल्गेरिया में हिंदी शिक्षण

3.17.3 मीडिया

3.18 बेलारूस

3.18.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.18.2 वर्तमान स्वरूप एवं हिंदी शिक्षण

3.19 यूक्रेन

3.19.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.19.2 वर्तमान स्वरूप

3.19.3 यूक्रेन में हिंदी शिक्षण

3.19.4 यूक्रेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ

3.20 रोमानिया

3.20.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप

3.20.2 रोमानिया में हिंदी शिक्षण

3.20.3 मीडिया

3.21 हंगरी

3.21.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.21.2 वर्तमान स्वरूप

3.21.3 हंगरी में हिंदी शिक्षण

3.21.4 भारतीय दूतावास

3.21.5 मीडिया

3.22 स्लोवेनिया

3.22.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.22.2 वर्तमान स्वरूप

3.22.3 स्लोवेनिया में हिंदी शिक्षण

3.22.4 मीडिया

3.23 पुर्तगाल

3.23.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.23.2 वर्तमान स्वरूप

3.23.3 पुर्तगाल में हिंदी शिक्षण

3.23.4 मीडिया

3.24 स्पेन

3.24.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.24.2 वर्तमान स्वरूप

3.24.3 स्पेन में हिंदी शिक्षण

3.24.4 मीडिया

3.25 खाड़ी देश

3.25.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.25.2 वर्तमान स्वरूप

3.25.3 हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ

3.25.4 मीडिया

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय तीन

विदेशों में हिंदी

(अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों के संदर्भ में)

प्रस्तावना :-

वर्तमान युग में भारत की प्रगति और विकास से पूरा विश्व प्रभावित है। वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के इस युग में विदेशियों में हिंदी का महत्त्व बढ रहा है। भारत से व्यापर करने, भारत दर्शन तथा भारतीय संस्कृति को करीब से जानने की जिज्ञासा, विश्व के अधिकतर देशों के नागरिकों में हिंदी सीखने की इच्छा बढ़ा रही है। विदेशों में भारत के बॉलीवुड का हिंदी सिनेमा अत्यंत लोकिप्रय है। यहाँ तक कि हिंदी गीतों का अर्थ जानने तथा फिल्मों की कहानी समझने के लिए कई विदेशी हिंदी सीख रहे हैं। विदेश में रहकर प्रवासी भारतीय, अपने देश एवं अपनी भाषा हिंदी का महत्त्व अधिक गहराई से महसूस करते हैं अतः अपनी संस्कृति तथा भाषा से जुड़े रहना पसंद करते हैं ताकि उनकी आने वाली पीढ़ी भी इसके महत्त्व को जाने एवं अपने देश, संस्कृति एवं भाषा से जुड़े रहें। इसलिए पूरे विश्व में प्रवासी भारतीयों द्वारा बनाए गए कई सांस्कृतिक संघ हैं जहाँ वे हर भारतीय त्यौहार, पूजा पाठ एवं अन्य सभी कार्यक्रम करते रहते हैं जिसके कारण उनका परिवार भारतीय संस्कृति से जुड़ा रहता है। इस अध्याय में उन देशों का वर्णन है जहाँ प्रवासी भारतीय काम-काज, शिक्षण या व्यापार के लिए गए एवं वहीं बस गए। इन्हें संसार के सभी सुख प्राप्त हैं लेकिन फिर भी उन्हें अपने देश से दुराव सदा ही अखरता है इसीलिए वे अपने आपको विभिन्न संस्थाओं, समूहों एवं संघों से जोड़े रखते हैं ताकि वे हमेशा भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा के निकट रहें और उसके विकास में निरंतर प्रयत्नरत रहें।

3.1 अमेरिका :-

3.1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

आज हिंदी का, अमेरिका की शिक्षा व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अमेरिका में हिंदी बोलने वालों की संख्या, अमेरिकी जनगणना-2013 के अनुसार, छः लाख से अधिक है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के भाषाविद डॉ. सुरेंद्र और डॉ. विजय गंभीर के अनुसार अमेरिका में ऐसे भारतीय अप्रवासी आठ लाख के निकट हैं जिनकी दूसरी भाषा हिंदी है यदि इन्हें भी हिंदी बोलने वालों से जोड दें तो कुल संख्या बीस से पंद्रह लाख के भी ऊपर चली जाएगी। हिंदी की प्रतिष्ठा और उसकी शिक्षा को बढावा देना एक महत्त्वपूर्ण कारण था जिसके कारण इक्कीसवीं सदी में अमेरिकी सरकार की भाषा नीति में मूलभूत बदलाव लाए गए।

3.1.2 वर्तमान स्वरूप :-

सन् 2006 में जब अमेरिका के व्हाइट हॉउस ने हिंदी को राष्ट्रीय वाणिज्य और सुरक्षा की दृष्टी से महत्त्वपूर्ण विदेशी भाषाओं की श्रेणी में शामिल किया तब से यहाँ हिंदी पठन-पाठन में अवर्णनीय ढंग से तीव्रता आई। नेशनल सिक्योरिटी लैंगवेज इनिशिएटीव (राष्ट्रीय सुरक्षात्मक भाषायी पहल) नामक इस उच्च स्तरीय कार्यक्रम के अंतर्गत उर्दू, पश्तो, दरी सहित एशिया और अफ्रीका की आधे दर्जन से अधिक भाषाओं को प्रमुखता की श्रेणी में शामिल किया गया है। वैसे तो हिंदी-भाषी प्रवासी बडी संख्या में पहले से ही इस देश में निवास करते आए हैं अतः हिंदी का विस्तार करने के लिए व्यापक सामाजिक समर्थन पहले से ही उपलब्ध था। परंतु इस समुदाय को अपने देश की भाषा तथा संस्कृति के लिए अधिक जागरूक रहने की आवश्यकता थी।

सरकार के दो महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हैं जिसके सक्षम ढाँचे हिंदी-शिक्षण को सफल बना रहे हैं। पहला है, स्टेट डिपार्टमेंट अर्थात विदेश विभाग द्वारा संचालित 'नेशनल सिक्योरिटी लैंग्वेज इनिशिएटीव फोर युथ' (एन.एस.एल.वाय.) जोकि स्कूली

छात्रों को भारत जाकर हिंदी सीखने और वहाँ के रहन-सहन का अनुभव प्राप्त कराने का सुअवसर प्रदान करते हैं, और दूसरा है, 'स्टारटॉक' जोकि एक मजबूत कार्यक्रम है जिसके अंतर्गत गर्मियों में छोटे बच्चों से लेकर कॉलेज विद्यार्थियों तक के छात्रों को, दो या तीन सप्ताह हिंदी की सघन शिक्षा-दीक्षा प्रदान करता है। ये दोनों कार्यक्रम स्थानीय विद्यालयीन व्यवस्था से अलग हैं ताकि छुट्टियों में भारतीय समुदाय के हिंदी शिक्षक और स्वयंसेवी संस्थाएँ अपना योगदान दे सकें। एन.एस.एल.वाई. कार्यक्रम एक राष्ट्रीय स्तर का प्रतियोगी कार्यक्रम है जिसमें स्कूल के अंतिम वर्ष में ऐसे विदयार्थियों का चयन किया जाता है जो विदेशी भाषा और संस्कृति से परिचित होने की लगनशीलता का प्रदर्शन कर सकते हैं। दूसरी ओर स्टारटॉक अध्ययन तथा अध्यापन के लिए सुनियोजित कार्यक्रमों का प्रयोजन करता है, जोकि विदयार्थियों के लिए पूरी तरह नि:शुल्क होते हैं। भारतीय समाज की नई पीढी को अपनी भाषा से जोडे रखने का इससे बेहतर अवसर और नहीं हो सकता। अमेरिकी सरकार की विदेशी भाषा नीति में हिंदी के आलावा चीनी, कोरियाई, अरबी, उर्दू, टर्किश आदि कई एशियाई भाषाएँ लाभान्वित होती हैं, जोकि भारतीय समाज के लिए एक सकारात्मक प्रोत्साहन है। अमेरिकी सरकार की यह नीति 9-11 के हादसे के कारण बनाई गई जब सरकार ने महसूस किया कि सिर्फ अंग्रेजी के भरोसे विश्व के बदलते आर्थिक-सामाजिक परिवेश को प्रभावित नहीं किया जा सकता और न ही हॉलीवुड और अमेरिकी पॉप संस्कृति यह कर सकती है। अतः विदेशी भाषा नीति का निर्माण हुआ।

स्टारटॉक के ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करके शिक्षा और शिक्षक के बीच की खाई नहीं रही। स्टारटॉक का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, अमेरिकन कौंसिल ऑन टीचिंग फोरेन लैंग्वेज द्वारा विकसित, प्रवीणता मानकों को हिंदी पाठ्यक्रमों में लागू करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना। इस प्रकार सेंटर फोर एप्लाइड लिंगविस्टिक ने भाषा प्रवीणता की जाँच के मापदंड बनाए।

3.1.3 अमेरिका में हिंदी शिक्षण :-

सन् 2006 से पूर्व विदेशी भाषा के नाम पर प्राय: स्पेनिश के अतिरिक्त सिर्फ फ्रेंच, इटालियन, जर्मन जैसी यूरोपीय भाषाएँ ही सिखाईं जाती थीं। अमेरिकी सरकार की नयी भाषा नीति का तत्कालीन लाभ यह हुआ कि हिंदी को एक महत्त्वपूर्ण विदेशी व हैरीटेज भाषा के रूप में पढ़ाने के लिए अमेरिका की विदेशी भाषा अनुसंधान संस्थाओं, विद्यालयों, कोलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा भाषा शिक्षा का संगठित प्रयास प्रारंभ हुआ।[1]

अमेरिका के प्रतिष्ठित आइवी लीग विश्वविद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रमों को गंभीरता से लागू किया जा रहा है, चाहे वह हार्वर्ड हो, कोलंबिया या स्टैनफोर्ड, इन सभी संस्थाओं ने हिंदी और भारतीय संस्कृति से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाया है। न्यूयॉर्क के कोलंबिया और न्यूयॉर्क विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा को भारतीय समुदाय की आशा-आकांक्षाओं के साथ जोडने की मौलिक गतिविधियो को अंजाम देने का कार्य किया गया है।

अमेरिका में विश्वविद्यालयों का योगदान सराहनीय है। यहाँ अमेरिकी, यहूदी, कोरियन, चीनी, सूरीनामी, पाकिस्तानी, बंगलादेशी, गयानिज़, फिजीयन, त्रिनिडाडी, यूरोपियन तथा भारतीय छात्र पढ़ते हैं। उन्हें भारत की संस्कृति, त्यौहार, धर्म, इतिहास, भूगोल, भारतीय भोजन, योग और ध्यान की शिक्षा दी जाती है तथा फिल्मों के द्वारा भी उन्हें हिंदी सिखाई जाती है। कुछ छात्र भारत भ्रमण पर भी जाते हैं अतः वे भारत को जानने के लिए उत्सुकता होते हैं। अमेरिका के विश्वविद्यालयों में हिंदी की जो पुस्तक पढ़ाई जाती है वह है 'टीच योरसेल्फ हिंदी' जिसके लेखक हैं इंग्लैंड के श्री रुपर्ट स्नेल।

अमेरिका के विश्वविद्यालयों में कई विदेशी प्राध्यापक हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में हिंदी की विभागाध्यक्षा बुल्गेरियन डॉ. गब्रियला निक

इलिएवा हैं अतः उन्होंने हिंदी की बहुत सेवा की है। लगभग प्रति वर्ष वे भारत जा कर बहुत सारी सामग्री एकत्रित करती हैं जिसके आधार पर वे परियोजनाएँ नियोजित करती हैं। ये परियोजनाएँ, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। यूरोप और अमेरिका के कुछ विश्वविद्यालय वेबसाइट द्वारा हिंदी अन्ध्यापन प्रदान करते हैं।

बीसवीं सदी के आठवें और नौवें दशक में यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास-औस्टिन के डॉ. हरमन वैन ओल्फन और यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के डॉ. सुरेंद्र और डॉ. विजय गंभीर ने अमेरिकी विद्यार्थियों को आम जीवन से जुडी व्यावहारिक हिंदी भाषा सिखाने के अभिनव प्रयोग प्रारंभ कर दिए थे। हिंदी को साहित्यिक ग्रंथों की परिधि से बाहर निकाल कर सामान्य जीवन से जोडना ऐसा कार्य था जिससे अमेरिका के हिंदी छात्र आजीवन हिंदी सीखने के लिए प्रेरित हो सकें। यही नहीं, हिंदी सीख कर भारत जाने वाले शोधार्थियो और स्नातकों के लिए व्यावहारिक ज्ञान ज्यादा उपयोगी साबित हुआ। यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास और पेनसिलवेनिया के इन भाषा शास्त्रियों ने अपने हिंदी के छात्रों को भारत भेज कर, हिंदी समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराने के कार्यक्रम वर्षानुवर्ष चलाए जो अभी भी चल रहे हैं। उनके प्रयासों से आज दर्जनों विश्वविद्यालयों के हिंदी छात्र अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज के अनुभवी हिंदी प्राध्यापकों की देख रेख में महीनों भारत में निवास कर हिंदी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ वहाँ के सांस्कृतिक जीवन से परीचित होते रहते हैं। आज इन सेवानिवृत्त प्राध्यापकों द्वारा डाली गयी नींव पर यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास का हिंदी उर्दू फ्लैगशिप कार्यक्रम और यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया के साउथ एशियाई स्टडीज विभाग का हिंदी कार्यक्रम फल-फूल रहा है। डॉ. गंभीर आज भी हिंदी शिक्षा का और अधिक प्रसार करने के लिए अमेरिकी सरकार के अनेक कार्यक्रमों के सलाहकार के रूप में सक्रिय हैं। डॉ. हरमन वैन ओल्फन सन् 2006 से सन् 2010

तक टेक्सास विश्वविद्यालय के हिंदी उर्दू फ्लैगशिप के निदेशक रहे और 42 वर्ष हिंदी अध्यापन के बाद सन् 2010 में उन्होंने अवकाश प्राप्त किया और वे प्रोफ़ेसर एमेरिटस बने। गंभीर दम्पति लगभग चार दशक तक यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेनसिलवेनिया के हिंदी विभाग को समृद्ध बनाने में निरंतर प्रयासरत रहे।

लेकिन वह अमेरिकी सरकार की नई भाषा नीति ही थी जिससे प्रेरित होकर हिंदी अध्ययन को विश्वविद्यालय परिसर से बाहर निकालकर छोटे नगरों और कस्बों की पाठशालाओं तक पहुँचाया गया। जैसा कि भाषाविद कहते हैं, किशोर और कम उम्र के बच्चों के पास नई भाषा सीखने की ललक और मन:स्थिति दोनों ही भरपूर होती हैं। भाषा सीखने के उनके कारण भी निजी और भावुक होते हैं। दूसरे शब्दों में छोटे बच्चों के आजीवन भाषा विद्यार्थी बनने की संभावनाएँ अधिक होती हैं। सरकारी प्रोत्साहनों और अनुदान के कारण टेक्सास और न्यू जर्सी के शिक्षा अधिकारियों ने सरकारी पाठशालाओं में हिंदी पाठ्यक्रम प्रारंभ किए। आज न्यू जर्सी के एडिसन् और टेक्सास के हर्स्ट-यूलस स्कूल संकुल में हिंदी के सशक्त कार्यक्रम वर्ग नौ से प्रारंभ हो कर अब माध्यमिक पाठशालाओं की तरफ बढ रहे हैं। और जल्दि ही प्रारंभिक विद्यालयों में भी हिंदी पढाई जाने लगेगी।

3.1.4 अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

टेक्सास में भवानी परपिया के प्रयत्नों से हर्स्ट-यूलेस स्कूल संकुल में अब माध्यमिक कक्षाओं में हिंदी की पढाई प्रारंभ हो चुकी है। इसी प्रकार युवा हिंदी संस्थान के प्रयत्नों से पेनसिलवेनिया के बेनसेलम स्कूल डिस्ट्रिक्ट में हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। सन् 2010 में यह सिलसिला न्यूजर्सी केन विश्वविदयालय में स्टारटॉक कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी शिक्षण का सिलसिला प्रारंभ किया गया था जोकि आज ऑनलाइन पेडागोजिकल हिंदी पाठ्यक्रम के रूप में सफलतापूर्वक चल रहा है।

यहाँ उन हिंदी सेवी संस्थाओं और हिंदी प्रेमियों की चर्चा करना आवश्यक है जो बिना किसी पुरस्कार की अपेक्षा किये अपने समुदाय की अगली पीढी को, जो अमेरिका में पैदा हो कर अमेरिकी परिवेश में बडी हो रही है, अपनी भाषा और संस्कृति से जोडे रखने का कार्य कर रहे हैं। इनमें अमेरिका के विभिन्न प्रदेशों में सक्रिय चिन्मय मिशन, विश्व हिंदू परिषद्, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, भारतीय मंदिर और अन्य सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ शामिल हैं जो हिंदी को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग मानती हैं, और बच्चों को भारतीय विरासत के रूप में सांस्कृतिक समृद्धि प्रदान करती हैं। अटलांटा में अभिभावकों ने मिलकर एक हिंदी स्कूल की स्थापना की है जो रविवार को हिंदी तथा भारतीय संस्कृति अपने बच्चों को सिखाते हैं। इसमें पढ़ाने वाले शिक्षक खुद अभिभावक हैं और निःशुल्क हिंदी की सेवा करते हैं।

पाठशालाओं में हिंदी को प्रविष्ट कराने में हिंदी यू.एस.ए., हेरिटेज फाउंडेशन, युवा हिंदी संस्थान जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं ने निरंतर प्रयास किए हैं।

3.1.4.1 हिंदी यू.एस.ए. :-

हिंदी यू.एस.ए., न्यूजर्सी के 24 पाठशालाओं में हिंदी सिखाने का कार्य पिछले एक दशक से कर रहा है। संस्था के प्रयासों का ही परिणाम था कि एडिसन् स्कूल में हिंदी पाठ्यक्रम भारतीय समाज की पहचान के रूप में प्रारंभ किया गया।

3.1.4.2 युवा हिंदी संस्थान :-

युवा हिंदी संस्थान, वर्तमान में जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक ओझा कर रहे हैं, इस संस्था के निरंतर प्रयासों का ही यह फल है कि अमेरिका में प्राथमिक से लेकर उच्च विद्यालय के छात्रों को पिछले पाँच वर्षों से प्रामाणिक हिंदी बोलने, समझने और लिखने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। स्टारटॉक कार्यक्रम के माध्यम से इनका हिंदी अध्यापन वैज्ञानिक तरीके से चल रहा है, जिसके कारण अमेरिका में पैदा हुए भारतीय और गैर-भारतीय मूल के सैकडों बच्चों में हिंदी के प्रति लगन और लगाव

दिखने लगा है। वर्तमान में अमेरिका की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है जिसे केवल भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में ही तैयार किया जा सकता है और वह है अमेरिकी विदयार्थियों की भाषायी माँग के अनुरूप प्रामाणिक अध्ययन सामग्री का निर्माण करना।

3.1.4.3 विश्व हिंदी समिति :-

विश्व हिंदी समिति वर्ष में चार कार्यक्रम करती है। दो विराट कवि सम्मेलन, एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और एक छोटे बच्चों का कार्यक्रम। विश्व हिंदी समिति द्वारा 'सौरभ' नाम की पत्रिका का भी प्रकाशन होता है।

3.1.4.4 भारतीय विद्या भवन :-

भारतीय विद्या भवन, हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में वर्षों से कार्यरत है। यहाँ भारतीय संगीत और नृत्य की भी शिक्षा दी जाती है। इनके द्वारा समय-समय पर भारत से कवि, कलाकार और संगीतकार आमंत्रित किए जाते हैं।

3.1.5 मीडिया :-

अमेरिका के साहित्यकारों ने हिंदी के आंदोलन को एक रूप देने के लिए साहित्यिक मंच की स्थापना की है। पत्रिकाओं के माध्यम से भी घर-घर में हिंदी पहुँचाने का अथक प्रयास हुआ है। अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति ने 'विश्वा' नामक पत्रिका और हिंदी न्यास ने 'हिंदी जगत' नाम की पत्रिका प्रकाशित कर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया है। इसका परिणाम यह हुआ कि अमेरिका स्थित अनेक कवि सामने आए और अमेरिका में बहुत से उपन्यासों, कहानियों और काव्यों के संकलन प्रकाशित हुए। अनेक कवियों ने खंड काव्य तथा महाकाव्य की भी रचना की।

बॉलीवुड यहाँ के सभी नागरिकों में अति प्रचलित है। अमेरिका के हॉलीवुड के पर्यटन के दौरान, बॉलीवुड को जरूर याद किया जाता है और हिंदी सिनेमा एवं गीतों

के बारे में चर्चा भी होती है। यह हिंदी भाषा के लिए एवं भारत के लिए निश्चय ही गौरव की बात है।

3.2 कनाडा :-

3.2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

सत्तर के दशक में गैर सरकारी संगठनों द्वारा कनाडा में हिंदी परिचय पाठ्यक्रम की शुरूआत हुई। हिंदू मंदिरों व केंद्रों ने कनाडा में हिंदी शिक्षण के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका सारा श्रेय ओटावा के मुकुल विद्यालय को जाता है, जिन्होंने इस क्षेत्र में आरंभिक कार्य किए। सन् 1971 में यह विद्यालय ओटावा में खोला गया था। आज पूरे देश में इसकी शाखाएँ हैं जिनमें विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

3.2.2 वर्तमान स्वरूप :-

ब्रिटीश कोलंबिया के बर्नबी के विश्व हिंदू परिषद्, कैल्गरी की वैदिक हिंदू सभा, कैल्गरी रामायण भजन मंडली, वेंकूवर के महालक्ष्मी मंदिर, सरे की वैदिक हिंदू सांस्कृतिक सभा, रिचमंड की वैदिक सांस्कृतिक सभा ने हिंदी कक्षाएँ आरंभ की। सन् 1985 से एडमंटन की अल्बर्टा हिंदी परिषद् कनाडा में हिंदी कक्षाएँ चलाई जा रही हैं। हिंदू इंस्टिट्यूट ऑफ लर्निंग (एच.आई.एल.) तथा हिंदू इंस्टिट्यूट ऑफ मॉन्टेसरी एकेडमी (एच.आई.एम.ए.) भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में रत हैं। श्री जगदीश शास्त्री ने हिंदू इंस्टिट्यूट ऑफ लर्निंग की स्थापना की थी। अब श्री रत्नाकर नराले इसके प्राचार्य हैं। श्री शास्त्री व श्री नराले दोनों टोरंटो शहर में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार के लिए जी तोड मेहनत कर रहे हैं। सन् 1972 से ही कनाडा के पूर्वी प्रांतों में कुछ हिंदी प्रेमियों ने नोवा स्कॉटिया के हैलीफैकस में हिंदी की कक्षाएँ आरंभ की थीं। सन् 1983 तक ये कक्षाएँ चलती रहीं। ऐसी ही कुछ गतिविधियाँ सेंट जॉन में भी चल रही थीं। सन् 1980 में वहाँ कुछ चिंतित अभिभावकों यथा प्रोफ़ेसर एस.पी. सिंह ने मेमोरियल

विश्वविद्यालय के प्रांगण में हिंदी कक्षाएँ शुरू की थीं। किंतु सन् 1992 के बाद इस शिक्षण सुविधा को जारी नहीं रखा जा सका। मैनिटोवा की हिंदू सभा ने पहले मंदिर में हिंदी कक्षाएँ चलाने का निर्णय लिया था। सन् 1998 से उनके केंद्र भारतीय भवन में हिंदी का शिक्षण हो रहा है।

जून 1966 में ऑंटेरियो सरकार ने हेरिटेज लैंगुएजेज प्रोग्राम शुरू किया था। इसके अंतर्गत विद्यालय बोर्डों को छूट दी गई कि वे अपने शिक्षा विस्तार कार्यक्रम के अंग के तौर पर गैर-अधिकारिक भाषाओं को भी पढा सकें। सन् 1987 में एक सम्पूर्ण ऑंटेरियो हेरिटेज लैंगुएजेज कार्यक्रम विकसित किया गया। जुलाई 1989 में इसे प्राथमिक विद्यालयों में लागू किया गया। सन् 1976 से ही हिंदी कक्षाओं को शुरू करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सन् 1985 टोरंटो शहर के कुछ पब्लिक विद्यालयों में हिंदी अध्यापन बड़ी वेग से आरंभ किया गया। ऑंटोरियो पब्लिक स्कूल बोर्डों की कुछ काउंटियों में हिंदी पढाई जाती है। पहले कनाडाई विश्वविद्यालयों के धार्मिक अथवा दर्शन विभाग के अधीन हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जाते थे।

3.2.3 कनाडा में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1970 में सबसे पहले ब्रिटीश कोलंबिया विश्वविद्यालय में, स्नातक स्तर पर हिंदी पाठ्यक्रम शुरू किया गया था। डॉ. एस. काले की इसमें सर्वप्रथम नियुक्ति की गई थी। सन् 1984-85 में प्रो. बी.ए. सिन्हा मैकगिल विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन किया करते थे। वस्तुतः टोरंटो विश्वविद्यालय में सन् 1972 में ही हिंदी पाठ्यक्रम आरंभ किए गए थे। आज भी वहाँ नियमित रूप से हिंदी का अध्यापन किया जाता है। सन् 2004 में टोरंटो में यॉर्क विश्वविद्यालय ने भी अपने यहाँ हिंदी पाठ्यक्रम आरंभ किए। वेस्टर्न विश्वविद्यालय लंदन, मॉन्ट्रीयल विश्वविद्यालय, मैकगिल, सास्काटून और कैल्गरी विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर हिंदी भाषा व साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा उपलब्ध है। इनके अलावा कनाडा के बडे

शहरों में अनेक सामुदायिक विश्वविद्यालय समय-समय पर हिंदी पाठ्यक्रम चलाते हैं।[2]

3.2.4 कनाडा की हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

3.2.4.1 हिंदी परिषद् :-

सन् 1982 में 'हिंदी परिषद्' नाम से टोरंटो में पहले हिंदी संगठन की स्थापना की गई थी। डॉ. रघुबीर सिंह इसके संस्थापक अध्यक्ष थे। किंतु इस संगठन की गतिविधियाँ केवल टोरंटो शहर के इर्द-गिर्द ही सीमित थीं।

3.2.4.2 हिंदी लिटरेसी सोसायटी ऑफ कनाडा :-

सन् 1983 में गुएल्फ के प्रोफ़ेसर ओ.पी. द्विवेदी के नेतृत्व में एक राष्ट्रव्यापी हिंदी संगठन 'हिंदी लिटरेसी सोसायटी ऑफ कनाडा' (एच.एल.एस.सी.) का गठन किया गया। मॉन्ट्रीयल के प्रो. टी.डी. द्विवेदी इस सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। उनके बाद ओटावा के डॉ. राधेश्याम पांडे इसके अध्यक्ष बनें। और अब सन् 1987 से सरे वेंकुवर के श्रीनाथ पी. द्विवेदी इस संस्था के अध्यक्ष हैं। एच.एल.एस.सी. साउथ एशिया काउंसिल (एस.ए.सी.) के माध्यम से कनाडियन एशियन स्टडीज एसोसिएशन (सी.ए.एस.ए.) से संबद्ध है। साउथ एशिया काउंसिल स्वयं सोशल साइंसेज एँड ह्यूमैनिटीज कांग्रेस का अंग है। सी.ए.एस.ए. हर दो साल में विभिन्न कनाडाई विश्वविद्यालयों में सम्मेलन करता है। इन सम्मेलनों में एच.एल.एस.सी. हिंदी भाषा व साहित्य पर एक सत्र का आयोजन करता है।

3.2.4.3 क्यूबेक हिंदी संघ :-

सन् 1975 में ही क्यूबेक हिंदी संघ की स्थापना हो गई थी। पर अधिकारिक तौर पर इसका पंजीकरण सन् 1976 में ही हो पाया। श्री कुमुद त्रिवेदी इसके संस्थापक अध्यक्ष थे। इसके वर्तमान अध्यक्ष डॉ. सुशील मिश्र तन-मन से हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

3.2.4.4 मैनीटोबा हिंदी परिषद् :-

सन् 1982 में मैनीटोबा हिंदी परिषद् का गठन विनिपेग में किया गया। प्रो. वेदानंद, बिंदु झा और शरदचंद्र ने इसके गठन में सक्रिय योगदान दिया। यह संस्था कई वर्षों तक सक्रिय रही।

3.2.4.5 भारतीय विद्या संस्थान :-

भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना सन् 1984 प्रो. हरिशंकर आदेश द्वारा की गई। वे सन् 1981 में ट्रिनिडाड से टोरंटो आए थे। इस संस्थान द्वारा वे हिंदी, संस्कृत व भारतीय संस्कृति का अध्यापन व प्रोत्साहन कर रहे हैं। उन्होंने 'ज्योति' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन भी आरंभ किया था।

3.2.4.6 हिंदी साहित्य सभा :-

सन् 1997 में हिंदी साहित्य सभा की स्थापना हुई। डॉ. भारतेन्दु श्रीवास्तव इसके संस्थापक अध्यक्ष थे। आज यह संस्था हिंदी को बढावा देने में अत्यंत सक्रिय है।

3.2.4.7 हिंदी प्रचारिणी सभा :-

सन् 1998 में हिंदी प्रचारिणी सभा का गठन हुआ। श्री श्याम त्रिपाठी इसके अध्यक्ष हैं। वह पाक्षिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' का प्रकाशन करते हैं, जो एक साहित्यिक पत्रिका है।

3.2.4.8 हिंदी लिटरेरी सोसायटी ऑफ कनाडा :-

ग्रेटर वैकूंवर में सन् 1998 में हिंदी लिटरेरी सोसायटी ऑफ कनाडा, का गठन किया गया। इसके संस्थापक अध्यक्ष श्रीनाथ पी. द्विवेदी हैं। यह संस्था कविता-पाठ सत्रों, सेमिनारों, पुस्तक विमोचन और कवि गोष्ठियों का आयोजन भी करती हैं।

3.2.5 मीडिया :-

कनाडा में हिंदी भाषा की अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इनमें, श्री राकेश तिवारी की पत्रिका 'हिंदी टाइम्स' और श्री रवि पांडे की 'हिंदी अब्रौड' उल्लेखनीय हैं। सन् 1977 में टोरंटो से प्रकाशित, संभवतः कनाडा का सर्वप्रथम हिंदी का समाचार-पत्र 'नवभारत' था। पर कुछ अंक निकालने के बाद उसका प्रकाशन बंद कर दिया गया। सत्तर के दशक के उत्तरार्ध में टोरंटो, मॉन्ट्रीयल व विनिपेग से कुछ संगठनों द्वारा कुछ हस्तलिखित समाचार-पत्रों का प्रसार किया जाता था। होली व दिवाली पर इन समाचार पत्रों के विशेषांक भी निकाले जाते थे। टोरंटो शहर के रघुबीर सिंह ने अगस्त 1981 में साप्ताहिक समाचार-पत्र 'विश्व भारती' निकाला था। यह समाचार-पत्र कुछ वर्षों तक चला। सन् 1982 में प्रो. जगमोहन हुमार ने ओटावा से द्विभाषी पाक्षिक पत्रिका 'अंकुल' निकाली। हिंदी-अंग्रेजी में निकलनेवाली यह पत्रिका कुछ वर्षों तक चलती रही। इसने पाठकों की रुचि को जागृत तो किया, पर अधिक समय तक नहीं चल सकी। इसी तरह त्रिलोचन सिंह गिल की मासिक पत्रिका 'भारती' भी अल्पकालिक साबित हुई। कयूबेक हिंदी संघ की पत्रिका प्रगति ने हिंदी लेखकों को एक मंच प्रदान किया। मॉन्ट्रीयल के प्रो. राजेंद्र सिंह और प्रो. टी.डी. द्विवेदी ने सन् 1985 में 'प्रवासी' पत्रिका निकाली। पर यह भी सन् 1988 में बंद हो गई। टोरंटो के उमेश विजय ने सन् 1985 में 'संगम' नामक समाचार-पत्र निकाला था, जिसने पाठकों की रुचि को जागृत किया। ब्रिटिश कोलंबिया में डॉ. नीलम वर्मा नवंबर 2005 से अंग्रेजी, हिंदी में 'एशियन आउटलुक' नामक द्विभाषी मासिक पत्रिका निकाली। इस पत्रिका ने अच्छी प्रसार संख्या प्राप्त की है। पोर्ट मुडी के निवासी श्री जाहित लईक शाहपर पत्रिका के मुख्य संपादक हैं। द्विमासिक बहुभाषी यह पत्रिका सन् 2001 से प्रकाशित हो रही है। हिंदी की पहली पुस्तिका हिंदी संवाद प्रो. ओ. पी. द्विवेदी व डॉ. बी. एन. द्विवेदी के सक्रिय सहयोग से एच.एल.एस.सी. द्वारा सन् 1984 में शुरू की गई थी। अगस्त 2007 से एक नई पत्रिका 'हमवतन टाइम्स' की शुरूआत हुई। सप्ताह में दो

बार प्रकाशित इस पत्रिका में अधिकांश आलेख हिंदी में होते हैं। दो अन्य सुविख्यात हिंदी साहित्य की पाक्षिक पत्रिकाएँ हैं - 'हिंदी चेतना' व 'वसुधा'।

कनाडा में कई रडियो स्टेशन हैं जहाँ हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। जिनमें सबसे प्रसिद्ध है गीतमाला रेडियो जो कि दर्शन एवं अरविंदर सहोटा द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। कई टेलिविज़न नेटवर्क हैं जहाँ हिंदी के कार्यक्रम होते हैं। हिंदी गीत, सिनेमा, भारतीय त्यौहारों पर कार्यक्रम दिखाए जाते हैं और जिन्हें बड़े प्यार से यहाँ के भारतवंशी तथा अभारतीय भी देखते हैं। भारतीय चेनल जैसे ज़ी.टी.वी., बी.फॉर.यू., सोनी टी.वी., आज तक यहाँ प्रसारित होते हैं तथा बहुत पसंद किए जाते हैं।

3.3 इटली :-

3.3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

इटली के नागरिकों के बीच भारतीय संस्कृति की ओर जो रुचि है वह सदियों पुरानी है। सन् 1852 में प्रो. गास्पारे गोरेंज़ियो, टुरिन में संस्कृत सिखाने लगे थे। उन्होंने वाल्मीकि रामायण के 10 भाग प्रकाशित किए तथा उसका संपूर्ण अनुवाद भी इटालियन भाषा में प्रकाशित किया। तब से अब तक यह परंपरा जारी है। इसीलिए इटलीवासी प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय भाषाओं और साहित्य के प्रति अधिक रुचि रखते हैं जबकि आधुनिक भाषाओं की स्थिति संस्कृत, पालि, ब्रज, भाषा आदि की तुलना में न्यूनतम मानी जाती है। यहाँ के विद्यार्थियों का मानना है कि हिंदी सिर्फ भारत की राजभाषा ही नहीं है अपितु भारत को जानने के लिए हिंदी ही एकमात्र दरवाज़ा है जिससे कि यहाँ की कला, संस्कृति से वे अवगत हो सकते हैं।

इटली में हिंदी शिक्षण में बॉलीवुड फिल्मों और जनसंचार माध्यमों का अप्रतिम योगदान है। यूरोपीय लोग भारतीय फिल्मों में बहुत रुचि लेते हैं। इटालियन विद्यार्थियों की रुचि भारतीय संगीत और नृत्य में है। भारत का वर्चस्व विज्ञान,

व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल माध्यम के क्षेत्र में निरंतर बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि हिंदी शिक्षितों की इटली के कई व्यापारिक निगमों में माँग रहती है ताकि वे अपने व्यापारिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बना सकें।

3.3.2 वर्तमान स्वरूप :-

बीसवीं सदी में, जियुसेप्पे टूच्ची द्वारा सन् 1933 'इसीयाओ' (जो पहले 'इस्मेओ' - इंस्टिट्यूट ऑफ इटेलियन मीडिया स्टडीज़) में हिंदी भाषा का शिक्षण शुरू हुआ। लेकिन सर्वप्रथम हिंदी पाठ्यक्रम का आगमन विश्वविद्यालय स्तर पर सातवें दशक में हुआ, जब वेनिस में प्रो. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र हिंदी सिखाने लगे। नेपल्स में उन दिनों स्नातक स्तर पर प्रो. श्याम मनोहर पांडे हिंदी अध्यापन करते थे। सन् 1971 में प्रो. स्तेफनो पियानो ने टुरिन में हिंदी अध्यापन शुरू किया। आजकल रोम तथा मिलान विश्वविद्यालय में भी हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन हो रहा है। वेनिस, टुरिन और रोम में पीएच.डी. स्तर पर हिंदी के प्रोग्राम चलते हैं जबकि मिलान और नेपल्स में स्नातक स्तर पर हिंदी का अध्यापन होता है।[3]

3.3.3 इटली में हिंदी शिक्षण :-

वर्तमान में हिंदी का अध्यापन इटली के इन पाँच विश्वविद्यालयों में गंभीरतापूर्वक हो रहा है जैसे कि ओरियंटल विश्वविद्यालय, रोम विश्वविद्यालय, वेनिस विश्वविद्यालय, टुरिन विश्वविद्यालय तथा मिलान विश्वविद्यालय। इन प्रमुख केंद्रों के अतिरिक्त मचेराता तथा कुछ और विश्वविद्यालयों में भी हिंदी को प्रारंभ किया गया है।

3.3.3.1 ओरियंटल विश्वविद्यालय :-

नेपल्स के ओरियंटल विश्वविद्यालय में आजकल 50 विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। प्रथम वर्ष में व्याकरण के अतिरिक्त इटालियन भाषा में हिंदी साहित्य का इतिहास पढाना यहाँ अनिवार्य समझा जाता है ताकि विद्यार्थी हिंदी की

पठनीय सामग्री तथा उसके विस्तृत साहित्य से अवगत हो सकें। पृथ्वी राज रासो से लेकर आधुनिक काल के हिमांशु जोशी, चित्रा मुद्गल के उपन्यास, ममता कालिया तथा मन्नू भंडारी की कहानियों का भी अध्ययन यहाँ होता आया है। द्वितीय वर्ष में छायावादी कविताओं का अध्ययन भी कराया जाता है। एक छात्रा जयशंकर प्रसाद और उनकी कामायनी पर भी कार्य कर रही है। ओरियंटल विश्वविद्यालय में हिंदी की पुस्तकों का एक बृहद् संग्रह है, जिसमें आदिकाल से लेकर मध्यकाल तथा आधुनिक काल के साहित्य पर भी प्रचूर सामग्री मिल जाती है। यहाँ कबीर, तुलसी, सूरदास, मीराबाई का अध्यापन होता आया है। अतः भक्तिकाल पर एक अच्छा संग्रह यहाँ उपलब्ध है। वर्तमान में सुश्री रेत्ते फानिया कावेलियेरी हिंदी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य संभाल रहीं हैं। वह केशवदास तथा उनकी जहाँगीर-जस चंद्रिका पर कार्य कर रहीं हैं। जहाँगीर-जस-चंद्रिका तथा तुलसीदास पर उनके शोध निबंध भी प्रकाशित हो चुके हैं।

3.3.3.2 रोम विश्वविद्यालय :-

लगभग 50 वर्षों से रोम विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्यापन होता आ रहा है। आजकल प्रो. मिलानेत्ती इस विभाग का कार्य सँभाल रहे हैं। 'पद्मावत' का उन्होंने इटालियन में अनुवाद किया है। तान्या गुप्त के साथ उन्होंने प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए एक हिंदी का व्याकरण तैयार किया है। यह ग्रंथ पहले साल के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है। मिलानेत्ती जी के साथ दो भाषा सहायक तान्या गुप्त तथा जयप्रकाश भारद्वाज काम कर रहे हैं। रोम में हिंदी सिनेमा पर भी एक कोर्स आयोजित होता आ रहा है। वहाँ आधुनिक हिंदी साहित्य सुश्री मारु मात्रा पढा रहीं हैं। वर्तमान में लगभग 120 छात्र रोम विश्वविद्यालय में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं।

3.3.3.3 वेनिस विश्वविद्यालय :-

वेनिस विश्वविद्यालय में श्री लक्ष्मण प्रसाद मिश्र हिंदी विभाग के निदेशक थे। हिंदी के पठन-पाठन की यहाँ अच्छी परंपरा रही है। अवकाश प्राप्त सुश्री मारियोला ओफ्रेदी भी यहाँ कार्यरत थीं तथा उन्होंने हिंदी के कई उपन्यासों का इटालियन अनुवाद किया है, जिनमें अलका सारावगी का 'कलिकथा - वाया बाइपास' तथा 'गोदान' के अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस विभाग में चेचिलिया कोसियो नाम की एक और अध्यापिका थीं जिन्होंने रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' का अनुवाद किया था। इस विश्वविद्यालय में हिंदी का कार्य आजकल जॉन फिलिप्पी सँभाल रहे हैं। उनके सहयोगी श्री घनश्याम शर्मा हैं, जिन्होंने हिंदी-इटालियन और इटालियन-हिंदी कोश प्रकाशित किया है। वर्तमान इस विश्वविद्यालय में लगभग 40 विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं।

3.3.3.4 टूरिन (तोरीनो) विश्वविद्यालय :-

इटली में आजकल सबसे अधिक व्यवस्थित हिंदी विभाग टूरिन विश्वविद्यालय का है। यहाँ प्रोफ़ेसर पेनुचा कराकक्की हिंदी विभाग का कार्य सँभालती हैं। यहाँ भी लगभग 50 विद्यार्थी हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। श्रीमती कराकक्की का एक शोध ग्रंथ संत रामानंद पर है। यह शोध रामानंद पर अध्ययन करने के लिए एक मानक ग्रंथ माना जाता है। कराकक्की जी ने एक व्याकरण पर पुस्तक भी लिखी है, जिसे संदर्भ ग्रंथ के रूप में इटली के हिंदी छात्र उपयोग में लाते हैं। श्रीमती कॉनसालारो कराकक्की जी की सहयोगी हैं जो आधुनिक हिंदी साहित्य पर काम करती हैं। बनारस की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा पर इनका ग्रंथ इटली में प्रख्यात है। इन्होंने हिंदी की कहानियों का अनुवाद भी किया है।

इस विभाग के भूतपूर्व निदेशक रतेफनो पियानो हिंदी और संस्कृत दोनों भाषाओं के विद्वान हैं। प्रोफ़ेसर कराकक्की और स्तेफनो पियानो ने संयुक्त रूप से हिंदी कहानियों का एक इटालियन अनुवाद का संग्रह प्रकाशित किया है। इसकी

भूमिका कराककी जी ने लिखी है, जिसमें हिंदी की कहानियों के विकास का अच्छा विश्लेषण हुआ है। इटली के पाठक और विद्यार्थी इसे रुचिपूर्वक पढ रहे हैं। और एक भाषा सहायक रूपलाल संधु भी दूरिन में हैं। शोध की यहाँ गंभीर परंपरा है। एक विद्यार्थी नाभादास के 'भक्तमाल' पर भी कार्य कर रहा है। टूरिन विश्वविद्यालय में हिंदी पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह है।

3.3.3.5 मिलान विश्वविद्यालय :-

मिलान विश्वविद्यालय में प्रो. दोलचीनी हिंदी की प्रोफ़ेसर हैं। वे राजनीति संकाय के अतिरिक्त कला संकाय में भी हिंदी का अध्यापन करती हैं। एक भाषा सहायक भी यहाँ कार्यरत हैं। विद्यार्थियों की संख्या यहाँ भी 60 के लगभग है। दोलचीनी जी ने भारतेंदु और फोर्ट विलियम कॉलेज और उसकी कार्य पद्धति का अध्ययन तो किया ही है, रानी केतकी की कहानी का इटालियन अनुवाद भी किया है। कई वर्षों पूर्व वेनिस में श्री लक्ष्मण मिश्र के जीवनकाल में वे हिंदी का अध्यापन करती थीं। उसके बाद उन्होंने मिलान में स्थानान्तरण ले लिया। प्रोफ़ेसर दोलचीनी को विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयॉर्क में सम्मानित भी किया गया था। दोलचीनी जी ने मिलान की एक संस्था एकेदेमिया अम्ब्रेजियाना में भी हिंदी को सम्मिलित कराया है। 30-31 अकटूबर 2009 को इस संस्था में एक सम्मेलन भी आयोजित हुआ है। इटालियन में यदि आदिकाल या भक्तिकाल पर आधारित हिंदी पर कोई गंभीर कार्य होता है तो यहाँ प्रकाशित कराया जा सकता है। मिलान विश्वविद्यालय में साहित्य से अधिक भारतीय संस्कृति के अध्ययन पर जोर दिया जाता है। दोलचीनी जी की एक भाषा सहायिका भी हैं जो बातचीत के पाठ में विद्यार्थियों की सहायता करती हैं। इटली एक ऐसा देश है जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन सात विश्वविद्यालयों में किसी-न-किसी रूप में होता है। हिंदी का भविष्य यहाँ उज्ज्वल है।

3.3.4 मीडिया :-

रोम में ही पोप की नगरी वेटिकन है। यहाँ वेटिकन में हिंदी में रेडियो प्रसारण होता है। वेटिकन रेडियो एक प्रकार से धार्मिक संस्थान है, जो ईसा मसीह और उनके संदेशों का प्रसारण करता है। कुछ सामान्य खबरें भी इनमें रहती हैं। भारत में उस रेडियो के श्रोता काफी हैं, उनके द्वारा भेजे गये पत्रों से यह ज्ञात होता है।

रोम की ही संस्था इसीयाओ से 'ईस्ट एँड वेस्ट' पत्रिका निकलती है। इस संस्था का पुस्तकालय समृद्ध है और इसमें हिंदी की पुस्तकें भी है। इस संस्थान ने हाल ही में हिंदी इटालियन कोश प्रकाशित किया। इस कोश में विशेष शब्दों और मुहावरों का प्रयोग भी सम्मिलित किया गया है। जैसे कि दाल में काला है, उसकी नानी मरने लगी, वह नौ दो ग्यारह हो गया ये सभी मुहावरे विदेशी विद्यार्थियों के लिए क्लिष्ट हैं। ऐसे मुहावरों का प्रयोग और अर्थ इस कोश में मिलेगा।

3.4 ब्रिटेन :-

3.4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

ब्रिटेन की लगभग 6 करोड़ की जनसंख्या में से, भारतवंशियों की संख्या लगभग 14 लाख है। हिंदी ने धर्म और संस्कृति के साथ-साथ साहित्य एवं कला के क्षेत्र में भी ब्रिटेन में अपना विशेष स्थान बना लिया है। पश्चिम में रहकर भारतीय संस्कृति को जीवित रखने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान है। ब्रिटेन में रहते हुए भी भारतीय बने रहने तथा अगली पीढ़ी को अपने देश एवं संबंधियों से संपर्क बनाए रखने के लिए बच्चों को हिंदी का ज्ञान कराना आवश्यक था अतः भारतीय मूल के बच्चों को एकत्रित कर, उनके अभिभावकों ने, घर से ही हिंदी का शिक्षण प्रारंभ किया। विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने पर हिंदी सिखाने के उद्देश्य से मंदिर, गुरूद्वारे और कम्युनिटी केंद्र किराए पर लिए जाने लगे।

3.4.2 वर्तमान स्वरूप :-

विद्यार्थियों की संख्या अध्यापकों की योग्यता तथा मातृभाषा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए स्थानीय नगरपालिकाओं के शिक्षा विभागों ने हिंदी पाठशालाओं को हिंदी शिक्षण की मान्यता प्रदान कर दी तथा अध्यापकों को मानदेय और आर्थिक सहयोग मिलने लगा। भारतीय उच्चायोग ने इस कार्य में रुचि लेकर पाठ्यसामग्री आदि जुटाकर उन्हें प्रोत्साहित किया।

3.4.3 ब्रिटेन में हिंदी शिक्षण :-

वर्तमान में 25 से भी अधिक हिंदी शिक्षण केंद्र लंदन के भारतीय उच्चायोग के हिंदी विभाग के संपर्क में है। हिंदी पाठशालाएँ मुख्यधारा की पाठशालाओं के अंतर्गत नहीं हैं। ये केवल पूरक स्थिति (सप्लीमेंटरी स्कूल) में है। लंदन और केम्ब्रिज बोर्ड में ओ लेवल (हाईस्कूल) लेवल की (इंटरमिडिएट) हिंदी परीक्षा विद्यार्थी दे सकते हैं। हिंदी भाषा एवं साहित्य में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन एवं शोध कार्य लंदन, ऑक्सफोर्ड, केम्ब्रिज एवं यॉर्क विश्वविद्यालयों में होता है।[4]

3.4.4 ब्रिटेन की हिंदी सेवी संस्थाएँ :-

3.4.4.1 भारतीय उच्चायोग लंदन :-

सन् 1984 में पहली बार हिंदी एवं सांस्कृतिक अधिकारी की नियुक्ति से हिंदी के विकास एवं शिक्षण की गतिविधियों में गति आई। भारतीय उच्चायोग हिंदी की पाठशालाओं, पुस्तकालयों एवं संस्थाओं को हिंदी की पुस्तकें, सोफ्टवेयर एवं अन्य शिक्षण सामग्री प्रदान करता है तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोग देता है। शिक्षकों के लिए शिक्षा पद्धति की योजना तथा संगोष्ठी आदि का आयोजन करता है। नेहरू केंद्र में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय कलाकारों तथा साहित्यकारों के निरंतर कार्यक्रम होते हैं एवं कला प्रदर्शनियाँ होती हैं। सन् 2008 से हिंदी सेवकों को निम्नलिखित सम्मान प्रदान किया जा रहा है - डॉ. हरिवंशराय बच्चन यू.के. हिंदी लेखन सम्मान, आचार्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी यू.के. हिंदी पत्रकारिता सम्मान, जॉन गिलक्रिस्ट यू.के. हिंदी शिक्षण सम्मान, फ्रेडरिक पिन्काट यू.के. हिंदी प्रचार-प्रसार सम्मान।

ब्रिटेन में लगभग 250 स्वैच्छिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक हिंदी सेवी संस्थाएँ हैं। लेकिन विशेष रूप से हिंदी के लिए यू.के. हिंदी कथा समिति लंदन, गीतांजली बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय बर्मिंघम, भारतीय भाषा संगम यॉर्क, हिंदी भाषा समिति मेनचेस्टर, कृति यू.के. मिडलैंड्स, गीतांजली बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय ट्रेंट नॉटिंघम, भारतीय विद्या भवन, कला निकेतन नॉटिंघम, कला संगम ब्रेडफ़र्ड, भारतीय ज्ञानदीप लंदन, चौपाल लेस्टर, ग्रेट ब्रिटेन हिंदी लेखक संघ, नेहरू सेंटर एवं भारतीय उच्चायोग लंदन आदि सक्रिय हैं। इनके आलावा भी अनेक सामुदायिक मंदिर केंद्र एवं अन्य संस्थाएँ हैं जो हिंदी एवं भारतीय संस्कृतिक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित करती रहती हैं। भारत व अन्य देशों के हिंदी लेखकों, कवियों एवं रचनाकारों का स्वागत सत्कार करती हैं। ब्रिटेन में हिंदी के साहित्यिक आयोजन विविध आयामों को छूते हैं।

3.4.5 मीडिया :-

सन् 1940 में पहली बार बी.बी.सी. रेडियो ने हिंदी वर्ल्ड सर्विस प्रोग्राम में हिंदी की खबरें देना प्रारंभ किया था। सन् 1970 में बी.बी.सी टेलिविज़न पर हिंदी में एकमात्र प्रोग्राम 'नया जीवन नई जिंदगी' प्रत्येक रविवार को एक घंटे के लिए प्रसारित होता था। रेडियो मॉस्को एवं रेडियो सीलोन ही हिंदी के गाने सुनने के साधन थे। आजकल टेलिविज़न के अधिकांश हिंदी चैनल ब्रिटेन के घरों में पहुँच चुके हैं तथा बहुत लोकप्रिय हैं। अंग्रेजी कार्यक्रमों का स्थान सोनी, ज़ी टी.वी, कलर टी.वी. एवं दूरदर्शन, स्टार, आस्था इत्यादि ने ले लिया है। स्थानीय स्तर पर भी एम्.ए.टी.वी., सन्राइज़ टी.वी और कई रेडियो स्टेशन हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में बॉलीवुड की फिल्में तथा हिंदी गानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। युवा पीढ़ी तथा अहिंदी-भाषी भी हिंदी सिनेमा में अतिरुची लेते हैं। प्रत्येक सप्ताह मल्टीप्लेक्स सिनेमाघरों में नई फिल्म दिखाई जाती है।

हिंदी की एकमात्र साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' है जो ब्रिटेन में ही प्रकाशित होती है। भारत से प्रकाशित 'प्रवासी टुडे' भारत और विदेश के बीच सेतु बनाने वाली एक मासिक पत्रिका है जो कि नई पीढ़ी की आवश्यकता तथा आज के वातावरण को ध्यान में रखते हुए हिंदी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित होती है। 'अमरदीप' नामक समाचार-पत्र सन् 1971 से 2003 तक ब्रिटेन में प्रकाशित होता रहा।

अब कई हिंदी पत्रिकाएँ व समाचार पत्र यहाँ बाज़ार और पुस्तकालयों में उपलब्ध हो रहे हैं। वेब पत्रिकाएँ एवं वेब साहित्य का निर्माण आरंभ हो चुका है। हिंदी में बहुत से पोर्टल वेबसाइट्स बन गए हैं तथा यूनीकोड के माध्यम से जनसाधारण के लिए हिंदी में संपर्क करना आसान हो गया है। स्थानीय हिंदी लेखिका शैल अग्रवाल की लेखनी, कविता वाचकनवी तथा तेजिंदर शर्मा की वेब साइट्स और फेसबुक, पाठकों तक पहुँच रही है।

3.5 ऑस्ट्रेलिया :-

3.5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

आधुनिक ऑस्ट्रेलिया एक बहु-सांस्कृतिक समाज है जहाँ घरों में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या 400 है। ऑस्ट्रेलिया सरकार न केवल अप्रवासियों को अपनी भाषा और संस्कृति बनाए रखने की अनुमति देती है बल्कि इस कार्य में उनकी सहायता भी करती है। परंतु ऐसा सदा नहीं होता था। सन् 1901 में ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने 'श्वेत ऑस्ट्रेलिया' की नीति अपनाई थी जिसके अनुसार भारतीयों तथा एशिया-अफ्रीका आदि देशों के व्यक्तियों को ऑस्ट्रेलिया में प्रवासी के रूप में प्रवेश करने पर प्रतिबंध था। सन् 1947 में भारत के ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद

इस स्थिति में थोडा परिवर्तन आया जब भारत में पैदा हुए एँग्लो-इंडियन तथा अंग्रेजों को ऑस्ट्रेलिया में स्थाई रूप से निवास करने की अनुमति मिली। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में भारत से डॉक्टरों, इंजीनियरों, शिक्षकों आदि को ऑस्ट्रेलिया में स्थाई रूप से निवास करने की अनुमति मिली। उसके बाद के वर्षों में कंप्यूटर विशेषज्ञों तथा अन्य व्यावसायिकों को भारत से ऑस्ट्रेलिया में आने दिया गया। सन् 1980 में ऑस्ट्रलियाई नियमों में कुछ और परिवर्तन हुए जिनके कारण ऑस्ट्रेलिया में बसे हुए भारतीयों के रिश्तेदारों का ऑस्ट्रेलिया आना अधिक आसान हो गया।

3.5.2 वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1996 में ऑस्ट्रेलिया में हिंदी-भाषियों की संख्या 35,000 थी, अगले दस वर्षों में यह संख्या दुगुनी हो गई। सन् 2006 में की गई जनगणना के अनुसार ऑस्ट्रेलिया में 70,000 हिंदी-भाषी थे और सन् 2011 में यह संख्या एक लाख से ऊपर हो गई।[5]

ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल के लोग कई देशों से आए हैं, उदाहरण के लिए फीजी, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, इंग्लैंड, सिंगापूर, मलेशिया आदि। इसलिए इन सबकी हिंदी भाषा में वो अंतर पाए जाते हैं जो इन देशों में बसे हिंदी-भाषी लोगों की भाषा में देखे जाते हैं।

3.5.3 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षण :-

ऑस्ट्रेलिया सरकार की भाषायी नीति के अनुसार सोमवार से शुक्रवार तक लगनेवाले सामान्य स्कूलों में केवल 8 चुनी हुई भाषाएँ (4 यूरोपियन तथा 4 एशियाई) पढाए जाने का प्रावधान है। इन भाषाओं का चुनाव ऐतिहासिक तथा आर्थिक कारणों से किया गया है और इनमें हिंदी सम्मिलित नहीं है। इसलिए हिंदी कक्षाएँ अधिकतर सप्ताहांत में लगती हैं। ये कक्षाएँ कुछ प्रदेशों, उदाहरण के लिए विक्टोरिया, प्रादेशिक सरकार के शिक्षा विभाग के अंतर्गत चलती हैं परंतु अधिकतर ये कक्षाएँ हिंदी के

प्रचार में रुचि रखने वाले व्यक्तियों अथवा संगठनों द्वारा चलाई जाती हैं। निजी रूप से चलाई जाने वाली हिंदी तथा अन्य सामुदायिक भाषाओं के विद्यालयों को बहुधा ऑस्ट्रेलिया की केंद्रीय सरकार से अनुदान मिलता है जो इन विद्यालयों को चलाने के लिए पर्याप्त तो नहीं होता है परंतु सहायक होता है। केंद्रीय सरकार की एक योजना के अंतर्गत इन्हें सामुदायिक भाषा विद्यालय (कम्युनिटी लैंग्वेज स्कूल) का नाम दिया जाता है। ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश प्रदेशों में हिंदी इसी प्रकार के विद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षा में एक बड़ा परिवर्तन तब आया जब विक्टोरिया की सरकार ने सन् 1993 में 11वीं तथा 12वीं कक्षा में हिंदी को हाईस्कूल में मान्यता दी। बाद में ये मान्यता ऑस्ट्रेलिया के अन्य प्रदेशों ने भी प्रदान की। परिणामस्वरूप आज ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश प्रदेशों के विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी पढ़ सकते हैं और 12वीं कक्षा की राष्ट्रीय हिंदी परीक्षा में भाग ले सकते हैं।

हाई स्कूल स्तर पर हिंदी को सरकारी मान्यता मिलने के बाद ऑस्ट्रेलिया के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिंदी में पुस्तक की अनुपलब्धता एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आई। नॅशनल सेंटर ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़ की निदेशिका, श्रीमती मरीका विक्ज़ियानी ने इस संबंध में सहायता की और हिंदी में पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए मेलबर्न के ला ट्रोब विश्वविद्यालय को अनुदान प्रदान कराया। श्रीमती रीना वर्मा-टंडन ने ये पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था ऑस्ट्रेलिया में समकालीन हिंदी। ये पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई। इस परियोजना के संचालन तथा पुस्तक के संपादन में श्रीमती सुधा जोशी तथा श्री रिचर्ड डिलेसी ने विशेष सहयोग दिया।

पाँच वर्ष पश्चात् पाठ्यक्रम में परिवर्तन हुए। परिणामस्वरूप एक नई पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता पड़ी। विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़ के तत्त्वावधान

में दो भागों में 'हिंदी नक्षत्र' नामक एक दूसरी पाठ्यपुस्तक सन् 2006-7 में प्रकाशित की गई। इस पुस्तक का संपादन डॉ. दिनेश श्रीवास्तव एवं श्रीमती सुधा जोशी ने किया।

सन् 2011 में ऑस्ट्रेलिया की केंद्रीय सरकार के आदेश पर अकारा (ऑस्ट्रेलियन करिकुलम, एसेसमेंट एँड सर्टिफिकेशन अथोरिटी) ने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के लिए ऑस्ट्रेलियाई विद्यालयों में पढ़ाने के लिए भाषा का चयन किया और भाषा अध्ययन के मुख्य सिद्धांतों का प्रारूप प्रस्तुत किया। इस प्रारूप में एशियाई भाषाओं के पढाए जाने पर तो जोर दिया गया था तथा इंडोनेशियाई, चीनी, जापानी, कोरियाई भाषाओं का समावेश किया गया था परंतु हिंदी का कहीं नाम भी नहीं था। इस बात से ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समर्थकों को गहरा धक्का लगा और ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न हिंदी प्रचारक संगठनों ने मिलकर आकारा से निवेदन किया कि विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जानी वाली भाषा हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसके लिए एक जन-आंदोलन चलाया गया और न केवल हिंदी समर्थक संगठनों ने बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी लोगों ने हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने के लिए याचिकाएँ भेजी। राजनीतिक स्तर पर प्रादेशिक तथा केंद्रीय स्तर पर भी विभिन्न राजनीतिक नेताओं से भेंट की गई। अंत में अकारा ने सन् 2011 में अपने अंतिम प्रारूप में हिंदी भाषा को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने का निर्णय ले ही लिया। परंतु यह प्रावधान लगाया कि सबसे पहले चीनी तथा इतालवी भाषाओं के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया जाएगा बाद में अन्य भाषाओं की बारी आएगी। इस निर्णय से हिंदी समर्थकों को बड़ी राहत मिली। हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की घोषणा के पश्चात् शीघ्र ही विक्टोरिया के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय के सभी 350 विद्यार्थियों को जिनमें, भारतीय बच्चों के

साथ-साथ विभिन्न देशों के अन्य भाषी छात्र भी हैं, हिंदी सिखाने का निर्णय लिया गया।

केनबरा स्थित ऑस्ट्रेलियन नॅशनल यूनिवर्सिटी में काफी समय से हिंदी का अध्यापन हो रहा है। यहाँ का हिंदी विभाग प्रो. रिचर्ड मैकग्रेगर द्वारा स्थापित किया गया था। यहाँ हिंदी विषय स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन के लिए उपलब्ध है। यहाँ एशियन स्टडीज़ संकाय के अंतर्गत स्नातक स्तर पर दो पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए तीन वर्षीय बेचलर ऑफ़ एशियन स्टडीज़ (हिंदी) और चार वर्षीय बेचलर औफ एशियन स्टडीज़ विशेषज्ञ (हिंदी) है जिसमें तीसरा वर्ष एक भारतीय विश्वविद्यालय में उच्च स्तर पर हिंदी भाषा का अध्ययन भी सम्मिलित है। चौथे वर्ष में विद्यार्थी हिंदी के अतिरिक्त भारत का भी विस्तृत अध्ययन करते हैं।

इसके अतिरिक्त मेलबर्न के ला ट्रोब विश्वविद्यालय में भी स्नातक स्तर पर हिंदी अध्ययन की सुविधा भी उपलब्ध है, जहाँ ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा दूर शिक्षण प्रणाली के माध्यम से हिंदी शिक्षा उपलब्ध है। कई अन्य विश्वविद्यालय उदाहरण के लिए सिडनी विश्वविद्यालय तथा मेलबर्न के चार विश्वविद्यालय मेलबर्न, मुनाश, ला ट्रोब तथा रॉयल मेलबर्न इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी में स्नातक स्तर पर समय-समय पर हिंदी का अध्यापन होता आ रहा है। दुःख की बात यह है कि सिडनी विश्वविद्यालय में जहाँ हिंदी सन् 2010 में पढ़ाई जा रही थी वहाँ यह सुविधा अब उपलब्ध नहीं है। अब विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी विषय का अध्ययन केवल केनबरा की ऑस्ट्रेलियन नॅशनल यूनिवर्सिटी तथा मेलबर्न के ला ट्रोब विश्वविद्यालय में उपलब्ध है। 90 के दशक में हिंदी को अच्छा प्रोत्साहन मिला। श्रीमती सुधा जोशी ने विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी के पठन-पाठन में विशेष योगदान दिया। श्रीमती जोशी आज भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहीं हैं।

वयस्कों के लिए हिंदी शिक्षा के स्त्रोत बदलते रहे हैं। सन् 1970 के लगभग हिंदी टेक्नीकल एँड फर्दर एजुकेशन (टेफ) के कुछ केंद्रों में हिंदी शिक्षा का प्रबंध था तथा सन् 1980 के उत्तरार्ध में विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लंग्वेजेज़ की कक्षाओं में स्कूली बच्चों के साथ-साथ वयस्क विद्यार्थी भी प्रवेश ले सकते थे। इसके अतिरिक्त कुछ विश्वविद्यालय जैसे कि क्वीन्सलैंड विश्वविद्यालय आदि भी भूतकाल में वयस्कों के लिए हिंदी शिक्षा प्रदान करते रहे हैं। परंतु विभिन्न प्रांतों में वयस्कों के लिए हिंदी शिक्षा का प्रमुख स्त्रोत वयस्क शिक्षा एजेंसियाँ उदाहरण के लिए विक्टोरिया में काउन्सिल ऑफ एडल्ट एजुकेशन रही हैं। वयस्कों के लिए अधिकाँश पाठ्यक्रम, रॉबर्ट स्नेल की पुस्तक 'टीच योरसेल्फ हिंदी' पर आधारित रहे हैं।

इसके अलावा एक विद्यालय है जोकि इंडो-ऑस्ट्रेलियन बाल भारती विद्यालय है। जिसकी अध्यक्षा, संस्थापक एवं समन्वयक श्रीमती माला मेहता हैं। इस विद्यालय की स्थापना सन् 1986 के आसपास, केवल अप्रवासी भारतीयों की अपनी संस्कृति तथा अपने देश से खुद को एवं अपने बच्चों को जोड़े रखने की मंशा से हुई। यहाँ का पाठ्यक्रम पर आधारित अध्यापन होता है। प्रति वर्ष यहाँ सोलह से सत्रह अध्यापिकाएँ पढ़ाती हैं और छात्रों की संख्या 120-130 तक होती है। इसके पूर्व इस विद्यालय में 170 छात्र पढ़ते थे। उस वक्त सन् 2007 में श्रीमती माला मेहता ने यहाँ पर 'सैटरडे स्कूल ऑफ़ कम्मुनिटी लेंग्वेजेस' नाम के मुख्य शिक्षा विभाग(मेनस्ट्रीम डिपार्टमेंट ऑफ़ एजुकेशन) के संभाग में हिंदी शुरू करवाई थी और इसके साथ फिर उनके दो केंद्र और खुल गए जहाँ पर छात्र हिंदी पढ़ सकते हैं लेकिन ये सिर्फ 7वीं कक्षा से लेकर 12वीं तक ही है जबकि बाल भारती विद्यालय में 3 वर्ष के बच्चे से लेकर हाईस्कूल स्तर तक के छात्रों को हिंदी विषय पढ़ाया जाता है जिसको हिंदी कंटीन्युअर्स कहते हैं और ये दो यूनिट का विषय होता है। इसके अलावा यहाँ प्रौढ़ शिक्षण की व्यवस्था भी है जहाँ अधिकतर ऑस्ट्रेलियन ही पढने आते हैं। पहले इनकी संख्या

तीस तक थी किंतु जगह के अभाव में सिडनी यूनिवर्सिटी में भी पढ़ाई शुरू कर दी गई। वहाँ पर इसी विद्यालय की अध्यापिकाएँ पढ़ाती हैं तथा इनके ज्यादातर प्रौढ़ छात्रों को सिडनी ही भेजा जाता है किंतु जिनके लिए यह व्यवस्था सुविधाजनक नहीं है वे इसी विद्यालय में पढ़ते हैं। सन् 2012 में श्रीमती मेहता को शिक्षा-विभाग के शोध-निदेशक ने निर्देश दिया कि वें भारत पर एक प्रोग्राम बनाएँ जिससे छात्र भारत से अवगत हों। यह प्रोग्राम 'एक्स्पेंडिंग होरिजोंस इंटू एशिया' था जिसके अंतर्गत पहले से ही चीन को लेकर काफी पढ़ाई हो चुकी है और अब वे भारत की ओर ध्यान देना चाहते थे। इस प्रोग्राम का प्रारम्भ सन् 2012 में हुआ और इस प्रोग्राम में अधिकतर ऑस्ट्रेलियन बच्चे हैं हिन्दुस्तानियों की संख्या लगभग 5 या 6 ही है। प्रति वर्ष वे 250 छात्रों को पढ़ाते हैं। ये छात्र प्राथमिक विद्यालय के तृतीय या चतुर्थ वर्ष के होते हैं। इस प्रोग्राम को श्रीमती माला मेहता जी ने 'इंडिया कॉलिंग' का नाम दिया है। इसके द्वारा वे छात्रों को भारत, हिंदी भाषा, खान-पान, त्यौहारों आदि का ज्ञान देते हैं। इस प्रोग्राम में आठ विद्यालय सम्मिलित हैं तथा भारतीय खान-पान का कार्यक्रम वीडियो-कोंफ्रेंसिंग द्वारा किया जाता है। सन् 2012 में ऑस्ट्रेलिया की तत्कालीन प्रधानमंत्री जूलिया एलीन गिलार्ड ने 'एशियन सेंचुरी वाइट पेपर' का आयोजन किया था। उसमें उन्होंने हिंदी भाषा को प्राथमिक (प्रायोरिटी) भाषा बना दी थी। परिणामस्वरूप सन् 2015 से ऑस्ट्रेलिया के विद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के लिए सरकार ने निधि आबंटित की है तथा इसी वर्ष पाठ्यक्रम भी तैयार हो जाएगा।

3.5.4 हिंदी प्रचारक संस्था :-

सन् 1990 के आरंभिक वर्षों में ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न शहरों में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थान स्थापित हुए। उदाहरण के लिए मेलबर्न में 'हिंदी निकेतन' तथा सिडनी व पर्थ में 'हिंदी समाज' की स्थापना हुई। इनकी गतिविधियों में काफी समानताएँ थीं। होली, दीपावली आदि भारतीय त्यौहारों

को मनाना, हिंदी कक्षाओं का प्रबंध करना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना आदि। ये संस्थाएँ आज भी किसी हद तक कार्य कर रहीं हैं। मेलबर्न के हिंदी निकेतन के एक विशेष कार्यक्रम का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। यह कार्यक्रम है, विक्टोरियन सर्टिफिकेट ऑफ एजुकेशन (वी.सी.ई.) समारोह जिसमें हर वर्ष हिंदी विषय लेकर 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। इसी प्रकार पर्थ के हिंदी समाज द्वारा आयोजित फुलवारी कार्यक्रम बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करता है। सन् 2011 में ऑस्ट्रेलिया में हिंदी शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए हिंदी शिक्षा संघ (ऑस्ट्रेलिया) नामक संस्था की स्थापना की गई। गत दो वर्षों में इस संस्था ने बालदिवस समारोह मनाया और सन् 2013 में मेलबर्न में हिंदी शिक्षा का रजत जयंती समारोह मनाया गया।

विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लंग्वेजेज़ के सहयोग से हिंदी शिक्षा संघ (ऑस्ट्रेलिया) ऑस्ट्रेलियाई विद्यार्थियों के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने में लगा हुआ है। पहली कक्षा के विद्यार्थियों के लिए श्रीमती अनुश्री जैन द्वारा लिखी हुई पुस्तक पिछले वर्ष प्रकाशित हो चुकी है। अगले स्तर के पुस्तकों पर काम चल रहा है। ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख शहरों में कवि-गोष्ठियाँ तथा कवि-सम्मेलन भी इन संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जाते हैं। मेलबर्न में शारदा कला केंद्र द्वारा लम्बे समय तक हर दूसरे महीने साहित्य-संध्या तथा संगीत-संध्या आयोजित की जाती रही हैं। पिछले दो वर्षों से साहित्य-संध्या आयोजित करने का काम ऐच्छिक रूप से एक उत्साही वर्ग ने ले लिया है जिसका संयोजन डॉ. नलिन शारदा तथा हरिहर झा कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों से सिडनी में भारतीय विद्या भवन, ऑस्ट्रेलिया भी भारतीय संस्कृति तथा हिंदी/उर्दू के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। 14 सितंबर 2010 को हिंदी दिवस पर न्यू-साउथवेल्स संसद भवन में एक समारोह में 47 हिंदी/उर्दू के कवियों-शायरों की कृतियाँ 'गुलदस्ता' शीर्षक की पुस्तक का विमोचन तथा इन भाषाओं तथा

भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करके एक नया कीर्ति-स्तंभ कायम किया है।

3.5.5 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी मीडिया :-

ऑस्ट्रेलिया से प्रकाशित 'इंडिया मेलबर्न' नामक समाचार-पत्र में अंग्रेजी, गुरुमुखी तथा हिंदी में भी पठन सामग्री होती है। हाल ही में सिडनी में 'हिंदी गौरव' नामक हिंदी समाचार-पत्र प्रकाशित होना प्रारंभ हुआ है।

रेडियो स्पेशल ब्रोडकास्टिंग सर्विस (एस.बी.एस. रेडियो), राष्ट्रीय स्तर पर प्रति सप्ताह चार घंटे हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करता है। हाल ही में भारत से हिंदी समाचार का आधे घंटे का सीधा प्रसारण भी आरंभ हुआ है। इसके अतिरिक्त कई सार्वजनिक तथा निजी रेडियो स्टेशन भी हिंदी कार्यक्रम प्रसारित करते हैं।

हिंदी चलचित्र स्पेशल ब्रोडकास्टिंग सर्विस (एस.बी.एस. टेलिविज़न), में समय-समय पर हिंदी सिनेमा प्रसारित होती रहती है। अब तो हिंदी सिनेमा ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख नगरों के सिनेमा-घरों में भी देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय दुकानों से हिंदी सिनेमा के वीडियो कैसेट तथा डी.वि.डी. किराए पर लिए या खरीदे जा सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों से भारत के टी.वी. चैनलों, उदाहरण के लिए 'ज़ी स्टार', 'टाइम्स' आदि चैनलों द्वारा भी हिंदी कार्यक्रमों का प्रसारण उपलब्ध है।

कई स्थानीय संस्थाएँ हिंदी साहित्य, संगीत तथा नृत्य के कार्यक्रम आयोजित करती हैं और भारत से भी कलाकारों को आमंत्रित करती हैं। इसके अतिरिक्त त्यौहारों पर विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेले आदि भी आयोजित किए जाते हैं।

3.6 अर्मेनिया :-

3.6.1 ऐतिहासिक परिदृश्य :-

अर्मेनिया एक छोटा सा देश है जो सोवियत रूस के विघटन के बाद स्वतंत्र हुआ है। अर्मेनिया की राजधानी येरेवान के केंद्र में येरेवान स्टेट लिंग्विस्टिक

यूनिवर्सिटी स्थित है। इस विश्वविद्यालय में इटालियन, जर्मनी, स्पेनिश, अरबी से लेकर लगभग सभी यूरोपियन भाषाओं का अध्ययन होता है। अर्मेनिया में पहली बार आधिकारिक रूप से हिंदी भाषा का अध्ययन न केवल इस विश्वविद्यालय में बल्कि पूरे अर्मेनिया में कुछ ही वर्षों पूर्व आरंभ हुआ।

3.6.2 वर्तमान स्वरूप :-

संप्रति यहाँ प्रो. अनीता वर्मा द्वारा हिंदी का अध्यापन हो रहा है। इससे पूर्व कुछ प्राइवेट संस्थान, भारतीय दूतावास के सहयोग से या फिर केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा से पदविका (डिप्लोमा) का कोर्स करके आई कुछ छात्राएँ यहाँ हिंदी पढ़ा रहीं थीं। हालांकि भारतीय संस्कृति व पहनावे के प्रति इनका आकर्षण सोवियत रूस के जमाने से ही था।

3.6.3 अर्मेनिया में हिंदी शिक्षण :-

आरंभ में प्रो. वर्मा ने 14 छात्राओं के साथ हिंदी शिक्षण की शुरूआत की जो संख्या उनके अथक प्रयासों के बाद एक ही वर्ष में बढ़कर 50 हो गई। आरंभ में हिंदी के अध्यापन में इन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन छात्राओं को केवल अर्मेनियन भाषा आती थी और एकाध शब्द अंग्रेजी के प्रो. वर्मा ने विश्वविद्यालय के सहयोगियों के साथ मिलकर एवं अंतरजाल पर गूगल अनुवाद तथा अन्य कई सर्च-इंजिन के माध्यमों से इन छात्राओं को पढाया। उन्हें अंतरजाल के माध्यम से भारतीय वेशभूषा, खान-पान, फ़िल्मी गीत, नृत्य, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से परिचित कराया। छात्राओं की इस विषय में पहले से ही अत्यधिक रुचि होने के कारण इनके माध्यम से हिंदी के अध्यापन में आसानी हुई एवं उनकी हिंदी भाषा में रुचि बढती गई। प्रो. वर्मा ने यहाँ इन छात्राओं को लेकर कई कार्यक्रम किए हैं।[6]

3.6.4 अर्मेनिया की हिंदी सेवी संस्था - भारतीय दूतावास :-

भारतीय दूतावास ने यहाँ समय-समय पर कई प्रतियोगिताएँ करवाईं। जिनमें हिंदी दिवस एवं विश्व हिंदी दिवस पर इस विश्वविद्यालय में भाषण, कविता व निबंध प्रतियोगिताएँ प्रमुख हैं। छात्राओं को कई पुरस्कार देकर प्रोत्साहन दिया।

3.6.5 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा तथा गीत यहाँ के लोगों में काफी प्रचलित हैं और पसंद किए जाते हैं और यह हिंदी शिक्षण का बहुत ही महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

3.7 इज़रायल :-

3.7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से इज़रायल एक छोटा सा देश है। स्वयं इज़रायलवासी इसे मानचित्र पर एक बिंदु कहा करते हैं। पर यदि इस छोटे से देश की सडकों पर घूमें, तो उतनी सारी भाषाएँ और बोलियाँ सुनने में आ जाएँगी, जितनी की अमेरिका, रूस या भारत जैसे बहुजातीय और बहुभाषीय देशों में ही गूँजती हैं। और ये भाषाएँ विदेशी यात्रियों की नहीं, वरन् इज़रायल के उन नागरिकों की हैं जो यहाँ विश्व के कोने-कोने से आ बसे हैं। यहाँ की लगभग 70 लाख की आबादी में भारत मूल के लगभग 70 हजार लोग रहते हैं। उनमें से अधिकांशतः महाराष्ट्र से आए हैं और मराठी उनकी मातृभाषा है। अश्दोद, दीमोना, राम्ला जैसे नगरों में मराठी-भाषियों की संख्या काफी बडी है। वहाँ जगह-जगह पर हिंदुस्तानी रेस्तराँ और दुकानें हैं, जहाँ भारतीय खाना मिलता है, भारतीय फिल्म और संगीत की सी.डी. बिकती है। भारतीय मूल का एक छोटा सा समूह मलयालम भी बोलता है, क्योंकि वह यहाँ पर कोचीन (केरल) से स्थानांतर हुआ था। किंतु भारतीय समुदाय में भारत की सबसे बडी भाषा हिंदी का प्रतिनिधित्व कोई भी नहीं करता। भारत मूल के इज़रायलवासियों में वृद्ध और अधेड उम्र के लोग टूटी-फूटी हिंदी बोल लेते हैं और हिंदी फिल्में आसानी से

समझ पाते हैं, लेकिन भाषा का अध्यापन करने तथा उसका प्रचार-प्रसार करने की दृष्टि से उनकी हिंदी इतनी स्तरीय नहीं है।

यह स्वाभाविक है कि भारत के भूतपूर्व नागरिकों ने भारत से अपने सांस्कृतिक संपर्क बनाए रखे हैं लेकिन इज़रायली समाज में भारत के प्रति रुचि की ज़डे कहीं ज्यादा गहरी और पुरानी हैं। इस देश की स्थापना के बीस से ज्यादा वर्ष पहले, सन् 1926 में, जेरुसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय में अफ़्रीकी-एशियाई अध्ययन के संस्थान का उद्घाटन किया गया। शुरूआत में इसका शोध कार्य अरब देशों की परिस्थितियों पर केंद्रित था, लेकिन समय के साथ-साथ विद्वानों का ध्यान दक्षिण एशिया और पूर्वी एशिया के देशों की ओर भी गया।

दुनिया में भारत को चमत्कारों का देश माना जाता है। इसी विचार ने इज़रायल के नए विद्वानों को भी प्राचीन भारत की समृद्ध संस्कृति को ढूँढने और समझने के लिए प्रेरित किया। जिन विद्वानों ने इज़रायल में भारत-विद्या की नींव रखी थी और इसको आगे बढ़ाया, उनमें प्रो. डेविड शुल्मन, प्रो. शऊल मिग्लेन और प्रो. व्लादीमीर सिरकिन प्रमुख हैं। काफी दिनों तक भारत के धर्म-दर्शन, प्राचीन साहित्य और प्राचीन भाषाएँ ही उनके खोज के विषय रहे। मगर विद्यार्थियों की रुचियों को देखकर और दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंधों की स्थापना के पश्चात् वे मान गए कि भारतीय संस्कृति का अध्ययन करते हुए उसके इतिहास और लोगों की स्थिति की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। तब से भारतीय विभाग में भारत से जुडी हुई नई-नई बातों का पठन-पाठन प्रारंभ हुआ। पाठ्यक्रम में संस्कृत के अतिरिक्त तमिल, तेलुगु, तिब्बती जैसी भाषाओं को सम्मिलित किया गया।

3.7.2 वर्तमान स्वरूप :-

हर वर्ष हिंदी सीखने के लिए तेल-अवीव विश्वविद्यालय में 20-25 विद्यार्थी और यरुशलम विश्वविद्यालय में 10-15 विद्यार्थी आते हैं। उनके लिए हिंदी एक

भाषा ही नहीं, वरन् भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को समझने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अधिकतर छात्र कई बार भारत होकर आए हैं। बहुतों ने उत्तर और दक्षिण भारत छानकर देखा। यात्रा के समय विभिन्न लोगों से बात करने का अवसर मिलता है। भारत में निजी संपर्क स्थापित करना कितना आसान है। भारतीय लोग बात करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं, लेकिन बहुतों को इतनी अंग्रेजी नहीं आती कि वे हर भावना और विचार को संपूर्ण रूप से प्रकट कर सकें। तब इज़रायली पर्यटक हिंदी जानने की आवश्यकता महसूस करने लगते हैं।

इज़रायली युवकों और युवतियों के लिए हिंदी का अध्ययन करना उनके लिए भारत की संस्कृति को ज्यादा गहराई से समझने का माध्यम है। जो विद्यार्थी भारत से संबंधित शोधकार्य में जुटना चाहें, उनके लिए कई रास्ते खुले हैं। वे अपनी पढाई इज़रायल में या भारत में जारी रख सकते हैं। शोधकार्य परिपूर्ण करने पर उन्हें किसी विश्वविद्यालय में रोजगार मिलने की संभावना है, क्योंकि पिछले कुछ बरसों में भारत की सभ्यता और आधुनिक परिस्थिति से जुड़े हुए विषयों की, माँग बहुत हद तक बढ गई है।

जब से भारत तथा इज़रायल के बीच पारस्परिक संपर्कों को प्रोत्साहन मिला, विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और व्यापार बढा, तब से हिंदी की मांग भी लगातार बढती चली आई है। यहाँ इज़रायल की कुछ कंपनियाँ, जो अपना उत्पादन निर्यात करती हैं, हिंदी जाननेवालों को अपने यहाँ आमंत्रित करने लगी हैं। विद्यार्थियों में व्यापारिक फर्मों के एजेंट और पर्यटन संघों के मार्गदर्शक भी हैं। इज़रायल के एक ऐसे ही व्यावसायिक श्री रोनेन के अनुसार उन्हें व्यापार के सिलसिले में प्रतिवर्ष भारत की यात्रा करनी पड़ती है अतः हिंदी की जानकारी ने उनके काम को कहीं ज्यादा सरल और सफल बना दिया। उन्हें न केवल विभिन्न लोगों से मिलने-जुलने में उन्हें सहायता मिली, वरन् उनके प्रति भारतीय सौदागरों में विश्वास और सम्मान का

अनुभव भी पैदा हुआ। इस प्रकार वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण के युग में हिंदी के कारण इज़रायल के कुछ नागरिकों को रोजगार भी मिलने लगा है।

लेकिन हिंदी के मुख्य उपभोक्ता इज़रायल के हजारों यात्री और भारतीय सभ्यता के प्रेमी हैं। इज़रायल जैसे छोटे देश से 30-40 हजार पर्यटक हर वर्ष भारत की यात्रा करते हैं। आम विदेशी यात्रा स्थानीय भाषाएँ जाने बिना अपना काम चला लेते हैं। पर इज़रायल के यात्री बस घूमने-फिरने नहीं बल्कि तरह-तरह की बातें सीखने जाते हैं। बहुतों को भारतीय कला में रुचि है। किसी को शास्त्रीय संगीत में, किसी को नृत्य में, तो किसी को संगीत का शौक है।

3.7.3 इज़रायल का हिंदी शिक्षण :-

हिंदी की पढाई प्रशिक्षित अध्यापक के अभाव के कारण कुछ समय के लिए टाल दी गई। सन् 1996 में इजरायल में हिंदी अध्यापन की शुरुआत डॉ. गेनादी श्लोम्पेर की यरुशलम के हिब्रू विश्वविद्यालय के भारत-तत्त्व विभाग में हिंदी के अध्यापक के पद पर नियुक्ति से हुई। विद्यार्थियों में हिंदी की बढती हुई माँग को लेकर सन् 2001 में तेलअवीव विश्वविद्यालय में भी इस भाषा को सिखाने का निर्णय लिया गया, और डॉ. श्लोम्पेर को वहाँ भी पूर्वी एशिया के विभाग में हिंदी पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया। हिंदी के कोर्स बहुत ही सफल रहे। जिसका अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि हर वर्ष दोनों विश्वविद्यालयों में कुल मिलाकर करीब चालीस नए-नए छात्र आ गए थे।

यहाँ हिंदी भाषा का पाठ्यक्रम दो वर्षों का है। प्रथम वर्ष में विद्यार्थियों को लिखने, पढ़ने और बोलने का अभ्यास दिया जाता है। एक वर्ष के अंदर वे हिंदी व्याकरण के आधारभूत नियमों को पढ लेते हैं और प्रतिदिन की आवश्यकता के विषयों पर बातचीत करना सीख लेते हैं। एक साल की पढाई के बाद छुट्टियों के समय जो विद्यार्थी भारत की यात्रा पर जाते हैं वे अपनी प्राथमिक जानकारी का

प्रयोग करके बहुत खुश होते हैं। हिंदी जैसी भाषा गहराई से सीख लेने के लिए दो वर्ष अवश्य पर्याप्त नहीं हैं। इसिलए दूसरे वर्ष के पाठ्यक्रम को कुछ ऐसी सामग्री पर आधारित किया है जिसके माध्यम से विद्यार्थी व्याकरण के सबसे महत्त्वपूर्ण नियमों को अपनाकर शब्दकोश की सहायता से हिंदी में कोई भी किताब पढ सकें। दूसरे वर्ष के अंत में विद्यार्थियों को इस स्तर पर तैयार किया जाता है कि वे रामधारी सिंह दिनकर जैसे लेखक की रचनाएँ पढ सकें। कोश और व्याकरण की सहायता से वे अनुवाद करते हैं और जहाँ कठिनाई आती है, तो अध्यापाक उनकी मदद करते हैं।[7]

जो विद्यार्थी हिंदी आगे सीखना चाहते हैं, वे छात्रवृत्तियाँ पाकर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में अध्ययन के लिए जाते हैं।

हिंदी के प्रति बढते रुझान को देखते हुए तेलअवीव विश्वविद्यालय ने हिंदी भाषा में तीन साल के पाठ्यक्रम को शुरू किया है। और खैफा नगर के विश्वविद्यालय ने भी आधुनिक भारत का अध्ययन करने वालों के लिए एक साल का हिंदी कोर्स चलाया है।

हिंदी सीखने की इच्छा उन बहुत से लोगों को भी होती है जो विश्वविद्यालय में नहीं पढते। तेलअवीव विश्वविद्यालय के पूर्वी और दक्षिणी एशिया के विभाग में विद्यार्थी इस सारे क्षेत्र के देशों की संस्कृति और इतिहास का अध्ययन करते हैं। चीन, जापान और भारत को पाठ्यक्रम में विशेष महत्त्व दिया गया है। पाठ्यक्रम के अनुसार इन तीनों देशों की कोई एक भाषा सीखना अनिवार्य है। इस प्रकार विद्यार्थी चीनी, जापानी, संस्कृत या हिंदी चुन सकते हैं। कुछ युवक-युवतियाँ हिंदी को बस इसलिए चुन लेते हैं कि उनके विचार में अन्य तीन भाषाओं की तुलना में हिंदी अपेक्षाकृत सरल है।

3.7.4 मीडिया :-

सन् 2000 से लेकर तेल-अवीव विश्वविद्यालय में पढाई के हर वर्ष के अंत में हिंदी समारोह का आयोजन किया जाता रहा हैं, जिनमें भाग लेने के लिए भारत के और हिंदी के सैकडों प्रेमी आते हैं। यहाँ हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस बडे धूम-धाम से मनाया गया। विद्यार्थी हिंदी गाने गाते हैं, नाटकों का मंचन करते हैं, हिंदी के बारे में विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं, कविताएँ सुनाते हैं। बाद में भारतीय नाच-गाने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। भारत के राजदूतावास की सहायता से ऐसे समारोह होते हैं।

यहाँ हिंदी में जी.टी.वी. के प्रोग्राम प्रसारित किए जाते हैं, जो बडे लोकप्रिय हैं। यहाँ के टेलीविजन पर और सिनेमा-घरों में हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन और रेडियो पर हिंदी गानों का प्रसारण एक साधारण सी बात बन गया है।

3.8 ऑस्ट्रिया :-

3.8.1 ऐतिहासिक परिदृश्य :-

ऑस्ट्रिया में बहुत से विश्वविद्यालय हैं मगर इनमें से केवल इसकी राजधानी में स्थित विएना विश्वविद्यालय में ही हिंदी पढ़ाई जाती है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1365 में हुई थी और यह जर्मन-भाषी दुनिया का पहला और मध्य यूरोप का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय माना जाता है। विएना विश्वविद्यालय में सन् 1917 से सन् सन् 1961 तक मौसमी तौर पर हिंदी की शिक्षा होती रही। अर्थात कुछ हिंदी के विद्वानों ने, जैसे कि प्राध्यापक बर्नर्ड ग्रेगर, प्राध्यापक गुंथेर तथा डॉ. रोएमर, कई कठिनाइयों का सामना करते हुए हिंदी का अध्यापन किया लेकिन यह शिक्षण कई वर्षों के व्यवधान के साथ चलता रहा। सन् 1969 से डॉ. रतिलाल जोशी ने सबसे पहले भारतीय और हिंदी मातृभाषी के रूप में विएना विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा शिक्षक के रूप में प्रवेश किया और हिंदी की औपचारिक कक्षा की शुरूआत की। सन् 1969 के बाद से इस विश्वविद्यालय से हर साल 30 से 40 की संख्या में हिंदी

के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने लगे। सन् 1969 से हिंदी का अध्ययन अनवरत होता चला आया है। शुरूआती दौर में यहाँ केवल हिंदी बोलचाल का अध्यापन होता था न कि हिंदी साहित्य शिक्षण। सन् 2002 में हिंदी को नवहिंद इरानी भाषा के रूप में वैकल्पिक विषय के अंतर्गत पाठ्यक्रम में स्थान मिला और हिंदी के अध्यापक गौतम लियु ने हिंदी का अध्ययन आरंभ किया।

3.8.2 वर्तमान स्वरूप :-

लेकिन विएना में हिंदी भाषा और साहित्य का औपचारिक पठन-पाठन सन् 2007 से ही आरंभ हुआ। सन् 2007 में एक नए आधुनिक दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग की स्थापना हुई। विभाग का कार्यभार प्रो. डॉ. मार्टिन गेंज़ले ने संभाला और आधुनिक दक्षिण एशियाई भाषा के रूप में हिंदी भाषा और साहित्य को स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षा में उल्लेखनीय स्थान मिल सका।

3.8.3 ऑस्ट्रिया में हिंदी शिक्षण :-

अब हिंदी का पठन-पाठन आधिकारिक रूप में विएना विश्वविद्यालय में आरंभ हुआ। सिर्फ आधुनिक दक्षिण एशियाई विभाग के ही नहीं, अन्य विभाग के छात्र भी अतिरिक्त विषय के रूप में हिंदी का चयन करते हैं जिसकी वजह से हिंदी की कक्षा में विद्यार्थी की संख्या हमेशा ही उर्वर ही रहती है।

विद्यार्थी एक वर्ष में हिंदी व्याकरण के आधारभूत नियमों को जानकार दूसरे वर्ष से सरल गद्य, हिंदी संभाषण और व्याकरण के अध्ययन को आगे बढाते हैं। इसके दौरान वे बिना किसी हिचकिचाहट हिंदी में वार्तालाप करने की क्षमता का विकास भी कर चुके होते हैं। इसके बाद उनकी गति और तीव्र होती है जिससे वे साहित्यिक रचनाओं की समीक्षा करने लगते हैं, हिंदी फिल्मों का आस्वादन ले सकते हैं और हिंदी अखबारों को आसानी से पढ़ सकते हैं।

विएना विश्वविद्यालय का भारतीय अध्ययन विभाग सन् 2007 तक केवल प्राचीन भारतीय अध्ययन के लिए मशहूर था जिसमें संस्कृत, पालि, प्राकृत जैसी प्राचीन भाषाएँ, प्राच्य दर्शन और संस्कृत साहित्य पढ़ाया जाता था। लेकिन सन् 2007 में समानांतर आधुनिक दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग की शुरूआत ने भारतीय अध्ययन के क्षेत्र को और विस्तृत किया और हिंदी भाषा और साहित्य को एक सम्मानित स्थान प्रदान किया। आधुनिक दक्षिण एशियाई विभाग की पढाई सिर्फ हिंदी भाषा और साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भारतीय राजनीती, इतिहास, धर्म, कला, संस्कृति, फिल्म सहित विभिन्न विषय भी शामिल हैं। यह विभाग विद्यार्थियों का परिचय आधुनिक भारत और इसकी संस्कृति और इतिहास से संपूर्ण रूप से करवाता है। न केवल हिंदी शिक्षण बल्कि विभाग की पाठ-योजना में अध्ययन-भ्रमण का भी प्रावधान है जिसके तहत विद्यार्थियों के समूह को विविध अवसरों पर निर्धारित शीर्षक के क्षेत्रगत अध्ययन के लिए भारत ले जाया जाता है और उनको इस यात्रा के पश्चात् प्रस्तुत कार्यपत्र, भ्रमण में सहभागिता और भ्रमण संबंधी कक्षा के लिए औपचारिक अंक भी मिलते हैं।

सन् 2007 से विभाग के पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन हुआ है। परिवर्तित पाठ्यक्रम के अनुसार 'दक्षिण एशियाई तथा तिब्बती भाषा एवं संस्कृति' में स्नातक करने के बाद स्नातकोत्तर की पदवी के लिए तीन संभावनाओं की व्यवस्था की गई है। इनमें से एक स्नातकोत्तर पदवी का पाठ्यक्रम 'दक्षिण एशियाई भाषा और साहित्य' शीर्षक पर है, जिसमें संस्कृत और हिंदी साहित्य के पढ़ने की संभावना है और दूसरा आधुनिक दक्षिण एशियाई अध्ययन' है जिसमें हिंदी के अध्ययन को प्रमुखता दी गई है। तीसरी स्नातकोत्तर तिब्बती, बौद्ध दर्शन पर केंद्रित है। स्नातक के पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत, प्राचीन तिब्बती, आधुनिक तिब्बती, हिंदी और नेपाली भाषाओं को पढ़ने के विकल्प हैं और विद्यार्थी की अपनी रुचि और भविष्य में किस स्नातकोत्तर

पदवी के पाठ्यक्रम को चुनना है, इसके आधार पर अनिवार्यतः दो भाषाओं का चयन करना होता है। प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिंदी का पाठ्यक्रम छः सत्रों में निर्धारित किया गया है जिसके अंतर्गत प्रारंभिक व्याकरण, विशिष्ट व्याकरण, सरल हिंदी पाठ, हिंदी भाषा ज्ञान को बढाने के लिए साहित्य, मीडिया अथवा फिल्म से संबंधित किसी भी क्षेत्र पर आधारित कक्षा आदि विषयों पर अध्यापन होता है। हालांकि हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ने वालों के लिए सिर्फ दो भाषा का अध्ययन अनिवार्य है, फिर भी अगर वे चाहें तो वैकल्पिक या रुचि के विषय के रूप में आगे का अध्ययन जारी रख सकते हैं। दक्षिण एशियाई भाषा और साहित्य में स्नातकोत्तर पदवी लेने वाले विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम दो सालों का होता है। दो सालों में कुल मिलाकर हिंदी के लिए सप्ताह में छः घंटे का पाठ्यक्रम निर्धारित है।

इसके आलावा, छात्र स्नातकोत्तर थीसिस के लिए भी हिंदी भाषा और साहित्य से संबंधित विषय का चयन कर सकता है। मिसाल के लिए फिलहाल बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी भाषा में अंग्रेजी का प्रभाव शीर्षक पर एक छात्रा कार्य कर रही है। विभाग में आधुनिक दक्षिण एशियाई संस्कृति और समाजशास्त्र शीर्षक पर भी स्नातकोत्तर अध्ययन का प्रावधान है, इसके लिए भी हिंदी भाषा का आधारभूत ज्ञान अनिवार्य है।

हिंदी भाषा शिक्षण की प्रारंभिक कक्षाओं में इनेस फर्नेल और गौतम लियु द्वारा लिखित 'हिंदी बोलो' नाम की किताब पढाई जाती है। हालांकि, अब तक इस किताब का सिर्फ प्रथम भाग ही प्रकाशित हुआ है, दूसरे वर्ष या तीसरे सत्र के विशिष्ट हिंदी व्याकरण के लिए 'टीच योरसेल्फ हिंदी' के ग्यारहवें पाठ से शुरू करके पूरी किताब पढाई जाती है। इन तीन सत्रों में विद्यार्थी पूरी व्याकरण पढ़ चुके होते हैं।

यद्यपि ऑस्ट्रिया जर्मन-भाषी देश है और अकसर जो विद्यार्थी कक्षा में आते हैं वे भी जर्मन-भाषी होते हैं, फिर भी प्रथम सत्र की शुरूआती कक्षाओं में ही जर्मन

या अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है और हिंदी का अध्यापन हिंदी के माध्यम से ही करने की कोशिश की जाती है। यहाँ का अध्यापन अनुवाद केंद्रित नहीं है, अथवा कक्षा में दूसरी सहयोगी भाषा कम से कम प्रयोग की जाती है। उदाहरण के लिए विद्यार्थी, परीक्षाओं में व गृहकार्य में हिंदी में ही अपना कार्य प्रस्तुत करते हैं और मौखिक व्याख्या भी हिंदी में ही किया करते हैं। देवनागरी लिपि भी प्रथम सत्र की प्रथम कक्षा से ही शुरू की जाती है और छात्र प्रथम सत्र की परीक्षा देवनागरी में ही लिखते हैं।

परीक्षा के लिए स्नातक के विद्यार्थियों को व्याकरण और साहित्य में लिखित परीक्षा, गृहकार्य और कक्षा में उपस्थिति और सामान्य संभाषण के लिए अंक मिलते हैं। संभाषण हिंदी में, परीक्षा के रूप में विद्यार्थी लघु वक्तव्य प्रस्तुत करता है। अन्य साहित्यिक कक्षाओं के लिए हिंदी भाषा के माध्यम से लिखित परीक्षा ली जाती है।

3.8.4 मीडिया :-

यहाँ बॉलीवुड फिल्में, हिंदी के अखबार, टेलीविज़न और रेडियो का सम्मानित स्थान है।

3.9 क्रोएशिया :-

3.9.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

सन् 1874 में क्रोएशिया के एकमात्र विश्वविद्यालय जाग्रेब विश्वविद्यालय में भारत-विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन की स्थापना की गई थी। हालांकि उस समय भारत विज्ञान विभाग का संपूर्ण निर्माण नहीं हुआ था।

3.9.2 वर्तमान स्वरूप :-

भारतीय विद्या के लिए सन् 1962 में स्वतंत्र रूप से अलग विभाग बनाया गया और उसके अंतर्गत संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भारत विज्ञान से संबंधित पाठ्यक्रमों का अध्ययन किया जाने लगा, जिनमें हिंदी भाषा भी एक है। भारत

विज्ञान विभाग की स्वतंत्र तथा विस्तृत रूप में स्थापना करने का प्रमुख श्रेय प्रो. रादोस्लाव कतिचिच और प्रो. स्वेतोजार पेत्रोविच को जाता है। सातवें दशक से हिंदी अध्ययन-अध्यापन की प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए भारत विज्ञान विभाग हिंदी-भाषी शिक्षकों की उपस्थिति की व्यवस्था का प्रयास करता आ रहा है।

3.9.3 क्रोएशिया में हिंदी शिक्षण :-

वर्तमान के अधिकाँश यूरोपीय विश्वविद्यालयों की तरह क्रोएशिया के सब विश्वविद्यालय अपने अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था बोलोन्या के अनुसार कराते हैं। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. जैसे पाठ्यक्रमों का संचालन हर विभाग के अंतर्गत हो रहा है। इससे संबंधित कई विभागों की विशेषता यह है कि उनके अध्ययन की व्यवस्था 3 (स्नातक) + 2 (स्नातकोत्तर) के बजाय 4 (स्नातक) + 1 (स्नातकोत्तर) की है।

प्रति वर्ष भारत विज्ञान विभाग में चालीस विद्यार्थी पंजिकृत होते हैं। यह संख्या, क्रोएशिया की 50 लाख की जनसंख्या को ध्यान में रखें तो अपने आप ही इंडोलोजी का महत्त्व बतलाती है। समस्त दृष्टि से विद्यार्थी भारत विज्ञान से संबंधित अलग-अलग क्षेत्रों में रुचि लेते हैं, पर अधिकाँश विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा ही इंडोलोजी पढ़ने का प्रमुख कारण है और इसी क्षेत्र में ही अपनी क्षमता का विकास करना चाहते हैं।

यह एक वर्ष का पाठ्यक्रम है, जिसका अध्ययन पहले वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है और यह दो छःमाहियों में पूर्ण होता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के व्याकरणिक आधारभूत पहलुओं से परिचय कराता है - यथा स्वरविज्ञान, रूपविज्ञान, शब्द-भंडारविज्ञान, वाक्यविज्ञान। इस पाठ्यक्रम के लिए जिस प्रमुख पाठ्यपुस्तक का प्रयोग किया जाता है वह है क्रोएशियन में लिखा हुआ

हिंदी व्याकरण। सन् 1996 में प्रो. ज्द्रावाका मातिशिच द्वारा रचित 'हिंदी व्याकरण के आधार' इस पुस्तक का नाम है।

यह चार वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम है जिसका अध्ययन आठ छःमाहियों में पूर्ण होता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा में लिखित तथा मौखिक कौशलों का निर्माण करना है। यह पाठ्यक्रम हिंदी की भाषा-वैज्ञानिक जानकारी उत्तरोत्तर उपलब्ध कराता है, पर साथ ही साथ विद्यार्थियों के सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों से संबंधित ज्ञान का विस्तार भी कराता है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य विद्यार्थियों में उस कौशल का भी निर्माण करना है, जिससे वह क्रोएशियन से हिंदी में अनुवाद करने में सक्षम हो सकें। इस पाठ्यक्रम में प्रयोग किए जाने वाले पुस्तक क्रमशः हैं -

(क) प्रथम और द्वितीय वर्ष -

(i) सुनील कुमार भट्ट की पुस्तक - हिंदी : ए कम्प्लीट कोर्स फ़ॉर बिगनर्स, लिविंग लैंग्वेज, न्यू यॉर्क, 2007

(ii) वी.रा.जगन्नाथ की पुस्तक - पाठ और मौखिक अभ्यास, जनेपा, 1991

(iii) आर.काल्डवेल स्मिथ और एस.सी.आर. वेतमैन की पुस्तक - इंट्रोडक्टरी हिंदी कोर्स, लैंडोर लैंग्वेज सकूल, मसूरी, 2003

(ख) तीसरा और चौथा वर्ष -

(i) यमुना काचरू, राजेश्वरी पाँढरीपांडे की पुस्तक - माध्यमिक हिंदी, मोतीलाल बनारसीदास, 1988

(ii) शीला वर्मा की पुस्तक - माध्यमिक हिंदी पाठ्यपुस्तक, 2002

(iii) शीला वर्मा की पुस्तक - उच्च हिंदी पाठ्यक्रम, 1996

(iv) पीटर ई.हुक की पुस्तक - हिंदी स्ट्रक्चर्स : इंटरमिडिएट लेवल, द यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिशिगन, 1979

यह तीन वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम है जो विद्यार्थियों को साहित्य की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराता है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रसिद्ध भारतीय लेखकों की कहानियों, उपन्यासों या नाटकों का हिंदी से क्रोएशियन में अनुवाद तथा रचनाओं का विश्लेषण किया जाता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुवादात्मक और आलोचनात्मक क्षमताओं एवं कौशलों का विकास करना है। हिंदी साहित्य के आस्वादन के अतिरिक्त, यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण से हिंदी भाषा की विस्तृत जानकारी एवं भाषा की विभिन्न शैलियों का ज्ञान उपलब्ध कराता है।

इस विभाग के प्रमुख उद्देश्य कुछ इस प्रकार हैं - भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से क्रोएशियन में हिंदी से संबंधित अधिकतम सामग्री उपलब्ध कराना (हिंदी-क्रोएशियन/क्रोएशियन-हिंदी शब्दकोश, भाषा वैज्ञानिक आलेख, निबंध आदि)। साहित्यिक दृष्टिकोण से, हिंदी से क्रोएशियन में अनुवाद में वृद्धि करना। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की सफलतापूर्वक समाप्ति पर हिंदी क्षेत्र में उनकी क्षमता के विकास के अवसर उपलब्ध कराना।

3.9.4 मीडिया :-

क्रोएशिया में हिंदी शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम में पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त मीडिया के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। (समाचार-पत्र, फिल्में, डॉक्युमेंटरी, गाने आदि)। सामाजिक-सांस्कृतिक जानकारी प्रदान कराने के अतिरिक्त, मीडिया के माध्यम से नियमों का व्यावहारिक प्रयोग, उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण, शब्द-भंडार की वृद्धि पर जोर दिया जाता है।

यहाँ बॉलीवुड फिल्में तथा गीत बहुत प्रचलित हैं।

3.10 चेक गणराज्य :-

3.10.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

सन् 1348 में कारेल (चार्ल्स) नामक राजा ने मध्य यूरोप में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह विश्वविद्यालय कारलोपा यूनिवर्सिटी (चार्ल्स विश्वविद्यालय) के नाम से ज्ञात है। यह विश्वविद्यालय अत्यंत लोकप्रिय हुआ व अनेक विषयों के अध्ययन का केंद्र बन गया।

3.10.2 वर्तमान स्वरूप :-

पिछले कई दशकों से विश्वविद्यालय के भारत विद्या (इंडोलोजी) विभाग में अनेक आधुनिक भाषाओं का सुव्यवस्थित रूप से अध्यापन किया जा रहा है। हिंदी भाषा व साहित्य का अध्ययन भी सन् 1950 से उच्चतर स्तर पर आरंभ किया गया। प्रोफ़ेसर लेस्नी की देखरेख में चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी व बांगला भाषाओं का स्वतंत्र रूप से अध्यापन किया जा रहा है। यहाँ के डॉ. पोरिज्का व डॉ. स्मेकल हिंदी के विश्व प्रसिद्ध अध्यापक थे। इनका नाम विदेशी हिंदी विद्वानों में बड़े आदर से लिया जाता है।

3.10.3 चेक गणराज्य में हिंदी शिक्षण :-

चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी का पाठ्यक्रम पाँच साल में पूरा होता है। स्नातक तीन वर्षों का तथा स्नातकोत्तर दो वर्षों का। पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि विद्यार्थी भाषा एवं साहित्य के साथ-साथ हिंदी के लेखकों और कृतियों को भी जानें तथा समझें। रचनाओं को सामाजिक संदर्भ से समझ सकें। चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन की यह विशेषता है कि यहाँ स्नातकोत्तर के दौरान विद्यार्थियों को एक थीसिस लिखनी होती है। विषय उनकी पसंद का होता है। इस तरह के विषय तय किए जाते हैं कि वे भाषा के साथ साहित्य का विश्लेषण तथा उसके सामाजिक महत्त्व को रेखांकित कर सकें। चार्ल्स विश्वविद्यालय में अब तक प्रस्तुत कुछ स्नातकोत्तर के थीसिस इस प्रकार से है - हिंदी परिवार में बालक का स्थान और नवें दशक की हिंदी कहानी में इसका चित्रण, अमृतराय और नई कहानी

आदि। इसके अलावा चेक विद्यार्थियों ने मीराबाई, जैनेंद्र कुमार, शानी, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता आदि पर भी लिखा है। इससे वहाँ हो रहे शोध और हिंदी अध्ययन की जानकारी मिल सकती है।

हिंदी के एक महान विद्वान डॉ. विन्तसैंथ पोरिज्का ने हिंदी अध्ययन हेतु एक उल्लेखनीय पाठ्यपुस्तक बनाई है 'हिंदीस्तीना' (हिंदी भाषा का पाठ्यक्रम प्रथम भाग), यह एक उल्लेखनीय पाठ्यपुस्तक है जिसका प्रकाशन सन् 1965 में प्राग के स्टेट पेडागोजिकल हाउस से प्रकाशन हुआ। सन् 1976 के लगभग इन्होंने हिंदी-चेक शब्दकोश बनाया। सन् 1982 में उनका देहांत हो गया, किंतु मृत्यु पूर्व उन्होंने हिंदी, संस्कृत और बांग्ला के लिए बहुत सारा काम किया। उन्हें श्रीमद्भगवत गीता कंठस्त थी। हिंदी व्याकरण के वे पंडित थे।[8]

इस क्षेत्र में डॉ. पोरिज्का के शिष्य डॉ. ओदोलेन स्मेकल का योगदान भी अतुलनीय है। वह हिंदी के विद्वान थे और उन्होंने हिंदी पाठ्यपुस्तकों की पूरी शृंखला तैयार की थी, जो इस प्रकार है -हिंदी वार्तालाप, हिंदी पाठमाला, हिंदी क्रियाएँ, हिंदी क्रिया प्रबंध, हिंदी शब्दावली तथा अनुप्रयुक्त हिंदी व्याकरण। डॉ. ओदोलेन स्मेकेल 1994-1997 तक भारत में चेक गणराज्य के राजदूत थे। उससे पहले वह दिल्ली विश्वविद्यालय में चेक भाषा के प्रोफ़ेसर थे। इसी दौरान इन्होंने चेक-हिंदी शब्दकोश का निर्माण किया। सन् 1998 में उनका प्राहा शहर में निधन हो गया। उन्होंने आजीवन हिंदी की सेवा की। उन्होंने हिंदी के ऐतिहासिक ग्रंथों का चेक भाषा में अनुवाद किया। सन् 1978 में भारत सरकार ने विश्व हिंदी पुरस्कार से उन्हें सन्मानित किया। भारत की अनेक संस्थाओं ने भी उन्हें उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया था। यहाँ पर उनकी पुस्तकों की सूची दी गई हैं - 'मेरी प्रीत, तेरे गीत', 'नमो नमो भारत माता', 'स्वाति बूँद', 'कमल को लेकर चल', 'तेरे

दिग्दिगंतर अभिराम', 'स्मेकल की प्रतिनिधि कविताएँ', 'अविराम', 'हमारी हरित नीम-श्रेष्ठ कविताएँ', 'दीपकों के देश में'।

3.11 जर्मनी :-

3.11.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

विश्व के उन प्रमुख देशों में जर्मनी का नाम सर्वोपरि है जिसके विद्वानों ने संस्कृत और हिंदी साहित्य में सदा दिलचस्पी दिखाई है। जर्मनी की भारत-विद्या का इतिहास बहुत पहले शुरू हुआ। यूरोप में भारत विद्या का सर्वप्रथम प्राध्यापक पीठ सन् 1814 में पेरिस में और दूसरा सन् 1818 में स्थापित किया गया था। सन् 1818 में प्राच्य विद्या संस्थान खुला, जिसके विभागों में भारत विद्या विभाग एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। तब से संस्कृत की पढ़ाई और भारत विद्या की परंपरा जर्मनी में चली आ रही है।

3.11.2 वर्तमान स्वरूप :-

जर्मन हिंदी को अब भी एशियाई आबादी के एक बड़े तबके से संपर्क साधने का सबसे बेहतर माध्यम मानते हैं। जर्मनी के हाईडेलबर्ग, लोवर सेक्सोनी के लाईपजिग, बर्लिन के हम्बोलडिट और बॉन विश्वविद्यालय में कई दशक से हिंदी और संस्कृत पढाई जा रही है।

जर्मनी में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर) के सहयोग से हिंदी और संस्कृत पढाई जाती है और शिक्षक भी परिषद् के सहयोग से ही नियुक्त किए जाते हैं। यहाँ संस्कृत के प्रति दिलचस्पी तब शुरू हुई, जब सन् 1800 में विलियम जोन्स ने कालिदास की 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का जर्मन में अनुवाद हुआ। जर्मनी में संस्कृत के प्रति दिलचस्पी इसलिए भी पैदा हुई थी क्योंकि जर्मन लैटिन भाषा सीखने को लेकर उत्सुक रहते थे और लैटिन तथा संस्कृत में काफी समानताएँ पाई जाती हैं।

वर्तमान में जर्मनी के हमबोल्ड, बर्लिन ओपन विश्वविद्यालय, लीपजिंग मार्टिनलूथर, बॉन, हेदरबर्ग, फ्रंकफर्ट, मिओटिंगस नेल, फ्रिकबर्ग, म्यूनिख, मस्टर और कोलेनमरबर्ग विश्वविद्यालय में हिंदी पढाई जा रही है। इन विश्वविद्यालयों में कई स्तरों पर हिंदी के अध्ययन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जर्मनी के विद्यार्थियों में भारत के प्रति एक विशेष प्रेमभाव देखने को मिलता है।

3.11.3 जर्मनी की बॉन विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण :-

बॉन विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ-साथ ही संस्कृत की कक्षा की शुरूआत भी हुई थी। संस्कृत और पालि के पहले प्राध्यापक-फ्रेड्रिक वान श्लेगल थे और उनके आने से बॉन में भारतीय भाषा तथा भारत विद्या का प्रारंभ हुआ। भारत विद्या की पढ़ाई संस्कृत भाषाशास्त्र और तुलनात्मक भाषा विज्ञान से शुरू हुई। इसी कार्यक्रम की वजह से बॉन शहर 'बनारस ऑन रेन' कहा जाता है। विश्वविद्यालय में हिंदी अध्ययन तथा आधुनिक एशियाई विद्या का इतिहास इतना पुराना नहीं है। सन् 1955 में प्राच्य-विद्या विभाग से भारत विद्या केंद्र अलग होकर एक स्वतंत्र केंद्र बना। केंद्र आज तक विश्वविद्यालय की मुख्य इमारत में रेगीना पाकिस वेग 7 पर स्थापित है। वहाँ भी भारत विद्या का पुस्तकालय है, जिसमें 30 लाख से ज़्यादा किताबें मौजूद हैं।[9]

सन् 1989 तक पढ़ाई का प्रमुख क्षेत्र संस्कृत भाषा और दर्शन था। इसी साल बॉन विश्वविद्यालय में 'आधुनिक दक्षिण एशियाई विद्या में डिप्लोमा' के पाठ्यक्रम का समारंभ हुआ। सन् 2004/2005 के शीतकालीन सत्र में भारत विद्या संस्थान प्राच्य और एशियाई विद्या विभाग का एक अंश बन गया। इसी सत्र से भी विभाग में संयुक्त स्नातक तथा स्नातकोत्तर प्रोग्राम की शुरूआत हुई। विभाग में कुल मिलाकर नौ केंद्र है, जिनमें से भारत विद्या एक है। सन् 2007/2008 के शीतकालीन सत्र तक प्राच्य और एशियाई विद्या के विभाग में पाठ्यक्रम की अवधी पाँच साल की थी,

जिसके बाद छात्रों को स्नातकोत्तर की उपाधि दी जाती थी और फिर वे पीएच.डी. के कार्यक्रम में प्रवेश ले सकते थे। सन् 2007 से बॉन में एशियाई विद्या और भारत विद्या की पढ़ाई तीन स्तरों पर चल रही है - स्नातक स्तर पर, जिसके पाठ्यक्रम की अवधी छः सत्रों की है; स्नातकोत्तर स्तर पर, अवधी चार सत्रों की है। स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए स्नातकोत्तर स्तर के छः पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। सन् 2008 में पीएच.डी. के पाठ्यक्रम का भी आरंभ हुआ।

वर्तमान में स्नातक के प्रथम वर्ष में छात्रों की संख्या 15 है और स्नातक के द्वितीय वर्ष में छात्रों की संख्या 6 है। स्नातक के अंतिम सत्र में छात्र साहित्य, संस्कृति, समाज आदि से संबंधित विषयों पर शोध प्रबंध लिखते हैं, जिनके मुल स्त्रोत हिंदी भाषा में होने चाहिए। स्नातक और स्नातकोत्तर शोध प्रबंधों के विषय आधुनिक हिंदी साहित्य, दर्शनशास्त्र या संस्कृति से संबंधित होने चाहिए।

स्नातकोत्तर के स्तर पर दो सत्र तक हर हफ़्ते में हिंदी के 12 घंटे नियोजित हैं। इस दौरान पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य का इतिहास स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम के आगे पढ़ाया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्र अपने शोध प्रबंधों पर काम करते हैं। छात्रों को अलग-अलग विषयों में काम करना पड़ता है और कभी-कभी वे कक्षा में अपना काम प्रस्तुत करते हैं और जिन पर छात्र तथा अध्यापक विस्तृत चर्चा करते हैं। बॉन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चार सत्रों का होता है।

भारत विद्या के अधिकतर छात्र अपनी रुचि से हिंदी से संबंधित विषय पढ़ते हैं। इनमें से ज़्यादातर छात्र भारत में कुछ समय बिता चुके हैं और हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं से परीचित होते हैं। वे भारतीय संस्कृति या भाषा में रुचि रखते हैं क्योंकि हिंदी के माध्यम से भारतीय समाज को जानना और समझना आसान हो जाता है। बॉलीवुड फ़िल्मों में बढ़ती हुई रुचि हिंदी तथा भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करती है। अब छात्रों की रुचि पुस्तकों तथा अनुवाद करने में नहीं रहा।

ग्लोबलाइज़ेशन या वैश्वीकरण की वजह से सारा वातावरण बदल गया है। वर्तमान में इनका हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाएँ सीखने-सिखाने का प्रमुख उद्देश्य भारत से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में सक्रियता बढ़ाना तथा रोज़गार के उभरते अवसरों को पाना ही है। भारत की मानसिकता एवं भारतियों की जीवन शैली समझने के लिए हिंदी अथवा कोई दूसरी भारतीय भाषा सीखना जरूरी है। इस परिस्थिति में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के समक्ष बिलकुल नई समस्याएँ सामने आई हैं। हिंदी सीखने के इच्छुक छात्रों की संख्या में कोई कमी नहीं है फिर भी उनके लिए पढ़ने का लक्ष्य केवल बोलचाल की हिंदी जानना है।

विश्वविद्यालय में हिंदी कक्षाएँ नियमित रूप से चलाई जाती हैं। हिंदी सिखाने के लिए हिंदी गीतों का सहारा लिया जाता है। केंद्र के पिछले सत्र में बोलचाल हिंदी कोर्स की संकल्पना की गई और भारतीय सिनेमा की कक्षा शुरू कर दी गई। बीते वर्षों में विश्वविद्यालय ने कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और सम्मेलनों का आयोजन किया और वर्तमान में भी कर रहा है।

बॉन का भारत विद्या केंद्र बहुत छोटा है। संस्कृत के लगभग दस छात्र हैं, जिनमें से तीन छात्र संस्कृत के साथ-साथ हिंदी भी पढ़ते हैं। इनके अलावा दूसरे विभागों और संस्थानों से अतिथि के रूप में आठ-दस बाहरी छात्र भी आते हैं जिनको भी सत्र के अंत में परीक्षा देने की अनुमति दी जाती है। मुख्य रूप से ये छात्र एशियाई विद्या की पढ़ाई करते हैं और हिंदी उनकी चुनी हुई भाषाओं में से एक होती है।

अभी पूरे प्राच्य और एशियाई-विद्या विभाग में स्नातकोत्तर के नए पाठ्यक्रम विकसित हो रहे हैं, जिससे भारत विद्या के अध्ययन-अध्यापन में कई परिवर्तन आएँगे। हिंदी का चयन सिर्फ़ द्वितीय भाषा के रूप में हो सकेगा। प्रथम भाषा सिर्फ़ संस्कृत होगी। स्नातकोत्तर में प्रवेश लेने के लिए छः सत्रों की संस्कृत भाषा की

जानकारी अनिवार्य होगी। इससे बॉन की आधुनिक भारत विद्या खतरे में पड़ जाएगी। प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले स्नातक छात्रों के लिए यहाँ पढ़ाई जारी करने की संभावना नहीं रहेगी। संस्कृत की इस अनिवार्यता के कारण अभी यह बताना कठिन लगता है कि आने वाले सत्र में कितने छात्र स्नातकोत्तर के कार्यक्रम में प्रवेश लेंगे और इनके अपने कितने छात्र स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद केंद्र में अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहेंगे। यह बदलाव भी प्राध्यापकों की संख्या कम होने के कारण जरूरी होने लगा। शास्त्रीय भारत विद्या में छात्रों की संख्या में कमी महसूस हो रही है पर प्राध्यापक अधिकतर संस्कृत के ही हैं। अभी भी स्नातकोत्तर करने वाले छात्रों की संख्या बहुत कम है। इसका मुख्य कारण यह है कि जर्मन छात्र सबसे ज़्यादा व्यावहारिक भाषा का अध्ययन करना पसंद करते हैं। वे या तो भारत में सामाजिक कार्य करना चाहते हैं या फिर किसी ग़ैर सरकारी संस्थानों में काम करना चाहते हैं। इन कार्यों के लिए हिंदी भाषा का व्यावहारिक ज्ञान होना जरूरी होता है। बॉन विश्वविद्यालय के अधिकांश छात्र जर्मन मूल के हैं पर हरेक सत्र में भारतीय मूल के विद्यार्थी भी होते हैं, जो अपनी संस्कृति और भाषा से जुड़े रहना चाहते हैं। तीसरी और चौथी पीढ़ी के प्रवासी भारतीय हिंदी के माध्यम से अपने इतिहास और संस्कृति की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। इनके लिए व्याकरण और शब्दावली का ज्ञान होना सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। बाकी छात्रों के लिए व्यावहारिक भाषा, लिपि तथा उच्चारण शुरू से ही अनिवार्य है।

अधिकतर छात्र पढ़ाई पूरी होने के बाद उससे संबंधित रोज़गार के अवसरों के बारे में जानना चाहते हैं। हिंदी के प्रति उनकी रुचि सीमित होने के कारण वे दूसरी भाषाएँ भी सीखते हैं और अपना स्नातकोत्तर भी ज़्यादातर दूसरे विषयों में करते हैं। स्नातक के शोधकार्य में वे अपनी विषयवस्तु सामाजिक समस्याओं से जोड़ना चाहते हैं, जैसे-आदिवासियों की परिस्थिति, स्त्री विमर्श, राजनीति आदि। वे हिंदी इसलिए

सीखते हैं ताकि वे भारत के लोगों को समझ सकें, उनसे बात कर सकें, रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। हालांकि इस केंद्र में साहित्य और अनुवाद को बहुत महत्त्व दिया जाता है। भारत विद्या पाठ्यक्रम का तो पहले से ही यह ध्येय रहा है कि वे हिंदी भाषा और साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज और संस्कृति की गहराइयों तक पहुँचें, छात्रों को अनुवादक के रूप में या साहित्य के क्षेत्र में काम करने के लिए तैयार करें, अनुवाद के लिए विभिन्न कोशों तथा किताबों का प्रयोग करना सीखाएँ आदि।

आजकल यहाँ के अधिकतर छात्र साहित्य और अनुवाद में रुचि नहीं दिखा रहे हैं। उनका कहना है कि केंद्र में अधिकतर साहित्य पर ध्यान दिया जाता है जिनमें मूलतः पुरानी कहानियाँ होती हैं। उनकी रुचि कुछ समकालीन एवं रोचक विषय वस्तुओं में है। छात्र निरंतर यह सुझाव देते हैं कि कक्षा में उनको लेख, पत्रिकाएँ तथा बच्चों की पौराणिक कथाएँ पढ़ना सबसे अच्छा लगता है। साथ ही साथ भारतीय फ़िल्मों के गीत एवं दृश्य देखना तथा उन पर चर्चा करना उनको पसंद है। उनकी रुचियों की सूचि में पहले स्थान पर उच्चारण अभ्यास आता है, दूसरे स्थान पर वर्तमान तकनीकी एवं तीसरे स्थान पर सामाजिक शब्दावली पढ़ना आता है।

इन विचारों को दृष्टि में रखते हुए यह केंद्र आवश्यकतानुसार बोलचाल हिंदी की कक्षा भी कराता है। हिंदी इन्टरमीडियट कोर्स में सरल लेख, बच्चों की कहानियाँ, अमर चित्र कथा, फ़िल्मों से दृश्य वगैरह जोड़ देते हैं। बोलचाल के कोर्स में अलग-अलग रोज़गार की विभिन्न परिस्थितियों का लघु रूपांतर किया जाता है, जैसे हवाई-अड्डे पर, हवाई जहाज़ में, रिक्शेवाले से बात, पुलिस थाने में बातचीत आदि। छात्रों को हिंदी सुनने और बोलने का ज़्यादा अवसर प्रदान करना इसका लक्ष्य है। भारत विद्या केंद्र में भाषा के साथ-साथ मुख्य तौर पर सभ्यता और संस्कृति की पढ़ाई होती है।

3.11.4 मीडिया :-

जर्मनी में हिंदी सिनेमा एवं हिंदी गीत अत्यंत पसंद किए जाते हैं और इनका उपयोग अध्यापन में भी किया जाता है।

3.12 स्कैंडिनेवियन देश :-

3.12.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

स्कैंडिनेविया, विश्व का एक छोटा सा अंग है। स्कैंडिनेविया के अंतर्गत डेनमार्क, स्वीडन, नोर्वे, फ़िनलैंड के साथ-साथ अन्य कई देश आते हैं किंतु यहाँ केवल उन चार देशों की जानकारी दी गई है जहाँ हिंदी भाषा का अस्तित्त्व है।

3.12.2 वर्तमान स्वरूप :-

सभी स्कैंडिनेवियन देशों में हिंदी समितियाँ व हिंदी सांस्कृतिक संस्थाएँ हैं जो समय-समय पर भारतीय त्यौहार, राष्ट्रीय दिवस व अन्य अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती हैं। इन कार्यक्रमों में सिर्फ हिंदी भाषा का उपयोग ही होता है।

3.12.3 स्कैंडिनेविया का हिंदी शिक्षण :-

कोपनहेगन यूनिवर्सिटी के इंग्लिश डिपार्टमेंट में कैथरीन हेनसन् हिंदी साहित्य व हिंदी सिनेमा के कोर्स के शिक्षण कार्य में सक्रिय हैं। डेनमार्क के आरहूस यूनिवर्सिटी में समकालीन हिंदी समाज, संस्कृति व इतिहास पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

स्वीडन व नार्वे के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण विभिन्न स्तरों पर होता है। जून 2006 को स्वीडन में सासनेट (साउथ एशियन स्टडीज़ नेटवर्क) का शुभारंभ हुआ। यह एक राष्ट्रीय नेटवर्क है जिसकी जड़ स्वीडन की लुंड यूनिवर्सिटी में जमी है। सासनेट का लक्ष्य यूरोपीय देशों में दक्षिण एशियाई देशों से संबंधित शोध, शिक्षा और भाषाओं को प्रेरित करना व बढावा देना है। कई शिक्षण केंद्र सासनेट से संयुक्त होकर अंतरवर्षीय पाठ्यक्रम चलाते हैं। उपासला विश्वविद्यालय, स्वीडन तो जोर-शोर से

गतिशील है ही, इसके अतिरिक्त स्वीडन की लुंड यूनिवर्सिटी व डेनमार्क की ओरसुंड एकेडेमी भी सासनेट से संयुक्त होकर अंतरवर्षीय पाठ्यक्रम चलाते हैं।

स्कैंडिनेवियन देशों के हिंदी जगत में वैसे तो कई हस्तियाँ सक्रिय हैं मगर डॉ. मिरजा जुनटुनन बहुत चर्चित हैं। डॉ. जुनटुनन स्टॉकहोम यूनिवर्सिटी के पूर्वदेशी भाषा विभाग इंडोलॉजी से संबंधित हैं। वे उपासला यूनिवर्सिटी, स्वीडन द्वारा आरंभ किए दस क्रेडिट इंटरनेट कोर्सस की इंचार्ज भी हैं। हिंदी पॉ इंटरनेट (इंटरनेट पर हिंदी) इनमें सबसे अधिक प्रचलित हैं।

नॉर्डिक सेंटर इन इंडिया (एन.सी.आई) डेनमार्क, फिनलैंड, नॉर्वे व स्वीडन इन नॉर्डिक देशों के अग्रणी विश्वविद्यालयों का एक संयुक्त संकाय है। यह संकाय सन् 2001 में स्थापित हुआ तथा इसका लक्ष्य नॉर्डिक देशों व भारत के बीच शोध कार्य व उच्च शिक्षा के सहयोग को सुकर करना है। शैक्षिक विनिमय द्वारा एन.सी.आई. इंडो-नॉर्डिक संबंधों को दृढ करना चाहता है। एन.सी.आई. नेटवर्क का मुख्य काम नॉर्डिक विद्यार्थियों के लिए भारत व अन्य देशों में समकालीन भारत पर लेकचर्स, सेमिनार व समर कोर्स इत्यादी आयोजित करना है। विद्यार्थियों को हिंदी विषय-वस्तुओं पर काम करने के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान होती रहती है।

ओसलो विश्वविद्यालय से जुड़े हैं, डॉ. लार्स मार्टिन फोर्स को हिंदी साहित्य, हिंदुत्व, वैदिक अध्ययन व आधुनिक भारत में काफी रुचि है। उन्होंने संस्कृत में पीएच.डी. की उपाधि हासिल की है। डॉ. लार्स मार्टिन ने श्रीमद्भगवत का अंग्रेजी रूपांतरण भी किया है।

स्वीडन के एक छोटे से खुबसूरत शहर कार्लस्टड में स्थित कार्लस्टड यूनिवर्सिटी में भी हिंदी में दस क्रेडिट कोर्स चलाए जाते हैं। विद्यार्थी हिंदी के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति, धर्म व इतिहास का भी अध्ययन करते हैं।

ओसलो यूनिवर्सिटी के भाषा-विषयक व दर्शन विभाग द्वारा आधुनिक हिंदी साहित्य विषय पर कोर्स चलाए जाते हैं। हेलसिंकी विश्वविद्यालय, फिनलैंड में भी इंडोलॉजी विभाग मौजूद है।

3.12.4 नॉर्वे तथा फ़िनलैंड में हिंदी की स्थिति :-

3.12.4.1 नॉर्वे :-

ओस्लो विश्वविद्यालय में इंडो-इरानियन इंस्टिट्यूट एक संपूर्ण विभाग है, जहाँ भारतीय तथा इरानी भाषा परिवार की प्रायः अनेक भाषाएँ पढाई जाती हैं। पहले प्रो. कनूत क्रिस्त्यांसन् इस विभाग के अध्यक्ष थे तथा फिन थीसन् प्राध्यापक। प्रो. कनूत क्रिस्त्यांसन् ने कुछ वर्ष वाराणसी में रहकर संस्कृत का गहन अध्ययन किया था। वह हिंदी व संस्कृत ही नहीं, बांगला, पंजाबी, नेपाली, मलयालम, मराठी आदि के साथ-साथ उर्दू, फारसी, सिंधी, बलूच, पाश्तो आदि भाषाओं पर अपना समान अधिकार रखते थे। प्रो. फिन श्रीसन् नॉर्वे के दूसरे हिंदी प्राध्यापक हैं। वे हिंदी के अलावा उर्दू और पंजाबी भी भलि-भाँति बोल और लिख लेते हैं। प्रो. इनेस फोरनेल ओस्लो विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा रह चुकी हैं। डॉ. ग्रोवर और श्रीमती उषा जैन प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से हिंदी के शिक्षण का कार्य करती हैं। इससे पूर्व स्वर्गीय श्रीमती पूर्णिमा चावला ने लगभग पंद्रह वर्षों तक नॉर्वे में हिंदी पढ़ाने का कार्य किया था। हिंदी के विकास में उनका विशेष योगदान रहा है। ओस्लो विश्वविद्यालय में प्रो. क्लाउस जोलर हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं। फिन थीसेन, कनूत क्रिस्त्यांसन् के अलावा रूथ स्मिथ, सुरेशचन्द्र शुक्ल, संगीता शुक्ल, सिमोन सेन आदि इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहे और यहाँ हिंदी का अध्यापन किया। ओस्लो में ही एक हिंदी स्कूल भी संचालित है जहाँ कक्षा एक से कक्षा आठ तक हिंदी शिक्षा की व्यवस्था है।[10]

आरंभ के वर्षों में अप्रवासी भारतीय अपने बच्चों को हिंदी पढ़ाने के प्रति बहुत गंभीर नहीं थे, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इस धारणा में विशेष परिवर्तन आया है। हिंदी के प्रति लोगों की रुचि बढ रही है। विश्व हिंदू परिषद् व सनातन मंदिर सभा मिलकर ओस्लो में हिंदी की कक्षा चलाते हैं, ताकि अप्रवासी बच्चों को हिंदी के साथ-साथ संस्कार भी मिलें।

3.12.4.2 फ़िनलैंड :-

उत्तरी यूरोप के ध्रुवीय क्षेत्र में स्थित एक छोटा-सा देश है फ़िनलैंड। यहाँ भी हिंदी भाषी लोग हैं और यहाँ हिंदी के शिक्षण की स्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक है। यहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार 'इंडो-फिनिश सोसाइटी' और 'इंडियन क्लब' द्वारा संचालित हो रहा है। फ़िनलैंड स्कूल बोर्ड कमिटी यह मानती है कि बच्चों का यह मौलिक अधिकार है कि वे अपनी मातृभाषा सीखें। इस कारण यहाँ के स्कूलों में बच्चों की मातृभाषा के शिक्षण की व्यवस्था है। इसी नीति के कारण हिंदी भी स्कूलों में एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है।

फ़िनलैंड में 17 विश्वविद्यालय हैं लेकिन हेलंसकी विश्वविद्यालय में ही हिंदी की पढ़ाई सुचारू रूप से जारी है। फिनिश विद्यार्थियों की रुचि भारत के संस्कृति और इतिहास के प्रति अधिक देखी गई है। डॉ. बरतिल तिक्कनेन ने हिंदी से संबंधित तीन पुस्तकें लिखी हैं जो फिनिश विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक के रूप में मान्य है। ये पुस्तकें हैं - हिंदी व्याकरण, एशियाई मुहावरों के बारे में, गोदान का अनुवाद, पवित्र गाय आदि प्रमुख हैं यहाँ विश्वविद्यालय में श्रव्य उपकरण में हिंदी भी एक भाषा के रूप में उपलब्ध है।

3.12.5 प्रमुख हिंदी सेवी संस्था :-

स्कैंडेनेविया-भारत साहित्य एवं संस्कृति मंच, अप्रवासी भारतीयों की एक अग्रणी संस्था है। नॉर्वे के सुविख्यात अभिनेता लार्स अंद्रियास लार्ससन् इसके

संस्थापक हैं। इस संस्था ने हिंदी को प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सन् 1993 में 'हिंदी - अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में' इस विषय पर तीन दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया था। भारत से जिसमें (स्व) डॉ. श्रीकांत जिचकर, (स्व) श्री शंकरदयाल सिंह, श्रीमती वीणा वर्मा (सांसद) के साथ-साथ सुप्रसिद्ध लेखक श्री हिमांशु जोशी तथा डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय भी आमंत्रित किए गए थे। यह नॉर्वे के अप्रवासी इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी।

इन देशों में स्थित भारतीय दूतावासों का इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में मूल्यवान योगदान सदा ही रहा है।

3.12.6 मीडिया :-

यद्यपि नॉर्वे में अप्रवासी भारतीयों ने लगभग तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व से ही रहना आरंभ किया है, किंतु इस अल्प अवधी में ही उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली है। इस बीच उन्होंने अपने ही प्रयत्नों से हिंदी में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया परिचय, स्पाइल-दर्पण, त्रिवेणी, अल्फा-ओमेगा, आदि, पर कुछ समय पश्चात् ये बंद हो गईं। स्पाइल-दर्पण और वैश्विका पत्रिका अभी तक चल रही हैं। स्पाइल-दर्पण श्री सुरेश कुमार शुक्ल, सम्पादन कर रहे हैं। श्री शुक्ल ने नॉर्वे में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए काफी कार्य किया है। स्पाइल-दर्पण एक त्रैमासिक पत्रिका है। सन् 1990 के जनवरी मास के नॉर्वे से ही एक और पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसका नाम है शांतिदूत। इसका क्षेत्र मात्र नॉर्वे तक सीमित न रहकर किसी हद तक अंतरराष्ट्रीय है।

नॉर्वे के साथ-साथ स्कैंडेनेवियन देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार बढे, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर सन् 1995 के आरंभ से अप्रवासी टाइम्स समाचार पत्र का प्रकाशन ओस्लो (नॉर्वे) से आरंभ हुआ।

नॉर्वे में अप्रवासी भारतीयों का कोई अपना रेडियो नहीं है, लेकिन हिंदी-प्रेमी बी.बी.सी. रेडियो, रेडियो डच वैले, ब्रिटिश रेडियो, सनराइज की हिंदी-सेवाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं।

नॉर्वेजियन टेलीविजन में वर्ष दो-तीन बार हिंदी और भारतीय भाषाओं की फिल्में (सब टाइटल्स के साथ) भी देखने को मिल जाती हैं। सन् 1994 में नॉर्वे तथा स्कैंडेनेवियन देशों में टेलीविजन के हिंदी चैनलों की भरमार शुरू हुई है। इससे हिंदी की लोकप्रियता में भारी अभिवृद्धि हुई। संस्था स्कैंडेनेविया-भारत साहित्य एवं संस्कृति मंच के असीम प्रयासों का ही फल है कि अब स्कैंडेनेवियन देशों में दूरदर्शन शुरू किया गया है। संस्था का प्रयास है कि केवल नेटवर्क के जरिए दूरदर्शन यूरोप में रहनेवाले अप्रवासी के घरों तक पहुँचे।

ज़ी.टी.वी. तथा सोनी टी.वी. तथा अन्य भारतीय चैनलों के द्वारा भी नॉर्वे में हिंदी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जा रहे हैं। टेलीविजन के कार्यक्रमों से हिंदी को अपार लोकप्रियता मिल रही है। भारतीय अप्रवासी ही नहीं, पाकिस्तानी, ईरानी, श्रीलंकाई, अफ़्रीकी भी इन्हें बडी रुचि के साथ देखते हैं।

नॉर्वे में हिंदी फिल्मों के वीडियो कैसेट खूब बिकते हैं। भारतीय, पाकिस्तानी सभी में इनकी माँग बनी रहती है। नॉर्वे में हिंदी फिल्मों के प्रति आकर्षण पिछले वर्षों काफी बढा है।

बॉलीवुड की जिस भी नई फिल्म का अंतरराष्ट्रीय प्रीमियर यूरोप में होता है तो, ओस्लो के सूरिया मूरिया तथा अन्य स्थानीय थिएटरों में भी उसी दिन प्रीमियर होता है। भारतीय, नॉर्वेजियन, पाकिस्तानी, श्रीलंकाई दर्शक हिंदी फिल्में बहुत पसंद करते हैं। इससे उनका हिंदी के प्रति रुझान बढा है।

हिंदी में प्रकाशित फिल्मी पत्रिकाएँ तथा हिंदी की कुछ स्तरीय पत्र-पत्रिकाएँ भी देखने को मल जाती है। ओस्लो के दायकमास्क पुस्तकालय में हिंदी के प्रमुख दैनिक

पत्रों के साथ प्रेमचंद, प्रसाद ही नहीं, नए-से-नए लेखकों की पुस्तकें भी पढ़ने को मिलती हैं।

3.13 नीदरलैंड :-

3.13.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

नीदरलैंड यूरोप के उत्तर पश्चिम में समुद्र-तटीय देश है। इसे हौलैंड के नाम से भी जाना जाता है। सन् 1975 में सूरीनाम की आजादी के बाद जीविका और जीवन की असुरक्षा से भयभीत भारत वंशियों का एक बड़ा हिस्सा नीदरलैंड आकर बस गया। हजारों की संख्या में नीदरलैंड आए भारत वंशियों को तत्कालीन सरकार ने अपनाया और जीविका हेतु संसाधन उपलब्ध कराए। भारत वंशियों ने अपने समाज में सामाजिकता और सांगठनिक शक्ति संवर्धित करने के लिए हिंदुस्तानी समाज के भीतर पठन-पाठन की कक्षाएँ आरंभ की। सनातन धर्म और आर्य समाज द्वारा अनेक संस्थाएँ गठित की गईं। जिन्होंने इस दिशा में सार्थक प्रयास किए।

गणेश प्रसाद, हरिदत्त लक्ष्मण श्रीनिवास, महादेव खुनखुन, अमरसिंह रमण, सुरजन परोही, हरिदेव सहतू, जानकी प्रसाद सिंह आदि जैसे आर्य समाजी और सनातनी कार्यकर्ता अपनी सक्रीय भूमिका निभा रहे थे। नीदरलैंड के लाईडन विश्वविद्यालय में डॉ. स्खोकूर और यूतरैख्त विश्वविद्यालय के डॉ. गैफ्कै आदि डच विद्वानों ने हिंदी व्याकरण के साथ-साथ भक्तिकालीन और आधुनिक हिंदी साहित्य पर विविध लेख लिखकर विद्यार्थियों में हिंदी भाषा और साहित्य की जडें मजबूत कीं।

3.13.2 वर्तमान स्वरूप :-

नीदरलैंड के लाइडन विश्वविद्यालय में सरनामी भाषा के प्रोफ़ेसर डॉ. तेयो दम्स्त्येख हिंदी और संस्कृत में पीएच.डी. उपाधि हेतु मथुरा के शिलालेखों पर अपना शोधप्रबंध प्रस्तुत किया। लाइडन विश्वविद्यालय के केरन इंस्टिट्यूट के अंतर्गत हिंदी और संस्कृत के साथ-साथ सरनामी भाषा का भी एक अलग विभाग स्थापित है।

3.13.3 हिंदी भाषा का शिक्षण एवं इसके लिए संस्थाओं का योगदान :-

नीदरलैंड में कई सक्रीय संस्थाओं के माध्यम से हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य प्रगति पर है। एम्सटर्डम स्थित इंडियन इंस्टिट्यूट में डॉ. डिक प्लकर के निर्देशन में संस्कृत, बांग्ला और हिंदी का शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य चलता है। यहाँ इंडोलोजी और भारतीय संस्कृति तथा धर्म में रुचि रखनेवालों को सहायता प्राप्त होती है। डॉ. प्लकर ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों के हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा कर रहे हैं। इन्होंने डच भाषा में डॉ. बहुत ही उपयोगी पुस्तकें और सी.डी. तैयार की हैं।

यहाँ के 'संवाद' नामक संस्था के माध्यम से डॉ. अनैत फान द हुक भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। वे समय-समय पर हिंदी-शिक्षण का कार्य करती रहती हैं। नीदरलैंड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'हिंदी प्रचार पत्रिका' नामक एक द्विभाषी पत्रिका का प्रकाशन डॉ. रामदास ने किया। इस पत्रिका में संस्था की गतिविधियों, हिंदी प्रचार-प्रसार की सूचनाओं, परीक्षा संबंधित जानकारियों और परीक्षा परिणाम, पुरस्कार-सम्मान आदि की जानकारी रहती हैं। इसी तरह की एक और संस्था है 'हिंदी परिषद्, नीदरलैंड' जिसका संचालन श्री नारायण मथुरा करते हैं। इस संस्था के अंतर्गत वर्धा की राष्ट्रभाषा परिषद् के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा प्रवेशिका, आचार्य आदि की परीक्षाएँ ली जाती हैं।[11]

3.13.4 मीडिया :-

हिंदी के शिक्षण में हिंदी सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान है। इसी के माध्यम से हिंदी का अध्यापन एवं अध्ययन सरल हो जाता है। हिंदी गीत यहाँ बहुत प्रचलित हैं जिसका महत्त्व यहाँ हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिखाई देता है।

हाल ही में यहाँ से 'अम्स्टेल गंगा' नामक हिंदी की एक नई इ-पत्रिका का आरंभ हुआ है।

3.14 न्यूज़ीलैंड :-

3.14.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

न्यूज़ीलैंड की कुल जनसंख्या 40 लाख से कुछ अधिक है। यहाँ भारत, फीजी, दक्षिण अफ्रीका और अन्य स्थानों के भारतीय विरासत से घनिष्ठ संबंध रखनेवाले करीब 60 हजार भारतीय हैं। न्यूजीलैंड में शिक्षा पाठ्यक्रम में सामुदायिक भाषाओं सहित, सभी भाषाओं के महत्त्व पर बल दिया गया है।

3.14.2 वर्तमान स्वरूप :-

सामान्यतः सामुदायिक अनिवार्यताओं के अनुसार मातृभाषा कार्यक्रमों के स्वरूप का निर्णय स्कूलों द्वारा लिया जाता है। क्योंकि न्यूज़ीलैंड में अपने विद्यार्थियों तथा समुदायों की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ उनकी विभिन्न कानूनी और विनियामक आवश्यकताओं की पूर्ति का उत्तरदायित्व स्वशासित स्कूलों और कुल मिलाकर स्व-कार्यकारी असित्त्ववाले स्कूलों का है। भाषा उन अनिवार्य शिक्षा क्षेत्रों में से है जो विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्धारण करती है, लेकिन शिशु पाठशाला और बढते हुए प्राथमिक विद्यालयों में भाषा परियोजनाओं में मूल जनसंख्या की भाषा माओरी सहित सामान्यतः अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जाती है। किंतु यहाँ फीजी भारतीयों की पर्याप्त जनसंख्या है।

न्यूज़ीलैंड कुशल कामगारों और व्यवसायी समाज के लिए एक प्रिय स्थान रहा है। इनमें से कई यहाँ से स्थानांतरित हो गए या न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के निकटवर्ती स्थानों में उन्होंने सहायक कंपनियाँ स्थापित कर ली।

समस्त न्यूजीलैंड में, विशेषकर फीजी भारतीयों और भारत से हाल ही में आए लोगों के मध्य, व्यापक स्तर पर हिंदी बोली जाती है। गुजराती के साथ पंजाबी पुराने बसे हुए भारतीयों की प्रधान भाषा रही है, क्योंकि भारत से प्रारंभिक प्रवास या तो गुजरात से या पंजाब से ही हुआ था। न्यूज़ीलैंड में सर्वत्र कई दशकों से गुजराती भाषा

पढाई जा रही है और विभिन्न भारतीय संगठनों द्वारा व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित की जा रही है।

सन् 1970 के दौरान रेडियो के माध्यम से हिंदी का संवर्धन किसी भी सुव्यवस्थित रीति से पोषित की गई प्रथम घटना थी। इसके आरंभिक विकासकर्ता एकसेसे रेडियो स्कीम के सदस्य थे। ऑकलैंड और वेलिंगटन में विभिन्न समुदायों को उनकी मातृभाषा का रसास्वादन और प्रोत्साहन करने हेतु एक सामुदायिक नेटवर्क गठित किया गया।

ऑकलैंड में श्री प्रविंद्र सिंह, वेलिंगटन में श्रीमती प्रभा मिश्र और श्रीमती बाला थॉमसन् इसके प्रणेताओं में से थे। इन लोगों को फीजी के भूतपूर्व प्रसारक श्री नित्यानंद सुंदर सरीखे कर्मठ वाचक का सहयोग प्राप्त हुआ, जिनकी प्रतिभा से सभी केंद्र लाभान्वित हुए। आरंभ से युवकों ने सेकेंडरी स्कूल विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नियमित फिचरों के साथ अपने ही हिंदी कार्यक्रम विकसित किए जिनमें शोना, डेरियस, रानीजा और अनोख थे।

श्री रविनलाल द्वारा प्रचारित एक आरंभिक मासिक संदेश के साथ न्यूज़ीलैंड में भारतीय समाचार-पत्रों का शुभागमन हुआ, जो जिज्ञासु पाठकों तथा तेजी से बढ रहे भारतीय विज्ञापनों के लिए भारत, फीजी व अन्य स्थानों की खबरें लाया। हालांकि यदा-कदा छपनेवाले हिंदी परिशिष्टों के साथ यह मुख्य रूप से अंग्रेजी में था। अन्य शुरू आती समाचार-पत्र इंडियन टाइम्स था, जो स्वर्गीय स्कूली बच्चों की अनुपूरक सामग्री के साथ हिंदी के विशिष्ट लेख होते थे। कौर सिंह और ए. शाह द्वारा चलाया गया। इस पत्र में स्कूली बच्चों की अनुरूपक सामग्री के साथ हिंदी के विशिष्ट लेख होते थे।

3.14.3 न्यूज़ीलैंड में हिंदी शिक्षण :-

फीजी की एक स्कूल अध्यापिका श्रीमती सुनीता नारायण ने वेलिंगटन में एक समुदाय आधारित वेलिंग्टन हिंदी स्कूल विकसित किया है और वे उसकी संचालिका भी हैं। इस स्कूल ने नियमित कक्षाओं के लिए संबद्ध अभिभावकों और बच्चों के समूह को एक साथ आकृष्ट किया है। श्रीमती नारायण अपने समूह के स्कूल पाठ्यक्रम को विकसित करने के उत्तरदायित्व का वहन करती रही हैं। श्रीमती नारायण वर्तमान में पाठन निर्माण समिति, न्यू ज़ीलैंड हिंदी ट्रस्ट एवं कम्युनिटी लेंग्वेजेज़ ऑफ न्यू ज़ीलैंड की प्रधान भी हैं। ऑकलैंड और वेलिंगटन में नारायण मंडलियों ने जहाँ कई वर्षों से प्रस्तुतियों, संगीत गोष्ठियों और बच्चों के लिए शिशु कक्षाओं के माध्यम से परिश्रमपूर्वक हिंदी के उन्नयन का कार्य किया है, वहीं कई हिंदू कृतियों से ली गई पुरातन-कथाओं पर आधारित मंच नाटकों के विभिन्न मंडलियों द्वारा मंचन ने नाट्य कला बोध का संवर्धन किया है।[12]

समुदाय आधारित संगठन विद्यार्थियों के लिए हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता आयोजित करते हैं। ऐसे अध्यापक जो प्ले स्कूल स्तर पर हिंदी प्रारंभ करना चाहते हैं, उनके लिए पूर्व-स्कूल की भरपूर संभावनाएँ हैं और इस प्रयास के लिए विभिन्न सरकारी अनुदान संसाधित किए जा सकते हैं।

हाल ही में, एक वैश्विक भारतीय स्कूल ने ऑकलैंड में एक शाखा आरंभ की है। जैसे-जैसे ज्ञान की सीमाएँ विस्तृत हुई हैं, न्यूजीलैंड में हिंदी के विकास के कई अवसर बने हैं। भारतीय मूल के नए बसनेवाले लोगों के लिए एक लोकप्रिय स्थान के रूप में यहाँ नई दिशाएँ हैं, जिनका स्कूल व्यवस्था के भीतर हिंदी बोध के अलावा सामुदायिक संगठनों के मध्य नेटवर्क स्थापना के सहायतार्थ अन्वेषण किया जा सकता है। यहाँ कई संस्थाएँ और सामुदायिक विद्यालय हैं जो संस्कृति एवं भाषा शिक्षण सेवा प्रदान कर रहे हैं। भारतीय भाषाओं में है हिंदी, उर्दू, गुजराती, तमिल, पंजाबी आदि। कक्षाएँ अधिकतर सप्ताहांत में चलाई जाती हैं। न्यूज़ीलैंड में हिंदी के

10-12 विद्यालय हैं जिनमें कुछ धार्मिक संस्थाएँ भी हैं जो हिंदी की कक्षाएँ संचालित करती हैं। इन विद्यालयों के संचालकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लेकिन वे बड़ी सहनशीलता से हिंदी भाषा के लिए समर्पित हैं और मेहनत करते रहते हैं। यहाँ अधिकतर अवकाश प्राप्त एवं अप्रशिक्षित अध्यापक पढाते हैं। इनकी कुछ प्राथमिक जरूरतें इस प्रकार हैं - अध्यापक प्रशिक्षण, न्यू ज़ीलैंड के लिए स्थानीय पाठ्यक्रम निर्माण करना, उपयुक्त पाठ-पठन की सामग्री का निर्माण करना इत्यादि।

3.14.4 न्यूजीलैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभिन्न संस्थाओं का योगदान :-

ऑकलैंड और वेलिंगटेन के आस-पास कई मंदिरों में हिंदी सफलतापूर्वक फल-फूल रही है। भारतीय मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, हरे कृष्णा मंदिर परिसर और स्वामी नारायण मंदिर, जो सभी ऑकलैंड में हैं। इसके अलावा ये भारतीय संस्कृति को समृद्ध करने हेतु पुस्तकों, टेपों और संसाधनों के लिए अंशदान करके सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। ऑकलैंड निवासी सुश्री रूपा सचदेव ने भारतीय मंदिर में हिंदी अध्ययन को उच्चस्तरीय व्यावसायिकता के साथ प्रोत्साहित किया है और उन्होंने इसे हिंदी रेडियो पर अपने काम के माध्यम से अंजाम दिया है। ठीक यही समर्पण भावना भारतीय समाज संगठन में भी व्याप्त रही है, जो हिंदी परियोजनाओं को उत्कृष्ट रीति से व्यवस्थित करता है। श्री रमन फीजी में ब्रिटीश व्याख्याता के तौर पर थे एवं एक साहित्यिक व्यक्ति थे। उनकी हिंदी त्रुटिहीन थी। अपने मित्र पूरन सिंह, हिंदी रचनाकार एवं गायक के साथ उन्होंने हिंदी भाषियों के लिए कई हितकारी कार्य संपादित किए।

3.14.5 मीडिया :-

वर्तमान में चौबीस घंटे रेडियो तराना और अपना एफ.एम. रेडियो हिंदी में विभिन्न वर्ग के लोगों को भरपूर मनोरंजन करते हैं, साथ ही अगली विशिष्ट परियोजनाओं के लिए अवसर प्रदान करते हैं। श्री रॉबर्ट खान के प्रयास रेडियो तराने

को एक नई ऊँचाई पर ले जा रहे हैं और विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से हिंदी को भारतीयों के घरों में पहुँचा रहे हैं। हिंदी पर आधारित नियमित कार्यक्रम जीवन-शैली का हिस्सा बन गए हैं। बॉलीवुड के विभिन्न कलाकार यहाँ निरंतर आते रहते हैं और सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

कई भारतीय समाचार-पत्र हैं, किंतु वे मुख्य रूप से अंग्रेजी में हैं। वर्तमान में मंदिरों और सामुदायिक संगठनों द्वारा हिंदी सूचना-पत्र निकाले जाते हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर) विद्यार्थियों और अध्यापकों, संगठनों एवं पुस्तकालयों को पुस्तकें तथा सामग्रियाँ उपलब्ध कराने में अत्यंत सहायक रही है और इन्होंने कई स्त्रोत केंद्रों की स्थापना की है। आई.सी.सी.आर की सहायता से स्कूलों में हिंदी पत्रिकाओं का वितरण किया जाता है, जहाँ अध्यापकों को इसे उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

न्यूजीलैंड में प्रवासियों के वयोवृद्ध परिजनों के आगमन की वर्तमान प्रवृत्ति अकसर बच्चे और युवा कामकाजी परिवारों की सहायता करना है, तो जाहिर है कि हिंदी भाषी वयोवृद्ध जनों तक हिंदी पुस्तकों की पहुँच जरूरी है, क्योंकि सभी इंटरनेट के प्रयोग में सक्षम नहीं होते हैं।

भारतीय टेलीविजन कार्यक्रम हिंदी भाषा के उन्नयन का साधन होने के साथ-साथ रात दिन मनोरंजन प्रदान कर रहे हैं।

3.15 पोलैंड :-

3.15.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

पोलैंड में सर्वप्रथम भारत-विद्या विभागों की स्थापना प्रथम महायुद्ध के बाद हुई। वारसा में सन् 1932 में प्रसिद्ध पोलिश विद्वान प्रो. स्तानिस्लव शायेर (1899-1941) के प्रयासों से प्राच्य-विद्या संस्थान खुला और इसके अंतर्गत भारत-विद्या विभाग स्थापित हुआ। इस विभाग में हिंदी का विधिवत अध्ययन सन् 1938 में शुरू

हुआ। किंतु एक वर्ष के पश्चात् द्वितीय महायुद्ध के कारण विश्वविद्यालय के सभी संस्थान बंद हो गए। सन् 1953 में वारसा विश्वविद्यालय के प्राच्य-विद्या संस्थान में भारत-विद्या विभाग पुनः आरंभ हुआ। इसके प्रथम अध्यक्ष प्रो. एउगेनियुष स्लुष्केविच बने। शुरू में अध्ययन-अध्यापन का प्रमुख क्षेत्र संस्कृत भाषा, प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन था, पर शीघ्र ही सन् 1955 में इस केंद्र में हिंदी भाषा और बाद में हिंदी साहित्य का भी अध्ययन-अध्यापन शुरू हो गया। हिंदी पाठ्यक्रम का पाठ्यक्रम व संचालन श्रीमती तात्याना रुत्कोव्स्का ने शुरू किया। श्रीमती रुत्कोव्स्का ने लेनिनग्राद विश्वविद्यालय से सन् 1949 में स्नातकोत्तर हिंदी की उपाधि प्राप्त की थी। वे प्रसिद्ध रूसी विद्वान प्रो. ए.पी.बारान्निकोव की छात्रा रह चुकी थीं। श्रीमती रुत्कोव्स्का के काम का आरंभिक दौर बहुत कठिन था। आमतौर पर किताबों को विदेशी पुस्तकालयों से मँगवाना पडता था और फोटोस्टेट मशीनों के न होने के कारण बहुत बार पुस्तकों के लंबे अंशों की प्रतिलिपियाँ हाथ से तैयार करनी पडती थी। सौभाग्यवश इस तरह की कठिनाइयों ने, जो वर्ष प्रतिवर्ष कम होती जा रही थीं, पाठ्यक्रम में बाधा नहीं डाली।

सन् 1961 में विभाग में श्रीमती आलित्स्या कार्लिकोव्स्का आईं तथा 1965 में श्रीमती आग्न्येष्का कोवास्स्का-सोनी, जिन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आधुनिक हिंदी साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। इसके एक साल बाद 1966 में डॉ. मारिया क्रिस्तोफ बृस्की विभाग में आए। वे भारत में छः साल रह चुके थे तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके थे। उपर्युक्त इन सभी व्यक्तियों के अलावा बाद में तीन अन्य अध्यापक हिंदी पढ़ाने लगे - श्री अर्तुर कार्प, श्रीमती आन्ना शकसुत्स्का और श्रीमती दानूता स्ताशिक।

3.15.2 वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1983 में इंडो-पोलिश सांस्कृतिक सहयोग के अंतर्गत भारत से आए निम्नलिखित अध्यापकों का हिंदी के अध्ययन-अध्यापन में उल्लेखनीय योगदान रहा है - कालीकट विश्वविद्यालय के डॉ. गोपीनाथन, डॉ. सुरेंद्र भुटाणी, केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्वर्गीया डॉ. मंजू गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. हरिमोहन शर्मा, हिंदी के मशहूर लेखक डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह, हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. शशि मुदिराज, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के डॉ. महेंद्रपाल शर्मा और दिल्ली विश्वविद्यालय के ड़ॉ. हरनेंद्र सिंह चौधरी विभाग में हिंदी के प्रोफ़ेसर थे।

3.15.3 पोलैंड में हिंदी शिक्षण :-

वारसा के भारत-विद्या विभाग में पाठ्यक्रम की अवधी पाँच साल की है, जिसके बाद छात्रों को स्नातकोत्तर की उपाधि दी जाती है। स्नातकोत्तर शोध-प्रबंधों के विषय आधुनिक या मध्यकालीन हिंदी साहित्य या हिंदी भाषा क्षेत्र के अन्य प्रश्नों से संबंधित है, जैसे-ढोला मारु दा दूहा में मध्यकालीन राजस्थानी समाज का वर्णन, तुलसीकृत रामचरितमानस में महिलाओं का जगत्, मीराबाई की पदावली, जयशंकर प्रसाद की कामायनी में बुद्धिवाद और हृदयवाद, हिंदी फिल्मों की समालोचना, हिंदी समाचार-पत्रों की भाषा में अंग्रेजी शब्दावली, दिल्ली के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम इत्यादि। आज तक पचास से अधिक विद्यार्थियों को हिंदी मे स्नातकोत्तर की उपाधि मिल चुकी है।[13]

उल्लेखनीय है कि सन् 1978 से पोलिश विद्यार्थियों को भारत सरकार की ओर से उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति मिलती है, जिसके अंतर्गत वे केंद्रीय हिंदी संस्थान (शुरू में दिल्ली, बाद में आगरा केंद्र) में जाकर हिंदी पढ़ने का बहुत अच्छा अवसर पाते हैं। भारत में रहकर वे हिंदी के महत्त्व एवं गौरव को समझने लगते हैं तथा बहुतों के लिए भारत उनकी दूसरी प्रिय मातृभूमि बन जाती है। हिंदी के माध्यम

से उन्हें समग्र भारतीय संस्कृति के मूल तक पहुँचना और भारत की आत्मा को समझना आसान हो जाता है।

इस समय विभाग में 18 छात्र हिंदी पढ रहे हैं। उनमें से कइयों के लिए हिंदी प्रमुख विषय है, बाकी हिंदी दूसरी या तीसरी भारतीय भाषा के रूप में पढ रहे हैं।

अध्यापन के साथ-साथ ही वारसा में हिंदी भाषा तथा साहित्य का शोध भी चल रहा है। अभी तक तीन व्यक्तियों को हिंदी भाषा में पीएच.डी. की उपाधि दी गई है।

सन् 1968 में श्रीमती रुत्कोव्स्का को हिंदी मध्यकालीन साहित्य की मूल विशेषताएँ थीसिस के आधार पर पीएच.डी. की उपाधि मिली, 1974 में श्रीमती आग्नेयेष्का कोवाल्स्का-सोनी को सन् 1960-1970 के मध्य लिखित 'हिंदी के नए साहित्य में बुद्धिजीवी-वर्ग का नायक (सांस्कृतिक व्यक्तितत्व का सवाल)' थीसिस के आधार पर पीएच.डी. और 1990 में श्रीमती दानूता स्ताशिक को 'आधुनिक हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक टकराव का वर्णन - इंग्लैंड, कनाडा तथा अमेरिका में भारतीय प्रवासी' थीसिस के आधार पर पीएच.डी. मिली। यह शोध प्रबंध 1994 में भारत से अंग्रेजी में 'आऊट ऑफ इंडिया' शीर्षक से, पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

3.15.4 मीडिया :-

पोलिश भाषा में लिखी हिंदी साहित्य और भाषा की पुस्तकें विभाग में हो रहे गहरे अध्ययन का परिणाम हैं। ये पुस्तकें हैं - डॉ. रुत्कोव्स्का तथा डॉ. स्ताशिक की हिंदी साहित्य की रूपरेखा (1992), डॉ. स्ताशिक की हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तक दो भाग (1994/1997 और 1997), हिंदी भाषा (1998) और धर्मचारी राजा की कथा- हिंदी साहित्य में रामायण की परंपरा (2000)। जो पोलैंड के हिंदी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तक के रूप में मान्य है। इन विद्वानों ने हिंदी की कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का पोलिश में अनुवाद किया है जिससे पोलिश विद्यार्थी हिंदी साहित्य की समझ

विकसित करते हैं। अनेकानेक विषयों से संबंधित लेख भी पोलिश तथा अंग्रेजी में लिखे गए। उदाहरण के लिए - डॉ. रुत्कोव्स्का के लेख- भारतीय मध्यकालीन काव्य रसों पर कुछ विचार (1976), सिद्धांत और साहित्यिक रचनाओं के गुण (1979), रीति काव्य में ऐतिहासिक तत्त्व (1976), प्रेमचंद-हिंदी साहित्य के पिता (1993), आदि, डॉ. कोवोल्स्का सोनी के लेख - आधुनिक हिंदी कविता और स्वदेशी साहित्यिक परंपरा (1968), सन् 1947 के बाद हिंदी कविता के नए मार्ग (1968), आदि, प्रो. बृस्की के लिखे लेख - भारतीय लोक नाटक (1971), बंबइया फिल्म-संस्कृत नाटकों का कलियुगी अवतार (1980), तथा डॉ. स्ताशिक के लिखे लेख - सांस्कृतिक टकराव में भाग लेनेवाले भारतीय अप्रवासी (1985), स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता (1989), राम-कथा का आधुनिक हिंदी पुनः कथन, भगवान सिंह का अपने अपने राम (1998), मैथिलीशरण गुप्त की राम-कथा साकेत (2000), रामायण-परंपरा का आधुनिकीकरण (2002) इत्यादि।

अध्ययन-अध्यापन के अलावा वारसा के भारत-विद्या विभाग के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी साहित्य के अनुवादकों में सर्वप्रथम स्थान स्वर्गीय पार्नोव्स्की का है। वे सन् 1980 से 1993 तक विभाग के पुस्तकालय में कार्यरत रहे। उन्होंने हिंदी के कई उपन्यासों, कहानियों तथा कविताओं का अनुवाद किया। फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल इनमें प्रमुख है। पार्नोव्स्कीजी ने अपने अनुवाद में रेणु द्वारा सजीव भाषा से निर्मित मेरीगंज के यथार्थ को पोलिश पाठकों के लिए पुनर्जीवित कर दिया।

सन् 1971 में मुंशी प्रेमचंद की 14 कहानियों का संग्रह ठाकूर का कुआँ प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की अधिकांश कहानियों के अनुवादक श्री पार्नोव्स्की रहे हैं तथा अन्य अनुवादकों में श्री आंजेय युगोव्स्की, श्रीमती कार्लिकोव्स्का, प्रो. बृस्की और

डॉ. रुत्कोव्स्का हैं। संग्रह की भूमिका में डॉ. रुत्कोव्स्का ने प्रेमचंद के जीवन और उनकी प्रमुख कृतियों का परिचय दिया।

3.16 फ्रांस :-

3.16.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप :-

फ्रांस में हिंदी का अस्तित्त्व बनाए रखने में कई भारतीय या मॉरीशियन और फ्रांसिसी व्यक्ति एवं संस्थाओं ने परिश्रम किए हैं। फ्रांस में हिंदी के अध्ययन के लिए तीन स्थानों का नाम देना अनिवार्य है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण नाम है इनालको का। बाद में दक्षिण फ्रांस में स्थित एक्स-ओ-प्रोवोंस विश्वविद्‌यालय का और तीसरा है लियो शहर में जाँ मुलां विश्वविद्‌यालय के भाषा विभाग का।

3.16.2 हिंदी शिक्षण :-

3.16.2.1 इनालको :-

चौदहवें लुई ने सत्रहवें शतक में युवाओं के लिए जो पाठशाला स्थापित की थी, उसी का विकसित रूप इनालको हैं। 1971 में इसे इनालको नाम दिया गया और पेरिस विश्वविद्‌यालय इससे जोडा गया। तब से इस संस्था की ख्याति बढती गई और आज इस प्रसिद्‌ध संस्था में पाँच अलग-अलग जगहों पर 93 भाषाओं और संबंधित सभ्यताओं का अध्ययन किया जाता है।

हिंदी का अध्ययन केंद्र है दोफीन, जहाँ पर हिंदी के साथ-साथ तमिल, बांगला, तेलुगु, उर्दू, जैसी दक्षिण एशियाई भाषाएँ पढाई जाती हैं। फ्रांसिसी बाक परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद कोई भी यहाँ हिंदी के स्नातक स्तर की पढाई की शुरूआत कर सकता है। इसी के कारण 18 से लेकर 70 वर्ष तक के लोग एक ही कक्षा में बैठे हिंदी पढते हैं और अपने-अपने उद्‌देश्यानुसार तथा क्षमतानुसार पाठ्‌यक्रमों का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं।

यथासमय विद्यार्थियों के उद्देश्यों में भी बदलाव आते गए तथा तद्नुसार पाट्यक्रम भी बदलते गए। आज पहले पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा इतिहास, भूगोल, समाज, धर्म, अर्थव्यवस्था तथा प्रथा और संस्थाओं का समावेश है। हिंदी भाषा को छोड़कर बाकी सारा अध्ययन फ्रांसिसी भाषा में किया जाता है। फ्रांसिसी में दक्षिण एशियाई भाषा सीखनेवालों के लिए सभ्यता की पढाई की एक ही कक्षा होती है।

यहाँ पर सीखाने के लिए कोई विशेष पुस्तक नहीं है। हर वर्ष के अंत में एक छात्र को भाषा-बोध, मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के विषय में क्या-क्या आना चाहिए, इसके बारे में विचार किया गया है और कुछ मानदंड निश्चित किए गए हैं। इन्हीं को लक्ष्य करके व्याकरण पढ़ाने के लिए एक रूपरेखा बनाई गई है। इसी सूत्र को लेकर, खास तौर से भाषा के अध्यापक अपनी पाठ्य-बोध एवं मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति जैसी कलास की तैयारियाँ करते हैं, जिसमें वे दृश्य-श्रव्य माध्यम का भी प्रयोग करते हैं।

भारतीय कला, मानवशास्त्र, भू-विज्ञान जैसे विषयों पर प्रबंध लिखनेवाले छात्रों को भारत जाकर रहने की आवश्यकता होती है। ऐसे छात्र अपने प्रबंध से जुड़े विषयों पर स्थानीय लोगों से हिंदी में बातचीत करना चाहते हैं, इसी के साथ अपने दैनंदिन जीवन में भी हिंदी का उपयोग करना चाहते हैं। संगीत तथा नृत्यकला के छात्र भी हिंदी पढते हैं। कुछ लोग हिंदी साहित्य समझने के लिए हिंदी भाषा सीखते हैं, तो कुछ हिंदी फिल्में समझने के लिए। यहाँ पर भारतीय चित्रपट महोत्सव में भी भीड़ लगती है, उसे देखकर बॉलीवुड ने नई पीढ़ी को कितना आकर्षित किया है, यह समझ सकते हैं।

इसके अतिरिक्त राजनीति या राजदूतावास से संबंधित विषयों की पढाई करनेवाले छात्र भी यदि आगे चलकर दक्षिण एशियाई देशों में काम करना चाहते हैं, तो हिंदी पढते हैं, इन्हें हिंदी की एक कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना पडता है। ऐसे छात्र

कभी-कभी इनालकों में आते हैं। नहीं तो फ्रांस में सियोंस पो नाम से जानी जानेवाली संस्था में जाते हैं जो राजनीतिशास्त्र की पढाई के लिए एक प्रसिद्ध उच्च शिक्षण संस्था है, जिसकी शाखाएँ पेरिस के अलावा अन्य शहरों में भी हैं। यहाँ से यशस्वी होनेवाले कई छात्र भविष्य में फ्रांस के बडे मंत्री बनते हैं। वहाँ पर भी इन छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हिंदी पढाई जाती है। इसी तरह विदेश मंत्रालय में भी हिंदी पढाई जाती है।

हिंदी भाषा सीखनेवालों की संख्या बढने का और एक कारण है विदेश में भारत की बदलती हुई छवि। वैश्वीकरण के कारण अनेक अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने भारतीय कंपनियों के साथ कारोबार करना शुरू किया है, जिसके कारण विदेशी लोग भारत में स्थित ऐसी कंपनियों में जाते हैं और वहाँ पहुँचने से पहले हिंदी सीखने लगते हैं।

एक साल हिंदी पढ़ाने के बाद छात्रों को भारत में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, या फिर जामिया-मिलिया इसलामिया संस्थान, आगरा या फिर जामिया-मिलिया इसलामिया विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है।[14]

3.16.2.2 एक्स-ओं-प्रोवोंस विश्वविद्यालय :-

दक्षिण फ्रांस के इस महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालय में हिंदी विषय में डिग्री नहीं मिलती। हिंदी का अध्ययन भारतीय सभ्यता, कला, संस्कृत भाषा, पत्रकारिता और प्रसार माध्यमों में व्यवहार होनेवाली हिंदी जैसे विषयों के अध्ययन का एक भाग है। इन विषयों में यहाँ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पढाई की जा सकती है।

केवल हिंदी में पदवी चाहनेवाले छात्रों को पेरिस में दाखिला लेना पडता है।

3.16.2.3 जाँ मुलाँ विश्वविद्यालय :-

पेरिस से कुछ पाँच सो किलोमीटर की दूरी पर लियो शहर में हिंदी ने अपने लिए एक छोटा सा स्थान बनाया है। कारोबार के लिए भी सुप्रसिद्ध इस केंद्र में अन्य भाषाओं के साथ यहाँ हिंदी पढाई जाती है।

3.16.3 मीडिया :-

फ्रांस में दूरदर्शन की किसी भी वाहिनी पर हिंदी कार्यक्रम नहीं दिखाए जाते। कनेक्शन के बाद लंदन से आनेवाले कुछ कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। दोफीन की कुछ कलासों के लिए इस तरह के और बीबीसी द्वारा दिखाए गए कार्यक्रमों को इस उद्देश्य से प्रयोग में लाया जाता है कि छात्रों को बोल-चाल की भाषा या पत्रकारिता की भाषा का उदाहरण मिले। इनालकों के ग्रंथालय में कुछ समाचार-पत्र तथा कुछ पत्रिकाएँ आती हैं। हिंदी की पढ़ाई से संबंधित अंग्रेजी, फ्रांसिसी और हिंदी भाषाओं में किताबें ग्रंथालय की दोफीन शाखा में उपलब्ध हैं।

3.17 बुल्गेरिया :-

3.17.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्वरूप एवं हिंदी शिक्षण :-

बुल्गेरिया दक्षिण यूरोप में स्थित एक देश है जिसकी राजधानी सोफिया है। विदेशों में जिन केंद्रों में हिंदी विधिवत पढाई जा रही है उनमें से एक है बुल्गेरिया का सोफिया विश्वविद्यालय, जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर होता है।

भारत विद्या के अधिकतर विद्यार्थी भारतीय संस्कृति तथा भाषा में रुचि रखते हैं। यहाँ आने पर अनुभव होता है कि भारत विद्या विभाग का मूल चरित्र पारस्परिक संवाद और विश्वास की भूमि पर टिका है। यहाँ अध्ययन के प्रति खुला और स्वस्थ दृष्टिकोण है। पाठ्यक्रम बहुत लचीला है। इसमें विद्यार्थियों की अभिरुचि और सामयिकता का पूरा ध्यान रखा जाता है। अध्ययन क्रम के आरंभ में हिंदी भाषी देश भारत का अंतरंग परिचय देने का प्रयत्न किया जाता है। भारतीय परंपरा, मूल्य, मान्यता और सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश का व्यावहारिक परिचय देते हैं। उदाहरणार्थ स्नातक के विद्यार्थियों को पूजा में लगने वाली सामग्री से परिचय करते

हुए भारतीय संस्कृति से अवगत कराना। बुल्गेरियन पाठ्यसामग्री का मुख्य उद्देश्य है कि विद्यार्थियों का भाषिक और अभिव्यक्तिशील ज्ञान मजबूत और विकसित हो।

3.17.2 बुल्गेरिया में हिंदी शिक्षण :-

सोफिया विश्वविद्यालय में हिंदी का पाठ्यक्रम चार साल में पूरा होता है। बुल्गेरिया में हिंदी-शिक्षण की नियमित व्यवस्था सन् 1974 से प्रारंभ हुई। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में हिंदी ध्वनि और उच्चारण पर अधिक बल दिया जाता है। दूसरे कोर्स से लेकर चौथे कोर्स तक हिंदी भाषा-शिक्षण सन् 2000 में अंकित रूप से स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार निर्धारित है। इस भारत विद्या विभाग में हिंदी, उर्दू तथा संस्कृत भाषाएँ पढाई जाती हैं। विभाग में स्नातक और स्नातकोत्तर के 30 से अधिक विद्यार्थी हिंदी, उर्दू तथा संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं। उनके पाठ्यक्रम में आधुनिक भारत की भाषाएँ और हिंदी साहित्य का इतिहास, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, आधुनिक हिंदी कविता, हिंदी के विविध रूप, हिंदी नाटक, हिंदी वार्तालाप, भारत में स्त्री लेखन आदि। व्यावहारिक स्तर पर हिंदी भाषा अध्यापन के मुख्य उद्देश्य को कार्यान्वित किया गया है। जो भाषा की सभी शैलियों और उनसे संबंधित भेदों को क्रमिक अध्ययन के योग्य बनाए। पाठ्यपुस्तक के अंत में हिंदी-बुल्गेरियन शब्दकोशदिए गए हैं, जिनमें करीब 1500 शब्द संगृहीत हैं। बुल्गेरियन पाठ्य सामग्री का प्रमुख उद्देश्य है कि विद्यार्थियों का भाषिक और अभिव्यक्तिशील ज्ञान मजबूत एवं विकसित हो। अध्ययन में प्रमुख रूप से भाषिक निपुणता और भाषा वैज्ञानिक अभ्यास पर बल दिया जाता है।

प्रथम वर्ष में विद्यार्थियों को मातृभाषा यानी बुल्गेरियाई भाषा के माध्यम से हिंदी पढाई जाती है। प्रथम सत्र समाप्त होते-होते विद्यार्थी हिंदी वाक्य लिखना सीख जाते हैं। उनका शब्द-भंडार समृद्ध होने लगता है। बुल्गेरिया की हिंदी शिक्षिका वाल्या मारिनोवा जी हिंदी की एक प्रतिबद्ध अध्यापिका हैं, जो अनुवाद के माध्यम से

विद्यार्थियों को हिंदी सिखाती हैं। मारिनोवा जी के नेतृत्व में हिंदी के जिन प्रमुख उपन्यासों का अनुवाद हुआ है, वे हैं प्रेमचंद का गोदान, जैनेंद्र कुमार का सुनीता, अज्ञेय का शेखर- एक जीवनी, कृष्ण चंदर का ददर पुल के बच्चे। कहानी संग्रहों में हैं कमलेश्वर का नीली झील और अन्य कहानियाँ, निर्मल वर्मा का परिंदे और अन्य कहानियाँ। ऐसे और कई कहानीकार हैं, जिनकी कहानियाँ अलग-अलग संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। बुल्गेरिया भाषा में हिंदी पढ़ानेवाले शिक्षक मुख्य तौर पर शिक्षण के लिए अनुवाद का सहारा लेते हैं और इन सभी उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद भी उसी प्रयास का नतीजा है। ये सारे अनुवाद विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर किए हैं। इस प्रकार हिंदी साहित्य लगातार बुल्गेरिया में अनुवाद के माध्यम से फैलता जा रहा है।

बुल्गेरिया के एक अध्यापक डॉ. सत्यकाम का कहना है कि उन्हें प्रेमचंद को पढ़ाने में खासी कठिनाई आई, क्योंकि भाषा की दृष्टि से प्रेमचंद जितने सरल लगते हैं, वे विदेशी विद्यार्थियों के लिए उतने ही दुरुह और कठिन हैं।[15] जब डॉ. सत्यकाम ने देखा कि उनके विद्यार्थी प्रेमचंद को समझने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं, तो उन्होंने उन्हें एक गृहकार्य दिया जो कि कुछ इस प्रकार था - अपने देश के एक ऐसे लेखक की खोज करो, जो गाँव की कथा लिखता हो। विद्यार्थी एलिन पेलिन लेखक का नाम लेकर आए और जब प्रेमचंद की कहानियों को एलिन पेलिन के बरकस रखकर पढाना शुरू किया तो बडा अचंभा हुआ। दोनों ही लेखक समकालीन हैं। दोनों ही गाँव के बारे में लिखनेवाले कथाकार हैं। दोनों की भाषाएँ लोक चेतना से संपृक्त हैं। परिणामस्वरूप विद्यार्थी प्रेमचंद को समझने लगे। अर्थात यह स्पष्ट होता है कि विदेशी विद्यार्थियों के भाषा के शिक्षण के लिए तुलनात्मक अध्ययन कितना महत्त्वपूर्ण है।

3.17.3 मीडिया :-

बुल्गेरिया के भारतीय विद्या विभाग के विद्यार्थी हिंदी रचनाओं को बुल्गेरियन भाषा में और बुल्गेरियन साहित्य का हिंदी में अनुवाद करने के लिए तत्पर रहते हैं। यह कार्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनकर भी होता है और स्वतंत्र रूप से भी। विद्यार्थी को सृजनात्मक लेखन की और प्रोत्साहित करने हेतु एक हस्तलिखित पत्रिका की परिकल्पना भी की जा रही है।

हिंदी शिक्षण की दृष्टि से हिंदी सिनेमा का यहाँ सदैव ही बहुत बड़ा योगदान रहा है। विद्यार्थियों को सिनेमा के द्वारा अर्थ जल्दी समझ आते हैं। यहाँ पर हिंदी संगीत भी काफी प्रचलित है।

3.18 बेलारूस :-

3.18.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

बेलारूस एक नया स्लाव गणतंत्र हैं, जो सोवियत संघ के पतन के बाद बनाया गया था। बेलारूस यूरोप के केंद्र में स्थित है, पूर्व में यह रूस के साथ संपर्क में आता है, पश्चिम में पोलैंड, दक्षिण में यूक्रेन और उत्तर-पश्चिम में लिथुआनिया के साथ। पिछ्ली सदी में लगभग सभी भारत-तत्त्व-संबंधी अध्ययन मास्को और दो-तीन अन्य रूसी शहरों में केंद्रित थे। तब अध्ययन के लिए कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थे।

3.18.2 वर्तमान स्वरूप एवं हिंदी शिक्षण :-

वर्तमान में रूस और अन्य पार्श्ववर्ती देशों में पाठशालाओं से लेकर विश्वविद्यालयों तक हिंदी का अध्ययन और अध्यापन हो रहा है। किंतु बेलारूसी विभिन्न विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं का पाठ्यक्रम नहीं शामिल हैं।

सोवियत संघ में भारत देश के प्राचीन ग्रंथ और आधुनिक साहित्य का, जैसे वेद, महाभारत, रामायण, वृहत् कथा, पंचतंत्र, रविंद्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, निराला की कृतियों का बडी संख्या में रूसी भाषा में अनुवाद किया गया था। रूसी और बेलारूसी पाठक भी इस समय हिंदी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा के वाहक लेखकों यशपाल,

अमृतलाल नागर, भीष्म साहनी, कवि निराला, पंत, दिनकर, मुक्तिबोध, सुमन आदि के नामों से भली-भाँति परिचित हैं।

भारत और सब स्लाव देशों के लोगों की प्राचीन काल से लेकर अब तक एक-दूसरे के देश की संस्कृति, सभ्यता व भाषाओं में गहरी रुचि रही है।[16]

आज बेलारूस और भारत के बीच सीधा पारम्परिक संबंध सुदृढ होता जा रहा है और जीवन के सभी क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढता जा रहा है। आज बेलारूस में रूस, पोलैंद, लिथुआनिया या यूक्रेन की तरह प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी का अध्ययन और अध्यापन नहीं हो रहा है। हालांकि, यहाँ कुछ सकारात्मक बातें हैं।

आज का युग संचार क्रांति और कंप्यूटर का युग है। दो-तीन वर्ष पहले भारतीय दूतावास की मदद से और पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत जी के सुझाव से डॉ. मिहईल मिहायलोव ने गोर्की में बेलारूसी ऑनलाइन हिंदी वेब सर्वर आयोजित किया था। इस सर्वर पर अब करीब पचास विविध सामग्री के वेबसाइट हैं। इस वेब सर्वर के माध्यम से हर साल हजारों रूसीभाषी छात्र-छात्राएँ हिंदी और भारतीय इतिहास और संस्कृति का कोई-न-कोई जानकारी प्राप्त कर रहे हैं और सौ से अधिक ऑनलाइन विद्यार्थी प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक हिंदी का अध्ययन करते हैं। वे यहाँ हिंदी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहन देने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, जो दोनों देशों के बीच प्रभावपूर्ण परस्पर सहयोग के लिए आवश्यक है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इनका यह हिंदी वेब सर्वर न केवल बेलारूस में, बल्कि रूस और उसके पडोसी देशों में भी हिंदी भाषा और साहित्य के कंप्यूटर के माध्यम से अध्ययन और उसके प्रचार-प्रसार को और व्यापक बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस वेब सर्वर के माध्यम से आम बेलारूसी या रूसी नागरिक ही नहीं, बल्कि मिन्स्क, मास्को, कीएव आदि बडे शहरों के विश्वविद्यालयों में पढ रहे

छात्र-छात्राएँ भी हिंदी सीखने आते हैं। हिंदी-प्रेमियों को दृष्टि में रखकर गोर्की ऑनलाइन हिंदी स्कूल में डॉ. मिहईल मिहायलोव जी ने सन् 2007 में हिंदी व्याकरण का अनुवाद और ऑनलाइन प्रकाशन किया था, जिसे सन् 2009 में मुद्रित किया गया।

इस बेलारूसी ऑनलाइन हिंदी विद्यालय की दो छात्राएँ येलेना ग्लूसकिना और येलेन अस्किर्का भारत के आगरा स्थित हिंदी अंतरराष्ट्रीय विद्यालय में पढ चुकी हैं। एक छात्रा जिसका नाम है आन्न स्तेपनोवा और जो केमोरोवो में रूसी साइबेरिया में रहती हैं, डॉ. मिहायलोव के साथ प्रेमचंद की कहानी अमृत का तथा हिंदी काव्यों और व्याकरण के अध्यायों का रूसी भाषा में अनुवाद किया है। हिंदी व्याकरण के अनुवाद में आन्न स्तेपनोवा के अतिरिक्त येलेना अस्किर्का और नस्त्या मोज्गोवा भाग लेती हैं। येलेना अस्किर्का और येलेना सीपच योग की शिक्षा भी देती हैं।

3.19 यूक्रेन :-

3.19.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

यूक्रेन में हिंदी अध्ययन-अध्यापन का शुभारंभ सन् 1991 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही हुआ था। सर्वप्रथम सन् 1992 में प्राच्य भाषाओं की पाठशाला संख्या में एक हिंदी की पढ़ाई-लिखाई शुरू हो गई। कुछ वर्षों बाद भूतपुर्व उपलब्धियों एवं परंपराओं को याद रखते हुए अपना स्वतंत्र वैज्ञानिक और शैक्षिक स्कूल चलाने के उद्देश्य से सन् 1995 में यूक्रेन के सर्वप्रमुख एवं सर्व प्रतिष्ठित कीव राष्ट्रीय तारास शेच्चे विश्वविद्यालय में प्राच्यविद्या विभाग की स्थापना हुई थी।

उच्च शिक्षा के स्तर पर हिंदी अध्ययन-अध्यापन की शुरुआत करने का श्रेय यूक्रेनी प्रसिद्ध भारतिवद् लेखक, अनुवादक और शोधकर्ता आचार्य नालिवायको जी को जाता है जो भारतीय संस्कृति के प्रति अभिरुचि बढाने हेतु हिंदी भाषा शुरू में वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाने लगे और कुछ ही समय बाद कीव राष्ट्रीय तारास

शेव्चेंका विश्वविद्यालय में पंचवर्षीय पूर्णकालिक औपचारिक पाठ्यक्रम के प्रवर्तक बन गए।

3.19.2 वर्तमान स्वरूप :-

धीरे-धीरे यूक्रेन में हिंदी की लोकप्रियता बढने लगी, जिसके परिणामस्वरूप यूक्रेन की राजधानी कीव में और दो गैर-सरकारी उच्च विद्यालयों (कीव अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा कीव विश्वविद्यालय पूर्वी दुनिया) में हिंदी शिक्षण आरंभ हुआ। सन् 2007 से कीव राष्ट्रीय भाषाविज्ञान विश्वविद्यालय में हिंदी पठन-पाठन होने लगा।

3.19.3 यूक्रेन में हिंदी शिक्षण :-

इस प्रकार आजकल कीव अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी गौण विषय के रूप में पढाई जाती है तथा उपर्युक्त अन्य तीन उच्च विद्यालयों में हिंदी के स्नातक (4+1 वर्षों के कोर्स) के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। यूक्रेन में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के डेढ दशक के अनुभव पर दृष्टिपात करके यह विदित हो जाता है कि यूक्रेन में हिंदी शिक्षण प्रारंभिक निर्माण अवस्था में हैं जिसके लिए कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ बिलकुल स्वाभाविक होती हैं। एक ओर श्रम मंडी में हिंदी को स्थान न मिलने की तथा आवश्यक भौतिक सुविधा, शैक्षणिक उपकरण व सामग्री आदि के अभाव की स्थिति हिंदी की उचित उन्नति के प्रतिकूल है। पर दूसरी ओर पंद्रह वर्षों में प्राप्त उपलब्धियाँ और हिंदी अध्येताओं की बढती हुई संख्या दर्शाती है कि अनेक बाधा-व्यवधान के बावजूद यूक्रेन में हिंदी शिक्षण विकासमान और गतिमान होता जा रहा है।[17] हिंदी विशेषज्ञों की तैयारी में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की छात्रवृत्तियों का बहुत बडा योगदान है। आई.सी.सी.आर. प्रोगाम के अंतर्गत यूक्रेनी छात्रों को भारत जाकर हिंदी सीखने तथा शोध कार्य करने का सुअवसर मिलता है, जो बहुतों के भावी

व्यवसाय के लिए निर्णायक और प्रेरणात्मक सिद्ध होता है। भारत में प्रेरित होकर छात्र बडे उत्साह से हिंदी के प्रचार में जुट जाते हैं।

3.19.4 यूक्रेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ :-

विगत कुछ वर्षों में हिंदी-प्रेमियों के प्रयत्न तथा यूक्रेन में भारत राजदूतावास की सक्रिय प्रोत्साहनकारी गतिविधिययाँ एवं समर्थन की बदौलत यूक्रेन में हिंदी अध्ययन की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन होने लगे। पहली बार हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कीव के तीन विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। पहली बार द्वितीय अखिल युक्रेनी भारतविद्या सम्मेलन के अंतर्गत स्वतंत्र रूप से हिंदी शिक्षकों की बैठक हुई जिसमें हिंदी भाषाविज्ञान, साहित्यविज्ञान, शिक्षाविधिविज्ञान संबंधी विषयों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किए गए। अंततः सन् 2007 के मई में कीव राष्ट्रीय तारास शेव्चेंको विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा एवं भारतीय साहित्य केंद्र का उद्घाटन हुआ, जिसके उद्देश्य हैं - यूक्रेन में हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन को बढावा देना, हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण प्रणाली को सुधारना, हिंदी भाषा के विकास द्वारा भारतीय संस्कृति का प्रचार करना आदि। हिंदी विद्यापीठ न होने की अवस्था में ऐसे केंद्र की स्थापना भारत-यूक्रेनी विद्या के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ है जिसके बाद हिंदी शिक्षण की उन्नति निःसंदेह गति पकड सकेगी।

3.20 रोमानिया :-

3.20.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1956 में बुखारेस्त में रोमानिया प्राच्य विद्या संस्थान की स्थापना हुई। सन् 1965 में भारतीय रोमानियन सांस्कृतिक विनिमय पर हस्ताक्षर किए गए।

उसी साल भारतीय प्राध्यापक, हिंदी कवि और लेखक, श्री इंदु प्रकाश पांडेय ने रोमानिया आकर बुखारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा का ऐच्छिक पाठ्यक्रम प्रारंभ

किया। श्री इंदु प्रकाश पांडेय ने सन् 1965 से 1967 तक बुखारेस्त में हिंदी पढाई। इस अवधी में उन्होंने रोमानियन विद्यार्थियों के लिए रोमानियन में पहली हिंदी पाठ्यपुस्तक बनाई थी, जो सन् 1967 में बुखारेस्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित की गई। उन्होंने भारतीय विद्या, हिंदी साहित्य, भारतीय संगीत, कला और फिल्म पर अनेक दिलचस्प व्याख्यान दिए।[18]

सन् 1969 में प्रो. आल रोसेती, प्रो. ला. तेबान और प्रो. ची. पेगिर्क ने शिक्षा मंत्रालय को एक ज्ञापन देकर माँग की कि प्राच्य भाषा संकाय के अंतर्गत हिंदी विभाग की विधिवत स्थापना की जाए। फलतः शिक्षा मंत्रालय ने बुखारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना करने की स्वीकृती दे दी। रोमानियन भाषा में प्रेमचंद के गोदान तथा फणीश्वर नाथ रेणु के मैला आँचल का अनुवाद किया। एक हिंदी प्रेमी दनिल इंकजे ने प्रेमचंद की 22 कहानियों का सीधे हिंदी से रोमानियन में अनुवाद किया।

सितंबर सन् 1968 से जून 1972 तक हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. प्रभुदयाल विद्यासागर ने हिंदी अध्यापन का कार्य किया। पहले दो अध्ययन-वर्षों के भीतर उन्होंने ऐच्छिक पाठ्यक्रम पढाया। सन् 1971 में रोमानियन सरकार ने बुखारेस्त विश्वविद्यालय में चतुर्वर्षीय हिंदी विभाग स्थापित करने का निर्णय लिया। उसी साल, हिंदी विभाग के सहायक अध्यापकों के रूप में श्री लौरेन्स्तियु ते बान और श्री निकोलाये ज्बेरिया की नियुक्ती भी की गई थी। श्री निकोलजाए ज्बेरिया ने धर्मयुग के सन् 1970 के अंक में एक रोमांचक अध्यात्मिक यात्रा, आगरा के केंद्रीय हिंदी स्थान की पत्रिका समन्वय में, भारत और रोमानिया का सांस्कृतिक संबध, सन् 1973 के पराग में, एक रोमानियन दंत - कथा आदि प्रकाशित किए। अपने चार वर्ष के कार्यकाल में डॉ. विद्यासागर ने रोमानियन विद्यार्थियों के लिए एक विशालकाय पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की और विस्तृत हिंदी-रोमानियन

शब्दकोश (चार खंडों में) तथा रोमानियन-हिंदी शब्दकोश का सूत्रपात किया। शब्दकोश के संपादक मंडल के दूसरे सदस्य अस इयोन पेत्रेस्सु अस निकोलाये ज्बेरिया और अस लॉरेन्त्यु तेबान थे। अपना कार्यक्षेत्र बढाने के लिए डॉ. विद्यासागर ने याशिनगर के विश्वविद्यालय में भी एक ऐच्छिक पाठ्यक्रम आरंभ किया। हिंदी अध्यापन के अतिरिक्त, उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य पर कुछ लेख लिखे और भारत के जीवन से संबंधित सांस्कृतिक, कलात्मक एवं ऐतिहासिक फिल्मों के प्रदर्शन का भी प्रबंध किया। मार्च 1973 से मई 1974 तक तीसरे भारतीय प्राध्यापक ने संस्कृति तथा कला के प्रति रोमानियन जनता में विशेष अभिरुचि जागृत की।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इतिहास में विद्यार्थियों की जानकारी पूर्ण करने के लिए सन् 1972 में प्रो. डॉ. चीचेरोने पोगीर्क और डॉ. सैर्ज्यु आल जिओर्जे ने व्याख्यान दिए। उसी समय संस्कृत और भारतीय सभ्यता पर दिल्ली की प्राध्यापिका श्रीमती उषा चौधुरी ने विशेष भाषण दिए। प्रोफ़ेसर चौधुरी ने नवभारत टाइम्स में एक लेख प्रकाशित किया डेन्यूब के किनारे संस्कृत, हिंदी तथा हिंदी संगीत का प्रचार। सन् 1974 में बुखारेस्त में डॉ. चौधुरी के पहल से रोमानियन - भारतीय मित्रता समाज स्थापित किया गया। सन् 1975 से सन् 1978 तक पुनः डॉ. दयाल विद्यासागर ने रोमानियम आकर हिंदी का अध्यापन किया। अप्रेल 1979 में आगरा के कैंद्रीय हिंदी संस्थान से, डॉ. सूरजभान सिंह रोमानिया आए थे। उन्होंने यहाँ सन् 1983 तक हिंदी पढाई। सन् 1983 में वे भारत लौट गए और उसी साल जबलपूर विश्वविद्यालय में डॉ. महावीर सरल जैन भारत सरकार की ओर से बुखारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी प्रोफ़ेसर प्रतिनियुक्त होकर रोमानिया आए थे। उन्हौंने रोमानिया में सन् 1984 तक हिंदी का अध्यापन किया। उसी समय से सन् 1992 तक सुश्री अमिता बोस ने बांगला और संस्कृत पढाई।

3.20.2 रोमानिया में हिंदी शिक्षण :-

श्री रादू बेर्चा ने सन् 1996 से सन् 2000 तक बुखारेस्त विश्वविद्यालय में भारतीय सभ्यता के इतिहास और संस्कृत का अध्यापन किया। उन्होंने प्राचीनतम उपनिषद् का अनुवाद आलोचना संबंधी टिप्पणियों के साथ प्रकाशित करवाया। वर्तमान समय में रादू बेर्चा सेर्ज्यू आल-जेर्जे प्राच्य विद्या संस्थान के निदेशक हैं। इसी दौरान हिंदी पाठ्यक्रम के स्नातक - मारिया लीला पोपेस्कु, लेलिया पोपेस्कु, मिर्चिया इजु, एरिक बेचेस्कु, कवि जॉर्ज आंका आदि ने हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य तथा संस्कृत पढाई।

सन् 1998 से सन् 1999 तक प्राध्यापिका लता गुप्ता ने रोमानियन विद्यार्थियों के लिए हिंदी का अध्यापन किया। सन् 1998 से भी सन् 2000 तक प्रोफ़ेसर यतींद्र तिवारी ने हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम पढाया। उनके रहने के समय मार्च 2000 में हिंदी विभाग के 30 वर्ष पूर्ण होने पर एक समारोह आयोजित हुआ।

हिंदी अध्ययन करने की सुविधा के लिए हिंदी रोमानियन शब्दकोश का निर्माण करने का भी कार्य प्रारंभ किया। सन् 2000 में डॉ. शत्रुघ्न कुमार बुखारेस्त विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य पढ़ाने के लिए प्रतिनियुक्ति पर आए। उसी साल से सबिना पॉपरलेन हिंदी भाषा-विज्ञान तथा हिंदी साहित्य पढाती हैं। वरिष्ठ प्राध्यापक लौरेन्त्यु तेबान हिंदी विभाग के शुरू से ही अर्थात 33 वर्षों से हिंदी भाषाविज्ञान एवं संस्कृत पढा रहे हैं। उन्होंने आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान की पत्रिका गवेषणा में हिंदी भाषा का मुलभूत वाक्य-विन्यास प्रकाशित करवाया। प्रोफ़ेसर ला.तेवान, डॉ. विद्यासागर के हिंदी-रोमानियन शब्दकोश के संपादक-मंडल में अस इयोन पेत्रेस्कु और अस निकोलये ज्बेरिया के साथ सदस्य थे। उन्होने डॉ. सूरजभान सिंह को हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक बनाने में सहायता की थी।

रोमानिया में हिंदी के प्रति वहाँ के लोगों में एक अलग तरह का रूझान है। रोमानियाई विद्यार्थीयों में हिंदी सीखने का उत्साह देखते ही बनता है। वे इसे काफी

गंभीरता से लेते हैं। यहाँ विश्वविद्यालय में हिंदी सीखने के लिए दो तरह की क्लास चलती है, एक 'एडवांस' और दूसरा 'लोअर'। एडवांस सीखनेवाले धीरे-धीरे सीखते हैं तो लोअरवाले थोडा तेज़। कुल मिलाकर हिंदी सीखने की प्रगति ठीक-ठाक रहती है।

आजकल बुखारेस्त के हिंदी विभाग में लगभग 30 विद्यार्थी संस्कृत, हिंदी भाषा और साहित्य पढ रहे हैं। वे हिंदी एवं संस्कृत के अध्ययन में रुचि रखते हैं और वे बहुत परिश्रमी हैं। हिंदी विभाग के अध्यापक हिंदी भाषा का व्याकरण तैयार कर रहे हैं।

3.20.3 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा तथा हिंदी गीत यहाँ के लोगों में प्रसिद्ध हैं। हिंदी के अध्यापन में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

3.21 हंगरी :-

3.21.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

हंगरी में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की परंपरा से पहले भारोपीय अध्ययन की और संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की पंरपरा थी। इसकी शुरूआत 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में हुई थी। इस परंपरा की शुरूआत करने का श्रेय ऑलेक्सांदैर चोमा को जाता है। प्रारंभ में संस्कृत की पुस्तकों का अनुवाद संस्कृत से न करके तुर्की, लैटिन और अंग्रेजी भाषाओं के अनुवादों से किया जाता था, पर अब स्थिति बदल गई है। आजकल हिंदी और संस्कृत दोनों ही भाषाओं से सीधे अनुवाद कार्य किए जा रहे हैं। इसके साथ ही हिंदी में भी सीधे ही हंगेरियन भाषा से अनुवाद किए जा रहे हैं। संस्कृत अध्ययन की परंपरा की शुरूआत और उसका विकास ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय के भारतीय अध्ययन विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो. तोत्ताशि चाबा के प्रयासों से हुआ।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन की परंपरा पाँचवें दशक में आरंभ हुई थी। हंगरी के भारतीय दूतावास में कार्यरत डॉ. दैबत्सैनी आर्पाद ने स्वयं हिंदी सीखकर विश्वविद्यालय में हिंदी अध्यापन करने का कार्य किया था। हिंदी अध्ययन-अध्यापन की परंपरा के विकास का पूरा श्रेय सूश्री गारिया नेज्यैशी को जाता है। पिछली शताब्दी के नौवें दशक में जब उन्होंने पढाना प्रारंभ किया था, तब विश्वविद्यालय में पाठ्यपुस्तकों का अभाव था। न तो हंगेरियन में न ही हिंदी या अंग्रेजी में कोई भी पाठ्यपुस्तक उपलब्ध थी। उस समय बुदापैश्त में हिंदी बोलनेवालों की संख्या नहीं के बराबर थी। मारिया नेज्यैशी हर सप्ताह पढ़ाने के लिए नया पाठ तैयार करती थीं और फिर उस पाठ की सहायता से अध्यापन कार्य करती थीं।

3.21.2 वर्तमान स्वरूप :-

भारत सरकार आई.सी.सी.आर. के माध्यम से विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जो छात्रवृत्ति प्रदान करती है उसी के अंतर्गत हंगरी के एक या दो छात्र प्रतिवर्ष ये छात्रवृत्ति लेकर केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी का अध्ययन करने के लिए जाते हैं।

3.21.3 हंगरी में हिंदी शिक्षण :-

भारत सरकार और राजदूतावास के सहयोग से हिंदी की पुस्तकें ऐल्ते विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग को मिलने लगीं। इससे हिंदी अध्ययन और अध्यापन का कार्य थोडा सा आसान हो गया। सन् 1992 में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी। इस वर्ष भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से एल्ते विश्वविद्यालय के भारोपीय भाषाविज्ञान विभाग में हिंदी के एक अतिथि प्रोफ़ेसर के पद का सृजन किया गया। हिंदी के एक जाने-माने साहित्यकार डॉ. असगर वजाहत ने हिंदी के साथ-साथ उर्दू पढ़ाने का कार्य प्रारंभ किया और मारिया नेज्यैशी के साथ मिलकर हिंदी अध्यापन शुरू किया जो अब डॉ. बटरोही, डॉ. रविप्रकाश गुप्ता, डॉ. उमाशंकर उपाध्याय और

आजकल डॉ. प्रमोदकुमार शर्मा आगे बढा रहे हैं। डॉ. बटरोही ने आधुनिक काव्य संकलन, डॉ. रविप्रकाश गुप्ता ने बोलचाल की हिंदी और डॉ. उपाध्याय ने मध्यकालीन काव्य संकलन शीर्षक पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया। डॉ. प्रमोद कुमार ने विभाग के लिए उच्चस्तरीय वार्तालाप पुस्तक का निर्माण किया। सन् 2007-08 के शैक्षिक सत्र में एक नए प्रयोग के तौर पर छात्रों को कंप्यूटर का हिंदी अध्ययन-अध्यापन में प्रयोग करना सिखाया गया। सन् 2008-09 के शैक्षिक सत्र में उच्च स्तर के छात्रों को मीडिया की भाषा का अध्ययन कर उसकी समझ विकसित करने का प्रयास किया गया। सन् 2009 के छात्रों ने मारिया नेज्यैशी के निर्देशन में भीष्म साहनी की अनेक कहानियों का हिंदी से हंगेरियन अनुवाद कार्य भी किया। उसी सत्र से छात्र हंगेरियन भाषा से हिंदी में अनुवाद भी किया। अपने ग्रीष्मावकाश के दौरान भी कुछ छात्रों ने हिंदी के अन्य लेखकों की कुछ प्रसिद्ध कहानियों का अनुवाद किया।

विभाग के प्रतिभाशाली छात्रों में मारिया नेज्यैशी, इमरै बंघा, फैरेस रुजा, दानियल बलोग, युदित तोरजोक, कोरत्वैयेशी तिबोर, जुजाना रेनर, दैजो चाबा, किश चाबा और शांतो पेतर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, ये सभी आजकल यूरोप के विभिन्न देशों व हंगरी के विभिन्न महत्त्वपूर्ण संस्थानों में उच्च पदों पर पदस्थ या शोधरत हैं। मारिया नेज्यैशी आजकल ऐल्ते विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा हैं। डॉ. इमरै बंघा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा हैं। डॉ. इमरै बंघा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन करती हैं। इसके अलावा चीकसैरेदा (रोमानिया) के सपिऐंत्सिया विश्वविद्यालय में भी अध्यापन कार्य करती हैं। इन्होंने बुडापेस्ट युनिवर्सिटी, हंगरी से हिंदी और संस्कृत में स्नातकोत्तर एवं विश्वभारती, शंतिनेकतन से हिंदी में पीएच.डी. की है। उन्होंने घनानंद के काव्य पर शोध किया और तुलसी साहित्य में इनकी गहरी रुचि है। यहाँ के लोगों में तुलसी को लेकर खास रुचि देखी गई। वे ऐसा समझते हैं कि तुलसीदास के

साहित्य को पढ़कर वे भारतीय जन-जीवन को समझ सकेंगे। ऐल्ते विश्वविद्यालय में डॉ. इमरै बंघा के निर्देशन में एक महत्त्वपूर्ण शोध कार्य जारी है। इसमें तुलसीदास कृत कवितावली के पाठालोचन का कार्य किया जा रहा है। सन् 2007 से ऐल्ते व़िश्वविद्यालय में आई.सी.सी.आर. की ओर से टैगोर फैलोशिप आरंभ की गई हैं। इस विभाग के ही एक अन्य छात्र हिदाश गैगैय ने इस फैलोशिप के अंतर्गत शोध कार्य किया है।[19]

3.21.4 भारतीय दूतावास :-

ऐल्ते विश्वविद्यालय के स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के अलावा बुदापैश्त में भारतीय दूतावास के सहयोग से तीन स्तरों पर हिंदी अध्यापन की नियमित कक्षाएँ चलती हैं। ये कक्षाएँ भी ऐल्ते विश्वविद्यालय के प्रांगण में आयोजित की जाती हैं। इन कक्षाओं की शोभा हिंदी-प्रेमी ही नहीं, बल्कि भारत-प्रेमी भी बढाते हैं। इन तीन कक्षाओं का स्तर क्रमशः प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्च है।

पिछले 16 वर्षों से चल रही इन कक्षाओं में लगभग 1500 लोग हिंदी के साथ-साथ भारत और भारतीय संस्कृति से परिचय प्राप्त कर चुके हैं। इसके अलावा दूतावास के सहयोग से भारतीय समाज और संस्कृति से संबंधित विषयों पर व्याख्यानमाला को भी आयोजन किया जाता है। इस व्याख्यानमाला में भारतीय व हंगेरियन भारतविद्, भारतीय संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चापरक व्याख्यान देते हैं। व्याख्यान के बाद श्रोता और छात्र अपनी जिज्ञासाओं को प्रश्न पूछकर शांत कर सकते हैं। इस व्याख्यानमाला में भारतीय दर्शन, इतिहास, समाज, कला, खान-पान, पहनावा आदि जैसे विषयों पर बल दिया जाता हैं। इन कक्षाओं में पढ़नेवाले छात्र प्रतिवर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी कविताओं का पाठ करते हैं व लघु नाटकों का मंथन करते हैं।

इन कक्षाओं के छात्र सन् 1995 व 2000 में भारत की शैक्षणिक यात्राएँ भी कर चुके हैं।

3.21.5 मीडिया :-

बुदापेश्त में लगभग प्रतिमाह एक बॉलीवुड पार्टी होती हैं, जिसमें अनेक हंगेरियन युवक-युवतियाँ एवं भारतीय भी हिंदी के लोकप्रिय हिंदी-पंजाबी फिल्मी गानों पर देर रात तक थिरकते रहते हैं। इसी तरह बुडापेस्ट में दूतावास की कक्षाओं से जुड़ा एक हिंदी फिल्म क्लब भी है, जो प्रतिमाह एक हिंदी फिल्म का प्रदर्शन करता है। इसमें दर्शकों की संख्या पर्याप्त होती है। हंगेरियन दूरदर्शन पर हिंदी फिल्में डब करके दिखाने की एक लंबी परंपरा है। कभी-कभी हंगेरियन एफ.एम.रेडियो पर भी हिंदी गाने सुनने को मिल जाते हैं, पर यह यदा-कदा ही होता है।

3.22 स्लोवेनिया :-

3.22.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

स्लोवेनिया मध्य-यूरोप का वह सुंदर देश है जिसकी सीमाएँ आल्प्स पर्वत और मेडिटेरनियन समुद्र तय करते हैं। इसके पश्चिम में इटली, दक्षिण-पूर्व में क्रोएशिया, पूर्वोत्तर में हंगरी और उत्तर में ऑस्ट्रिया है। ऐड्रियाटिक समुद्र भी इसे एक ओर से संवारता है। ल्युबल्याना इसकी राजधानी है - ल्युब का अर्थ 'प्रेम' और 'पानी' होता है। स्लोवेनिया की सरकारी भाषा, जिसे 88 प्रतिशत जनता बोलती है, स्लोवीन है, जो भारोपीय परिवार के पश्चिमी उपवर्ग में स्लाविक भाषाओं के दक्षिण स्लाविक भाषा समूह की सदस्य है, जिसे बोलियों की दृष्टि से सर्वाधिक वैविध्यपूर्ण बताया जाता है और जिसकी 50 बोलियाँ मानी जाती हैं जो 7 बोली - वर्गों में रखी जाती हैं। हंगैरियन, इटैलियन, जर्मन आदि की उपस्थिति में भारत की दृष्टि से स्लोवेनिया की रोमानी भाषा इसलिए रोमांचक है कि यूरोप की रोमा जन-जाति का संबंध भारत से है, जो काफ़ी बड़ी संख्या में स्लोवेनिया में निवास करती है। हंगैरियन, इटैलियन,

जर्मन आदि के अतिरिक्त सर्वियन, क्रोएशियन, बोस्नियन, अल्बानियन, मैकेडोनियन और चेक भाषी भी स्लोवेनिया का वैशिष्ट्य हैं। समझा जा सकता है कि इन तमाम यूरोपीय विदेशी भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन स्लोवेनिया में होता है। ऐसे वैविध्यपूर्ण भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषायी माहौल में एक भिन्न भाषा - परिवार की भाषा हिंदी का अध्ययन - अध्यापन अपने-आप में विशिष्ट और रोमांचक है।

यूगोस्लाविया-युग में भारत के संबंध यूगोस्लाविया से बहुत अच्छे रहे और भारत से कुछ लोग स्लोवेनिया गए, वहाँ से भारत आए और स्लोवेनिया में भारत की पहचान बनी।

3.22.2 वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1992 में स्लोवेनिया स्वतंत्र राष्ट्र बना और भारत से नए संबंध बने, परंतु भारत और स्लोवेनिया ने अपने-अपने दूतावास चार-पाँच वर्ष पहले ही सन् 2006-2007 में स्थापित किए हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत और स्लोवेनिया बहुत निकट आए हैं। स्लोवेनिया में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से सन् 2009 में हिंदी आचार्य की पीठ की स्थापना इसका प्रखर प्रमाण है।

स्लोवेनिया से प्रतिदिन कई लोग भारत की यात्रा करते हैं - व्यावसायिक और व्यापारिक कारणों से ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक तथा पर्यटन की रुचियों के कारण भी। अनेक स्लोवेनियन छात्र भारत में विविध विषयों के साथ हिंदी और भारतीय अध्ययन क्षेत्र में भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

3.22.3 स्लोवेनिया में हिंदी शिक्षण :-

हिंदी और भारत के प्रति स्लोवेनिया की रुचि का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण यह है कि ल्युबल्याना विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा के 25 छात्र हैं और संस्कृत भाषा के 84 छात्र हैं। संस्कृत भाषा अनेक विद्यालयों में भी पढ़ाई जा रही है। महात्मा गाँधी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कांस्य प्रतिमाएँ अभी हाल में ही स्लोवेनिया में अनावृत

की गई हैं। लगभग प्रति वर्ष एक परिसंवाद या संगोष्ठी भारतीय अध्ययन से संबंधित विषय पर स्लोवेनिया में आयोजित की जाती है। सन् 2010 और 2011 में 10 जनवरी को ल्युबल्याना विश्वविद्यालय और भारतीय दूतावास के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस' विधिवत आयोजित किए गए। 'हर कृष्ण' मंदिर, 'साईं बाबा आश्रम' और अन्य अनेक धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ भारतीय संस्कृति को जहाँ प्रोत्साहित कर रहीं हैं, वहीं भारत और भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी के प्रति रुचि का विकास भी कर रही हैं।

स्लोवेनिया में हिंदी-शिक्षण और अध्ययन-अध्यापन की अनंत सम्भावनाएँ हैं। विद्यार्थी अत्यंत कर्मठ और उत्साही हैं। विश्वविद्यालय बहुत सहयोगी और समर्थक है। लोगों की भारत और हिंदी सीखने में व्यापक रुचि है। लगभग प्रत्येक क्षेत्र में स्लोवेनिया के भारत से बढ़ते हुए संबंध हिंदी जानने का एक महत्त्वपूर्ण कारक हैं।

शीघ्र ही ल्युबल्याना विश्वविद्यालय 'भारतीय अध्ययन प्रकोष्ठ' को मान्यता मिलने वाली है, जिससे हिंदी के अध्ययन-अध्यापन में अभूतपूर्व प्रगति होगी और स्नातकोत्तर स्तर का पाठ्यक्रम संभवतः सम्भवतः इसी सन् 2015 से प्रारंभ हो सकेगा।

3.22.4 मीडिया :-

हिंदी सिनेमा एवं गीतों में यहाँ के लोग बहुत रुचि रखते हैं।

3.23 पुर्तगाल :-

3.23.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

पुर्तगाल और भारत के बीच 500 वर्षों का इतिहास है। सन् 1961 तक भारत का गोवा राज्य विधिवत रूप से पुर्तगाल का ही हिस्सा था। पुर्तगाल स्थित भारतवंशी अपने बच्चों को गुजरती, कोंकणी, हिंदी सिखाने का प्रयास करते हैं। कई युवा पुर्तगाली हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएँ सीखना चाहते हैं क्योंकि अभी भी उनके कई

रिश्तेदार भारत में हैं। अभी भी कई पुर्तगाली शादी-ब्याह के लिए भारतीय युवतियों से ही रिश्ता करना चाहते हैं अतः यह स्पष्ट होता है कि पुर्तगाल की युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के बारे में कुछ जानकारी एवं उत्सुकता तो रखती है।

पुर्तगाल में विश्वविद्यालय के स्तर पर भारतीय संस्कृति की शिक्षा दीक्षा की शुरुआत का आधिकारिक श्रेय प्रो. जोज़े लैडत दे वास्कोनसेलस जो कि लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय में प्रोफ़ेसर भी थे। प्रो. जोज़े न सिर्फ पुर्तगाल में बल्कि पूरे यूरोप में एशिया की भाषा और संस्कृति पर शोध करने वाले गिने-चुने विद्वानों में से एक थे। सन् 1941 उनकी मृत्यु के पश्चात् लगभग 8 हज़ार किताबें लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय के पुस्तकालय को भेंट कर दी गईं जिनमें हजारों किताबें संस्कृत एवं भारतीय अध्ययन से संबंधित हैं।

किंतु पुर्तगाल में हिंदी शिक्षण की शुरुआत का श्रेय प्रो. अफ़ज़ल अहमद एवं भारतीय दूतावास को जाता है। इन्हीं के परिश्रम का फल है कि आज पुर्तगाल में हिंदी शिक्षण, हिंदी के कार्यक्रम एवं संगोष्ठियाँ हो रही हैं।

3.23.2 वर्तमान स्वरूप :-

सन् 1990 में एक विश्वविद्यालय में पुर्तगाली अर्थशास्त्र का इतिहास पढ़ाने प्रो. अफ़ज़ल अहमद पुर्तगाल पहुँचे। प्रो. अफ़ज़ल हिंदी के विद्वान नहीं हैं अपितु इन्होंने इतिहास में स्नातकोत्तर की शिक्षा ली है। लेकिन इन्होंने हिंदी, अंग्रेजी तथा संस्कृत में स्नातक की शिक्षा ली तथा उनका पूर्ण शिक्षण हिंदी माध्यम से ही रहा है इसीलिए उन्हें सदा ही हिंदी से लगाव रहा। इसी लगाव के कारण ये पुर्तगाल में हिंदी तथा हिंदुस्तानी का प्रचार करने लगे। इन्हें यह एहसास हुआ कि बहुत से छात्रों को इसमें दिलचस्पी थी। वहाँ पर यूरोप की बहुत सी भाषाओं को पढ़ाने का प्रचार हो रहा था। प्रो. अफ़ज़ल ने भी निःशुल्क हिंदी पढ़ाने का प्रस्ताव रखा लेकिन हिंदी के प्रोफ़ेसर न होने के कारण, विश्वविद्यालय ने इजाज़त नहीं दी।

3.23.3 पुर्तगाल में हिंदी शिक्षण :-

सन् 1995 में प्रो. अफज़ल किसी और विश्वविद्यालय में पुर्तगाली कूटनीति का इतिहास पढ़ाने गए तथा एक साल बाद इन्होंने वहाँ पर एक एशियाई अध्ययन केंद्र का निर्माण किया और आखिरकार पुर्तगाल में हिंदी अध्यापन की शुरूआत हुई। तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री अरोड़ा ने हिंदी शिक्षण का उदघाटन किया। प्रो. अफज़ल ने सन् 2006 तक वहाँ हिंदी का अध्यापन किया, इस अंतराल में इन्होंने लगभग 200 छात्रों को निःशुल्क हिंदी शिक्षण प्रदान किया। कुछ सरकारी कारणों से सन् 2006 में यह विश्वविद्यालय बंद हो गया था। सन् 2007 में प्रो. अफज़ल को नव लिस्बन विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिदादे नोवा दे लिस्बोआ) में हिंदी के अध्यापन के लिए बुलाया गया। वर्तमान में भी प्रो. अफज़ल यहाँ हिंदी और भारतीय संस्कृति का अध्यापन कर रहे हैं।[20]

लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय में एशियाई अध्ययन में सन् 2008 से स्नातक और सन् 2012 से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई है तथा इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी अन्य एशियाई भाषाओं के साथ एक विषय है और हर साल तकरीबन 15-20 नए छात्र हिंदी विषय को चुनते हैं। इस समय कला संकाय में हिंदी के कुल 30 छात्र हैं। हिंदी की शिक्षा शैक्षणिक सत्र सन् 2008-2009 से लगातार चल रही है। अभी तक भारतीय दूतावास के सहयोग से भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर 6 छात्र केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी पढ़ने के लिए जा चुके हैं।

पुर्तगाल में विदेशी भाषा के रूप में अन्य एशियाई भाषाओं जैसे चीनी, जापानी, कोरियाई आदि की अपेक्षा हिंदी सीखने वालों की संख्या कम होने का मुख्य कारण व्यावसायिक प्रेरणा की मौजूदगी का नादारद होना है। साथ ही हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी को सिर्फ संसाधनों की ही नहीं वरन संस्थागत सहयोग की भी आवश्यकता है।

3.23.4 मीडिया :-

पुस्तकों के अभाव से हिंदी अध्यापन करना असंभव था अतः प्रो. अफ़ज़ल ने कुछ पुस्तकें भारत से मँगवाईं और कुछ भारतीय दूतावास से प्राप्त हुईं। इन सबको मिलाकर इन्होंने पुर्तगाली में एक कम्प्यूटर कॉपी बनाई और अध्यापन करने लगे। साथ ही उन्होंने एक छोटा सा पुर्तगाली-हिंदी शब्दकोश भी तैयार किया, जिससे छात्र को काफी सहायता मिली। वर्तमान में अंतरजाल के माध्यम से हिंदी अध्ययन-अध्यापन में काफी मदद मिली है। हिंदी सिनेमा एवं गीत सरलता से उपलब्ध होने के कारण छात्रों को हिंदी समझाने में भी आसानी हो गई है।

हिंदी शिक्षण की शुरुआत से पहले ही पुर्तगाल में हिंदी सिनेमा बड़े चाव से देखी जाती है।

3.24 स्पेन :-

3.24.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

प्रागैतिहासिक काल से ही वय्यादोलिद शहर तथा वय्यादोलिद विश्वविद्यालय पर एशिया का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इन देशों की संस्कृति के प्रभाव से वय्यादोलिद विश्वविद्यालय में एशियाई अध्ययन की परंपरा का सूत्रपात हुआ।

3.24.2 वर्तमान स्वरूप :-

स्पेन में हिंदी की लोकप्रियता अन्य विदेशी स्थानों से अलग रही है क्योंकि यहाँ भारतीय मूल के लोगों की संख्या यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षाकृत काफी कम है, हालांकि पिछले कुछ वर्षों में इसमें काफी बढ़ोत्तरी हुई है पर फिर भी यह बहुत कम है। यहाँ के भारतीयों में अंग्रेजी की लोकप्रियता हिंदी की तुलना में अधिक है अतः इसका सीधा प्रभाव हिंदी अध्ययन पर देखने को मिलता है। हिंदी अध्ययन की कक्षाओं में भारतीय मूल के विद्यार्थी बहुत ही कम हैं। इसका पहला कारण है कि यहाँ पैदा हुए भारतीय मूल के बच्चे, जिनके लिए स्पेनिश भाषा सीखना अनिवार्य है

और अगर वे यहाँ की कातालुन्या शहर में रहते हैं तो यहाँ की कैतलान भाषा भी सीखना अनिवार्य है क्योंकि यहाँ के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम यही भाषा है। इसके अलावा अभिभावक भी हिंदी भाषा के शिक्षण को इतना महत्त्व नहीं देते। साथ ही उनका यह सोचना है कि हिंदी बोलना ही काफी है, हिंदी लिखने, पढ़ने और सीखने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

3.24.3 स्पेन में हिंदी शिक्षण :-

सन् 2000 में एशियन स्टडीज़ सेंटर की स्थापना हुई। वय्यादोलिद के विश्वविद्यालय एशियन स्टडीज़ ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के सौजन्य से वय्यादोलिद, स्पेन में 15-17 मार्च, 2012 को विदेशी भाषा के रूप में 'हिंदी शिक्षण परिदृश्य:' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की। भारतीय दूतावास माद्रिद और कासा दे ला इंडिया के पूर्ण सहयोग से ही स्पेन में पहली संगोष्ठी का सफल आयोजन हुआ।

इस केंद्र में प्राचीन तथा आधुनिक भारत के आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक पक्षों के बारे में कई संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। वय्यादोलिद विश्वविद्यालय भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से भारतीय अध्ययन में एक स्नातकोत्तर डिग्री आरंभ करने जा रहा है, जो क्रियान्वयन के अंतिम चरण में है। हिंदी भाषा के अध्यापन की दिशा में भी वय्यादोलिद विश्वविद्यालय अग्रणीय है। सन् 2004 में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सहयोग से वय्यादोलिद विश्वविद्यालय में विभिन्न स्तरों पर हिंदी भाषा का अध्यापन शुरू हुआ।[21]

भारत तथा स्पेन के मध्य सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाने के लिए सन् 2003 में स्पेन में वय्यादोलिद की नगर परिषद्, वय्यादोलिद विश्वविद्यालय तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सौजन्य से कासा दे ला इंडिया की स्थापना की गई, जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। स्पेन तथा

भारत के संबंध तीव्रता से बढ़ रहे हैं और यह विकास शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग में दिखाई देना चाहिए।

स्पेनिश लोगों के हिंदी सीखने के कई कारण हैं। कुछ लोग भारतीय संस्कृति को करीब से जानने के लिए सीखते हैं, तो कुछ व्यापारिक आवश्यकताओं के कारण। नई पीढ़ी अपने शैक्षिक अनुभव को बढाने और अपने बायोडाटा को और आकर्षित बनाने के लिए हिंदी भाषा एक विदेशी भाषा के रूप में सीख रहे हैं। हिंदी सिनेमा की तरफ आकर्षित होने के कारण भी स्पेन के लोग हिंदी सिनेमा को ठीक से समझने के लिए भी कई लोग हिंदी सीखने आते हैं। यहाँ के लोग व्यापार या भारत भ्रमण के लिए भारत यात्रा करते हैं अतः हिंदी भाषा जानने इन्हें आवश्यक लगता है। और कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें भाषाओं के प्रति लगाव उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है।

हिंदी अध्ययन या अध्यापन के लिए स्पेन में स्पेनिश भाषा में हिंदी सीखने के लिए अच्छी पुस्तकों का अभाव है। ज्यादातर पुस्तकें अंग्रेजी में हैं और अंग्रेजी का स्तर यहाँ पहले ही कम है।

3.24.4 मीडिया :-

स्पेन में हिंदी सिनेमा तथा गीत बहुत पसंद किए जाते हैं। इसका उपयोग भाषा के शिक्षण में भी होता है।

3.25 खाड़ी देश :-

3.25.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

खाड़ी के देशों में से संयुक्त अरब इमरात, कुवैत, इराक, ओमान, बहरेन, कतार, यमन एवं साउदी अरेबिया में हिंदी रोज की बोलचाल की भाषा है। दुबई और शारजाह में धनी यूरोपीय और शासक वर्ग के अरबी लोगों को छोड दें तो लगभग हर व्यक्ति हिंदी बोलता और समझता है। यहाँ पर अधिकतर कर्मचारी भारत, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि देशों से हैं तथा इन लोगों की आपस की बोलचाल की

भाषा हिंदी ही है। दैनिक जरूरतों का काम करने वाले लोग जैसे - घरों में काम करने वाली महिलाएँ, टैक्सी ड्राइवर, घर की सफाई का काम करने वाले लोग, सब्जी बेचने वाले, सुपर मार्केट के कर्मचारी और सोने या कपड़े की दूकानवाले सब हिंदी समझते और बोलते हैं। यह सच है कि इसमें से ज्यादातर भारतीय हैं लेकिन जो लोग भारतीय नहीं हैं या जो भारतीय हैं पर जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है वे भी यहाँ हिंदी का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए श्रीलंकन महिलाएँ जो घर की सफाई का काम करती हैं उनमें से निन्यानबे प्रतिशत हिंदी बोलती हैं। टैक्सी ड्राइवर भले ही अरबी हो, पर वह हिंदी बोलना और समझना जानता है। यही नहीं पुलिस अस्पताल हवाई अड्डे और डाकखाने जैसे सभी सरकारी कार्यालयों में लगभग सभी अरबी मूल के लोग हिंदी बोलते हैं।

3.25.2 वर्तमान स्वरूप :-

हिंदी का विकास यहाँ एक बोली के रूप में हो रहा है। ज्ञान-विज्ञान साहित्य, संस्कृति और कला की समृद्ध भाषा के रूप में जो सम्मान उसको मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया है। वह प्रतिष्ठित लोगों की भाषा नहीं बन सकी है। हिंदी के नाटक, कवि सम्मेलन और फिल्मों को देखने जो आभिजात्य भीड़ उमडती है वह आपस में बातचीत के लिए भारतीयों की तरह अंग्रेजियत पर ही उतर आती है। खाडी के देशों में अरबी-हिंदी के संयुक्त प्रयासों को बढाने की जरूरत है। भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में अरबी की स्नातक या स्नातकोत्तर पढाई की व्यवस्था है। लेकिन यू.ए.ई. के किसी भी विश्वविद्यालय में हिंदी स्नातक या स्नातकोत्तर कक्षाओं में नहीं पढाई जाती है। अगर यहाँ इसी प्रकार हिंदी की व्यवस्था हो जाए तो हिंदी और अरबी के समकालीन साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की व्यवस्था हो सकती है। इस प्रकार की व्यवस्था दोनों देशों को साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

दुबई की हिंदी विद्वान श्रीमती पूर्णिमा वर्मन के अनुसार, यहाँ स्थित विदेशी महिलाएँ जो गृहणियाँ हैं, खाली समय में हिंदी लिखना, पढना या बोलना सीखना चाहती हैं। अनेक यूरोपीय व अमरीकी छात्र-छात्राएँ भारत-पर्यटन के लिए सामान्य हिंदी बोलने व लिखने-पढ़ने की इच्छा रखते हैं। कपडों के उद्योग तथा अन्य कार्यों में लगी अनेक महिलाएँ (पुरुष भी) हिंदी सीखना चाहते हैं ताकि वे अपने सहकर्मियों (जो अधिकतर हिंदी में बात करते हैं) के साथ हिंदी बोलने का मज़ा उठा सकें। इन्हें विभिन्न स्तरों की हिंदी पढाए जाने की व्यवस्था होनी चाहिए जो कि भारतीय दूतावास, या हिंदी संस्थाओं या फिर शिक्षा संस्थाओं की ओर से की जानी चाहिए। भारतीय दूतावास में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का हिंदी पुस्तकालय होना चाहिए, जो अन्य पुस्तकालयों से कंप्यूटर द्वारा जुडा हो और अगर कोई पुस्तक, पुस्तकालय में उपलब्ध न हो तो उसको एक हफ्ते के अंदर मंगाया जा सके। इसके अतिरिक्त यहाँ किताबों की दुकान चलाने वाले लोगों को हिंदी पुस्तके व पत्रिकाएँ बेचने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।[22] यदि ऐसा हो जाए तो हिंदी के प्रचार-प्रसार में तीव्र गति आएगी।

3.25.3 हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ :-

प्रवासी भारतीयों में ऐसे हजारों लोग हैं जो खाडी के देशों में हिंदी के विकास में संलग्न हैं। यू.ए.ई. में हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन करने वाली कई संस्थाएँ हैं। 'प्रतिबिंब' नामक एक नाटक संस्था भी है जो सन् 1996 से हर वर्ष एक हिंदी नाटक दुबई में संचालित करते आ रहे हैं। प्रतिबिंब नाम की इस अव्यावसायिक संस्था के अध्यक्ष महबूब हसन् रिजवी हैं। इस संस्था ने हिंदी की नाट्यकला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम किया है।

3.25.4 मीडिया :-

यू. ए. ई. में एफ. एम. के कम से कम तीन ऐसे चैनल हैं जिनपर चौबीसों घंटे हिंदी गाने समाचार और अन्य कार्यक्रम सुने जा सकते हैं। दिन भर इन पर अंतरराष्ट्रीय उत्पादों के विज्ञापन सुने जा सकते हैं। यह इस बात का सबूत है कि हिंदी खूब लोकप्रिय है और अंतरराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी वस्तु बेचने के लिए हिंदी के महत्त्व को गंभीरता से महसूस करती हैं। व्यापार में इस प्रकार हिंदी की अंतरराष्ट्रीय जरूरत को हिंदी की ताकत समझा जाना चाहिए।

खाड़ी देशों में काम कर रहे लोग जो कि विश्व के विभिन्न देशों से हैं, हिंदी सिनेमा के भरोसे पर ही इतने वर्षों तक अपने परिवारों से दूर रह पाते हैं वरना उनका समय बीतना मुश्किल हो जाता। हिंदी सिनेमा यहाँ के सिनेमाघरों में अकसर प्रदर्शित होते हैं तथा वे यहाँ के लोगों में बहुत प्रचलित हैं।

श्रीमती वर्मन की अपनी बहुचर्चित पत्रिकाएँ हैं - अभिव्यक्ति एवं अनुभूति जिसके चार अंक हर महीने प्रकाशित किए जाते हैं। इन अंकों को पुरालेखों में इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि वे आज वेब पर हिंदी के सबसे बड़ा साहित्य कोश बन गए हैं।

वेब पर एक 'मध्यपूर्व हिंदी समिति' भी है। इस वेब साइट को कुवैत में रहने वाले जितेंद्र चौधरी चलाते हैं। इसमें अपना खाता खोलने के बाद आप कोई भी महत्त्वपूर्ण लेख या सुझाव प्रकाशित कर सकते हैं। इसके माध्यम से मध्यपूर्व के लेखकों, शिक्षाविदों और हिंदी कर्मियों को जोडा जा सकता है। इस वेब समिति के अंतर्गत हम स्कूलों की अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता या कहानी प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं। इस समिति की सदस्यता निःशुल्क है।

निष्कर्ष :-

इस तरह हिंदी शिक्षण के संदर्भ में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में हिंदी शिक्षण के वर्तमान स्वरूप को रेखंकित तो कर सकते हैं परंतु इसके लिए विविध संस्थाओं का योगदान भी महत्त्वपूर्ण साबित हो गया है। हिंदी शिक्षण के प्रचार एवं प्रसार में मीडिया की भूमिका महत्त्वपूर्ण एवं विशेष है। वर्तमान काल में मीडिया के माध्यमों के विस्तार की गति बहुत तेज है उस के फलस्वरूप विश्व हिंदी शिक्षण की स्थिति भी काफी विकसित होने की संभावनाएँ हैं।

संदर्भ संकेत

1. **विश्व मंच पर हिंदी - नये आयाम**, डॉ. 'बिंदु' विंदेश्वरी अग्रवाल, पृष्ठ क्र. 68
2. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, आ. द्विवेदी श्रीनाथ प्रसाद, पृष्ठ क्र. 40
3. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. पांडेय श्याममनोहर, पृष्ठ क्र. 88
4. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. दुबे रकेश बी., पृष्ठ क्र. 51
5. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2014**, डॉ. श्रीवास्तव दिनेश, पृष्ठ क्र. 19
6. **गगनांचल - 2012**, वर्मा अनीता, पृष्ठ क्र. 153
7. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. श्लोम्पेर गेनादी, पृष्ठ क्र. 80
8. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. मार्कोवा डैग्मर, पृष्ठ क्र. 164
9. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. पांडेय इंदुप्रकाश, पृष्ठ क्र. 84
10. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2012**, 'शरद आलोक' सुरेशचंद्र शुक्ल, पृष्ठ क्र. 42
11. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2010**, अवस्थि पुष्पिता, पृष्ठ क्र. 63
12. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2010**, नारायण सुनीता, पृष्ठ क्र. 87
13. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. स्ताशिक दानूता, पृष्ठ क्र. 131
14. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, महापात्र अपर्णा क्षीरसागर, पृष्ठ क्र. 76
15. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. सत्यकाम, पृष्ठ क्र. 107
16. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. मिहायलोव मिहईल, पृष्ठ क्र. 103
17. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. मायरोनिवा ओलेना, पृष्ठ क्र. 123
18. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, प्रो. पॉपरलेन सबिना, पृष्ठ क्र. 154
19. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, डॉ. शर्मा प्रमोद कुमार, पृष्ठ क्र. 157
20. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2014**, श्री सिंह शिव कुमार, पृष्ठ क्र. 156

21. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2011**, प्रो. कुमारन विजय, पृष्ठ क्र. 82

22. **विश्व हिंदी पत्रिका - 2009**, वर्मन पूर्णिमा, पृष्ठ क्र. 113

अध्याय चार

हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में संलग्न संस्थाएँ

प्रस्तावना

4.1 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी वाराणसी (उत्तर प्रदेश, भारत)

4.1.1 उद्देश्य

4.1.2 पुस्तकालय

4.1.3 प्रकाशन

4.2 दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

4.2.1 उद्देश्य

4.2.2 सभा की शाखाएँ

4.3 राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा

4.3.1 उद्देश्य

4.3.2 संचालित परीक्षाएँ

4.3.3 राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से सम्बद्ध संस्थाएँ

4.4 विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

4.4.1 हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में भारत सरकार का योगदान

4.4.2 हिंदी शिक्षण

4.4.3 विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजना

4.5 केंद्रीय हिंदी संस्थान

4.5.1 केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के कार्य

4.5.2 संस्थान के कार्यक्षेत्र

4.5.2.1 शिक्षणपरक कार्यक्रम

4.5.2.1.1 विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण

4.5.2.2 शिक्षक प्रशिक्षणपरक कार्यक्रम

4.5.2.3 नवीकरण एवं संवर्द्धनात्मक कार्यक्रम

4.5.2.4 अनुसंधानपरक कार्यक्रम

4.5.3 शिक्षण सामग्री निर्माण और भाषा विकास

4.5.4 संस्थान के प्रकाशन

4.5.5 प्रमुख योजनाएँ

4.5.5.1 हिंदी कार्पोरा परियोजना

4.5.5.2 सी.डी. निर्माण परियोजना

4.5.5.3 हिंदी लोक शब्दकोश परियोजना

4.5.5.4 लोक कथाओं के संकलन व उनके हिंदी अनुवाद के प्रकाशन की परियोजना

4.5.5.5 लघु हिंदी विश्वकोश

4.5.6 विस्तारपरक कार्यक्रम

4.5.7 हिंदी सेवी सम्मान योजना

4.5.8 पुस्तकालय तथा परिसर

4.5.9 संस्थान से संबद्ध प्रशिक्षण महाविद्यालय

4.5.10 संस्थान की परियोजनाएँ

4.5.11 भविष्य की योजनाएँ

4.6 विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

4.6.1 सचिवालय की पृष्ठभूमि

4.6.2 संगठन

4.6.3 परिकल्पना और उद्देश्य

4.6.4 लक्ष्य

4.6.5 उद्देश्य

4.6.6 पत्र-पत्रिकाएँ

4.6.6.1 विश्व हिंदी पत्रिका

4.6.6.2 विश्व हिंदी समाचार

4.6.7 कार्यारंभ दिवस

4.7 भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (इंडियन काउन्सिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स-आय.सी.सी.आर.)

4.7.1 परिषद् के उद्देश्य

4.7.2 विदेशों में स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की पीठें

4.7.3 विदेश में कार्य कर रही भारतीय अध्ययन पीठों की सूची

4.7.4 शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के दौरान कार्य करना प्रारंभ करने वाली नई पीठों की सूची

4.8 महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

4.8.1 उद्देश्य

4.8.2 दृष्टि

4.8.3 भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय चार

हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में संलग्न संस्थाएँ

प्रस्तावना :-

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता-आंदोलन के पश्चात जन साधारण में जागृति एवं राष्ट्रीय भावना को फैलाने के लिए एक भाषा अर्थात जनभाषा की आवश्यकता तीव्र रूप से अनुभव की जाने लगी और जननायकों ने राष्ट्रभाषा हिंदी को राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा साधन मानकर उसके देशव्यापी प्रचार की योजनाएँ बनाईं। महात्मा गाँधीजी ने राष्ट्रभाषा-प्रचार कार्य को राष्ट्र-निर्माण का रचनात्मक विधायक कार्य माना एवं उसके व्यापक प्रचार के लिए कई संस्थाओं की स्थापना की। महर्षि दयानंद-सरस्वती ने आर्य-समाज के कार्यों के लिए हिंदी को ही अपनाया। अनेक संस्थाओं का इस कार्य में अनमोल सहयोग प्राप्त हुआ। राष्ट्रभाषा-प्रचार-आंदोलन में देश की हिंदी प्रचार संस्थाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान एवं योगदान रहा है। हिंदी प्रचार का सेवाकार्य करनेवाली कुछ महत्त्वपूर्ण देशव्यापी संस्थाओं का संक्षिप्त परिचय इस अध्याय में दिया जा रहा है, साथ ही वर्तमान में हिंदी के विश्वव्यापी प्रचार में संलग्न संस्थाओं का संक्षिप्त ब्यौरा भी यहाँ दिया गया है। विदेशों में हिंदी की पढाई, उसके विकास और प्रचार में भारत के उच्चायोगों - दूतावासों की बडी भूमिका होती है। जिन देशों में भारतीय बहुत बडी संख्या में बस गए हैं वहाँ भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर) द्वारा भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोले गए हैं जहाँ हिंदी शिक्षण की व्यवस्था भी है। इन दशों में निजी और सामाजिक संस्थाएँ भी हिंदी के प्रचार में लगी होती हैं।

4.1 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी वाराणसी (उत्तर प्रदेश, भारत) :-

क्वीन्स कॉलेजिएट स्कूल की पाँचवीं कक्षा के कुछ उत्साही छात्रों द्वारा 10 मार्च 1893 की एक सभा में राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का प्रचार करने के लिए इस प्रचार-संस्था की स्थापना हुई।

4.1.1 उद्देश्य :-

(क) विश्व में हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार तथा उसे उचित अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्न करना।

(ख) हिंदी भाषा की उन्नति करना, आवश्यक विषयों के ग्रंथों से भाषा को अलंकृत करना तथा उसके प्राचीन भंडार की रक्षा करना।

(ग) हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न करना।

(घ) हिंदी भाषा, नागरी लिपि तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा और उन्नति हो ऐसा संग्रहालय खोलने का नियोजन करना।

(ङ) सभा के उद्देश्यों की पूर्ती के लिए उपयुक्त और आवश्यक हों ऐसे कार्य करना।[1]

4.1.2 पुस्तकालय :-

सभा का पुस्तकालय एक विशाल भवन में है जिसे अनेक मूर्द्धन्य साहित्यकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण संग्रह प्रदान किया है। यह पुस्तकालय हिंदी के शोध छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है तथा वे इसका पूरा लाभ उठाते हैं।

4.1.3 प्रकाशन :-

सभा, हिंदी की सर्वाधिक प्राचीन पत्रिका 'नागरी प्रचारिणी-पत्रिका' का अब तक अखंड रूप से प्रकाशन करती आ रही है। यह मुख्यतः शोध-पत्रिका है। 'हिंदी शब्द-सागर' एवं 'संक्षिप्त शब्दसागर' सभा के सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अविरत चलने वाले प्रकाशनों में से हैं। इनके अतिरिक्त अंग्रेजी-हिंदी कोश 'हिंदी वैज्ञानिक शब्दावली' नामक भी सभा का एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है।

4.2 दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास :-

महात्मा गाँधीजी की इच्छा थी कि दक्षिण भारत में हिंदी का प्रचार दक्षिणवासियों द्वारा ही हो, अतः उनकी प्रेरणा के अनुसार स्वतंत्र संस्था की स्थापना का निर्णय लिया गया तथा सन् 1927 में मद्रास(सम्प्रति चेन्नई) में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना हुई।

4.2.1 उद्देश्य :-

इस सभा का सदा से ही मुख्य उद्देश्य रहा है राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार द्वारा भारत की एकता बनाए रखना। सभा के मुख्य कार्य हैं - प्रांतीय भाषाओं के सहयोग से हिंदी भाषा का विकास करना, प्रांतों में प्रांतीय भाषाओं को व्यवहार में लाना, अंतरप्रांतीय और केंद्रीय कार्यों में हिंदी का प्रयोग कराने के लिए जनता में हिंदी का प्रचार करना तथा हिंदी के अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए अन्य आवश्यक प्रयत्न करना।[2]

4.2.2 सभा की शाखाएँ :-

सभा का कार्य अति विस्तृत हो जाने के कारण उसको सुसंगठित करने के विचार से शाखाएँ खोली गईं, जो हैं आंध्रराष्ट्र हिंदी प्रचार संघ-बेजवाडा, तमिलनाडु हिंदी प्रचार सभा-तिरुचिरापल्ली, केरल हिंदी प्रचार सभा-एरणाकुलम, कर्नाटक हिंदी प्रचार सभा-धारवाड़। उसी प्रकार दिल्ली में भी सभा की एक शाखा कार्य कर रही है।

राष्ट्रभाषा हिंदी का क्रम-बद्ध अध्ययन हो इसलिए सन् 1922 से सभा परीक्षाएँ चलाती हैं, जोकि इस प्रकार हैं - प्राथमिक, माध्यमा, राष्ट्रभाषा, प्रवेशिका, विशारद-पूर्वार्द्ध, विशारद-उत्तरार्द्ध, प्रवीण और हिंदी प्रचारक। इनके अतिरिक्त सभा 'हिंदुस्तानी पहली' और 'हिंदुस्तानी दूसरी' परीक्षाएँ भी चलाती है।

दक्षिण में अन्य भी कुछ संस्थाएँ हिंदी प्रचार के कार्य में सलग्न हैं, जिनके नाम हैं - तिरुवांकुर हिंदी प्रचार सभा-तिरुअनंतपुरम, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्-बंगलोर,

साहित्यानुशीलन समिति-मद्रास, कर्नाटक हिंदी प्रचार सभा-धारवाड़ और हिंदी प्रचार सभा- हैदराबाद।

4.3 राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा :-

यह समिति भारत के महाराष्ट्र प्रदेश के वर्धा शहर में है।

4.3.1 उद्देश्य :-

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना सन् 1936 में महात्मा गाँधीजी की प्रेरणा से हुई। दक्षिण भारत के अतिरिक्त अन्य हिंदीतर प्रदेशों में अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से इस समिति की स्थापना हुई। इस समिति का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाना एवं राष्ट्रीय भावना को फ़ैलाना था।

4.3.2 संचालित परीक्षाएँ :-

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा निम्नलिखित परीक्षाएँ संचालित की जाती हैं - राष्ट्रभाषा-प्राथमिक, राष्ट्रभाषा-प्रारंभिक, राष्ट्रभाषा-प्रवेश, राष्ट्रभाषा-परिचय, राष्ट्रभाषा-कोविद, राष्ट्रभाषा-रत्न, राष्ट्रभाषा-आचार्य, अध्यापन-कोविद, आलेखन-कोविद, अध्यापन-विशारद, बातचीत, महाजनी-प्रवेश तथा प्रांतीय भाषा-प्रारंभिक प्रवेश परीक्षा।

4.3.3 राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से सम्बद्ध संस्थाएँ :-

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - पुणे, गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - अहमदाबाद, बम्बई प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा - मुंबई, विदर्भ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - नागपुर, उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा - कटक, आसाम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - शिलौंग, पश्चिम बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - कोलकता, मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - इम्फाल, दिल्ली प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - दिल्ली, सिंध राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - जयपुर, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार

समिति - भोपाल, कर्नाटक प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - हुबली, मराठवाडा राष्ट्रभाषा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - औरंगाबाद, बेलगाँव जिला राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - बेलगाँव, गोवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - मडगाँव, जम्मू-कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - श्रीनगर, पंजाब प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - अबोहर, अंदमान निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - पोर्ट ब्लेयर, हिंदी प्रचार सभा - हैदराबाद।

अन्य हिंदी प्रचार संस्थाएँ भी हैं। मुंबई हिंदी विद्यापीठ - मुंबई, ग्यानलता मंडल तथा भारतीय विद्यापीठ - मुंबई, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा - पुणे, गुजरात विद्यापीठ - अहमदाबाद, हिंदुस्तानी प्रचार सभा - वर्धा, अखिल भारतीय हिंदी परिषद् - नई दिल्ली, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद् - बंगलोर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् - पटना, हिंदी विद्यापीठ - देवधर, हिंदुस्तानी एकेडमी - प्रयाग, महिला विद्यापीठ - प्रयाग, भारतीय साहित्य सहकार - काशी, हिंदी प्रचार संघ - पुणे, राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल - सूरत, पूर्व भारत प्रचार सभा - कोलकता, आंध्रराष्ट्र हिंदी प्रचार संघ - विजयवाडा, तमिलनाडु हिंदी प्रचार सभा - तिरुचिरापल्ली, कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा - धारवाड़, केरल हिंदी प्रचार सभा - कोचीन, असम प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति - गौहाटी, साहित्य अकादमी - नई दिल्ली, भारतीय हिंदी परिषद् - प्रयाग।[3]

4.4 विदेश मंत्रालय, भारत सरकार :-

4.4.1 हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में भारत सरकार का योगदान :-

भारत सरकार निरंतर हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार में प्रयासरत है। विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केंद्रों के माध्यम से 'विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार योजना' के तहत भारत सरकार का विदेश मंत्रालय, विदेशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने की सक्रीय भूमिका निभा रहा है।

इस योजना के तहत मंत्रालय अपने संबंधित मिशनों के माध्यम से हिंदी शिक्षण तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुडी शैक्षिक संस्थाओं तथा गैर-सरकारी संगठनों

आदि के हिंदी शिक्षण तथा प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों के लिए वित्तीय अनुदान तथा अन्य मांगों के संबंधी अनुरोधों को पूरा करने का प्रयास करता है। उनकी अन्य माँगों को भी विदेश मंत्रालय पूरा करने का प्रयास करता है लेकिन इन प्रस्तावों को मिशनों के माध्यम से ही विदेश मंत्रालय स्वीकार करता है क्योंकि कभी-कभी माँग इतनी ऊंची होती है कि उन्हें पूरा करना अकेले भारत सरकार के बस की बात नहीं होती उसके लिए उस देश की सरकार का भी उतना ही योगदान आवश्यक होता है उदाहरण के लिए पाठ्यक्रम में हिंदी का समावेश हो। कई देश ऐसे हैं जहाँ हिंदी का शिक्षण हिंदी के केंद्रों अथवा स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा होता है चूँकि उस देश की अपनी भी कई भाषाएँ हैं वहाँ हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल करना असंभव हो जाता है जब तक उस देश की सरकार इसकी अनुमति न दे।

4.4.2 हिंदी शिक्षण :-

आज वैश्विक मंच पर भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है और व्यापारिक दृष्टि से भारत के महत्त्व को देखते हुए भी कई देशों की सरकारें हिंदी को किसी न किसी स्तर और रूप में प्रोत्साहित कर रही हैं। हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार की दृष्टि से हिंदी शिक्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है इसलिए मंत्रालय हिंदी शिक्षण कार्यक्रमों के लिए विभिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा उनकी माँग पर हिंदी की शिक्षण सामग्री/पुस्तकें/सोफ्टवेयर आदि की आपूर्ति अपने मिशनों के माध्यम से करता है। विदेश मंत्रालय के प्रयास और मिशनों के सहयोग से आज कई देशों में हिंदी बोली और समझी जा रही है साथ ही साथ वहाँ के स्थानीय विश्वविद्यालय, स्कूल संस्थाएँ आदि अपने पाठ्यक्रम में हिंदी को विभिन्न स्तरों में शामिल कर रहे हैं और इस कार्य में स्थानीय सरकारें भी योगदान दे रहीं हैं।

4.4.3 विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजना :-

विदेश मंत्रालय की योजना 'विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार' के तहत कई देशों में हिंदी शिक्षण का कार्य चल रहा है जिसमें मुख्यतः शामिल हैं - पारामारिबो, कैंडी, हो ची मिन्ह सिटी, येरेवान, उलान बतार, बुडापेस्ट तथा बाकू आदि। इन देशों में संबंधित शिक्षकों को मानदेय भी प्रदान किया जाता है। हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की गति प्रवासी देशों में अन्य देशों के मुकाबले काफी अधिक तथा अच्छी है। इसका मूल कारण है - प्रवासी भारतीय समुदायों द्वारा अपनी पुरानी भाषा और अपनी संस्कृति से लगाव और इसके प्रति आदर, झुकाव तथा इसे जीवित रखना। उदहारण - मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, गयाना, सूरीनाम आदि।

भारत सरकार का विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार की दिशा में मिशनों के माध्यम से विश्व हिंदी सम्मेलनों तथा अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों के आयोजन को प्रायोजित करता है। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों के आयोजन का मुख्य हेतु है उस क्षेत्र के देशों के समक्ष, हिंदी शिक्षण में आने वाली समस्याओं से अवगत होना। जिस देश में इनका आयोजन किया जाता है उस भूखंड के आस-पास के देशों के हिंदी कर्मियों के/शिक्षकों के/छात्रों की समस्याओं को जाना जा सके। एक दूसरे के साथ विचार-विमर्श किया जा सके। विचारों का आदान-प्रदान हो सके यही इन सम्मेलनों का उद्देश्य और महत्त्व भी है। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय सम्मलेन, हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार की ही पहल का नतीजा है।[4]

भारत सरकार अकेले ही पूरे विश्व में हिंदी का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकती इसके लिए विदेशों में स्थित विश्वविद्यालयों, संगठनों/संस्थाओं के साथ ही यह संभव है।

संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा का सम्मान दिलाना तथा विश्व के सभी देशों में हिंदी को पहुँचाना यही भारत सरकार के विदेश मंत्रालय का मुख्य हेतु है और इसके लिए वह निरंतर कार्यशील है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को

आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भारत सरकार को उन सभी हिंदी प्रेमी देशों का समर्थन, सहयोग एवं योगदान मिले तो यह कार्य आसान हो जाएगा।

4.5 केंद्रीय हिंदी संस्थान :-

सन् 1961 में केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना हुई। भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग द्वारा स्थापित स्वायत्तशासी संगठन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल द्वारा संचालित केन्द्रीय हिंदी संस्थान, अखिल भारतीय स्तर की एक स्वायत्तशासी शैक्षिक संस्था है। संस्थान का मुख्यालय आगरा में है। इसके निम्नलिखित आठ सक्रिय केंद्र हैं - दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद।

संस्थान में नियमित रूप से कार्यरत 19 प्रोफ़ेसर, 14 रीडर, 10 प्रवक्ता, 11 अनुसंधान सहायक हैं। इनके अलावा अनुबंध पर 21 प्राध्यापक कार्यरत हैं।

4.5.1 केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के कार्य :-

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल ने अपने सहमति पत्र (मेमोरैंडम) में कुछ संकल्प एवं कार्य निर्धारित किए हैं, जो इस प्रकार हैं -

(क) भारतीय संविधान के उल्लिखित परिच्छेद 351 के अनुपालन में अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी का विकास करते हुए ऐसे पाठ्यक्रम प्रस्तुत, संचालित एवं उपलब्ध करना जो इस भाषा इस भाषा के विकास और प्रसार की दृष्टि से उपयोगी हों।

(ख) विभिन्न स्तरों पर हिंदी की शिक्षण गुणवत्ता सुधारना, हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, हिंदी भाषा और साहित्य के उच्चस्तर अध्ययन का प्रबंध करना तथा हिंदी के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के

तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित करना और हिंदी भाषा एवं शिक्षण विषयक विविध अनुसंधान कार्यों का आयोजन करना।

(ग) अपने विभिन्न पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों की परीक्षा लेना तथा उपाधि प्रदान करना।

(घ) विभिन्न स्तरों की पाठ्यपुस्तकें और अनुसंधान पुस्तकें तैयार करना और एकत्रित करना।

(ङ) संस्थान के उद्देश्यों के अनुरूप आवश्यकतानुसार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना।

(च) संस्थान की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुरूप अन्य उन संस्थानों के साथ जुड़ना या सदस्यता ग्रहण या सहयोग करना या सम्मिलित होना जिनके उद्देश्य संस्थान के उद्देश्यों से मिलते जुलते हों।

(छ) समय-समय पर नियमानुसार अध्येतावृत्ति (फेलोशिप), छात्रवृत्ति और पुरस्कार, सम्मान पदक की स्थापना कर हिंदी से संबंधित कार्यों को प्रोत्साहित करना आदि।[5]

4.5.2 संस्थान के कार्यक्षेत्र :-

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपर्युक्त संकल्पों, उद्देश्यों एवं कार्यों को संपन्न करने के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान ने अपनी गतिविधियों का निरंतर विस्तार किया है, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

4.5.2.1 शिक्षणपरक कार्यक्रम :-

4.5.2.1.1 विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण :-

भारत सरकार की विदेशों में हिंदी प्रचार-प्रसार योजना एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत पूरे विश्व में 100 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। विदेशी छात्रों के

लिए अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में निम्नलिखित पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं -

हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण पत्र, हिंदी भाषा दक्षता डिप्लोमा, हिंदी भाषा दक्षता उच्च डिप्लोमा, हिंदी साहित्य एवं भाषिक अनुप्रयोग डिप्लोमा, हिंदी शोध डिप्लोमा, संध्यकालीन पाठ्यक्रम (स्व-वित्तपोषित), स्नातकोत्तर अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, स्नातकोत्तर जनसंचार एवं पत्रकारिता, परा-स्नातकोत्तर अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान तथा हिंदी रोज़गार परियोजना।

उपर्युक्त योजना के अंतर्गत बेरोजगार नौजवनों के लिए अति अल्प पंजीकरण राशी पर तीन महीने के फिलहाल चार पाठ्यक्रम हैं, जो इस प्रकार हैं -

(क) मीडिया एवं सम्प्रेषण कला

(ख) विक्रय एवं विपणन(मार्केटिंग) कौशल

(ग) हिंदी प्रकाशन तकनीक और प्रूफ रीडिंग

(घ) मीडिया और रचनात्मक लेखन

रोज़गार परियोजना पाठ्यक्रमों का संचालन आगरा, दिल्ली एवं गुवाहाटी में किया जा रहा है।

4.5.2.2 शिक्षक प्रशिक्षणपरक कार्यक्रम :-

(क) हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के शिक्षकों और हिंदी शिक्षण के लिए इच्छुक विद्यार्थियों के लिए अध्यापक शिक्षा विभाग के अंतर्गत कक्षा माध्यम से निम्नलिखित एकवर्षीय प्रशैक्षणिक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं -

(i) हिंदी शिक्षण निष्णात - एम.एड. स्तरीय पाठ्यक्रम (आगरा)

(ii) हिंदी शिक्षण पारंगत - बी.एड. स्तरीय पाठ्यक्रम (आगरा और हैदराबाद)

(iii) हिंदी शिक्षण प्रवीण - बी.टी.सी. स्तरीय पाठ्यक्रम (आगरा, हैदराबाद, दीमापुर व गुवाहाटी)

(iv) त्रिवर्षीय हिंदी शिक्षण डिप्लोमा - हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, दीमापुर (नागालैंड) त्रिवर्षीय हिंदी शिक्षण डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रथम/द्वितीय वर्ष का अध्ययन पूरा कर लेने के बाद यहाँ के विद्यार्थियों के लिए तृतीय वर्ष का शिक्षण कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा में होता है।

(v) विशेष गहन हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम - यह पाठ्यक्रम भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों के अप्रशिक्षित हिंदी अध्यापकों के लिए है। यह पाठ्यक्रम अभी दीमापुर केंद्र में संचालित है।

(ख) दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम (स्व-वित्तपोषित)

हिंदीतर भाषी राज्यों के सेवारत हिंदी अध्यापकों के लिए पत्राचार विभाग के अंतर्गत 24 माह की अवधी का हिंदी शिक्षण पारंगत (पत्राचार-सह-संपर्क पाठ्यक्रम) का संचालन मुख्यालय आगरा से किया जाता है।

4.5.2.3 नवीकरण एवं संवर्द्धनात्मक कार्यक्रम :-

हिंदीतर राज्यों के अध्यापकों के लिए केंद्रों द्वारा नवीकरण कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इसका मार्गदर्शन नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग करता है।

यह विभाग गुजरात, कर्नाटक, असम, मिजोरम, मणिपुर राज्य के हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्रों के लिए 30 दिवसीय भाषा संवर्द्धनात्मक कार्यक्रम तथा सिक्किम राज्य के लिए 21 दिवसीय नवीकरण कार्यक्रम आगरा में चलाता है। यह विभाग सिक्किम में 21 दिनों का भाषा संचेतना विकास शिबिर भी संचालित करता है।

4.5.2.4 अनुसंधानपरक कार्यक्रम :-

केंद्रीय हिंदी संस्थान का एक प्रमुख लक्ष्य निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यों को निरंतर अग्रसर करना है -

(क) हिंदी शिक्षण के अधुनातन प्रविधियों के विकास के लिए शोध

(ख) हिंदी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्यतिरेकी अध्ययन

(ग) हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान

(घ) हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण और भाषा-प्रौद्यागिकी के विकास के उद्देश्य से अनुसंधान

(ङ) हिंदी का समाज-भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण और अध्ययन

(च) प्रयोजनपरक हिंदी से संबंधित शोधकार्य

उपर्युक्त अनुसंधानपरक कार्यों के दौरान द्‌वितीय भाषा एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए उपयोगी शिक्षण सामग्री का निर्माण भी संस्थान द्‌वारा किया जाता है।

4.5.3 शिक्षण सामग्री निर्माण और भाषा विकास :-

केंद्रीय हिंदी संस्थान शिक्षण-प्रशिक्षण और अनुसंधान के अलावा हिंदीतर राज्यों के विद्‌यार्थियों के लिए हिंदी पाठ्‌यपुस्तकों, कोश और आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए हिंदी शिक्षण के लिए उपयोगी सामग्री का निर्माण करता है -

(क) हिंदीतर राज्यों और जनजाति क्षेत्र के विद्‌यालयों के लिए हिंदी शिक्षण सामग्री निर्माण

(ख) हिंदीतर राज्यों के लिए हिंदी का व्यतिरेकी व्याकरण एवं द्‌विभाषी अध्येता कोशों का निर्माण

(ग) विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण पाठ्‌यपुस्तकों का निर्माण

(घ) कंप्यूटर साधित हिंदी भाषा शिक्षण सामग्री का निर्माण

(ङ) दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हिंदी शिक्षण संबंधी पाठ्य सामग्री का निर्माण

(च) हिंदी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं/त्रिभाषी शब्दकोशों और विश्वकोश का निर्माण

4.5.4 संस्थान के प्रकाशन :-

संस्थान द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य, भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, कोश विज्ञान आदि से संबंधित विभिन्न विषयों पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। अब तक 150 से अधिक पुस्तकें संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं। साथ ही विभिन्न स्तरों एवं अनेक प्रयोजनों की पाठ्यपुस्तकों, सहायक पुस्तकों तथा अध्यापक निर्देशिकाओं का भी प्रकाशन किया गया है।

संस्थान द्वारा निम्नलिखित पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है -

(क) 'गवेषणा' - अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, हिंदी शिक्षण और साहित्य की त्रैमासिक शोध पत्रिका।

(ख) 'मीडिया' - दिल्ली केंद्र की त्रैमासिक पत्रिका (सन् 2006 से प्रकाशन)।

(ग) 'समन्वय पूर्वोत्तर' - गुवाहाटी, शिलांग एवं दीमापुर केंद्रों की संयुक्त वार्षिक पत्रिका।

(घ) 'समन्वय दक्षिणायन' - हैदराबाद और मैसूर केंद्रों के संयुक्त वार्षिक पत्रिका।

संस्थान का त्रैमासिक बुलेटिन है 'संस्थान समाचार'।

उपर्युक्त के अलावा विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों की पत्रिकाएँ हिंदी विश्व भारती और समन्वय का प्रकाशन वार्षिक रूप से होता है।

4.5.5 प्रमुख योजनाएँ :-

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अनुसंधान व भाषा विकास विभाग एवं सूचना व भाषा प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संचालित कुछ विशेष परियोजनाएँ इस प्रकार हैं -

4.5.5.1 हिंदी कार्पोरा परियोजना :-

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों से और ऑनलाइन सामग्री-संकलन का कार्य किया जा रहा है। त्रिवर्षीय परियोजना के दूसरे वर्ष के अंतर्गत विभिन्न विषय क्षेत्रों के तीन करोड़ शब्दरूप संकलन का लक्ष्य पूरा कर लिया गया है। अब संकलित सामग्री का ऑटोमेटिक व्याकरणिक कोटि निर्धारण किया जा रहा है। इस संकलित सामग्री का उपयोग करते हुए हिंदी की आधारभूत शब्दावली का निर्माण किया जा चुका है।

4.5.5.2 सी.डी. निर्माण परियोजना :-

(क) इस योजना के अंतर्गत कई चरणों में कार्य प्रस्तावित हैं। फिलहाल 22 साहित्यकारों की रचनाओं पर आधारित कविता आवृत्ति और संगीत की सी.डी. बन रही है। इन साहित्यकारों में कबीर, सूरदास, तुलसीदास, नज़ीर, ग़ालिब, फिराक गोरखपुरी, निराला, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, नागार्जुन, त्रिलोचन आदि प्रमुख हैं।

(ख) हिंदी भाषा शिक्षण के लिए मल्टीमीडिया सी.डी. का निर्माण तथा ई बुक तैयार करने की दिशा में प्रयास हो रहे हैं।

4.5.5.3 हिंदी लोक शब्दकोश परियोजना :-

इस महत्त्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत हिंदी परिवार की 48 बोलियों/भाषाओं के शब्दकोश निर्माण की योजना कार्यान्वित हो रही है ताकि लोक भाषाओं के उन शब्दों की रक्षा हो सके जिनमें अद्भुत नाद सौंदर्य और भाव सौंदर्य है। यह हिंदी की जड़ों को सुरक्षित करने की ही नहीं, हिंदी की अखंडता को भी मजबूत करने की योजना है। प्रथम चरण में ब्रज, अवधी, बुंदेली, भोजपरी, राजस्थानी और छत्तीसगढ़ी

के डिजिटल त्रिभाषीय लोक शब्दकोश निर्माण का कार्य नई तकनीक से किया जा रहा है।

4.5.5.4 लोक कथाओं के संकलन व उनके हिंदी अनुवाद के प्रकाशन की परियोजना:-

उत्तर-पूर्व की भाषाओं में बिखरी लोक कथाओं के संकलन और उनके हिंदी अनुवाद के प्रकाशन की परियोजना भी शुरू की जा चुकी है ताकि हिंदी के माध्यम से उत्तर-पूर्व के लोग अपनी साझी विरासत का संरक्षण कर सकें।

4.5.5.5 लघु हिंदी विश्वकोश :-

लघु हिंदी विश्वकोश का लगभग 1000 पृष्ठों में निर्माणकार्य हो रहा है।

4.5.6 विस्तारपरक कार्यक्रम :-

(क) संस्थान के मुख्यालय सहित विभिन्न केंद्रों में संपर्क, समन्वयन और वैचारिक आदान-प्रदान करने के उद्देश्य से विशेष व्याख्यान एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना।

(ख) संस्थान के विभिन्न केंद्रों और मुख्यालय में जन संपर्क, अखिल भारतीय संवाद एवं व्यापक भाषायी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के उद्देश्य से प्रतिवर्ष

(i) भारतीय प्रकाशन की समस्याओं

(ii) लघु पत्रिकाओं की समस्याओं

(iii) कला और साहित्य के अंतर्संबंध

(iv) स्त्री और

(v) दलित, पिछड़े वर्गों एवं आदिवासी साहित्य की समस्याओं पर पाँच विकास संगोष्ठियों का आयोजन करना।

इसके आलावा प्रतिवर्ष,

(i) भाषाविज्ञान

(ii) सूचना प्रौद्योगिकी

(iii) हिंदी शिक्षण

(iv) मीडिया एवं

(v) साहित्य के विषयों पर विभिन्न केंद्रों में पाँच राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन करना

(ग) विद्यार्थियों के लिए अखिल भारतीय हिंदी वाद-विवाद एवं रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करना।

(घ) विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना - हिंदी काव्य आवृत्ति, काव्य संगीत, प्रादेशिक एवं विश्व के विभिन्न देशों के लोकगीत-संगीत, काव्य - आधारित नृत्य एवं लघु नाटक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।

4.5.7 हिंदी सेवी सम्मान योजना :-

यह योजना सन् 1989 में प्रारंभ हुई। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के उन्नयन, विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु उत्कृष्ट कार्यों के लिए हर वर्ष 14 समर्पित विद्वानों को संस्थान द्वारा एक लाख रूपए, शॉल तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित/पुरस्कृत किया जाता है। इन पुरस्कारों का विवरण निम्न प्रकार है -

गंगाशरण सिंह पुरस्कार, गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, आत्माराम पुरस्कार, सुब्रह्मण्य भारती पुरस्कार, महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार तथा पद्मभूषण डॉ. मोटुरि सत्यनारायण पुरस्कार।

4.5.8 पुस्तकालय तथा परिसर :-

संस्थान का पुस्तकालय भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण और हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों की पुस्तकों के विशेषीकृत संग्रह की दृष्टि से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक है। इसमें लगभग एक लाख पुस्तकें उपलब्ध हैं और लगभग 75 पत्रिकाएँ (शोध एवं अन्य) पुस्तकालय में हर महीने आती है। इसका नया संदर्भ प्रभाग अद्वितीय है। हर महीने कवि/लेखकों की जन्म जयंती पर साहित्यिक परिचर्चा और सप्ताहव्यापी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।

4.5.9 संस्थान से संबद्ध प्रशिक्षण महाविद्यालय :-

हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण के स्तर को समुन्नत करने तथा पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने के उद्देश्य से हिंदीतर भाषी राज्यों के उत्तर गुवाहाटी(असम), आइजोल(मिजोरम), मैसूर(कर्नाटक), दीमापुर(नागालैंड) के राजकीय हिंदी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों को संस्थान से संबद्ध किया गया है। यहाँ संस्थान के पाठ्यक्रम संचालित होते हैं।

4.5.10 संस्थान की परियोजनाएँ :-

(क) संस्थान हिंदी के बहुआयामी विकास के लिए क्रांतिकारी परियोजनाएँ संचालित कराता चला आ रहा है, जैसे - भारतीय बहुभाषिक परिवेश और हिंदी समाज का भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण।

(ख) श्रीलंका के कोलंबो में स्थापित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने सिंहली विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान का पाठ्यक्रम सन् 2007-08 में शुरू कर दिया है। अफ़ग़ानिस्तान के नंगरहार विश्वविद्यालय (जलालाबाद) में संस्थान द्वारा निर्मित बी.ए का पाठ्यक्रम सन् 2007-08 से प्रारंभ हो चुका है। इसी तरह के पाठ्यक्रम दुनिया के अन्य देशों में शुरू करवाने की योजना है।

(ग) पाठ्यक्रमों में वृद्धि - संस्थान के विभिन्न केंद्रों पर कुछ नए पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की प्रक्रिया चल रही है। इसके साथ ही शिक्षण

पद्धति की गुणवत्ता, नए तकनिकी संस्थानों का प्रयोग और विद्यार्थियों और प्रशिक्षणार्थियों की संख्या बढाई जानी है ताकि देश के व्यापक क्षेत्र संस्थान के दायरे में आएँ।

4.5.11 भविष्य की योजनाएँ :-

(क) आधुनिक संचार माध्यमों और सूचना प्रौद्योगिकी का हिंदी भाषा शिक्षण और दूर शिक्षा यूनिकोड का व्यापक प्रचार और प्रसार।

(ख) एक विशाल पोर्टल और बहुभाषी वेबसाइट का निर्माण।

(ग) लोकप्रिय संस्कृति के महत्त्व का रेखांकन।

(घ) फिल्म, लोक नाटी का निर्माण-मंचन, कवि सम्मेलन, मुशायरों का आयोजन।

(ङ) हिंदी की विभिन्न बोलियों का संरक्षण तथा देश-विदेश में संस्थान के केंद्रों की स्थापना।

(च) विश्वभर की संस्थाओं और विश्वविद्यालयों से सकर्मक जुड़ाव।

(छ) मानकीकृत पाठ्यक्रम की निर्मिति एवं संचालन।

(ज) विश्व की महान साहित्यिक कृतियों और ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथों का हिंदी अनुवाद।

(झ) साधनाभाव वाली हिंदी संस्थाओं को हिंदी के विकास के लिए अनुदान प्रदान करना।[6]

अतः उपर्निर्दिष्ट सूचनाओं एवं जानकारी द्वारा यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय हिंदी संस्थान का विश्व में हिंदी के प्रसार में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। ये संस्थान विश्व के उन सभी देशों में जहाँ हिंदी है, के हिंदी के छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए हिंदी का उच्चस्तरीय शिक्षण प्रदान करता है। वर्तमान में यहाँ देशों से हिंदी के छात्र छात्रवृत्ति में हिंदी का शिक्षण ले रहे हैं।

4.6 विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस :-

सन् 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम ने मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखा। भारत सरकार ने भी इस प्रस्ताव का स्वागत किया और दोनों देशों ने इस स्वप्न को सत्य में बदलने के लिए आवश्यक विधायी तथा प्रक्रियागत कदम उठाए। वर्तमान में विश्व मंच पर हिंदी को प्रतिष्ठित तथा उसका प्रचार-प्रसार करने वाली संस्थाओं में, विश्व हिंदी सचिवालय अग्रणी अंतरराष्ट्रीय संस्था है।

4.6.1 सचिवालय की पृष्ठभूमि :-

हिंदी भाषा का एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में संवर्द्धन करने और विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन को संस्थागत व्यवस्था प्रदान करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना का निर्णय लिया गया। भारत और मॉरीशस की सरकारों के बीच 20 अगस्त 1999 को एक समझौता हुआ। 12 नवम्बर 2002 को मॉरीशस के नेशनल असेंब्ली द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम पारित किया गया और भारत सरकार तथा मॉरीशस की सरकार के बीच 21 नवम्बर 2003 को एक द्विपक्षीय करार सम्पन्न किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय 11 फरवरी 2008 से औपचारिक रूप से कार्य कर रहा है।

4.6.2 संगठन :-

विश्व हिंदी सचिवालय का एक शासी परिषद् (गवर्निंग कौंसिल) तथा एक कार्यकारिणी बोर्ड (एग्ज़िक्यूटिव बोर्ड) है। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी होते हैं। विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् में भारत तथा मॉरीशस, दोनों पक्षों की ओर से 5-5 सदस्य हैं जो निम्नानुसार है -

भारत की ओर से

(क) विदेश मंत्री

(ख) मानव संसाधन विकास मंत्री

(ग) संस्कृति मंत्री

मॉरीशस की ओर से

(क) विदेश कार्य, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्री

(ख) शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री

(ग) कला एवं संस्कृति मंत्री

(घ) गैर-सरकारी सदस्य

(ङ) डॉ. रत्नाकर पांडेय

(च) श्री अजामिल माताबदल

(छ) श्री जनार्दन द्विवेदी

(ज) श्री सत्यदेव टेंगर

शासी परिषद् की प्रथम बैठक, भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी की अध्यक्षता में 28 जनवरी 2008 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। बैठक में भारत की ओर से श्री प्रणब मुखर्जी, तत्कालीन विदेश मंत्री; श्री अर्जुन सिंह, तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री; श्रीमती अम्बिका सोनी, तत्कालीन संस्कृति मंत्री; डॉ. रत्नाकर पांडेय; डॉ. आर पी मिश्र, नामित उप महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय तथा विदेश मंत्रालय, मानव संसाधन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय के अधिकारीगण उपस्थित थे। मॉरीशस की ओर से श्री धरमवीर गोकुल, तत्कालीन शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री; श्री मदन दल्लु, तत्कालीन विदेश कार्य, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्री; श्री मुकेश्वर चुन्नी, भारत में मॉरीशस के तत्कालीन उच्चायुक्त; डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण, तत्कालीन महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय; श्री अजामिल माताबदल; श्री सत्यदेव टेंगर तथा भारत में मॉरीशस के उच्चायोग से अन्य

अधिकारी उपस्थित थे। सचिवालय की शासी परिषद् की द्‌वितीय बैठक 16 मई 2011 को मॉरीशस में हुई। इस अवसर पर भारत की विदेश राज्य मंत्री माननीय श्रीमती प्रनीत कौर एक महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधिमंडल के साथ मॉरीशस आईं तथा उन्होंने मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी के साथ बैठक की सह-अध्यक्षता की।

कार्यकारिणी बोर्ड सदस्य :-

भारत की ओर से,

(क) सचिव, विदेश मंत्रालय

(ख) सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(ग) सचिव, संस्कृति मंत्रालय

(घ) मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त

(ङ) मॉरीशस की ओर से

(च) स्थायी सचिव, विदेश कार्य, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्रालय

(छ) स्थायी सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय

(ज) स्थायी सचिव, कला एवं संस्कृति मंत्रालय

(झ) स्थायी सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय, मॉरीशस

कार्यकारिणी बोर्ड की प्रथम बैठक श्री आर. पी. अग्रवाल, सचिव (उच्चतर शिक्षा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में 24-25 मई को मॉरीशस में आयोजित की गई। बैठक में भारत की ओर से श्री आर. पी. अग्रवाल, सचिव (उच्चतर शिक्षा), मानव संसाधन मंत्रालय; श्री वी. पी. हरन, संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय; श्री आर. सी. मिश्र, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय; श्री बी. जयशंकर, मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त उपस्थित थे और मॉरीशस की ओर से श्री एस. रेगन, स्थायी सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय; श्री एन. के. बल्लाह,

स्थायी सचिव, कला एवं संस्कृति मंत्रालय; श्री वी. चितू, प्रथम सचिव, विदेश कार्य मंत्रालय; श्रीमती एस. बहादुर, सहायक सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय तथा डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय उपस्थित थे। उसके बाद से इसकी बैठकें नियमित रूप से हो रही हैं।

भारत सरकार तथा मॉरीशस की सरकार के बीच सम्पन्न द्विपक्षीय करार के अनुसार विश्व हिंदी सचिवालय का प्रथम महासचिव मॉरीशस से होगा और इसका कार्यकाल 3 वर्ष का होगा।

तद्नुसार मारीशस से डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण की विश्व हिंदी सचिवालय की प्रथम महासचिव के रूप में नियुक्त की गई थी। डॉ. अरुण ने जनवरी 2010 में अपना कार्यकाल समाप्त किया जिसके उपरांत तत्कालीन उप-महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र को महासचिव पद का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया। फरवरी 2011 में डॉ. मिश्र का कार्यकाल सम्पन्न हुआ तथा अगस्त 2011 तक श्री गंगाधरसिंह सुखलाल कार्यवाहक महासचिव रहे।

29 अगस्त 2011 से श्रीमती पूनम जुनेजा ने तीन वर्षों के लिए महासचिव पद ग्रहण किया। इससे पूर्व श्रीमती जुनेजा भारत में संसदीय राजभाषा समिति की सचिव रही हैं।

भारत सरकार तथा मॉरीशस की सरकार के बीच सम्पन्न द्विपक्षीय करार के अनुसार विश्व हिंदी सचिवालय का प्रथम उपमहासचिव भारत से होगा और इनका कार्यकाल 3 वर्ष का होगा। तद्नुसार भारत से डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र की विश्व हिंदी सचिवालय के प्रथम उपमहासचिव के रूप में नियुक्ति हुई। मॉरीशस सरकार की ओर से श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल उप-महासचिव पद पर नियुक्त हुए।[7]

4.6.3 परिकल्पना और उद्देश्य :-

विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के मुख्य उद्देश्य हैं - हिंदी का अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रचार-प्रसार करना, सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय करना और उसे संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलवाना।

4.6.4 लक्ष्य :-

(क) विभिन्न सरकारों और संस्थानों को रचनात्मक तौर-तरीकों का प्रयोग करते हुए हिंदी शिक्षण का दायरा, परिमाण और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सहयोग करना।

(ख) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी शिक्षण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए नीतियों और व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करना।

(ग) हिंदी के शिक्षण और प्रशिक्षण में संलग्न उच्च प्रतिष्ठा वाले प्रमुख व्यक्तित्वों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थानों का संजाल (नेटवर्क) विकसित करना।

(घ) प्रकाशनों तथा सूचना, संचार तकनीकों के माध्यम से हिंदी से जुड़ी सूचनाओं को विश्व भर में प्रसारित करना।

4.6.5 उद्देश्य :-

विश्व हिंदी सचिवालय के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं -

(क) हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रोन्नत करना

(ख) हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में सघन प्रयास करना

(ग) हिंदी में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठी, समूह विचार-विमर्श, चर्चा एवं कवि सम्मेलन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना

(घ) हिंदी के विद्वानों को सम्मानित/पुरस्कृत करना

(ङ) हिंदी में शोध कार्य के लिए प्रलेखन केंद्र स्थापित करना

(च) अंतरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तकालय की स्थापना करना

(छ) अंतरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तक मेले का आयोजन करना

4.6.6 पत्र-पत्रिकाएँ :-

4.6.6.1 विश्व हिंदी पत्रिका :-

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस हर वर्ष विशेषांक के रूप में विश्व हिंदी पत्रिका का वार्षिक अंक निकालती है जिसमें विश्व में हो रही हिंदी गतिविधियों की जानकारी मिलती है। इस पत्रिका की छपाई आर्ट पेपर पर की गई है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में रखने योग्य कही जाएगी।

4.6.6.2 विश्व हिंदी समाचार :-

सचिवालय की यह पत्रिका त्रैमासिक है। इसमें दुनिया भर में हिंदी से जुड़ी भाषायी तथा साहित्यिक गतिविधियों के समाचार प्रकाशित किए जाते हैं और इस तरह यह हिंदी प्रेमियों के लिए एक त्रैमासिक संदर्भ ग्रंथ का कार्य करती है। यह सन् 2008 से ही नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है तथा आज उसे विश्व के कोने-कोने से हिंदी प्रेमियों का स्नेह प्राप्त है। पत्रिका सिर्फ समाचारों तक ही सीमित नहीं है बल्कि हिंदी से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर विचारोत्तेजक आलेख तथा चर्चाएँ भी इसका महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। पत्रिका के विभिन्न अंकों में मॉरीशस एवं भारत के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, कतार, संयुक्त अरब अमीरात, मिस्र, चीन, रूस, ओमान, कुवैत, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, फिजी आदि देशों में घटित होने वाली महत्त्वपूर्ण हिंदी विषयक घटनाओं तथा आयोजनों का विवरण दिया जाता रहा है। पत्रिका के संपादकीय में हर बार हिंदी से जुड़ा कोई महत्त्वपूर्ण तथा ज्वलंत मुद्दा उठाया जाता है। इसके कलेवर, साज-सज्जा व आकर्षक प्रस्तुति की भी बहुत प्रशंसा होती रही है।

4.6.7 कार्यारंभ दिवस :-

विश्व हिंदी सचिवालय हर वर्ष 11 फरवरी को अपने कार्यारंभ दिवस का आयोजन करता है। यही वह दिन है जब सन् 2008 में सचिवालय ने कार्य करना शुरू किया था। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से सम्मेलन, गोष्ठियाँ, प्रतियोगिताएँ, संवाद तथा काव्य गोष्ठी आदि का आयोजन किया जाता है। सचिवालय के कार्यारंभ दिवस की उपयोगिता उत्तरोत्तर बढ़ रही है जो पिछले कार्यारंभ दिवसों के आयोजनों की सफलता से स्पष्ट है।

वर्तमान में श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल कार्यवाहक महासचिव हैं। हिंदी जगत का यह सौभाग्य है कि गुलशनजी जैसे कर्मठ व्यक्ति सचिवालय के उच्च पद पर हैं तथा उनके सक्षम हाथों में सचिवालय की कमान है। उनके मार्गदर्शन में सचिवालय के युवा कर्मचारी बड़ी मेहनत से काम में जुटे हुए हैं। इन सबका एक ही लक्ष्य है कि किसी भी तरह से हिंदी जगत के सभी देशों को एकजुट करते हुए हिंदी को विश्व भाषा बनाना। इस दिशा में उनके कदम उठ चुके हैं। वर्तमान में वे एक डेटाबेस बना रहा हैं जिसमें उन सभी देशों के नाम, संस्था का नाम. फ़ोन नम्बर, संपर्क व्यक्ति का नाम, तथा उस देश एवं संस्था की जानकारी है जहाँ हिंदी भाषा का अस्तित्व है। यह बहुत ही जटिल काम है लेकिन सारे कर्मचारी बड़ी कर्मठता से इससे जुड़े हुए हैं। शोध के लिए कई शोधछात्र सचिवालय जाते हैं जिन्हें पूरी तरह से सहयोग दिया जाता है तथा शोधकार्य के लिए जरूरी सारी सामग्री भी दी जाती है। स्वयं शोधछात्रा को यह अनुभव प्राप्त हुआ है।

सचिवालय की ओर से श्री गंगाधर जी विभिन्न देशों में अपने कर्मचारियों के सहयोग से कम से कम खर्च में हिंदी की कार्यशालाएँ भी लेते हैं। ये वे देश हैं जहाँ हिंदी भाषा को स्थापित करने के लिए वहाँ के हिंदी स्वयंसेवियों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

श्री गंगाधरसिंग गुलशन सुखलाल के हिंदी के प्रति इसी लगन को सराहते हुए उन्हें 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया जोकि अति योग्य भी है।

12 मार्च 2015 की ऐतिहासिक तिथि को भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मॉरीशसीय प्रधान मंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ हुआ, अब तक सचिवालय अस्थाई स्थान पर कार्यारत है। हिंदी जगत के लिए यह एक सुखद समाचार है।

4.7 भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (इंडियन काउन्सिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स-आय.सी.सी.आर.) :-

4.7.1 परिषद् के उद्देश्य :-

(क) भारत के विदेशी सांस्कृतिक संबंधों से संबंधित नीतियाँ और कार्यक्रम तैयार करना और उनके कार्यान्वयन में भागीदारी करना;

(ख) भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों और पारस्परिक समझ को बढ़ाना और मजबूत करना;

(ग) अन्य देशों और लोगों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना;

(घ) संस्कृति के क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से संबंध स्थापित करना और उन्हें विकसित करना;

(ङ) ऐसे कदम उठाना जो इन उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक हों।

4.7.2 विदेशों में स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की पीठें :-

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों के परामर्श से विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों में भारतीय अध्ययन पीठों की

स्थापना की है। विदेशी छात्रों को भारत के बारे में शिक्षा देने के अलावा इन पीठों का उद्देश्य एक केंद्र (न्यूक्लियस) बनाना है जिसके चारों ओर विदेशों में स्थित शैक्षिक संस्थानों में भारतीय अध्ययन का विकास हो सके। इन पीठों में प्रतिनियुक्त शिक्षाविद/विद्वान केवल भारत से संबंधित पाठयक्रम ही नहीं पढ़ाते अपितु अनुसंधान मार्गदर्शन, संगोष्ठी समन्वय, प्रकाशन, सार्वजनिक व्याख्यान देने जैसी अन्य शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से उस देश के शिक्षाविदों के साथ विद्वत्तापूर्ण बातचीत विकसित करते हैं और भारत से संबंधित विभिन्न मुद्दों की सूचना का प्रसार करने और बेहतर समझ बनाने में सहायता देते हैं।

विदेश में पीठों के अलावा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् भारत में भी दो पीठें चलाता है अर्थात सार्क पीठ और नेल्सन मंडेला पीठ, जिसके लिए विदेशों से विद्वानों को भारत में आमंत्रित किया जाता है। जबकि अफ्रीकी विद्वानों को नेल्सन मंडेला पीठ के लिए आमंत्रित किया जाता है जो कि स्थायी रूप से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में आधारित है, सार्क देशों से विद्वानों को सार्क पीठ के लिए आमंत्रित किया जाता है जो विभिन्न विश्वविद्यालयों के बीच घूमती है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के पास वर्तमान में 66 कार्य कर रही पीठें हैं और 10 नई पीठों की स्थापना की गई है जो शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के दौरान कार्य करना प्रारंभ कर देंगी।[8]

4.7.3 विदेश में कार्य कर रही भारतीय अध्ययन पीठों की सूची :-

क्र.सं.	देश	विश्वविद्यालय/संस्थान	शहर
1.	ऑस्ट्रेलिया	प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय	सिडनी

2.	ऑस्ट्रिया	वियना विश्वविद्यालय	वियना
3.	बांग्लादेश	ढाका विश्वविद्यालय	ढाका
4.	बेल्जियम	गेन्ट राज्य विश्वविद्यालय	गेन्ट
5.	ब्राज़िल	गेटुलियो वर्गस फाउंडेशन	रियो डी जनेरियो
6.	बुल्गारिया	सोफिया विश्वविद्यालय	सोफिया
7.	कंबोडिया	प्रेअह सिहानूक राजा बौद्ध	नोम पेन्ह
8.	कनाडा	यॉर्क विश्वविद्यालय	टोरंटो
9.	कनाडा	कार्लटन विश्वविद्यालय	ओटावा
10.	चीन	पीकिंग विश्वविद्यालय	बीजिंग
11.	चीन	शेन्ज़ेन विश्वविद्यालय	गुयनझू
12.	चीन	फुडान विश्वविद्यालय	शंघाई
13.	चीन	जिनान विश्वविद्यालय	गुयनझू
14.	क्रोएशिया	जाग्रेब विश्वविद्यालय	जाग्रेब
15.	डेनमार्क	आरहस विश्वविद्यालय	आरहस
16.	फिजी	फिजी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	सुवा
17.	फ्रांस	साईंसेज पो	पेरिस
18.	जर्मनी	लीप्जिग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट	लीप्जिग
19.	जर्मनी	गौटिंगेन विश्वविद्यालय	गौटिंगेन
20.	जर्मनी	हीडलबर्ग विश्वविद्यालय	हीडलबर्ग

21.	जर्मनी	फ्रेई विश्वविद्यालय	बर्लिन
22.	जर्मनी	मारबर्ग फिलिप्स विश्वविद्यालय	मारबर्ग
23.	जर्मनी	लीप्जिग विश्वविद्यालय	लीप्जिग
24.	हंगरी	ईएलटीई विश्वविद्यालय	बुडापेस्ट
25.	हंगरी	ईएलटीई विश्वविद्यालय	बुडापेस्ट
26.	भारत #	नेल्सन मंडेला पीठ	नई दिल्ली
		जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय	
27.	भारत #	सार्क पीठ	नई दिल्ली
		भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान	
28.	इंडोनेशिया	महेंद्रदत्ता विश्वविद्यालय	बाली
29.	इंडोनेशिया	गाद्जा मदाह विश्वविद्यालय	जकार्ता
30.	आयरलैंड	डबलिन सिटी विश्वविद्यालय	डबलिन
31.	इसराइल	तेल अवीव विश्वविद्यालय	तेल अवीव
32.	इटली	ला सापेंजा यूनिवर्सिटी ऑफ रोम	रोम
33.	जापान	टोक्यो विश्वविद्यालय	टोक्यो
34.	जापान	रायुकोकू विश्वविद्यालय	क्योटो
35.	लिथुआनिया	माइकोलास रोमरिस विश्वविद्यालय	विनियस
36.	मॉरीशस	महात्मा गाँधी संस्थान	मोका
37.	नेपाल	त्रिभुवन विश्वविद्यालय	काठमांडू

38.	नेपाल	पोखरा विश्वविद्यालय	पोखरा
39.	नीदरलैंड	लीडेन विश्वविद्यालय	लीडेन
40.	न्यूज़ीलैंड	विक्टोरिया यूनिवर्सिटी ऑफ वेलिंगटन	वेलिंगटन
41.	नाइजीरिया	लागोस बिजनेस स्कूल	अबुजा
42.	पोलैंड	वारसॉ विश्वविद्यालय	वारसॉ
43.	पोलैंड	वारसॉ विश्वविद्यालय	वारसॉ
44.	पोलैंड	जागीलोनियन विश्वविद्यालय	क्राको
45.	कोरिया गणराज्य	हन्गुक यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरन	सियोल
46.	रूस	रूसी स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ	मास्को
47.	सिंगापुर	सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय	सिंगापुर
48.	स्लोवेनिया	ल्युब्ल्याना विश्वविद्यालय	ल्युब्ल्याना
49.	स्पेन	वलाडोलिड विश्वविद्यालय	वलाडोलिड
50.	श्रीलंका #	कोलंबो विश्वविद्यालय	कोलंबो
51.	स्वीडन	गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय	गोथेनबर्ग
52.	स्विट्जरलैंड	लुसाने विश्वविद्यालय	लुसाने
53.	ताइवान	नेशनल चेंग ची विश्वविद्यालय	ताइपे
54.	थाईलैंड	सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय	बैंकाक
55.	त्रिनिदाद-टोबॅगो	वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय	पोर्ट ऑफ स्पेन
56.	त्रिनिदाद-टोबॅगो	वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय	पोर्ट ऑफ स्पेन

57.	तुर्की	अंकारा विश्वविद्यालय	अंकारा
58.	इंग्लैंड	किंग्स कॉलेज	लंदन
59.	इंग्लैंड	एडिनबर्ग नेपियर विश्वविद्यालय	एडिनबर्ग
60.	इंग्लैंड	एडिनबर्ग विश्वविद्यालय	एडिनबर्ग
61.	इंग्लैंड	संस्कृत एट सेंट जेम्स	लंदन
62.	अमेरिका	जेम्स मैडिसन् विश्वविद्यालय	हैरिसन्बर्ग
63.	अमेरिका	जॉर्ज टाउन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन	वाशिंगटन डीसी
64.	अमेरिका	कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस	वाशिंगटन डीसी
65.	उजबेकिस्तान	विश्व अर्थव्यवस्था और कूटनीति	ताशकंद
66.	वियतनाम	सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	हो ची मिंन शहर

4.7.4 शैक्षणिक वर्ष 2014-15 के दौरान कार्य करना प्रारंभ करने वाली नई पीठों की सूची :-

क्र.सं.	**देश**	**विश्वविद्यालय/संस्थान**	**शहर**
1.	ऑस्ट्रेलिया	मैक्वेरी विश्वविद्यालय	सिडनी
2.	ऑस्ट्रेलिया	मोनाश विश्वविद्यालय	मेलबोर्न

3.	ऑस्ट्रेलिया	मेलबोर्न विश्वविद्यालय	मेलबोर्न
4.	बेल्जियम	लोवेन विश्वविद्यालय	लोवेन
5.	कनाडा	मैकगिल विश्वविद्यालय	मॉन्ट्रियल
6.	जमैका	वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय	किंग्स्टन
7.	स्वीडन	उपासला विश्वविद्यालय	उप्साला
8.	थाईलैंड	चुलालोंगकॉर्न विश्वविद्यालय	बैंकाक
9.	यूक्रेन	टारस शेवचेंको नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कीव	कीव
10.	अमेरिका	रुटगर्स स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू जर्सी	न्यू ब्रूंसविक

विदेश मंत्रालय की ओर से एजेंसी कार्य के रूप में संचालित केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से वित्त पोषण सहायता से संचालित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह परिषद् भी केन्द्रीय हिंदी संस्थान की तरह विभिन्न देशों के हिंदी के छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है ताकि वे भारत आकर हिंदी में शिक्षा ले सकें। यह परिषद् सर्वदा हिंदी के लिए समर्पित है।

4.8 महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय :-

महात्मा गाँधीजी का सपना, राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का था। गाँधीजी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना कोई भी राष्ट्र गूँगा हो जाता है। नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी,1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए, जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन (दिसम्बर-1993) के बाद विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में हुई और भारत में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना को मूर्त रूप देने की आवश्यकता समझी गयी। सन् 1997 में यह संभव हुआ, जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना राष्ट्रपिता की कर्मभूमि वर्धा में की गयी। 'अपने उद्योग से एक शुद्ध हिंदी की यूनिवर्सिटी स्थापित करना' भारतेंदु हरिश्चंद्र की यह इच्छा भी इस विश्वविद्यालय की स्थापना से पूरी हुई।

सन् 1997 में संसद द्वारा पारित अधिनियम (क्रमांक-3) शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्द्धन एवं विकास हेतु एक ऐसे आवासीय विश्वविद्यालय की स्थापना प्रस्तावित करता है जो हिंदी भाषा में श्रेष्ठतर क्रियात्मक कार्यदक्षता विकसित करने में समर्थ हो, ताकि इसे एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में इस विश्वविद्यालय ने कार्य करना आरंभ किया। महात्मा गाँधी के दार्शनिक आलोक में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने हिंदी भाषा और साहित्य के साथ-साथ गाँधीजी के प्रिय सिद्धांतों पर आधारित विषयों- 'अहिंसा एवं शांति अध्ययन' तथा 'स्त्री अध्ययन'- को अपने पाठ्यक्रम का प्रमुख हिस्सा बनाया है। यहाँ हिंदी को तकनीकी जानकारी और विविध व्यवसायों की संवाहक भाषा के रूप

में विकसित करने पर भी बल दिया जा रहा है। इससे संदर्भित नये-नये पाठ्यक्रम प्रवर्तित किए जा रहे हैं। इस विश्वविद्यालय की मंशा है कि हिंदी माध्यम से ज्ञान के विभिन्न अनुशासन् एवं परिक्षेत्र न केवल भारत में अपितु विश्व जनमानस में अपनी गहरी पैठ बनायें और हिंदी विश्व-हृदय का हार बने। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास इसका साक्षी है कि भारत संघ की राष्ट्रभाषा हिंदी आपसी सहयोग, सहचर्य एवं प्यार की भाषा है। इसे विश्वसमुदाय में स्थापित करना इन मूल्यों के संवर्द्धन हेतु अत्यंत लाभप्रद होगा। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएँ हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबल हिंदी' की राह पर यह एक बड़ा मील का पत्थर है।

हिंदी को विश्वभाषा बनाने के मकसद से इस विश्वविद्यालय ने दो महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विदेशों में विश्वविद्यालयों व संस्थाओं में हिंदी व हिंदी माध्यम से विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन व अनुसंधान के लिए यह विश्वविद्यालय समन्वयक की भूमिका निभाने जा रहा है तो विश्वभर के हिंदी पाठकों को भारतेंदु से लेकर अब तक के कॉपीराइट मुक्त महत्त्वपूर्ण हिंदी साहित्य को सुलभ कराने का बीड़ा इसने उठाया है।

विश्वविद्यालय की वेबसाइट ‘हिंदीसमयडॉटकॉम’ पर उत्कृष्ट हिंदी साहित्य के एक लाख पृष्ठ उपलब्ध कराए जा रहे हैं। दूसरे चरण में यह साहित्य विश्व की प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध कराया जाएगा। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में हिंदी में स्तरीय सामग्री उपलब्ध हो सके इसका प्रयास भी विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है। स्त्री अध्ययन, मानविकी तथा फिल्म और नाटक के क्षेत्रों में दुनिया भर की भाषाओं में फैली हुई महत्त्वपूर्ण पाठय-सामग्री का अनुवाद

विश्वविद्यालय कर रहा है और शीघ्र ही यह पाठय-सामग्री विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ ही अन्य अध्येताओं को भी उपलब्ध हो सकेगी।

इस विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के एक अंतरराष्ट्रीय मंच के रूप में विकसित किया जा रहा है। हिंदी भाषा में भारतीय मूल्यों व परंपराओं के संवर्द्धन के साथ-साथ आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने तथा इसे इसी रूप में दुनिया के सामने स्थापित करने का अभियान विश्वविद्यालय द्वारा चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन् व कार्य-व्यवहार में गाँधीजी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। हिंदी को विश्वमंच पर प्रतिष्ठित किए जाने हेतु यह आवश्यक है कि हिंदी का विश्व की अन्य भाषाओं के साथ बेहतर संबंध हो। इनके बीच एक सक्रिय, बहुआयामी एवं व्यापक आदान-प्रदान हो। विविध भाषाओं के छात्र, शोधार्थी, अनुसंधानकर्ता, अध्यापक एक-दूसरे के बीच जाकर अध्ययन-अध्यापन व अनुसंधान करें। इससे विश्व की अन्य भाषाओं से हिंदी का संपर्क समृद्ध होगा व ज्ञान के नये क्षितिज उदित होंगे। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी इस आदान-प्रदान का केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्त्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबद्ध है। विश्वविद्यालय में आठ अलग-अलग संकाय हैं- भाषा विद्यापीठ, साहित्य विद्यापीठ, संस्कृति विद्यापीठ, अनुवाद तथा निर्वचन विद्यापीठ, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, सृजन विद्यापीठ, प्रबंध विद्यापीठ एवं शिक्षा विद्यापीठ। इसके साथ ही विश्वविद्यालय का दूरशिक्षा कार्यक्रम शिक्षा को शिक्षार्थियों के द्वार तक पहुँचाने के एक अलग प्रकल्प के रूप में क्रियाशील है।

4.8.1 उद्देश्य :-

(क) क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का सम्यक विकास।

(ख) हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का सुसंगत प्रयास।

(ग) महात्मा गाँधी के मानवतावादी मूल्यों; यथा - शांति, अहिंसा, सत्य, धर्मनिरपेक्षता, आदि का उन्नयन, स्थापन एवम् प्रसार।

(घ) हिंदी को जनसंचार, व्यापार, प्रबंधन, विज्ञान एवम् तकनीकी शिक्षा, तथा प्रशासनिक कामकाज की भाषा के रूप में दक्ष बनाना ताकि इसे रोजगार से जोड़ा जा सके।

(ङ) हिंदी के माध्यम से अंतर-अनुशासनिक ज्ञान-प्रणाली को बढ़ावा देना।

(च) एक अंतरराष्ट्रीय शोध केंद्र के रूप में विश्वविद्यालय का विकास।

(छ) अंतरराष्ट्रीय विमर्श के एक केंद्र के रूप में विश्वविद्यालय का विकास।[9]

4.8.2 दृष्टि :-

(क) राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के मध्य व्यापक एवम् बहुल संपर्क व समन्वय पर जोर।

(ख) भारतीय एवम् वैश्विक भाषाओं के अन्त:सम्पर्क से समन्वय की संस्कृति का पल्लवन एवं विकास।

(ग) हिंदी को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं संदेशों की संवाहक भाषा के रूप में प्रतिष्ठा।

(घ) ज्ञान, शांति एवं मैत्री की परिकल्पना को मूर्त रूप देने का गंभीर प्रयास।

4.8.3 भाषा प्रौद्योगिकी विभाग :-

इस विभाग के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

(क) हिंदी भाषा का सम्यक विकास तथा अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के साथ संवाद स्थापित करना है।

(ख) उपलब्ध वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय ज्ञान को हिंदी में प्रस्तुत कर विश्व क्षितिज पर उपस्थित विकसित भाषाओं के साथ समकक्षता अर्जित कर सके।

(ग) वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय अनुसंधानों के द्वारा छात्रों को आत्मनिर्भर और अग्रणी भूमिका के लिए तैयार करना।

(घ) हिंदी भाषा के सभी पक्षों - ऐतिहासिक, सामाजिक और वैज्ञानिक अध्ययन के साथ अद्यतन भाषा प्रौद्योगिकी से परिचय और हिंदी हेतु उसके अनुप्रयोग का प्रशिक्षण।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, एक ऐसा विश्वविद्यालय है जो हिंदी को सम्पूर्णतया समर्पित है, विश्व के कई देशों से यहाँ छात्र हिंदी के विविध क्षेत्र में शिक्षण लेने आते हैं। हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में इस विश्वविद्यालय का बहुत बड़ा योगदान है।

निष्कर्ष :-

इस विवेचन के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, भारत सरकार की ओर से हिंदी के उत्थान एवं विकास के मार्ग को प्रशस्त करने के लिए कई प्रकार के प्रयास कुछ महत्त्वपूर्ण संस्थाओं के द्वारा जारी हैं। इसके अतिरिक्त भारत सरकार का विदेश मंत्रालय भी विविध देशों के संदर्भ में हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार में संलग्न है। इसके अलावा हिंदी शिक्षण के लिए भारतीय संस्थानों के द्वारा विभिन्न देशों के हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति एवं उससे संबंधी विविध सुविधाओं का

अंतर्भाव भी है। इन कार्यकलापों में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारत में स्थित महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय हिंदी शिक्षण के कई आयामों पर विचार करके अद्यतन एवं नूतन शिक्षण प्रदान कर रहा है।

संदर्भ संकेत

1. **राष्ट्रभाषा विचार - संग्रह**, शांतिभाई जोबनपुत्रा, पृष्ठ क्र. 231
2. **राष्ट्रभाषा विचार - संग्रह**, शांतिभाई जोबनपुत्रा, पृष्ठ क्र. 247
3. **राष्ट्रभाषा विचार - संग्रह**, शांतिभाई जोबनपुत्रा, पृष्ठ क्र. 253
4. **हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में भारत सरकार का योगदान**, शर्मा सुनीति, प्रत्यक्ष भाषण का लिखित मसौदा
5. **केंद्रीय हिंदी संस्थान**, डॉ. चक्रधर अशोक, प्रत्यक्ष भाषण का लिखित मसौदा
6. केंद्रीय हिंदी संस्थान वेब साईट - **http://www.khsindia.org/**
7. विश्व हिंदी सचिवालय वेब साईट - **http://vishwahindi.com/**
8. आई.सी.सी.आर. वेब साईट - **http://iccr.gov.in/**
9. महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वेब साईट - **http://www.hindivishwa.org/**

अध्याय पाँच

विश्व हिंदी सम्मेलनों का परिचय

प्रस्तावना

5.1 पृष्ठभूमि

5.2 पहला विश्व हिंदी सम्मेलन

5.2.1 सत्र

5.2.1.1 पूर्ण सत्र

5.2.1.2 समानांतर सत्र

5.2.2 पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.2.3 पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.2.3.1 भारतीय भाषाओं के सम्मानित लेखक

5.2.3.2 सम्मानित अहिंदीभाषी हिंदी लेखक

5.2.3.3 विशिष्ट सम्मानित लेखक

5.2.4 अन्य विशेषताएँ

5.3 दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन

5.3.1 सत्र

5.3.2 दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.3.3 अन्य विशेषताएँ

5.4 तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन

5.4.1 सत्र

5.4.1.1 पूर्ण सत्र

5.4.1.2 समानांतर सत्र

5.4.2 तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.4.3 तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.4.3.1 भारतीय हिंदी लेखक

5.4.3.2 अहिंदी भाषी भारतीय विद्वान

5.4.3.3 अहिंदी भाषी हिंदी साहित्यकार

5.4.3.4 विदेशी हिंदी लेखक

5.4.4 अन्य विशेषताएँ

5.5 चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन

5.5.1 सत्र

5.5.1.1 पूर्ण सत्र

5.5.2 चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.5.3 चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.6 पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन

5.6.1 सत्र

5.6.1.1 मुख्य विषय

5.6.1.2 पूर्ण सत्र

5.6.1.3 समानांतर सत्र

5.6.2 पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.6.3 पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विदेशी एवं भारतीय विद्वान

5.6.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय हिंदी विद्वान

5.6.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी हिंदी विद्वान

5.6.4 अन्य विशेषताएँ

5.7 छठा विश्व हिंदी सम्मेलन

5.7.1 सत्र

5.7.1.1 पूर्ण सत्र

5.7.2 छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.7.3 छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.7.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान

5.7.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान

5.7.4 अन्य विशेषताएँ

5.8 सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन

5.8.1 सत्र

5.8.2 सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.8.3 सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.8.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान

5.8.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी हिंदी विद्वान

5.8.4 अन्य विशेषताएँ

5.9 आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन

5.9.1 सत्र

5.9.1.1 पूर्ण सत्र

5.9.1.2 समानांतर सत्र

5.9.2 आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.9.3 आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान

5.9.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान

5.9.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान

5.9.4 अन्य विशेषताएँ

5.10 नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन

5.10.1 सत्र

5.10.2 नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.10.3 नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्‌वान

5.10.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्‌वान

5.10.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्‌वान

5.10.4 अन्य विशेषताएँ

5.10.5 विश्व हिंदी सम्मेलनों की उपलब्धियाँ

5.11 दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन

5.11.1 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित हुए

5.11.2 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य

5.11.3 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्‌वान

5.11.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्‌वान

5.11.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्‌वान

5.11.4 अन्य विशेषताएँ

5.12 विश्व हिंदी सम्मेलन शृंखलाएँ

5.13 विगत में आयोजित नौ विश्व हिंदी सम्मेलनों के विषय इस प्रकार थेः

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय पाँच

विश्व हिंदी सम्मेलनों का परिचय

प्रस्तावना :-

विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी जुटते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने, समय-समय पर हिंदी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ़ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्त्वपूर्ण रिश्ते को और गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलनों की शृंखला शुरू हुई। इस बारे में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इंदिरा गाँधी ने पहल की थी। इन सम्मेलनों के प्रमुख लक्ष्य हैं - हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना, इसे विश्व भाषा के रूप में स्थापित करना, हिंदी को शिक्षा का अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण माध्यम बनाना, तथा विदेशी एवं भारतीय मूल के निवासियों द्वारा किए जा रहे अनुसंधान एवं सृजित साहित्य में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना, इसे विश्व भाषा के रूप में स्थापित करना, हिंदी को शिक्षा का अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण माध्यम बनाना, तथा विदेशी एवं भारतीय मूल के निवासियों द्वारा किए जा रहे अनुसंधान एवं सृजित साहित्य में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना।

5.1 पृष्ठभूमि :-

विश्व हिंदी सम्मेलनों का क्रम लगभग साढ़े तीन दशक पूर्व आरंभ हुआ जब

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्त्वावधान में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10-12 जनवरी 1975 को नागपुर, भारत में आयोजित किया गया।

प्रथम विश्व हिंदी की संकल्पना राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा वर्ष 1973 में की गई। सम्मेलन के प्रतिवेदन के अनुसार 'सम्मेलन का उद्देश्य इस विषय पर विचार विमर्श करना था कि तत्कालीन वैश्विक परिस्थिति में हिंदी किस प्रकार सेवा का साधन बन सकती है', 'महात्मा गाँधीजी की सेवा भावना से अनुप्राणित हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश पा कर विश्वभाषा के रूप में समस्त मानव जाति की सेवा की ओर अग्रसर हो। और इसके साथ ही किस प्रकार भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' देकर 'एक विश्व एक मानव परिवार' की भावना का संचार करे।'

हिंदी भाषा की अंतर्निहित शक्ति से प्रेरित हो भारत देश के नेताओं ने इसे अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संवाद की भाषा बनाया। यह दिशा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने निर्धारित की जिसका अनुपालन देशव्यापी रूप से किया गया। स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले अधिकांश सेनानी हिंदीतर प्रदेशों से थे, अन्य भाषा-भाषी थे। इन सभी ने देश को एक सूत्र में बांधने के लिए एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की सामर्थ्य और शक्ति को पहचाना और उसका भरपूर उपयोग किया। हिंदी को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस एवं व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से और यह रेखांकित करने के उद्देश्य से कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा ही नहीं बल्कि आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में एक सक्षम भाषा है, विश्व हिंदी सम्मेलनों की संकल्पना की गई। इस संकल्पना को 1975 में नागपुर में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में मूर्तरूप दिया गया। तब से लेकर इन सम्मेलनों का एक वैश्विक स्वरूप हो गया है और इनमें गति आई है। उसके बाद 9 विश्व हिंदी सम्मेलन विश्व के

विभिन्न शहरों में आयोजित किए गए। इन सभी सम्मेलनों में हिंदी के सुविख्यात विद्वानों और हिंदी प्रेमियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

विश्व हिंदी सम्मेलनों के समय वैश्विक स्तर पर हिंदी की दिशा एवं दशा पर गंभीर विचार-विमर्श तथा मंथन की प्रक्रिया संपन्न होती है। इन सम्मेलनों के अंत में मंतव्यों के माध्यम से कुछ तात्कालिक तथा कुछ दूरगामी लक्ष्य तय किए जाते हैं।[1]

अब तक आयोजित सभी विश्व हिंदी सम्मेलनों की संपूर्ण जानकारी, सम्मेलन में पारित मंतव्य एवं विश्व हिंदी सम्मान प्राप्त विद्वानों की सूची अधोलिखित है।

5.2 पहला विश्व हिंदी सम्मेलन :-

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10-14 जनवरी 1975 तक नागपुर में आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्त्वावधान में किया गया। सम्मेलन से संबंधित राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष महामहिम उपराष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अध्यक्ष श्री मधुकर राव चौधरी महाराष्ट्र राज्य के वित्त, नियोजन तथा अल्प बचत मंत्री थे। पहले विश्व हिंदी सम्मेलन का बोधवाक्य था - वसुधैव कुटुम्बकम। सम्मेलन में मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री शिवसागर रामगुलाम थे जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आए एक प्रतिनिधिमंडल ने सम्मेलन में भाग लिया था। सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

5.2.1 सत्र :-

पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित हुए -

5.2.1.1 पूर्ण सत्र :-

(क) हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्थिति

(ख) विश्व मानव की चेतना, भारत और हिंदी

(ग) आधुनिक युग और हिंदी - आवश्यकताएँ और उपलब्धियाँ

5.2.1.2 समानांतर सत्र :-

(क) शाश्वत मूल्यों की खोज

(ख) जन संचार साधनों की भूमिका

(ग) विश्व मानव का मूल्यगत संकट और भाषा तथा लेखन के संदर्भ में युवा पीढ़ी की मानसिकता

(घ) प्रशासन, विधि और विधायी कार्यों की भाषा

(ङ) ज्ञान विज्ञान का माध्यम

(च) भाषा शिक्षण और सहायक सामग्री

5.2.2 पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।

(ख) वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो।

(ग) विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

5.2.3 पहले विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.2.3.1 भारतीय भाषाओं के सम्मानित लेखक :-

प्रा. राम पंजवानी - सिंधी, पद्मभूषण विष्णु सखाराम खांडेकर - मराठी, प्रा. टी.पी. मीनाक्षी सुन्दरम् - तमिल, पद्मश्री अमृता प्रीतम - पंजाबी, श्री त्रिभुवनदास पुरुषोत्तमदास लुहार सुन्दरम् - गुजराती, पद्मभूषण जी. शंकर कुरुप्प - मलयालम, पद्मभूषण कालिंदीचरण पाणिग्रही - उड़िया, पद्मश्री दत्तात्रय रामचंद्र बेन्द्रे - कन्नड़, प्रो. विश्वनाथ सत्यनारायण - तेलुगु, पद्मश्री अली सरदार जाफरी - उर्दू, पद्मश्री अख्तर मोहिउद्दीन - कश्मीरी, पद्मश्री प्रेमेन्द्र मित्र - बांग्ला, पद्मविभूषण महादेवी वर्मा - हिंदी, पद्मश्री नलिनीबालादेवी - असमिया, पद्मभूषण राजेश्वर शास्त्री द्रविड़ -

संस्कृत।

5.2.3.2 सम्मानित अहिंदीभाषी हिंदी लेखक :-

श्री मन्मथनाथ गुप्त - बांग्ला, श्री संतराम बी. ए. - पंजाबी, श्री मोतीलाल जोतवानी - सिंधी, श्री सिद्धनाथ पंत - कन्नड़, श्री रजनीकांत चक्रवर्ती - असमिया, डॉ. प्रल्हाद प्रधान - उड़िया, डॉ. प्रभाकर माचवे - मराठी, श्री र. वीलिनाथन - तमिल, श्री मो. सत्यनारायण - तेलुगु, श्री पृथ्वीनाथ पुष्प - कश्मीरी, डॉ. विश्वनाथ अय्यर - मलयालम, श्री शंकरदेव विद्यालंकार - गुजराती।

5.2.3.3 विशिष्ट सम्मानित लेखक :-

श्री पं. नंदकुमार अवस्थी - कुरान शरीफ का देवनागरी में लिप्यंतरण के लिए। श्री बशीर अहमद मयूख - वेदों का हिंदी में अनुवाद करने के लिए।

5.2.4 अन्य विशेषताएँ :-

इस अवसर पर एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया। आचार्य विनोबा भावे जी द्वारा भेजे गये संदेश का पाठ किया गया। आयोजन स्थल का नाम 'विश्व हिंदी नगर' रखा गया था, प्रवेश द्वारों के नाम - तुलसी, मीरा, सूर, कबीर, नामदेव और रैदास रखे गए थे। दक्षिण भारत से 400 प्रतिनिधि शामिल हुए। यूनेस्को द्वारा एक वरिष्ठ अधिकारी को भेजा गया व 6000 डालर का अनुदान दिया गया। 14 जनवरी को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के केंद्रीय कार्यालय के प्रांगण में विश्व हिंदी विद्यापीठ का शिलान्यास और संत तुलसीदास की प्रतिमा का फादर कामिल बुल्के द्वारा अनावरण किया गया।

5.3 दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन :-

दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन मॉरीशस की धरती पर हुआ। राजधानी पोर्ट लुई में 28 से 30 अगस्त 1976 तक चले विश्व इस हिंदी सम्मेलन के आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर

शिवसागर रामगुलाम थे। सम्मेलन में भारत से तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह के नेतृत्व में 23 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

5.3.1 सत्र :-

दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान निम्नलिखित चार विषयों पर पूर्ण सत्र आयोजित किए गए -

(क) हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्थिति, शैली और स्वरूप

(ख) जन-संचार के साधन और हिंदी

(ग) हिंदी के प्रचार में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका

(घ) विश्व में हिंदी के पठन-पाठन की समस्या

5.3.2 दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय कर सके।

(ख) एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और आध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।

(ग) हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

5.3.3 अन्य विशेषताएँ :-

(क) मॉरीशस के तीन डाक टिकट जारी किए गए।

(ख) 31 अगस्त, 1976 को भारतीय अप्रवासियों की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(ग) इमिग्रेशन स्क्वेयर, पोर्ट लुई में 31 अगस्त, 1976 को डॉ. कर्ण सिंह द्वारा सनातन धर्म मंदिर संघ के भवन का शिलान्यास किया गया।

(घ) नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'तुलसी- ग्रंथावली' के तृतीय खंड का लोकार्पण किया गया।

(ङ) 30 अगस्त को मॉरीशस के प्रधानमंत्री द्वारा बोबासें में 'त्रिवेणी भवन' का उद्घाटन किया गया।

5.4 तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन :-

तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में 28 से 30 अक्तूबर 1983 को हुआ। सम्मेलन के लिए बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आए प्रतिनिधिमंडल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता श्री हरीश बुधू थे। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने भी प्रमुख भूमिका निभाई। सम्मेलन में कुल 6,566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें 260 विदेशों से आए प्रतिनिधि शामिल थे।

5.4.1 सत्र :-

तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान निम्नलिखित विषयों पर पूर्ण सत्र एवं समानांतर सत्र आयोजित किए गए -

5.4.1.1 पूर्ण सत्र :-

(क) अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी प्रसार की संभावनाएँ और प्रयास

(ख) भारत के सांस्कृतिक संबंध और हिंदी

(ग) मानव मूल्यों की स्थापना और हिंदी की भूमिका

5.4.1.2 समानांतर सत्र :-

'आधुनिक भारत में हिंदी के बढ़ते चरण' विषय के अंतर्गत 28 अक्तूबर 1983 को छः समानांतर सत्र आयोजित किए गए -

(क) आधुनिक भारत में हिंदी साहित्य की विकास रेखाएँ

(ख) आधुनिक भारत में हिंदी भाषा की प्रगति

(ग) आधुनिक भारत में हिंदी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति

(घ) देवनागरी लिपि - स्वरूप और संभावनाएँ

(ङ) आधुनिक भारत में हिंदी पत्रकारिता की प्रगति

(च) हिंदी के विकास में स्वैछिक संस्थाओं का योगदान

अंतरराष्ट्रीय संदर्भ और हिंदी विषय पर 29 अक्तूबर 1983 को तीन समानांतर सत्र आयोजित किए गए -

(क) भारतीय मूल के जन समुदाय में हिंदी का प्रसार, समस्याएँ और संभावनाएँ

(ख) विश्व के अन्य देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार, समस्याएँ और संभावनाएँ

(ग) संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों मे हिंदी का प्रयोग और संभावनाएँ

'हिंदी का अंतर-भारती स्वरूप' विषय के अंतर्गत 30 अक्तूबर 1983 को छः समानांतर सत्र आयोजित किए गए -

(क) हिंदी और अन्य भाषाएँ - आदान-प्रदान (तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़)

(ख) हिंदी और अन्य भाषाएँ - आदान-प्रदान (मराठी, गुजराती और हिंदी की बोलियाँ)

(ग) हिंदी और अन्य भाषाएँ - आदान-प्रदान (बंगला, उड़िया, असमिया)

(घ) हिंदी और अन्य भाषाएँ - आदान-प्रदान (उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी)

(ङ) हिंदी और अन्य भाषाएँ - आदान-प्रदान (भोट, बर्मी और मुंडा परिवार)

(च) हिंदी और प्राचीन भारतीय भाषाएँ - आदान-प्रदान (संस्कृत, पालि, अपभ्रंश)

5.4.2 तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगा कर इसके लिए गहन प्रयास किए जाएँ।

(ख) हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए।

(ग) विगत दो सम्मेलनों में पारित संकल्पों की संपुष्टि करते हुए यह निर्णय लिया गया कि अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास और उन्नयन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए। इस समिति में देश-विदेश के लगभग 25 व्यक्ति सदस्य हों।

5.4.3 तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.4.3.1 भारतीय हिंदी लेखक :-

प. नारायण चतुर्वेदी, श्री वियोगी हरि, श्री जैनेन्द्र कुमार, डा. हरिवंश राय बच्चन, डा. राम कुमार वर्मा, श्री गंगाशरण सिंह, श्री रामेश्वर दयाल दूबे, डा. बाबूराम सक्सेना, श्री उदय नारायण तिवारी, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती (विज्ञान), श्री फूलदेव सहाय वर्मा (विज्ञान), श्री सुरेन्द्र शिवदास वारलिंगे (मनोविज्ञान), श्री बनारसी दास चतुर्वेदी।

5.4.3.2 अहिंदी भाषी भारतीय विद्वान :-

श्री नवकांत बरुआ - असमिया, श्री सीताकांत महापात्र - उड़िया, श्री गुलाब

रब्बानी तावा - उर्दू, श्री गोपाल कृष्ण अडिग - कन्नड, डॉ. हरभजन सिंह - पंजाबी, श्री विमल मित्र - बांग्ला, श्री विजय तेंदुलकर - मराठी, तकषी शिवशंकर पिल्ले - मलयालम, श्री अखिलन - तमिल, श्री राय प्रोलू सुब्बाराव - तेलुगु, आचार्य श्री पत्ताभिराम्शास्त्री - संस्कृत।

5.4.3.3 अहिंदी भाषी हिंदी साहित्यकार :-

डा. एन.वी. कृष्णवारियर - केरल, श्री वा. नागप्पा, श्री शंकर राव लोढे - महाराष्ट्र, श्री बाल शौरी रेड्डी - आंध्र, श्री जेठ लाल जोशी - गुजरात, श्रीमती राजलक्ष्मी राघवन - तमिल, डॉ. चन्द्रशेखर नायर - केरल।

5.4.3.4 विदेशी हिंदी लेखक :-

डॉ. विवेकानंद शर्मा - फीजी, डॉ. दयानंद वसंतराय, डॉ. इन्द्रा दस्स नायके - श्रीलंका, श्री करुणा कुशलाक्षय - थाईलैंड, श्री अहमद हमरा - पाकिस्तान, श्री ल्यू को नान - चीन, श्रीमती एन्ना मारिया डी. एंजलस - इटली

5.4.4 अन्य विशेषताएँ :-

दो स्मारिकाओं - 'विश्व हिंदी' और 'विश्व के मानचित्र पर हिंदी' का लोकार्पण

भाषा, गगनांचल, अक्षरा का लोकार्पण

5.5 चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन :-

चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन दो से चार दिसंबर 1993 तक मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। सत्रह वर्ष बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मंत्री श्री मुक्तेश्वर चुनी ने संभाला था, जिन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गए प्रतिनिधिमंडल के नेता श्री मधुकर राव चौधरी और उपनेता थे तत्कालीन गृह उपमंत्री श्री रामलाल राही। सम्मेलन में

मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 अन्य विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

5.5.1 सत्र :-

चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए -

5.5.1.1 पूर्ण सत्र :-

(क) विश्व में हिंदी

(ख) हिंदी योजनाएँ एवं नीतियाँ

(ग) हिंदी साहित्य एवं साहित्यकार

(घ) हिंदी संचार एवं विज्ञान

(ङ) बहू-फलकिया हिंदी

(च) हिंदी - भारतीय संस्कृति एवं लोक साहित्य

5.5.2 चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित किया जाए।

(ख) भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।

(ग) विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ खोले जाएँ।

(घ) भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय सहयोग करे।

(ङ) हिंदी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने में शासन और जन-समुदाय विशेष प्रयत्न करे।

(च) विश्व के समस्त हिंदी प्रेमी अपने निजी एवं सार्वजनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और संकल्प लें कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण पत्रों, निजी पत्रों और नामपट्टों में हिंदी का प्रयोग करेंगे।

(छ) सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त

राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करेंगे।

5.5.3 चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

इस अवसर पर मॉरीशस के चार हिंदी विद्वानों का सम्मान किया गया -

श्री प्रहलाद रामशरण, श्री भानुपति नागदान, पं. रामदत्त शर्मा महावीर, पं. रामस्वरूप रामसिंह

5.6 पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन :-

पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में। तिथियाँ थीं - चार से आठ अप्रैल 1993 और ट्रिनिडाड एवं टोबॅगो की आयोजक संस्था थी हिंदी निधि। सम्मेलन के प्रमुख संयोजक हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम थे। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमंडल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद थे। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - अप्रवासी भारतीय और हिंदी। जिन अन्य विषयों पर इसमें ध्यान केंद्रित किया गया, वे थे - हिंदी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिंदी की स्थिति, एवं कंप्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता। सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 अन्य प्रतिनिधियों ने भी इसमें भाग लिया।

5.6.1 सत्र :-

पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए -

5.6.1.1 मुख्य विषय :-

(क) हिंदी भाषा और साहित्य का विकास

(ख) कैरेबियन द्वीपों में हिंदी की स्थिति

(ग) कंप्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता

5.6.1.2 पूर्ण सत्र :-

अप्रवासी भारतीय और संस्कृति

5.6.1.3 समानांतर सत्र :-

(क) सूरीनाम में हिंदी भाषा और अस्मिता

(ख) भाषा अध्ययन का स्वरूप एवं क्षेत्र

(ग) अप्रवासी भारतीयों में हिंदी

(घ) भारतीय संस्कृति तथा हिंदी के भाषा वैज्ञानिक पहलू

(ङ) मॉरीशस में हिंदी

(च) भारतीय संस्कृति और हिंदी

(छ) व्याकरण और कोश विज्ञान

(ज) तकनीकी हिंदी

(झ) साहित्यिक संगोष्ठी

(ञ) संपर्क भाषा हिंदी राष्ट्रभाषा हिंदी

(ट) हिंदी का उद्भव अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में

(ठ) हिंदी भाषा और साहित्य - दो चेहरे

(ड) हिंदी - एक विभिन्न आयामी संस्थान

(ढ) उन्नीसवीं सदी की हिंदी का 20वीं सदी में प्रवेश - भावी उत्थान की कथा,

(ण) विदेशों में हिंदी का अध्यापन

(त) ट्रिनिडाड में हिंदी का अध्यापन

(थ) हिंदी की वाचक और लिखित परंपरा

(द) रेडियो - साहित्य और संस्कृति की पृष्ठभूमि

(ध) हिंदी और हिन्दुत्व का पारस्परिक समन्वय

(न) भाषा का पुनरुत्थान - कहाँ, कैसे और क्यों

(ऩ) हिंदी के प्रसार की संभावनाएँ और अन्य भाषाओं से सहयोग के क्षितिज

(प) उपनिवेशवाद और विस्तारवाद के प्रतिरोध में समर्थ हिंदी और उसका संघर्ष

(फ) हिंदी - सामाजिक और राजनीतिक पुनर्जागरण में भूमिका

5.6.2 पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) विश्व व्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।

(ख) मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए।

(ग) सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में हैं, उनकी सरकारें अपने-अपने देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें। उन देशों की सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समर्थन दें।

5.6.3 पाँचवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विदेशी एवं भारतीय विद्वान :-

5.6.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय हिंदी विद्वान :-

डॉ. विद्या निवास मिश्र, डॉ. रामचन्द्र राव, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. लोकेश चन्द्र, डॉ. नगेन्द्र।

5.6.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी हिंदी विद्वान :-

प्रो. डॉ. एम. क्रिजीस्तोप ब्रिस्की, डॉ. रूपर्ट स्नेल, डॉ. ओदोलेन स्मेकल, प्रो. हरिशंकर आदेश, प्रो. पी. अलेक्सेविच बरान्निकेव, डॉ. अभिमन्यु अनत, प्रो. चिन

तिंगहान, स्तेपान इवानोविच नालिवायको, डॉ. ज्ञान हंसदेव अधीन, डॉ. रामभजन सीताराम, डॉ. रामदयाल राकेश, प्रो. जोंग ही ली, प्रो. गोका।

5.6.4 अन्य विशेषताएँ :-

(क) ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो में क्रीड़ा के क्षेत्र में योगदान के लिए ब्रायन लारा सम्मानित

(ख) दूरदर्शन द्वारा सैटेलाइट से सीधा प्रसारण

(ग) आयोजन स्थल का नाम 'हिंदी नगर' रखा गया

(घ) ट्रिनिडाड की सरकार द्वारा प्रतिनिधियों को वीजा शुल्क से मुक्त रखा गया।

(ङ) भारतीय, अफ्रीकी और पाश्चात्य संगीत की मिश्रित प्रस्तुति की गई।

5.7 छठा विश्व हिंदी सम्मेलन :-

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन लंदन में 14 से 18 सितंबर 1999 तक आयोजित किया गया। यू.के. हिंदी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम और भारतीय भाषा संगम, यॉर्क द्वारा इसके लिए राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ. पद्मेश गुप्त थे। सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - हिंदी और भावी पीढ़ी। सम्मेलन में विदेश राज्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया। प्रतिनिधिमंडल के उपनेता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र थे। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्त्व इसलिए है क्योंकि यह, हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के 50वें वर्ष में, आयोजित किया गया। सन् 1999, संत कबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल थे।

5.7.1 सत्र :-

छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित हुए थे -

5.7.1.1 पूर्ण सत्र :-

(क) हिंदी में दलित साहित्य

(ख) हिंदी में संस्मरण/आत्मकथा

(ग) हिंदी आलोचना

(घ) हिंदी लोकगीत

(ङ) व्यंग्य साहित्य

(च) हिंदी पत्रकारिता

(छ) हिंदी कविता

(ज) हिंदी एवं अन्य भाषाएँ

(झ) कथा साहित्य (कहानी/उपन्यास)

(ञ) गद्य गीत की परंपरा

(ट) हिंदी व्याकरण - बदलते रूप

(ठ) हिंदी और आगामी पीढ़ी

(ड) हिंदी निबंध

(ढ) हिंदी की तकनीकी प्रगति

(ण) हिंदी भक्ति साहित्य

(त) हिंदी में यात्रा वृत्तांत साहित्य

(थ) हिंदी भाषा विज्ञान

(द) हिंदी अप्रवासी/उपनिवेशी संदर्भ

(ध) हिंदी की स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान

(न) हिंदी शिक्षण/प्रशिक्षण

(ऩ) हिंदी का शब्द भण्डार

(प) हिंदी और नवजागरण

(फ) हिंदी का मानकीकरण

(ब) विश्व हिंदी साहित्य

(भ) अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी

(म) मीडिया और हिंदी

(य) राजभाषा हिंदी

(र) हिंदी और अनुवाद

(ऱ) हिंदी में वाङ्मय विस्तार

(ल) यू.के. में हिंदी

5.7.2 छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) विश्व भर में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रचार-प्रसार और हिंदी सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय केंद्र सक्रिय भूमिका निभाए।

(ख) विदेशों में हिंदी के शिक्षण, पाठ्यक्रमों के निर्धारण, पाठ्य-पुस्तिकों के निर्माण, अध्यापकों के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय करे और सुदूर शिक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए।

(ग) मॉरीशस सरकार अन्य हिंदी-प्रेमी सरकारों से परामर्श कर शीघ्र विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करे।

(घ) हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए।

(ङ) हिंदी को सूचना तकनीक के विकास, मानकीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी लेखन, प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे।

(च) नई पीढ़ी में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की

जाए।

(छ) भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निर्देश दे कि वे भारतवंशियों की सहायता से विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करवाएँ।

5.7.3 छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.7.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान :-

डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी, श्री नरेन्द्र मोहन, श्रीमती शिवानी, श्री मधुकर राव चौधरी, श्रीमती मेहरून्निसा परवेज, श्री श्रीलाल शुक्ल, डॉ. महीप सिंह, श्री विश्वनाथ अय्यर, श्री कल्याण मल लोढ़ा, श्री शौरी राजन, श्री नरेश मेहता, श्री गोविंद चन्द्र पाण्डेय, श्री रामविलास शर्मा।

5.7.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान :-

सुश्री मारिओला अफ्रीदी - इटली, प्रो. श्याम मनोहर पाण्डे - इटली, प्रो. तोमियो मिजोकामी - जापान, प्रो. लिण्डा हेस - अमरीका, श्री ओंकार नाथ श्रीवास्तव - यू.के., सुश्री सुचित्रा रामदीन - मॉरीशस, श्री राजेन्द्र अरूण - मॉरीशस, श्री विवेकानंद शर्मा - फिजी, श्री महातम सिंह - सूरीनाम, श्री रवि महाराज - ट्रिनीडाड एवं टोबॅगो, सुश्री मारिया नैग्येसी - हंगरी, श्री सूर्य नाथ गोप - नेपाल, श्री फतिह गुलियामोविच तेशोबेव - उजबेकिस्तान, श्री डियमस्टैग - नीदरलैण्ड, श्री दानुता स्तासिक - पोलैण्ड, श्री हेलमुट नेस्पिटालर - जर्मनी, श्री बर्खुदारोव - रूस, श्रीमती निकोल बलबीर - फ्रांस, श्री विनांत केलवर्द - बेल्जियम, श्री डेविड लारेन्जो - मैक्सिको।

5.7.4 अन्य विशेषताएँ :-

(क) सम्मेलन में भाषा और साहित्य दोनो पर विशेष बल दिया गया।

(ख) हिंदी के राजभाषा बनने के 50 वर्ष भी 1999 में पूरे हुए।

5.8 सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन :-

सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ सुदूर सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में। तिथियाँ थीं - पाँच से नौ जून 2003 इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिंदी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक थे श्री जानकीप्रसाद सिंह, और यह जिस केंद्रीय विषय (थीम) पर केंद्रित रहा, वह था - विश्व हिंदी- नई शताब्दी की चुनौतियाँ। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से दो सौ प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें बारह से अधिक देशों के हिंदी विद्वान और अन्य हिंदी सेवी सम्मिलित हुए। सम्मेलन का उद्घाटन पांच जून को हुआ था और कुछ दशक पहले इसी दिन सूरीनामी नदी के तट पर भारतवंशियों ने पहला कदम रखा था।

5.8.1 सत्र :-

सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए -

(क) विश्व हिंदी के समक्ष चुनौतियाँ और समाधान

- (i) कैरिबियन देशों में हिंदी की स्थिति
- (ii) एशियाई देशों में हिंदी की स्थिति
- (iii) यूरोपिय देशों में हिंदी की स्थिति
- (iv) अफ्रीकी देशों में हिंदी की स्थिति
- (v) अमरीकी देशों में हिंदी की स्थिति
- (vi) दक्षिण प्रशांत में हिंदी की स्थिति
- (vii) मध्य-पूर्व एशिया में हिंदी की स्थिति
- (viii) संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी की स्थिति

(ख) हिंदी की बोलियों में नया सृजन

- (i) सरनामी का नया रचना संसार

(ii) मॉरीशस में हिंदी लेखन

(iii) फीजी बात में नया सृजन

(iv) नेपाली हिंदी की रचनाएँ

(v) नेताली हिंदी की रचनाएँ

(vi) भारत में पूर्वी हिंदी में सृजन संसार

(vii) भारत में पश्चिमी हिंदी में सृजन संसार

(ग) विश्व हिंदी एवं सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

(i) हिंदी और इंटरनेट

(ii) हिंदी में कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का बढ़ता परिदृश्य

(iii) देवनागरी लिपिः कम्प्यूटर के संदर्भ में

(iv) हिंदी के नए साफ्टवेयर

(घ) हिंदी और प्रसारण

(i) हिंदी और रेडियो

(ii) हिंदी और टेलीविज़न

(iii) हिंदी और सिनेमा

(iv) हिंदी के सी.डी. एवं ऑडियो कैसेट

(ङ) हिंदी और पत्रकारिता

(i) हिंदी पत्रकारिता और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप

(ii) हिंदी पत्रिकाएँ - विकास का एक दशक

(iii) हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ - भारतीय संदर्भ

(iv) हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ - वैश्विक संदर्भ

(च) अर्थव्यवस्था में हिंदी की भूमिका

(i) नई बाजार व्यवस्था और हिंदी

(ii) रोज़गार और हिंदी

(iii) विज्ञापन और हिंदी

(iv) हिंदी और पर्यटन उद्योग

(छ) हिंदी और शिक्षण व्यवस्था

(i) भारतेतर देशों में सांस्कृतिक केंद्रों में हिंदी शिक्षण

(ii) हिंदी शिक्षण का तकनीकी रूप

(iii) विश्व की अन्य भाषाएँ और हिंदी कोश

(iv) हिंदी की उच्च शिक्षा के अध्ययन में विभिन्न देशों का योगदान

(v) मानक हिंदी पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक निर्माण

(ज) भारतेतर देशों में हिंदी का समकालीन रचनात्मक परिदृश्य

(i) समकालीन काव्य

(ii) समकालीन कथा साहित्य

(iii) समकालीन आलोचना साहित्य

(iv) समकालीन शोध एवं अनुसंधान

(झ) हिंदी में अनुवाद और संदर्भ साहित्य

(i) हिंदी पुस्तकालय के विभिन्न पहलू

(ii) हिंदी अनुवाद की समस्याएँ

(iii) हिंदी भाषा - व्याकरण और मानकीकरण की समस्याएँ

(iv) हिंदी में बाल साहित्य और लोक कथाएँ

(ञ) भविष्य की हिंदी और हिंदी का भविष्य - एक परिसंवाद

5.8.2 सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए।

(ख) विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना हो।

(ग) भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएँ।

(घ) हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो।

(ङ) हिंदी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए।

(च) विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो।

(छ) कैरेबियन हिंदी परिषद् की स्थापना हो।

(ज) दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो।

(झ) हिंदी पाठ्यक्रम में विदेशी हिंदी लेखकों की रचनाओं को शामिल किया जाए।

(ञ) सूरीनाम में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की जाए।

5.8.3 सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.8.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान :-

डॉ. एन. बी. राजगोपालन, श्री बी. रामसंजीवैय्या, प्रो. (श्रीमती) तंकामणि अम्मा, डॉ. शंकर लाल पुरोहित, डॉ. धर्मपाल मैनी, श्री प्रभाष जोशी, श्री कुंवर नारायण, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, श्रीमती मृदुला गर्ग, श्री वेद प्रताप वैदिक।

5.8.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी हिंदी विद्वान :-

श्री रामदेव धुरन्धर - मॉरीशस, श्री सुबमणी - फीजी, डॉ. रामदास चौधरी - अमेरिका, प्रो. आजाद समातोव - उज्बेकिस्तान, प्रो. एनी मोंतो - फ्रांस, डॉ. बी. रामबिलास - दक्षिण अफ्रीका, प्रो. एच. राजावोव - तज़ाकिस्तान, डॉ. दानुता स्तासिक - पोलैंड, श्रीमती अचला शर्मा - यू.के., प्रो. तोशियो तनाका - जापान, डॉ. जीतनारायण - सूरीनाम, डॉ. बारान्निकोव - रूस, डॉ. लोथार लुत्से - जर्मनी, डॉ. स्वेतिस्लाव कोस्तिक - चेक गणराज्य, प्रो. येन हांग यून - चीन, डॉ. ऊ पार्गो -

म्यांमार।

5.8.4 अन्य विशेषताएँ :-

विदेश राज्य मंत्री द्वारा बाबा-माई की प्रतिमा का माल्यार्पण और एक पथ हिंदी लॉन का उद्घाटन।

5.9 आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन :-

आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन 13 जुलाई 2007 से 15 जुलाई 2007 तक अमेरिका के प्रसिद्ध न्यूयॉर्क नगर में हुआ। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय था - विश्व मंच पर हिंदी। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से संबंधित व्यवस्था अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने किया।

5.9.1 सत्र :-

आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए -

5.9.1.1 पूर्ण सत्र :-

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी

5.9.1.2 समानांतर सत्र :-

(क) देश-विदेश में हिंदी शिक्षण - समस्याएँ और समाधान

(ख) वैश्वीकरण, मीडिया और हिंदी

(ग) विदेशों में हिंदी सृजन (प्रवासी हिंदी साहित्य)

(घ) हिंदी के प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

(ङ) हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका

(च) हिंदी, युवा पीढ़ी और ज्ञान विज्ञान

(छ) हिंदी भाषा और साहित्य - विविध आयाम

समानांतर सत्र तीन भागों में विभक्त -

(क) साहित्य में अनुवाद की भूमिका

(ख) हिंदी और बाल साहित्य

(ग) देवनागरी लिपि

5.9.2 आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिंदी के शिक्षकों को मान्यता प्रदान कराने की व्यवस्था की जाए।

(ख) विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज को सक्रिय करने एवं उद्देश्य परक बनाने के लिए सचिवालय को भारत तथा मॉरीशस सरकार सभी प्रकार की प्रशासनिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करें और दिल्ली सहित विश्व के चार-पाँच अन्य देशों में इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए।

(ग) सम्मेलन सचिवालय से यह आहवान करता है कि हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए।

(घ) हिंदी में ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिंदी पुस्तकों के सृजन को प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएँ। एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए।

(ङ) विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिंदी अध्यापकों की एक सूची भी तैयार की जाए।

(च) यह सम्मेलन विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों में कार्यरत भारतीय राष्ट्रिकों से भी अनुरोध करता है कि वे विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान करें।

(छ) वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विदेशी हिंदी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था की जाए।

(ज) केंद्रीय हिंदी संस्थान भी विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार व पाठ्यक्रमों के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दे। विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना पर विचार-विमर्श किया जाए।

(झ) हिंदी को साहित्य के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाया जाए।

(ञ) भारत द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित की जाने वाली संगोष्ठियों व सम्मेलनों में हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए।

5.9.3 आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.9.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान :-

श्री अच्चुतानंद मिश्र - कुलपति, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय; श्री एम. शेषन - हिंदी विद्वान, तमिलनाडु; श्री प्रेम शंकर गुप्त - पूर्व न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय; श्रीमती शांता बाई - कर्नाटक महिला हिंदी समिति, बैंगलौर; डॉ. माणिक्यम्बा - हिंदी सेवी, आंध्र प्रदेश; श्री सूर्यवंशी चौधरी - हिंदी विद्वान, असम; श्री लल्लन प्रसाद व्यास - रामायण विद्यापीठ, संपादक, विश्व हिंदी दर्शन; श्री स्वदेश भारती - राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, कोलकाता; श्रीमती सुनीता जैन - सुविख्यात साहित्यकार, पद्मश्री सम्मान से विभूषित; श्री बेकल उत्साही - पूर्व सांसद एवं कवि; श्री ओम प्रकाश बाल्मीकि - दलित साहित्य के प्रणेता, देहरादून; डॉ.

अजित गुप्ता - हिंदी साहित्य अकादमी, जयपुर; श्री ओम विकास - निदेशक, आई.आई.आई.टी. ग्वालियर; श्री अरविंदाक्षन - हिंदी विद्वान केरल; श्री मोहन धारिया - पूर्व सांसद; डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल - हिंदी विद्वान; प्रो. निर्मला जैन - हिंदी विद्वान; सुश्री महाश्वेता देवी - बांग्ला साहित्यकार; डॉ. केदार नाथ सिंह - हिंदी कवि और आलोचक; डॉ. जगदीश पीयूष - हिंदी और अवधी के कवि।

5.9.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान :-

प्रो. मुमताज उस्मानोव - तज़ाकिस्तान, डा. लुदमिला वी, खोखलोवा - रूस, प्रो. हर्मन वैन ओल्फेन - अमेरिका, डा. सुरेन्द्र गंभीर - अमेरिका, डॉ. एवा आरादि- हंगरी, डा. गेनादी शलौम्पेर - इजराइल, डा. उल्फत मुखीबोवा - उज्बेकिस्तान, प्रो. जोगिन्दर सिंह कंवल - फीजी, श्री अमित जोशी - नॉर्वे, श्री हरिदेव सहतू - सूरीनाम, प्रो. वू जो किम - दक्षिण कोरिया, प्रो. धुंस्वा सयामी - नेपाल, डा. मोहन कांत गौतम - नीदरलैंड, प्रो. ताकेशि फुजिई - जापान, श्री चियांग चिंखुई - चीन, प्रो. दोनातेल्ला दोल्चीनी - इटली, डा. बीरसेन जुगसिंग - मॉरीशस, डा. पद्मेश गुप्त - यू.के., डा. फ्रेंचेस्का ओर्सिनी - यू.के., श्रीमती मैगलेना स्लूसारेनिक - पोलैंड।

5.9.4 अन्य विशेषताएँ :-

सम्मेलन के पूर्व देश के युवाओं के लिए एक अखिल भारतीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी युवाओं के लिए थी। प्रतियोगिता के दोनो विजेताओं (एक हिंदी भाषी आौर एक अिहंदी भाषीको) पुरस्कार स्वरूप न्यूयार्क में सम्मेलन में भाग लेने की सुविधा विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदान की गई।

5.10 नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन :-

भारत के विदेश मंत्रालय, दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षा संघ, मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय एवं भारत के वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय के सहयोग से 22-24 सितम्बर 2012 को जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का आयोजन सैंडटन कन्वेन्शन सेंटर, दूसरा तल, मौड स्ट्रीट, सैंडटन-2196, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में किया गया। विश्व शांति, अहिंसा, समानता और सम्पूर्ण मानव जाति के न्याय के लिए लंबे समय तक महात्मा गाँधी द्वारा और उनके जीवन से प्रभावित दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति डा. नेल्सन मंडेला द्वारा चलाए गए संघर्ष को देखते हुए सम्मेलन के उद्घाटन स्थल का नाम गाँधी ग्राम, पूर्ण सत्र हॉल का नाम नेल्सन मंडेला सभागार तथा अन्य सत्रों वाले स्थलों का नाम शांति, सत्य, अहिंसा, नीति और न्याय रखा गया था।

विश्व हिंदी सम्मेलन में उपस्थित होने का सुअवसर इस शोधकर्ता को भी प्राप्त हुआ। इतिहास का एक छोटा सा हिस्सा बनने का परमसुख हासिल हुआ।

5.10.1 सत्र :-

नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित हुए -

(क) महात्मा गाँधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ

(ख) हिंदी - फिल्म, रंगमंच और मंच की भाषा

(ग) सूचना प्रौद्योगिकी - देवनागरी लिपि और हिंदी का सामर्थ्य

(घ) लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी

(ङ) विदेश में भारत - भारतीय-ग्रंथों की भूमिका

(च) ज्ञान-विज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में हिंदी

(छ) हिंदी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका

(ज) हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका

(झ) दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षा-युवाओं का योगदान।

5.10.2 नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) मॉरीशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय विभिन्न देशों के हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों से संबंधित एक डाटाबेस का बृहत स्रोत केंद्र स्थापित करें।

(ख) विश्व हिंदी सचिवालय विश्व भर में हिंदी विद्वानों, लेखकों तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का भी एक डाटाबेस तैयार करे।

(ग) हिंदी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संस्थानों द्वारा हिंदी संबंधी उपकरण विकसित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाए।

(घ) विदेशों में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किए जाने के लिए महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा को अधिकृत किया जाए।

(ङ) अफ्रीका में हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुए वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रुचि एवं आकाँक्षाओं को देखते हुए उपयुक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जाएँ।

(च) सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएँ ताकि इसका लाभ विश्व भर के हिंदी भाषियों और प्रेमियों को मिल सके।

(छ) अनुवाद की महत्ता देखते हुए अनुवाद के विभिन्न आयामों के संदर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है अतः इस दिशा में ठोस कार्रवाई की जाए।

(ज) विश्व हिंदी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न विषयों पर क्षेत्रीय सम्मेलन किए जाते हैं। इनका उद्देश्य उनके अपने-अपने क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का समाधान

खोजना है। सम्मेलन ने इसकी सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया कि इस कार्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(झ) विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीय और विदेशी विद्वानों को सम्मानित करने की परंपरा रही है। इस विशिष्ट सम्मान के अनुरूप ही इन सम्मेलनों में विद्वानों को भेंट किए जाने वाले पुरस्कार अथवा सम्मान को गरिमापूर्ण नाम देते हुए इसे 'विश्व हिंदी सम्मान' कहा जाए।

(ञ) विगत वर्षों में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव को रेखांकित करते हुए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने के लिए समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

(ट) दो विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन के बीच यथासंभव अधिकतम तीन वर्ष का अंतराल रहे।

(ठ) 10वां विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाए।[2]

5.10.3 नौवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.10.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान :-

प्रो. एस शेषरतनम, बालकवि बैरागी, मधुकर उपाध्याय, हिमांशु जोशी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, कैलाशचंद्र पंत, एम पियोंगतेमजन जामीर, प्रो. सीई जीनी, डॉ. रामगोपालन शर्मा दिनेश, प्रो. जाबिर हुसैन, प्रो. मधुसूदन त्रिपाठी, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रो. बीवै ललितांबा, सुश्री ऊषा गांगुली, डॉ. के बनजा, डॉ. गिरिजाशंकर त्रिवेदी, हरिवंश, वाई लक्ष्मी प्रसाद, जियालाल शर्मा।

5.10.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान :-

डॉ. पीटर जेरार्ड फ्रेडलेंडर - ऑस्ट्रेलिया, सर्गेई सेरेब्रियानीचेक - रूस, डॉ. डगमार मारकोवा - रूस, मार्को जोली - इटली, प्रो. लिउ अंवू - चीन, डॉ. सरिता बूधू -

मॉरीशस, सत्यदेव टेंगर - मॉरीशस, बैरंग खाम - थाईलैंड, प्रो. उपुल रंजीत हेवतानागमेज - श्रीलंका, वान्या जौर्जिवा गनचेवा - बुल्गारिया, जबुल्लाह फिकरी - अफगानिस्तान, भोलानाथ नारायण - सूरीनाम, सुश्री कैटरीना बालेरीवा दोवबन्या - यूक्रेन, डॉ. कृष्ण कुमार - ब्रिटेन, प्रो. इंदु प्रकाश पाण्डेय - जर्मनी, डॉ. बारबरा लौटर्ज - जर्मनी, प्रो. तिकड़ी इशिदा - जापान, विजय राणा - ब्रिटेन, डॉ. वेदप्रकाश बटुक - अमेरिका, तोर्मोचो किकुची - जापान।

5.10.4 अन्य विशेषताएँ :-

सम्मेलन के पूर्व आरंभ में, मंत्रालय ने 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मुख्य विषय वस्तुओं से संबंधित और महत्त्वपूर्ण लेखों पर संकलन 'स्मारिका' के रूप में निकाला था। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने अपने मासिक प्रकाशन 'गगनांचल' की एक विशेष अंक निकाला। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने दैनिक बुलेटिन 'हिंदी विश्व' निकाला था। इस अवसर पर 40 पुस्तकों से भी अधिक का लोकार्पण हुआ। 'हिंदी शिक्षा संघ' के संस्थापक, पंडित नरदेव वेदालांकर की प्रतिमा का अनावरण, सुश्री प्रणीत कौर द्वारा किया गया।[3]

5.10.5 विश्व हिंदी सम्मेलनों की उपलब्धियाँ :-

यह है वर्ष 1975 में आरंभ होकर अब तक की गई विश्व हिंदी सम्मेलनों की यात्रा। यह एक झलक मात्र है। ऊपर लिखित सम्मेलनों के उद्देश्यों, लक्ष्यों तथा उस दिशा में सम्मेलनों के माध्यम से किए गए प्रयासों से इन सम्मेलनों की उपयोगिता एवं उपलब्धियों का आकलन सहज ही सामने आता है, तथापि कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं -

(क) वर्धा में महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

(ख) मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना भारत-सरकार और मॉरीशस की सरकार के सहयोग से की गई है।

(ग) 10 जनवरी विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देश एवं विदेश में भारत के राजदूतावासों एवं उच्चायोगों के सहयोग से हिंदी भाषा साहित्य, शिक्षण संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

(घ) सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के संदर्भ में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, वह निरंतर अग्रसर है और दिनोदिन विस्तार पा रही है।

(ङ) विदेशों में हिंदी शिक्षण में पेश आ रही समस्याओं को दूर करने, मानक पाठ्यक्रम तैयार करने, पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने की दिशा में भारत सरकार सक्रिय रूप से सहयोग कर रही है। इस आदेश से विभिन्न देशों में जहाँ स्थानीय विश्वविद्यालयों, स्कूलों, शैक्षिक संस्थाओं में हिंदी पढाई जाती है, हिंदी की कार्यशालाएँ एवं क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। ये सम्मेलन अब तक अबुधाबी (यू.ए.इ.), जापान, मास्को (रूस), बुडापेस्ट (हंगरी), सियोल (दक्षिण कोरिया), थाईलैंड, स्पेन, मॉरीशस एवं अमेरिका में आयोजित किए जा चुके हैं।

(च) विदेशी शिक्षकों, साहित्यकारों आदि द्वारा तैयार की गई शिक्षण सामग्री जैसे की शब्दकोश, पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशनों को भारत सरकार के मंत्रालय द्वारा सहायता प्रदान की गई है।

(छ) अनिवासी भारतीय लेखकों के हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना हो या दुनिया के अन्य देशों में हिंदी शिक्षण के लिए मानक पुस्तकें तैयार करना हो, विदेशी हिंदी विद्वानों के लिए भारत

में शोधवृत्ति की व्यवस्था करना हो, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पाठों की स्थापना करना हो, हिंदी में वेबसाइट तैयार करनी हो अथवा हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने का कार्य हो, इन सभी क्षेत्रों में प्रभावी उपायों के माध्यम से हिंदी बहुआयामी विस्तार के मार्ग पर प्रशस्त हुई है और समय-समय पर आयोजित ये विश्व हिंदी सम्मेलन इसके आधार रहे हैं।

इन सम्मेलनों ने विश्वभर के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों, शिक्षकों, पत्रकारों और असंख्य हिंदी प्रेमियों को न केवल मेल-जोल और परस्पर संवाद का एक मंच उपलब्ध कराकर सौहार्द और स्नेह की सरिता प्रवाहित की बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं को समादृत करके हिंदी को भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहिका के रूप में प्रमाणित किया।

5.11 दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन :-

10वां विश्व हिंदी सम्मेलन, मध्यप्रदेश सरकार की भागीदारी के साथ 10-12 सितंबर, 2015 तक मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में आयोजित किया गया। 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन को भारत में आयोजित करने का निर्णय सितंबर, 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग शहर में आयोजित 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में लिया गया था।

5.11.1 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित सत्र आयोजित हुए :-

(क) गिरमिटिया देशों में हिंदी

(ख) विदेशों में हिंदी शिक्षण - समस्याएँ और समाधन

(ग) विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा

(घ) अन्य भाषा भाषी राज्यों में हिंदी

(ङ) विदेश निति में हिंदी

(च) प्रशासन में हिंदी

(छ) विज्ञान शेत्र में हिंदी

(ज) संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी

(झ) विधि एवं न्याय क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाएँ

(ञ) बाल साहित्य में हिंदी

(ट) हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता

(ठ) देश और विदेश में प्रकाशन - समस्याएँ एवं समाधान

5.11.2 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य :-

(क) विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान देश-विदेश से आए अनेक विद्वानों, हिंदी मनीषियों एवं अन्य प्रतिभाशाली विशेषज्ञों ने 12 चयनित विषयों पर समानांतर सत्रों में गहन चर्चा के पश्चात जो अनुशंसाएँ की हैं, विदेश मंत्रालय एक विशेष समीक्षा समिति गठित कर उन अनुशंसाओं को यथोचित कार्यवाही हेतु विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों को अग्रेषित करे।

(ख) 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सन् 2018 में मॉरीशस में किया जाए जिस दौरान वहाँ स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के नए भवन का औपचारिक उद्घाटन भी किया जाए।

5.11.3 दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित विद्वान :-

5.11.3.1 सम्मेलन में सम्मानित भारतीय विद्वान :-

डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय, डॉ. प्रभातकुमार भट्टाचार्य, डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर, डॉ. मधु धवन, प्रो. माधुरी जगदीश छेड़ा, प्रो. अनन्तराम त्रिपाठी, कुमारी अहेम कामै, डॉ. परमानन्द पांचाल, डॉ. नागेश्वर सुन्दरम, प्रो. हरि राम मीणा, डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी, डॉ. सुरेश कुमार गौतम, श्री आदित्य चौधरी, डॉ. के. के. अग्रवाल, श्री अन्नू कपूर, श्री अरविंद कुमार, श्री माता प्रसाद, श्री आनन्द मिश्र 'अभय', श्री रामबहादुर राय, श्री रामदरश मिश्र।

5.11.3.2 सम्मेलन में सम्मानित विदेशी विद्वान :-

श्री अनूप भार्गव - संयुक्त राज्य अमेरिका, श्रीमती स्नेह ठाकुर - कनाडा, डॉ. हाइंस वेर्नर वेसलर - जर्मनी, डॉ. अकीरा ताकाहाशी - जापान, प्रो. उषा देवी शुक्ल - दक्षिण अफ्रीका, सुश्री कमला रामलखन - ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो, डॉ. दैमन्तास वलनचूनास -लिथुआनिया, श्रीमती नीलम कुमारी - फिजी, डॉ. सार्ज वर्बेक - बेल्जियम, श्री अजामिल माताबदल - मॉरीशस, श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल - मॉरीशस, डॉ.इंदिरा गाजिंएवा - रूस, सुश्री दसनायक मुदियंसेलागे इन्द्रा कुमारी दसनायक- श्रीलंका, श्री मोहम्मद इस्माईल - साउदी अरब, श्री सुरजन परोही - सूरीनाम, श्री कैलाश नाथ बुधवार - यू. के., श्रीमती उषा राजे सक्सेना - यू. के., श्री हाशिम दुर्रानी - ऑस्ट्रेलिया, डॉ. इमरे बांगा - हंगरी, डॉ. पी. जयरामन - संयुक्त राज्य अमेरिका।

5.11.4 अन्य विशेषताएँ :-

दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन के उपलक्ष्य में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा प्रकाशित तथा इस सम्मेलन को समर्पित 'गगनांचल' का विशेषांक निकाला गया। इस सम्मेलन को समर्पित एक स्मारिका तथा एक पुस्तक 'प्रवासी साहित्य - जोहांसबर्ग से आगे' का भी विशेष रूप से प्रकाशन किया गया तथा इसका विमोचन उदघाटन समारोह में किया गया। इस सम्मेलन की विशेषता यह रही कि इस बार सत्र के विषयों पर अनुशंसाएँ दी गई और उसकी रिपोर्ट, प्रस्तुति एवं स्वीकृति भी सम्मेलन के दौरान ही हुई। प्रत्येक सत्र में उस विषय से सम्बंधित भारत के मंत्री ने अध्यक्षता की ताकि वे इन अनुशंसाओं पर अविलंब कार्य करना शुरू कर दें। इस विश्व हिंदी सम्मेलन की दृश्य-श्रव्य झलकियाँ 'दृश्यमान' नामक एंड्राइड एप्लीकेशन पर उपलब्ध कराई गईं हैं। इस सम्मेलन के लिए भोपाल के माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा इस एप्लीकेशन का निर्माण हुआ है। यह एप्लीकेशन गूगल स्टोर पर निःशुल्क उपलब्ध है तथा स्मार्टफोन का प्रयोग करने वाला कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से प्रयोग कर सकता है।

5.12 विश्व हिंदी सम्मेलन शृंखलाएँ :-

क्रम	तिथि	नगर	देश
1	10-14 जनवरी 1975	नागपुर	भारत
2	28-30 अगस्त 1976	पोर्ट लुई	मॉरीशस
3	28-30 अक्तूबर 1983	नई दिल्ली	भारत

4	2-4 दिसंबर 1993	पोर्ट लुई	मॉरीशस
5	4-8 अप्रैल 1996	ट्रिनिडाड-टोबॅगो	ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो
6	14-18 सितंबर 1999	लंदन	ब्रिटेन
7	5-9 जून 2003	पारामारिबो	सूरीनाम
8	13-15 जुलाई 2007	न्यूयॉर्क	अमेरिका
9	22-24 सितंबर, 2012	जोहान्सबर्ग	दक्षिण अफ्रीका
10	10-12 सितंबर, 2015	भोपाल	भारत

5.13 विगत में आयोजित नौ विश्व हिंदी सम्मेलनों के विषय इस प्रकार थेः

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन - 'अप्रवासी भारतीय और हिंदी'
छठा विश्व हिंदी सम्मेलन - 'हिंदी और भावी पीढ़ी'
सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन - 'विश्व हिंदी - नई शताब्दी की चुनौतियाँ'

आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन - 'विश्व मंच पर हिंदी'
नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन - 'भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ'
दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन - ‘हिंदी जगत - विस्तार एवं सम्भावनाएँ’

निष्कर्ष :-

हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को विस्तार देने का कार्य विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों से संपन्न हुआ है। आज तक के विश्व हिंदी सम्मेलनों का स्वरूप एवं आयोजन के हेतुओं को देखने के उपरांत यह निश्चित रूप से स्पष्ट होता है कि विश्व भर के हिंदी प्रेमी विद्वान एक ही मंच पर विचार विमर्श के लिए उपस्थित होते हैं। कई मुद्दों एवं आयामों तथा दृष्टिकोणों पर परिचर्चा होती है। नई योजनाओं के संदर्भ में विचार-विमर्ष होता है। इन सभी बातों के फलस्वरूप हिंदी के उत्थान का पथ प्रशस्त होता है। हिंदी विद्यापीठों की स्थापना एवं हिंदी से जुड़े कई पक्ष इससे उजागर होते हैं। देश विदेश के हिंदी लेखकों एवं सर्जकों को नव-रचनाओं के निर्माण की प्रेरणा मिलती है। अनुवाद का क्षेत्र भी इस से संपन्न होकर साहित्य रुचियों को दृष्टि प्रदान करता है। विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों का उद्देश्य सचमुच हिंदी की दृष्टि से महनीय ही है।

संदर्भ संकेत

1. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, मधु गोस्वामी, पृष्ठ क्र. 31
2. विश्व हिंदी सचिवालय वेब साईट - **http://vishwahindi.com/**
3. **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ**, अनंतराम त्रिपाठी, पृष्ठ क्र. 23

अध्याय छः

हिंदी की वर्तमान गतिविधियाँ

प्रस्तावना

6.1 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आय.सी.टी./इन्फोर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलोजी)

6.2 क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

6.3 अटल बिहारी बाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल, भारत

6.4 विश्व हिंदी दिवस

6.4.1 विश्व हिंदी दिवस (सन् 2015 भारत में)

6.4.1.1 नई दिल्ली

6.4.1.2 बेर सराय

6.4.1.3 केरल

6.4.1.4 लखनऊ

6.4.1.5 मुंबई

6.4.1.6 रायगढ़

6.4.2 विश्व हिंदी दिवस (सन् 2015 विश्व में)

6.4.2.1 बर्लिन, जर्मनी

6.4.2.2 फ्रंकफर्ट, जर्मनी

6.4.2.3 हैम्बर्ग, जर्मनी

6.4.2.4 ब्रुनेई, दारेसलाम

6.4.2.5 दोहा, क़तर

6.4.2.6 गयाना

6.4.2.7 जापान

6.4.2.8 लंदन

6.4.2.9 स्पेन

6.4.2.10 मिन्स्क, बेलारूस

6.4.2.11 मास्को, रूस

6.4.2.12 सुवा, फ़िजी

6.4.2.13 टोरंटो

6.4.2.14 हंबन्टा, श्रीलंका

6.4.2.15 केंडी, श्रीलंका

6.4.2.16 कोलंबो, श्रीलंका

6.4.2.17 नेपाल

6.4.2.18 चीन

6.4.2.19 क्रोएशिया

6.4.2.20 इजराइल

6.5 प्रवासी पत्रकारिता

6.5.1 जनकृति पत्रिका

6.5.2 शब्द व्यंजना हिंदी साहित्यिक पत्रिका

6.5.3 कविताकोश एवं गद्यकोश

6.6 समाचार में हिंदी

6.6.1 हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण

6.6.2 दिल्ली में सभी वेबसाइट हिंदी में होंगी

6.6.3 डेन्मार्क में हिंदी प्राध्यापक को 'श्रेष्ठ अध्यापक सम्मान'

6.6.4 महीयसी महादेवी वर्मा के जीवन पर फिल्म

6.6.5 निःशुल्क हिंदी और उर्दू की शिक्षण सामग्री

6.6.6 कैनडा के ऐल्बर्टा विश्वविद्यालय में हिंदी (समाचार)

6.6.7 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी (समाचार)

6.6.7.1 रेंजबैंक प्राइमरी स्कूल, क्रैनबर्न

6.6.7.2 ऑस्ट्रेलियन नॅशनल युनिवर्सिटी

6.6.8 सूरीनाम में प्रेमचंद जयंती

6.6.9 हिंदी-उज़्बेक शब्दकोश का लोकार्पण

6.7 विदेशों में हिंदी नाटकों का मंचन (समाचार)

6.7.1 क्रोएशिया

6.7.2 पद्मश्री शेखर सेन के एक पात्रीय हिंदी नाटक

6.7.3 हिंदी रायटर्स गिल्ड, टोरंटो, कैनडा द्वारा प्रस्तुत विभिन्न नाटक

6.7.4 नटराज नाट्यारण्य ड्रामा एंड आर्ट क्लब नौवा, फिजी

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

अध्याय छः

हिंदी की वर्तमान गतिविधियाँ

प्रस्तावना :-

अब तक के अध्यायों से यह तो स्पष्ट हो ही चुका है कि विश्व में हिंदी का प्रचार एवं प्रसार बड़ी तीव्रता से हो रहा है। विश्व के अग्रणी देश भारत से संबंध स्थापित करने के लिए हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ना आवश्यक समझते हैं। हिंदी की लोकप्रियता के चलते हिंदी को लेकर पूरे विश्व में कई नए कदम उठाए जा रहे हैं। इस अध्याय में वर्तमान में हिंदी को लेकर होने वाली अनेकानेक गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार में जो नए कदम उठाए गए हैं वो निम्नलिखित हैं।

6.1 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आय.सी.टी./इन्फोर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलोजी) :-

आज का युग तकनिकी का युग है। इस युग के क्रियाशील अंग होने के नाते आज भाषायी शिक्षकों का भी यह दायित्व हो जाता है कि आज की युवा पीढ़ी की आवश्यकता और रुचि को ध्यान में रखते हुए वे अपनी शिक्षण प्रणाली में समयानुसार परिवर्तन करें। अतः हिंदी भाषा शिक्षण में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आय.सी.टी.) का उपयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गया है। इसके द्वारा हिंदी की पढाई अधिक सुगम सरल तथा पाठ्यक्रम के शिक्षा उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करने का अवसर देती है। विद्यार्थियों को आय.सी.टी के द्वारा शिक्षा प्रदान करने के लिए उन्हें स्वयं भी प्रशिक्षण लेना जरूरी है। इसी दौर को आगे बढाते हुए, हिंदी भाषा शिक्षण में आय.सी.टी. का उपयोग मॉरीशस के

विद्यालयों में किया जा रहा है एवं शिक्षकों को भी आय.सी.टी. प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मॉरीशस इन उपक्रमों को मुफ्त में अन्य देशों को उपलब्ध कराता है। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सरकार के शिक्षा विभाग और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में 'हिंदी और आय.सी.टी' विषय पर हाल ही में एक सम्मेलन एवं कार्यशाला आयोजित की गई। वर्तमान में मॉरिशस के सौ प्रतिशत हिंदी के अध्यापक आय.सी.टी. प्रशिक्षित हैं| मॉरीशस की सहायता से दक्षिण अफ्रीका में भी इसकी कार्यशाला आयोजित की गई थी और बहुत सफल भी रही। अब इस कार्यशाला को करेबियन देशों में करने का भी नियोजन हो रहा है जोकि इन देशों के साथ-साथ हिंदी जगत के लिए भी महत्त्वपूर्ण होगा।

- इस कार्यशाला की कुछ झलकियाँ -

6.2 क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन :-

क्षेत्रीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन, भारत सरकार के वैश्विक हिंदी प्रचार-प्रसार की योजना का ही फल है। इन सम्मेलनों का मुख्य हेतु है उस क्षेत्र के हिंदी अध्ययन एवं अध्यापन में आने वाली समस्याओं से अवगत होना। इनमें उस क्षेत्र के सभी देशों के प्रतिनिधि, हिंदी अध्यापक, संस्थानों के प्रतिनिधि, भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रतिनिधि, विश्व हिंदी सचिवालय के प्रतिनिधि, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के प्रतिनिधि, केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। विचारों का आदान-प्रदान होता है, विचार-विमर्श होता है, हिंदी शिक्षण संबंधी समस्याओं को सबके सामने रखा जाता है। इस सम्मेलन में पारित मंतव्य भारत सरकार के समक्ष रखे जाते हैं। अब तक अमेरिका, मॉरीशस, सेउल, थाईलैंड, स्पेन, अबुधाबी, मॉस्को तथा हंगरी में ये सम्मेलन हुए हैं।

6.3 अटल बिहारी बाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल, भारत :-

अटल बिहारी बाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना 19 दिसंबर 2011 को हुई। विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य हिंदी भाषा को अध्यापन, प्रशिक्षण, ज्ञान की वृद्धि और प्रसार के लिए तथा विज्ञान, साहित्य, कला और अन्य विधाओं में उच्चस्तरीय गवेषणा के लिए शिक्षण का माध्यम बनाना है। यह विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश प्रांत में हिंदी माध्यम से ज्ञान के सभी अनुशासनों में अध्ययन, अध्यापन एवं शोध कराने वाला प्रथम विश्वविद्यालय है। यहाँ विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण, प्रमाणपत्र, पत्रोपाधि, स्नातक, स्नातकोत्तर, एम्.फिल, पीएच.डी. आदि जैसे अनेक उपाधि कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। यह विश्वविद्यालय एक नींव का पत्थर है, हिंदी भाषा की उन्नति का प्रमाण है। भारत के लिए तथा विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों के लिए यह एक बहुत ही गर्व की बात है।

6.4 विश्व हिंदी दिवस :-

विश्व हिंदी दिवस प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की थी। उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी 2006 को पहली बार विश्व हिंदी दिवस मनाया था।

विश्व में हिंदी का विकास करने और इसका प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसी लिए इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप मे मनाया जाता है।

6.4.1 विश्व हिंदी दिवस (सन् 2015 भारत में) :-

6.4.1.1 नई दिल्ली :-

भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा 10 जनवरी, 2015 को नई दिल्ली के अशोक होटल में विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। माननीया विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा स्वराज इस समारोह की मुख्य अतिथि रही। मॉरीशस के उप-प्रधानमंत्री, माननीया श्री शौकतअली सुघन भी विशेष रूप से उपस्थित थे। अन्य प्रतिभागियों में संसद के माननीय सदस्यगण, विभिन्न मंत्रालय के वरिष्ठ राजनयिक सहित प्रख्यात हिंदी विद्वान तथा साहित्यकार आदि भी शामिल रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सचिव, श्री अनिल वाधवा द्वारा माननीय विदेश मंत्री एवं उप-प्रधानमंत्री का पुष्प गुच्छ से स्वागत द्वारा हुआ। भारत में हिंदी का अध्ययन कर रहे विदेशी छात्रों द्वारा एक

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी हुई। समारोह के अंत में मंत्रालय द्वारा आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

6.4.1.2 बेर सराय :-

बेर सराय, नई दिल्ली में ही विदेश मंत्रालय द्वारा विदेश सेवा संस्थान में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। माननीय विशेष सचिव श्री नवतेज सरना मुख्य अतिथि थे। इस उपलक्ष्य में हिंदी का अध्ययन कर रहे विदेशी छात्रों के लिए आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को धनराशि व पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के छात्रों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम से समारोह की शोभा बढ़ी।

6.4.1.3 केरल :-

हिंदी प्रेमी मंच, त्रिशूर द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस, 2015 का आयोजन किया गया जिसमें कई हिंदी अध्यापक तथा अध्यापिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

6.4.1.4 लखनऊ :-

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय महिला बैंक द्वारा 10 जनवरी, 2015 को लखनऊ में एक संगोष्ठी तथा पुरस्कार समारोह का सफ़ल आयोजन किया गया।

6.4.1.5 मुंबई :-

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मॉरीशस से आए हिंदी के मूर्द्धन्य विद्वान श्री राज हीरामन तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के महाप्रबंधक डॉ. रमाकांत गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक श्री मराठे ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री राज हीरामन ने बताया कि मॉरीशस

में हिंदी नोट की भाषा है, हिंदी वोट की भाषा है, हिंदी रोटी की भाषा है। उन्होंने कहा कि उन्होंने सारे संस्कार हिंदी से प्राप्त किए हैं। गाँधी जी का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि जब वे मॉरीशस आए थे तो उन्होंने दो महत्त्वपूर्ण बातें बताई थी - बच्चों को शिक्षित करो और बच्चों को राजनीति में आने के लिए प्रेरित करो। इन्हीं सलाह के कारण आज मॉरीशस में राजनीति के क्षेत्र में भारतवंशी मूल के लोग कार्यरत है।

इसके अलावा बैंक के 20 देशों में स्थित कार्यालयों यथा यू.एस.ए., यू.के., मॉरीशस, फिजी, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो, गयाना, होंगकोंग आदि में भी पहली बार विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। मुंबई में समारोह का शुभारंभ श्री रवि कुमार अरोरा, महाप्रबंदक के स्वागत वक्तव्य से हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों को पुस्तक शॉल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सहायक महाप्रबंदक (राजभाषा) डॉ. जवाहर कर्नावट ने हिंदी के वैश्विक स्वरूप पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया एवं आभार प्रदर्शन मुख्य प्रबंधक श्री जयप्रकाश सौंखिया ने किया।

6.4.1.6 रायगढ़ :-

महानदी कोल फील्ड्स लिमिटेड में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष सह प्रबंदक निदेशक ए.एन. सहाय एम.सी.एल. की अध्यक्षता में एक राजभाषा सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें एम.सी.एल. के निदेशक, तकनीकी संचालन ए.के. तिवारी, निदेशक कार्मिक पी.सी. पाणिग्रही अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने हिंदी की प्रयोजनमूलकता एवं हिंदी से भारतीयों को स्वतः जुड़ने पर ज़ोर देते हुए कहा कि सच में अगर माना जाए तो हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषाओं में से एक है। निदेशक, कार्मिक पीसी

पाणिग्रही ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सभी को अपने स्तर से प्रयास करने की सलाह दी।

6.4.2 विश्व हिंदी दिवस (सन् 2015 विश्व में) :-

6.4.2.1 बर्लिन, जर्मनी :-

30 जनवरी, 2015 को भारतिय दूतावास, बेर्लिन के सांस्कृतिक विंग में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। श्री सेबास्वियाँ द्रैयर की परिकल्पना से कार्यक्रम 'कवि सांत मीराबाई' विषय पर आधारित रहा। श्रीमती सुशीला हक द्वारा भाषण एवं श्री अरिफ़ नक़वी व श्रीमती सयाशा बाला द्वारा कविता पठन भी हुआ।

6.4.2.2 फ्रंकफर्ट, जर्मनी :-

16 मार्च, 2015 को फ्रैंकफर्ट के भारतीय महावाणिज्य दूतावास में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। अवसर पर महावाणिज्यदूत श्री रवीश कुमार ने दूतावास द्वारा 'भारतीय संस्कृति का वैश्वीकरण' विषय पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को सम्मानित किया।

6.4.2.3 हैम्बर्ग, जर्मनी :-

14 जनवरी, 2015 को वाणिज्य दूतावास तथा हैम्बर्ग विश्वविधालय की एशिया-अफ़्रीका-इंस्टिट्यूट के सौजन्य से हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि, श्री मोहन राणा, उप वाणिज्य दूत, श्री दलबीर सिंह तथा भारतीय व तिब्बती शिक्षण विभाग के अध्यक्ष, प्रो. डॉ. माईकल ज़िमरमान द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस उपलक्ष्य में भारतीय विध्य विभग द्वारा हिंदी गान व संगीत प्रतियोगिता, छात्रों के भारत-अनुभव पर निबंध पठन, हिंदी में छात्रों दवारा रंगमंचीयता, आदिया अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित हुए। समारोह में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

6.4.2.4 ब्रुनेई, दारेसलाम :-

भारतीय उच्चायोग, ब्रुनेई, दारेसलाम व इंडियन एसोसिएशन बेलाइत (आई.ए.बी.) के संयुक्त तत्त्वावधान में सीरिया के बी.सी.आर.सी. बॉलरूम में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ एसोसिएशन के प्रधान श्री देवराजन तथा ब्रुनेई में भारतीय उच्चायुक्त, डॉ. अशोक कुमार अमरोही के वक्तव्य से हुआ। एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुआ जिसमें लगभग 30 से अधिक बच्चों व वयस्कों ने हिंदी कविता पठन, वक्तव्य एवं संगीत में भाग लिया। समारोह में अताशे श्री वेंकटचेलम, प्रथम सचिव श्री ललित प्रसाद, द्वितीय सचिव श्री हरि गोविंदन, भारतीय दूतावास के अन्य सदस्य तथा इंडियन एसोसिएशन बेलाइत के सदस्य उपस्थित थे।

6.4.2.5 दोहा, क़तर :-

एम.ई.एस. भारतीय स्कूल, दोहा के हिंदी विभाग ने रंगारंग कार्यक्रमों तथा प्रस्तुतियों द्वारा भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस 2015 मनाया। लगभग 150 छात्रों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रमों में भाग लिया तथा हिंदी की महिमा का गान किया।

दोहा, क़तर के बिरला पब्लिक स्कूल में भी विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के अंतर्गत बिरला पब्लिक स्कूल के छात्रों द्वारा प्रहसन, नृत्य व गायन आदि विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

6.4.2.6 गयाना :-

बैंक ऑफ बड़ौदा, गयाना ने 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी के महत्त्व को उजागर करने के लिए अपने रिज़ेट स्ट्रीट कार्यलय में एक समारोह का आयोजन किया। बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंध-निदेशक, श्री अमित कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी ने लगभग 22 भाषाओं को जन्म दिया है और इन सभी का प्रयोग भारत में किया जाता है। गयाना हिंदी प्रचार सभा के प्रधान श्री बेनी सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि उनका आजीवन लक्ष्य गयाना

के चारों ओर हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना रहा है। उन्होंने यह आशा व्यक्त की थी कि जो अधिक प्रभावी है, वे भी सामने आकर हिंदी के क्षेत्र में कुछ ठोस कार्य करें। हिंदी के क्षेत्र में अपने महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए श्री बेनी सिंह को 'मोज़ाइक ऑफ़ फ़ेथ-प्लेसेज़ ऑफ़ वर्शिप इन इंडिया' पुस्तक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

6.4.2.7 जापान :-

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर तोक्यो में हिंदी की गूंज रही। 29 जनवरी, 2015 को भारतीय दूतावास ने विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया जिसमें तोक्यो युनिवर्सिटी ऑफ फ़ॉरेन स्टडीज़ के प्रो. ताकेशी फ़ूजिइ सहित कई विद्वान उपस्थित थे।

16 जनवरी, 2015 को ओसाका-कोबे के महावाणिज्य दूतावास में भी भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

6.4.2.8 लंदन :-

विश्व हिंदी दिवस, 2015 के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, लंदन में एक समारोह का आयोजन किया गया। इंडियन हाउस के गाँधी हॉल में इस अवसर पर उच्चायोग के सभी अधिकारी और कर्मचारी उत्साह के साथ शामिल हुए। सर्वप्रथम अताशे ने विश्व हिंदी दिवस की पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए इसके ऐतिहासिक एवं सम-सामयिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। तदुपरांत भारतीय उच्चायुक्त श्री रंजन मथाई ने माननीय प्रधान मंत्री जी का संदेश पढ़ा तथा उपस्थित सभी अतिथियों से वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सम्मिलित होने का आह्वान किया जिससे कि हिंदी विश्व पटल पर स्थापित हो सके।

विश्व हिंदी दिवस, 2015 के उपलक्ष्य में 5 दिसंबर, 2014 को भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा यू.के. हिंदी सम्मान समारोह का आयोजन भी किया गया जिसमें हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में शामिल लोगों तथा संस्थाओं को सम्मानित

किया गया - सुश्री जे. आस्तिन व सुश्री देवीना ऋषि को जॉन गिलक्रिस्ट यू.के. हिंदी शिक्षण सम्मान; श्री सोहन राही व श्रीमती कविता वाचकनवी को डॉ. हरिवंश राय बच्चन यू.के. हिंदी साहित्य सम्मान; श्री रवि शर्मा व सुश्री शिखा वार्शनिय को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता सम्मान; काव्य धारा व वातायन को फ़ेडरिक पिंकोट यू.के. हिंदी प्रचार सम्मान। साथ ही डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी साहित्य अनुदान योजना के अंतर्गत हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन हेतु श्रीमती शैल अग्रवाल को 'बसेरा' कहानी संग्रह, श्री तेजेंद्र शर्मा को 'सपने मरते नहीं' कहानी संग्रह, श्रीमती ज़किया जुबेरी को 'सांकल' कहानी संग्रह तथा श्रीमती वंदना मुकेश को 'मौन मुखर जब' काव्य संग्रह के लिए 250 पौंड की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान की गई।

6.4.2.9 स्पेन :-

13 जनवरी की शाम को 'कासा दे ला इंडिया (भारत भवन)' में विश्व हिंदी दिवस 2015 मनाया गया। हिंदी संघ के पूर्व छात्र. हिंदी संबंधित गतिविधियों से जुड़े प्राध्यापक और भाषाविदों तथा कुछ नए और उत्साही छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भारतीय राजदूतावास के द्वितीय सचिव, श्री मैत्रेय कुलकर्णी 'कासा दे ला इंडिया' के निदेशक, श्री गियेमों रोडरीगेज़ और वय्यादोलिद विश्वविद्यालय के उप-कुलपति, श्री खोसे रामोन गोंजालेज ने अपने विचार व्यक्ति किए। पूर्व छात्रों ने हिंदी संबंधित गतिविधियों के अपने अनुभव सुनाए। सभी उपस्थित पूर्व और नए छात्रों, प्राध्यापकों और भाषाविदों ने वय्यादोलिद विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की 'हिंदी चेयर' की स्थापना की संभावना पर संतुष्टि जताई।

6.4.2.10 मिन्स्क, बेलारूस :-

भारतीय दूतावास, मिन्स्क के प्रांगण में 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बेलारूस में भारतीय राजदूत, श्री मनोज के. भारती ने प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा और श्रोताओं के समक्ष हिंदी भाषा के विभिन्न

पक्षों पर प्रकाश डाला। हिंदी कक्षा के छात्रों ने अवसर का लाभ उठाते हुए कविता तथा कहानी पठन, गायन से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया।

6.4.2.11 मास्को, रूस :-

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मास्को के भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर रूसी भारतविद् व हिंदी छात्र उपस्थित थे। इंडियन मिशन के उप-प्रधान, श्री संदीप आर्या ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम इस बात से खुश है कि विश्व हिंदी दिवस के समारोहों में रूसी जन भारी संख्या में भाग ले रहे है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ जिसमें छात्रों ने भारतीय वेशभूषा पहनकर एक भारतीय महाकाव्य के अंको पर अभिनय किया।

6.4.2.12 सुवा, फ़िजी :-

बैंक ऑफ़ बडोदा, सुवा ने 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने किंग्स स्ट्रीट, नसोरी कार्यलय में एक समारोह का आयोजन किया जिसमें भारतीय उच्चायुक्त, सुवा, फ़िजी विशेष रूप से उपस्थित थे। बैंक के सभी कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

6.4.2.13 टोरंटो :-

10 जनवरी, 2015 को भारतीय दूतावास, टोरंटो के परिसर में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री अखिलेश मिश्र, कौंसेल जनरल ने अपने संदेश में यह स्पष्ट किया कि कैसे हिंदी भाषा द्वारा विदेश में भारतीय सांस्कृति को जीवित रखा जा सकता है। आयोजन में लोगों की अच्छी प्रतिभागिता रही। लगभग 30 कवियों ने अपनी कविता के साथ समा बाँध ली।

6.4.2.14 हंबन्टा, श्रीलंका :-

31 जनवरी, 2015 को भारतीय महावाणिज्य दूतावास, हंबन्टा द्वारा दूतावास के प्रांगण में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर हिंदी में वक्तव्य व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। दूतावास के अधिकारी, हिंदी छात्र व श्रीलंका के निवासियों ने इस प्रतियोगिता और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। हरेक श्रेणी के प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा अन्य सभी प्रतिभागियों उनकी प्रतिभागिता के लिए समाश्वासक पुरस्कार दिया गया।

6.4.2.15 कैंडी, श्रीलंका :-

भारत के सहायक उच्चायोग, कैंडी के भारतीय कला केंद्र के सभागार में 30 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबंध, वाद-विवाद व भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी हुई।

6.4.2.16 कोलंबो, श्रीलंका :-

12 जनवरी, 2015 को भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो ने भव्य रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाया। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा 2014 के परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

6.4.2.17 नेपाल :-

12 जनवरी को भारतीय दूतावास, काठमाण्डू द्वारा अन्नपूर्णा होटल में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नेपाल के उपराष्ट्रपति महामहिम परमानन्द झा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय राजदूत महामहिम रंजीत राय ने किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय केंद्रीय हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. श्वेता दीप्ति व भारतीय गृह मंत्रालय के

अंतर्गत राज भाषा विभाग के तकनीकि निर्देशक हरिन्दर कुमार भी विशेष रूप से उपस्थित थे। अवसर पर कवि गोष्ठी का आयोजन भी हुआ।

6.4.2.18 चीन :-

विश्व हिंदी दिवस के मौके पर चीन में भी हिंदी की गूंज रही। विदेशों में रहने वाले भारतीयों के लिए अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी से जुड़ने का यह एक अच्छा अवसर होता है। 10 जनवरी को यही बात पेइचिंग स्थित भारतीय दूतावास में भी देखने को मिली। चीनी लोगों की उपस्थिति इस बात का प्रतीक है कि हिंदी व भारत के प्रति उनका लगाव गहरा है।

6.4.2.19 क्रोएशिया :-

क्रोएशिया में हर साल बड़े उत्साह से हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। यह परंपरा भारत विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा, क्रोएशिया में उपस्थित भारतीय दूतावास की सहायता से तथा लोटस नामक भारतीय-क्रोएशियन संस्थान की मदद से, पिछले दशक से चली आ रही है। इस अवसर पर विद्यार्थी हिंदी में प्राप्त ज्ञान और अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ प्रस्तुत करते हैं। हिंदी दिवस पर वे भारत की अपनी यात्राओं के अनुभव सुनाते हैं, हिंदुस्तानी या हिंदी में क्रोएशियन कविता सुनाई जाती है, पारंपरिक एवं आधुनिक हिंदुस्तानी गाने गाए जाते हैं, नाटकों का मंचन किया जाता है, स्वादिष्ट हिंदुस्तानी खाना बनाया जाता है, विभिन्न तरह की प्रदर्शनियाँ

तथा साड़ियों की प्रदर्शनी, हिंदुस्तानी साजों की प्रदर्शनी, भारत की यात्राओं के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाती है।

6.4.2.20 इजराइल :-

तेल अवीव विश्वविद्यालय व इज़्राइल में भारतीय दूतावास द्वारा 14 जून को शानदार रूप से हिंदी दिवस मनाया गया। इजरायल के हिंदी भाषाविद ग्रेनेदी श्लोम्पर द्वारा आयोजित हिंदी दिवस एवं उन्हीं के द्वारा प्राप्त छवियाँ प्रस्तुत हैं।[1]

6.5 प्रवासी पत्रकारिता :-

यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि जिस प्रकार से भारत में हिंदी-पत्रकारिता विभिन्न चरणों में विकसित हुई है, ठीक उसी प्रकार से विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों के द्वारा उसके विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है। अनेक प्रवासी अपने धर्म, संस्कार और भाषा से भावात्मक रूप में जुड़े हुए हैं। इनके द्वारा समय-समय पर हिंदी पत्रिका के उन्नयन के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया गया था, जो अनेक रूपों में आज भी हो रहा है। इनके मूल में हिंदी पत्रकारिता के प्रति निष्ठा और अंतरराष्ट्रीय विकास की भावना निहित है। अनेक स्थानों पर व्यावहारिक रूप से लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से उसमें हिंदी के साथ ही स्थानीय भाषाओं का अंश भी प्रकाशित किया जाता है और वे द्विभाषी अथवा त्रिभाषी आदि रूपों में प्रकाशित हो रहे हैं। पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। विदेशों में हिंदी के विकास में पत्रकारिता का प्रभाव और योगदान विशेष उल्लेखनीय है। हिंदी पत्रकारिता का जन्मदाता स्थान भारत है मगर आज यह पत्रकारिता भारत की सीमाओं को पार कर

के विदेशों में पहुँच गयी है। यह ऐतिहासिक घटना 19वीं शताब्दी के आरंभ में हुई है। विदेशों में हिंदी पत्रकारिता का अर्थ है विदेशों में समाचार संकलन और उनके स्थानीय प्रदेशों में प्रसार करना। विदेशों में भी हिंदी पत्रकारिता का स्थान विस्तृत होता जा रहा है। दैनिक से लेकर वार्षिक तक अनेक क्षेत्रों में हिंदी पत्रिकाएँ चल रही हैं। आजकल विशेष रूप से जो पत्रिकाएँ चल रही है उनके योगदान से भाषा के विकास में और प्रचार एवं प्रसार में प्रगति नजर आ रही है। पत्रिकाएँ सिर्फ वार्ताओं के लिए ही नहीं बल्कि विदेशी साहित्यकारों को भी एक नई दिशा प्रदान कर रही है। कुछ पत्रिकाएँ आजकल के कंप्यूटर युग के साथ दौड़ रहीं हैं। जैसे ई-पत्रिकाएँ भी विशेष रूप से प्रचार में आई हैं।

ट्रिनिडाड एंड टोबॅगो में 'कोहिनूर', बर्मा या म्यांमार में 'बर्मा समाचार' (दैनिक), सूरीनाम में 'वैदिक जीवन' (मासिक), फीजी में 'शांतिदूत', 'जैफीजी', 'फीजी संदेश' (साप्ताहिक), अमेरिका में 'अनुभूति-अभिव्यक्ति' (साप्ताहिक और ई-पत्रिका), सौरभ, विश्वा, विश्व अनेक (त्रैमासिक), विश्व हिंदी न्यास की त्रैमासिक पत्रिका के अंतर्गत चार विशिष्ट उपलब्धियाँ विज्ञान प्रकाशन, बाल हिंदी जगत, हिंदी जगत, न्यास समाचार, कर्मभूमि नामक ई-पत्रिका उल्लेखनीय है। कनाडा में हिंदी चेतना हिंदी प्रचारिणी सभा की त्रैमासिक पत्रिका, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया में भारत-भारती नामक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है। मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता का एक विशिष्ट स्थान है। सन् 1909 में डॉ. मणिलाल जी ने हिंदुस्तानी नाम से साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया था। मॉरीशस इंडियन टाईम्स, मॉरीशस मित्र, ओरियंटल गज़ट, सनातन धर्मांक, आर्यवीर जागृति, अनुराग, वसंत, जनता आदि पत्रिकाएँ यहाँ प्रचलित हैं।

इनमें कुछ पत्रिकाएँ कई कारणों से बंद हो गई हैं। आजकल विशेष रूप से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका विश्व हिंदी समाचार का प्रकाशन हो

रहा है। अनेक लघु पत्रिकाएँ भी आज विशष्ट नाम पा रही हैं। विदेशों में हिंदी पत्रकारिता के अधिक बढ़ने का कारण है वहाँ बसे भारतीय लोगों ने हिंदी भाषा की अस्मिता को बनाए रखने के लिए अपनी शक्ति की ओर से प्रयत्न करना ही है। पाठकों के अभाव और आर्थिक कारणों से कई पत्रिकाएँ बंद हो रही हैं। विदेशों में कुछ विश्वविद्यालय भी भाषा-पत्रिकाएँ निकाल रहे हैं। आजकल हिंदी विश्व मंच पर खडी है और उसे उस स्थान पर टिकाने में पत्रकारिता का भी प्रमुख हाथ है। विदेशों में बसे भारतीय भारत की मिट्टी से जुड़े रहने के लिए अपनी भाषा में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। हिंदी में भिन्न-भिन्न देशों से निकलने वाली विविध पत्र-पत्रिकाएँ इसका प्रमाण है। इस प्रकार की कुछ पत्रिकाओं के नमूने निम्न हैं -

6.5.1 जनकृति पत्रिका :-

जनकृति पत्रिका विश्वभर में हिंदी भाषा के विकास हेतु कार्य कर रही है इसी कड़ी में हिंदी विश्व का कॉलम बनाया गया है जिसमें विश्व के अनेक देशों में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति को प्रस्तुत किया है साथ ही अहिंदी भाषी रचनाकारों को पत्रिका में स्थान दिया। विजिट करें - http://www.jankritipatrika.com/hindi.php

6.5.2 शब्द व्यंजना हिंदी साहित्यिक पत्रिका :-

शब्द व्यंजना हिंदी साहित्य की नई मासिक ई-पत्रिका है जिसका उद्देश्य हिंदी भाषा व साहित्य का प्रचार-प्रसार करना है। अध्ययन, शोध, विमर्श पर केंद्रित यह पत्रिका विश्व साहित्य के प्रमुख रचनाकारों को प्रकाशित करने के साथ हिंदी साहित्य के नए रचनाकारों को स्थान प्रदान करेगी। आलोचना तथा अन्य भाषा-साहित्य की प्रमुख रचनाओं के हिंदी में अनुवाद को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी यह पत्रिका प्रयास कर रही है। http://shabdvyanjana.com/

6.5.3 कविताकोश एवं गद्यकोश :-

5 जुलाई को कविताकोश के अपनी स्थापना के 9 वर्ष पूरे किये। भारतीय साहित्य को पाठकों तक पहुँचाने की यह योजना आज हिंदी जगत में स्वयंसेवी भावना, निष्ठा, परिश्रम, प्रोफ़ेशनलिज़्म, और तकनीकि उत्कृष्ठता का पर्याय बन चुकी है। कुछ रचनाकारों की कुछ रचनाओं से आरंभ करते हुए आज कविताकोश टीम ने इसे हज़ारों कवियों, कृतियों शैलियों का भण्डार बना दिया है जो पाठकों, छात्रों, शोधकर्ताओं के लिए कविता गंगोत्री सिद्ध हो रही है। स्वयंसेवी रूप से इतने बड़े कार्य को आरंभ करना और उसे इतने वर्षों तक जारी रखना बहुत कठिन है। भारतीय पाठकों के लिए इसकी उपयोगिता तो है ही लेकिन जिन देशों में पुस्तकों और पत्रिकाओं की प्राप्ति की कठिनाइयाँ हिंदी प्रेम और ज्ञानार्जन में सबसे बड़ी रुकावट होती हैं वहाँ के पाठकों के लिए बहुधा कविताकोश भारतीय साहित्य तक पहुँचने का सबसे सरल और कभी कभी एकमात्र साधन बन गया है।

विश्व की हिंदी पत्रिकाएँ जो कि बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं इस प्रकार हैं -

(क) भारत दर्शन - न्यूज़ीलौंड से प्रकाशित हिंदी साहित्यिक पत्रिका

(ख) सरस्वती पत्र - कनाडा से प्रकाशित

(ग) हेल्म - यू.के. की हिंदी इलेक्ट्रोनिक लिटररी मैगज़ीन

(घ) हिंदी नेस्ट

(ङ) क्षितिज

(च) अभिव्यक्ति संयुक्त अरब अमीरात से प्रकाशित

(छ) अनुभूति संयुक्त अरब अमीरात से प्रकाशित

(ज) अन्यथा - अमेरिका स्थित भारत के मित्रों द्वारा प्रकाशित

(झ) हिंदी परिचय पत्रिका

(ञ) गर्भनाल (प्रकाशक - श्री आत्माराम शर्मा)

(ट) कलायन पत्रिका

(ठ) कर्मभूमि (हिंदी यूएसए की त्रैमासिक पत्रिका

(ड) 'हिंदी जगत', 'हिंदी बालजगत' एवं 'विज्ञान प्रकाश' - विश्व हिंदी न्यास समिति द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

(ढ) इ-विश्वा (अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका)

(ण) दी समिति, सेलम की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

(त) प्रवासी टुडे - अक्षरम् नामक अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था की पत्रिका

(थ) पुरवाई

(द) 'अम्स्टेल गंगा' (नीदरलैंड और भारत की हिंदी का संगम)

(ध) 'हिमालिनी' नेपाल की हिंदी पत्रिका

(न) 'प्रयास' कनाडा की हिंदी पत्रिका

(ऩ) 'चेतना' कनाडा की हिंदी पत्रिका

(प) विश्व हिंदी पत्रिका, मॉरीशस

6.6 समाचार में हिंदी :-

6.6.1 हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण :-

12 मार्च 2015 की ऐतिहासिक तिथि को भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मॉरीशसीय प्रधान मंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ एक भव्य समारोह में किया गया। यह कार्य काफी दिनों से रुका हुआ था।

6.6.2 दिल्ली में सभी वेबसाइट हिंदी में होंगी :-

भारतीय केंद्र सरकार के निर्देश में सभी पक्षों से अपनी वेबसाइट तत्काल प्रभाव से हिंदी में विकसित करने को कहा गया है।

केंद्र के निर्देश पर राज्य सरकार ने जारी किए दिशानिर्देश

हिंदी में होंगी दिल्ली की सभी वेबसाइट

पहल

नई दिल्ली | निर्मल यादव

दिल्ली सरकार के सभी विभाग, स्थानीय निकायों, बोर्ड, आयोग, संस्थानों से लेकर दिल्ली पुलिस तक की वेबसाइट को हिंदी में विकसित किया जा रहा है। केंद्र सरकार के निर्देश पर दिल्ली सरकार की ओर जारी नोट में सभी पक्षों से अपनी वेबसाइट तत्काल प्रभाव से हिंदी में विकसित करने को कहा गया है।

सरकार ने विभागीय कामकाज में हिंदी का प्रभावी तौर पर इस्तेमाल करने के लिए अधिकारियों की नामपट्टिका भी हिंदी में लगाने की पहल की है। सूत्रों के अनुसार इस कवायद में कला एवं संस्कृति विभाग ने दो कदम आगे बढ़कर अधिकारियों की नामपट्टिका के अलावा नोटिस बोर्ड, रबड़ की मोहर, सील और लोगों सहित कामकाज में इस्तेमाल होने

काम शुरू

- नामपट्टिका, नोटिस बोर्ड व मोहर भी की जा रही तैयार
- विभागों को कामकाज में हिंदी का उपयोग बढ़ाने को कहा गया

वाली अन्य सरकारी सामग्री को हिंदी में बदलने का फैसला किया है।

मुख्यमंत्री कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि कई विभागों ने अपनी वेबसाइट हिंदी में बनाने का काम शुरू कर दिया है। इससे ई गवर्नेंस का लाभ उठाने वाले हिंदी भाषी लोगों को खासी सहूलियत होगी। विभागों को भेजे गए पत्र में कामकाज के लिए हिंदी का यथासंभव इस्तेमाल करने की अनिवार्यता की बात कही गई है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल स्वयं इस पहल को आगे बढ़ाने के पक्षधर हैं। वह सरकारी पत्राचार में हिंदी के इस्तेमाल के हिमायती हैं।

अधिकारी ने बताया कि इस पहल के अगले चरण में सरकारी आदेश, दिशानिर्देश और कानूनी प्रावधानों से जुड़े दस्तावेजों को भी हिंदी में जारी करने को शामिल किया जाएगा। इसी तरह दिल्ली पुलिस को भी यातायात सहित अन्य महकमों में हिंदी के इस्तेमाल को बढ़ावा देने को कहा गया है।

कला एवं संस्कृति विभाग ने दिसंबर 2012 में ही राजभाषा अधिनियम 1976 के हवाले से सभी विभागों की वेबसाइट हिंदी में विकसित करने की पहल की थी। लेकिन यह मुहिम अब तक रंग नहीं ला सकी। अब दिल्ली सरकार ने केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के निर्देश पर इस पहल को आगे बढ़ाया है। इस काम की गति की समीक्षा के लिए कला एवं संस्कृति विभाग के अधिकारी अन्य विभागों से निरंतर समीक्षा रिपोर्ट ले रहे हैं।

6.6.3 डेन्मार्क में हिंदी प्राध्यापक को 'श्रेष्ठ अध्यापक सम्मान' :-

हिंदी के शिक्षण में अपने मौलिक प्रयासों के कारण कॉपन्हागन विश्वविद्यालय ने जर्मन मूल के युवा हिंदी प्रोफ़ेसर श्री एल्मर जोसेफ रेन्नर को 2014 में पूरे विश्वविद्यालय का बहतरीन अध्यापक चुना।

6.6.4 महीयसी महादेवी वर्मा के जीवन पर फिल्म :-

'पंथ होने दो अपरिचित' महीयसी महादेवी वर्मा के जीवन और कृतित्व पर आधारित बहुप्रशंसित, बहुचर्चित वीडियो फ़िल्म है जो कि अंतरजाल में यूट्यूब पर उपलब्ध है जिसके निर्माता श्री देवीप्रसाद मिश्र हैं। यह उनके द्वारा लिया गया एक

आति सराहनीय कदम है। ऐसे ही कई और फिल्म अन्य प्रसिद्ध साहित्यकरों के भी बनाने चाहिए जो कि हिंदी भाषा के शिक्षण के लिए अत्यंत उपयुक्त सिद्ध होगा।

6.6.5 निःशुल्क हिंदी और उर्दू की शिक्षण सामग्री :-

नॉर्थ केरोलिना विश्वविद्यालय के प्रो. अफ़्रोज़ ताज ने बहुत ही निष्ठा से तैयार की हिंदी और उर्दू के शिक्षण की सामग्री विश्व भर के लिए तैयार की है और इसे निःशुल्क अंतरजाल द्वारा उपलब्ध भी कराई है। http://taj.chass.ncsu.edu/

6.6.6 कैनडा के ऐल्बर्टा विश्वविद्यालय में हिंदी (समाचार) :-

कैनडा के ऐल्बर्टा विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई आरंभ। ईस्ट एशियन स्टडीस (इ.ए.एस.) के विभाग द्वारा हिंदी के कक्षाएँ आरंभ हो रही हैं सन् 2015 के सत्र से। एल्बर्टा विश्वविद्यालय के निदेशक रायन डंच ने बताया कि इस यूनिवर्सिटी के इतिहास में यह पहली बार होने जा रहा है और यह सब एक सुनिश्चित योजना के अंतर्गत हो रहा है।

6.6.7 ऑस्ट्रेलिया में हिंदी (समाचार) :-

6.6.7.1 रेंजबैंक प्राइमरी स्कूल, क्रैनबर्न :-

क्रैनबर्न इलाके में स्थित रेंजबैंक प्राइमरी स्कूल ने एक बड़ा कदम लिया है जिसके चलते प्रेप के बच्चों से लेकर ग्रेड छः तक के विद्यार्थियों को हिंदी भाषा से रूबरू कराया जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया के किसी भी प्रांत में ये पहली बार हुआ है कि एक सरकारी स्कूल ने अपने पाठ्यक्रम में हिंदी को ही एकमात्र विदेशी भाषा के तौर पर चुना है। विक्टोरिया प्रांत के इस स्कूल के प्रधानाचार्य कॉलिन आइवरी को गर्व है कि उनके स्कूल में मैंडरिन या स्पैनिश के बजाय हिंदी सिखाई जा रही है। उन्होंने बताया, "भारत एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है और हमने आस-पास दूसरी भाषाओं पर ज़ोर देखा तो सोचा हिंदी क्यों नहीं। एक कमिटी बनाई जिसमें बच्चों के माता-पिता की राय ली गई। सबने खुशी से तुरंत हामी भी भर दी। रेंजबैंक प्राइमरी

स्कूल में फिलहाल कुल बच्चों की संख्या 392 है और इसमें भारतीय मूल के बच्चे सिर्फ़ 10 हैं। अफगानिस्तान से लेकर यूरोप और अफ्रीकी मूल वाले बच्चे अब हिंदी में बात करना सीख रहे हैं। पूजा वर्मा और किरनप्रीत कौर, हैं जो विद्यार्थियों को हिंदी से अवगत कराने में जुटी हुई हैं। लेकिन प्रधानाचार्य की योजना है कि आगे होने वाली, दो और शिक्षकों की भर्ती में हिंदी की जानकारी पर भी ज़ोर दिया जाएगा। हालांकि ज़्यादातर बच्चे अभी प्रारंभिक हिंदी के शब्द और उच्चारण ही सीख सके हैं लेकिन इस भाषा के प्रति इनका उत्साह निराला है।

आलम ये है कि अब स्कूल के शौचालयों के सामने लगे बोर्ड पर 'पुरुष' और 'महिला' तक लिखा दिखता है। पूजा वर्मा ने कहा, "यहाँ भारत को लेकर जागरूकता बहुत बढ़ रही है। हमारे पास दूसरे स्कूलों से भी फ़ोन भी आने लगे हैं"।

6.6.7.2 ऑस्ट्रेलियन नॅशनल युनिवर्सिटी :-

ऑस्ट्रेलियन नॅशनल युनिवर्सिटी (ए.एन.यू.) का साऊथ एशिया रिसर्च इंस्टिट्यूट अधिक से अधिक पाठशालाओं से हिंदी शिक्षण आरंभ करने का अनुरोध कर रहा है। ऑस्ट्रेलिया के हिंदी भाषाविद डॉ. पीटर फ्रीडलेंडर के शब्दों में, "जब तक हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या नहीं बढ़ेगी, ऑस्ट्रेलिया, भारत की सांस्कृतिक समझ

और उसके साथ अपने सम्बंधों में पीछे रहेगा।” http://www.anu.edu.au/news/all-news/call-for-more-schools-to-teach-hindi

6.6.8 सूरीनाम में प्रेमचंद जयंती :-

सूरीनाम के हिंदी विद्यार्थियों ने इस वर्ष प्रेमचंद जयंती मनायी। यह अधिक सराहनीय इसलिए भी है क्योंकि सूरीनाम में हिंदी का अस्तित्त्व बहुत कम होता चला जा रहा हैं। इसलिए सुरीनामके छात्रों द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय है। इस देश में हिंदी के भविष्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम भी है।

6.6.9 हिंदी-उज़्बेक शब्दकोश का लोकार्पण :-

भारतीय प्रधान मंत्री द्वारा उज़्बेकिस्तान यात्रा के दौरान पहले हिंदी-उज़्बेक शबदकोश का लोकार्पण, साथ में हैं - उज़्बेकि प्रधान मंत्री।

6.7 विदेशों में हिंदी नाटकों का मंचन (समाचार) :-

विश्व में आज भी कई नाटकों का मंचन हो रहे हैं। इन देशों में नाटको के सिलसिले में हो रही कुछ गतिविधियों का विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

6.7.1 क्रोएशिया :-

2012 में विद्यार्थियों ने भगवती शरण गुप्त के नाटक 'प्रायश्चित' का मंचन हिंदी दिवस के उपलक्ष में किया गया और इतना पसंद किया गया कि दो बार जाग्रेब के थिएटर में प्रदर्शित किया गया। 2013 में हिंदी दिवस पर दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों ने अपनी प्रेरणा के अनुसार बनाए हुए नाटक 'हिंदी कक्षा में' का प्रदर्शन किया। 2014 के हिंदी दिवस पर उदयशंकर भट्ट की एकांकी 'बीमार का इलाज' का मंचन हुआ।

6.7.2 पद्मश्री शेखर सेन के एक पात्रीय हिंदी नाटक :-

हाल ही में, सबके 'दादा' शेखर सेन को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री प्रदान की गई। हिंदी के एक पात्रीय नाटकों के मंचन में श्री शेखर सेन जी का नाम सर्वोपरि है। 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में इसका प्रत्यक्ष रूप देखने का सौभाग्य सभी प्रतिभागियों को प्राप्त हुआ। इन्होंने पूरे विश्व में कबीर, सूरदास, तुलसीदास तथा विवाकानंद जैसे महानुभावों के जीवन पर प्रत्येक 500 से भी अधिक नाटकों का मंचन किया है। वे इन नाटिकाओं के अभिनेता एवं गायक भी हैं।

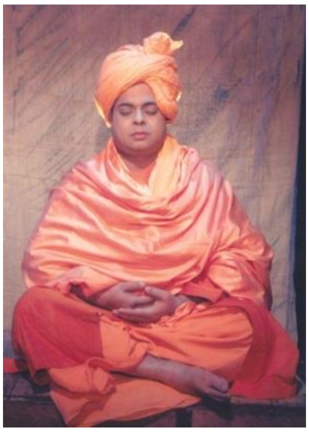

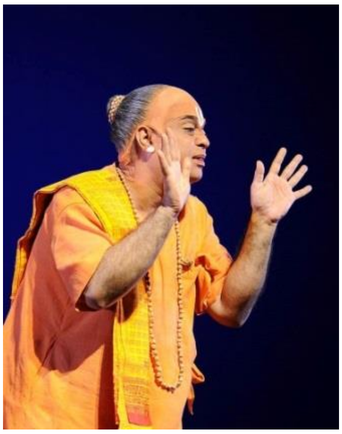

6.7.3 हिंदी रायटर्स गिल्ड, टोरंटो, कैनडा द्वारा प्रस्तुत विभिन्न नाटक :-

अँधा युग 2010 -

पसंद अपनी अपनी 2011 -

रश्मिरथी 2012 -

मित्रो मरजानी 2013 -

संत सूरदास 2014 -

संत जनाबाई 2014 -

6.7.4 नटराज नाट्यारण्य ड्रामा एंड आर्ट क्लब नौवा, फिजी :-

नटराज नाट्यारण्य ड्रामा एंड आर्ट क्लब नौवा, फिजी प्रतिवर्ष रामलीला का आयोजन करती है।

निष्कर्ष :-

हिंदी भाषा के प्रसार के साथ-साथ हिंदी के संदर्भ में विविध गतिविधियाँ धीरे-धीरे बढ़ती गईं। वर्तमान युग तक आते-आते उसका स्वरूप व्यापक एवं सर्व स्पर्शी हो गया। सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी की शिक्षा लाभप्रद हो रही है। विश्व हिंदी दिवस का आयोजन भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। भारत देश एवं अन्य देशों में इसके आयोजन की धूम एवं उत्साह दर्शनीय है। इससे हिंदी भाषा की लोक प्रियता का सबूत मिलता है। इन अन्यान्य गतिविधियों में विश्व भर में प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्रवासी पत्रकारिता इस संदर्भ में मील का पत्थर है। हिंदी के प्रसार में हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के निर्माण का आरंभ, स्वर्गीय महीयसी महादेवी वर्मा जैसी रचनाकारों के जीवनपर फिल्मांकन हो रहा है। हिंदी की पाठशालाएँ विविध देशों में हिंदी शिक्षण का आरंभ कर चुकी हैं। कुछ एक देशों में वर्तमान में हिंदी नाटकों का मंचन हो रहा है। सारांशतः हिंदी भाषा के संदर्भ में वर्तमान स्थिति में अनगिनत गतिविधियाँ संपन्न हो रहीं हैं।

संदर्भ संकेत

1. **विश्व हिंदी समाचार**, मार्च 2015, पृष्ठ क्र. 8

उपसंहार

पूर्ववर्ती अध्यायों में, हिंदी के वैश्विक परिदृश्य का विस्तार से समग्र अध्ययन किया गया है। इस शोध-प्रबंध के अंतर्गत हिंदी की विश्वस्तर पर स्थिति को जानने के लिए तत्त्वगत अध्ययन किया गया है जिसमें हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्वरूप, हिंदी शिक्षण, हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ, मीडिया आदि को विस्तृत रूप से विवेचित एवं विश्लेषित किया है। अतः इस अध्ययन के पश्चात कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य, मुद्दे तथा निष्कर्ष सामने आते हैं, जो निम्नतः हैं -

14 सितंबर 1949 को संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला तभी से 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने की परंपरा चल निकली। आज हिंदी का स्वरूप काफी व्यापक हो चला है। साहित्य, फिल्म, कला, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, संचार, बाज़ार, हिंदी शिक्षण सभी क्षेत्रों में हिंदी ने अपनी महत्ता कायम की है। भारत की प्रगति और विकास से संसार के सारे देश अभिभूत हैं। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के जमाने में विदेशियों में हिंदी का महत्त्व बढ रहा है। भारत की प्रगतिशील अर्थव्यवस्था ने विश्व में हिंदी का आकर्षण बढाया है।

विदेशों में हिंदी शिक्षण पर अधिक बल दिया जा रहा है तथा प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। हिंदी भाषा के विकास में हिंदी सिनेमा का विशेष योगदान है। हिंदी सिनेमा को ठीक से समझने के लिए कई विदेशी हिंदी में अध्ययन करते हैं। हिंदी अध्यापन के लिए भी, सिनेमा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाता है तथा कई विदेशी ऐसे हैं जिन्होंने हिंदी सिनेमा देखकर हिंदी सीखी है। कुछ लोग भारतीय संस्कृति को करीब से जानने के लिए हिंदी

सीखते हैं, कुछ व्यापारिक आवश्यकताओं के कारण और कुछ ऐसे भी हैं जिनका भाषाओं के प्रति लगाव उन्हें हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करता है।

बदलती दुनिया में हिंदी की प्रासंगिकता और उपयोगिता ने हिंदी में अनुवाद कार्य का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके चलते हिंदी, बाजार और रोजगार से जुड़ी है। वर्तमान में हिंदी रोजगारपरक होती जा रही है। पूँजीवाद के इस दौर में बाजार के लिए हिंदी अनिवार्य बन गई है। हिंदी, अपनी भाषिक क्षमता के कारण विश्वभाषा बनने के लिए अग्रसर है। भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के साथ-साथ अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। हिंदी की यह स्थिति हिंदी भाषी और हिंदी समाज की देन है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, तथा भारत के पुनर्जागरण में, हिंदी को सांस्कृतिक एकता की कड़ी माना गया था और वर्तमान में भी हिंदी पूरे विश्व के देशों की एक सांस्कृतिक कड़ी बन कर उभर रही है।

विषय की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न देशों को आधार न बनाकर यहाँ शोधकर्ता ने व्यापकतर क्षेत्र, उदाहरणार्थ गिरमिटिया देश, एशिया, अमेरिका, स्कैंडिनेविया, खाड़ी देशों के आधार पर वर्गीकरण किया है।

सारांश यह है कि इस अध्ययन द्वारा, विदेशों में हिंदी की स्थिति जानने के लिए अनुशीलन कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व में हिंदी तीव्र गति से अग्रसर है और विश्व भाषा बनने जा रही है, ऐसी स्थिति में हिंदी का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल प्रतीत होता है।

प्रस्तुत अनुसंधान

अध्याय एक - हिंदी भाषा का परिचय एवं उसका विकास :-

पहले अध्याय में हिंदी भाषा का परिचय कराते हुए, हिंदी की विशेषताएँ, शक्ति, उसका सामर्थ्य, भारत में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया, पत्रकारिता, हिंदी एक राजभाषा तथा संपर्क भाषा इन सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। विदेशों में हिंदी भाषा की स्थिति का विवरण देने से पहले, भारत में प्रयुक्त हिंदी भाषा पर प्रकाश डाला है।

अध्याय दो - विदेशों में हिंदी (गिरमिटिया देश एवं एशिया के संदर्भ में) :-

दूसरे अध्याय में विदेशों में हिंदी की स्थिति पर नज़र डाली है। इस अध्याय में, शोध की सुविधा के लिए चयनीत देशों को दो भागों में विभाजित किया है। पहला भाग है गिरमिटिया प्रवासी देशों का यानि मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, गयाना, सूरीनाम, जमैका, रोड्रिग्स, रीयूनियन द्वीप आदि। ये वे देश हैं जहाँ, एक एग्रीमेंट या एक करार के अंतर्गत, लगभग 150-180 वर्ष पूर्व भारतीय मजदूर गए थे। गिरमिट शब्द एग्रीमेंट शब्द का अपभ्रंश है और उन मजदूरों को गिरमिटिया कहकर पुकारा जाता था। हर विषमताओं का सामना करते हुए उन्होंने अपनी संस्कृति, धर्म और भाषा को इतने दशकों से संजोए रखा फलस्वरूप आज इन्हीं देशों में हिंदी भाषा का सबसे अधिक विकास एवं वैश्विक प्रचार-प्रसार हुआ है। इस अध्याय में उन देशों में हिंदी के इतिहास, वर्तमान स्थिति, हिंदी शिक्षण, हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्थाएँ आदि जानकारी को संकलित किया गया है। दूसरा भाग है एशिया जिसमें पाकिस्तान, नेपाल, जापान, चीन, दक्षिण कोरिया, रूस, श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया, भूटान, सिंगापूर, थाइलैंड आदि हैं। ये वे देश हैं जहाँ भारतवंशी किन्हीं कारणों से

विदेश में कुछ काल के लिए या फिर सदैव के लिए बस तो गए हैं लेकिन उनका भारत और भारत की भाषा हिंदी से सम्पर्क बना हुआ है। जापान, कोरिया, चीन, श्रीलंका ऐसे देश हैं जहाँ हिंदी का बहुत अधिक अध्ययन हो रहा है। जापान में दुनिया का सबसे बड़ा एवं बृहद हिंदी का पुस्तकालय है। इस अध्याय में इन देशों में हिंदी के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्वरूप, हिंदी संस्थाओं, हिंदी शिक्षण, प्रकाशन आदि का विवरण दिया है।

अध्याय तीन - विदेशों में हिंदी (अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों के संदर्भ में) :-

तीसरे अध्याय में नव प्रवासी देश यानि अमेरिका, यू. के., ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, कनाडा, यूरोप, स्कैंडीनेवियन देश तथा खाड़ी देशों पर प्रकाश डाला गया है। ये वे देश हैं जहाँ भारत का शिक्षित वर्ग, शिक्षण या रोजी-रोटी के लिए जा बसा है या फिर व्यवसाय के लिए कई दशकों से जा बसा है। यहाँ के भारतवंशी, भारतीय संस्कृति से जुड़े रहने के लिए कई संघर्षों का सामना करते आएँ हैं क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनकी आने वाली पीढ़ी अपनी भारतीय संस्कृति एवं भाषा से वंचित रहे। इनका मानना है कि भाषा गई तो संस्कृति गई और संस्कृति गई तो मानव का कोई अस्तित्त्व नहीं रह जाता। खाड़ी के देश ऐसे हैं जहाँ शिक्षित एवं अल्प शिक्षित भारतवंशी कामकाज के लिए गए हुए हैं। यहाँ हिंदी केवल भारतवंशियों की ही नहीं बल्कि एशिया खंड से आए सभी नागरिकों की बोलचाल एवं भाईचारे की भाषा है। इन्हीं के बच्चे यहाँ के इंडियन स्कूल में पढ़ते हैं जहाँ हिंदी भाषा शिक्षण अनिवार्य है। यहाँ रेडियो एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है हिंदी के प्रचार-प्रसार का और सभी देशों के नागरिक इसे बड़ी चाव से सुनते हैं। इस अध्याय में, हिंदी के इतिहास एवं हिंदी की संस्थाओं के संघर्ष, हिंदी शिक्षण, हिंदी मीडिया आदि की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत है।

अध्याय चार - हिंदी के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में संलग्न संस्थाएँ :-

चौथे अध्याय में लगभग उन सभी प्रमुख भारतीय एवं विदेशी संस्थाओं का उल्लेख किया गया है जोकि हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार में निरंतर प्रयत्नशील एवं समर्पित हैं। इस अध्याय में उन संस्थाओं के उद्देश्य, कार्य, कार्यक्षेत्र, लक्ष्य, प्रकाशन, सम्मान आदि का विवरण दिया गया है ताकि हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार में संलग्न इन संस्थाओं का बहुमूल्य योगदान स्पष्ट हो। इन देशों के समक्ष हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं हिंदी शिक्षण में कई समस्याएँ आती हैं। कुछ समस्याओं का समाधान वे स्वयं कर हिंदी की सेवा में लगे हुए हैं और कुछ समस्याएँ जो कि जटिल या उनके दायरे के बाहर हैं, उनके लिए वे भारत सरकार से सहायता लेते हैं। भारत सरकार काफी हद तक इन समस्याओं का समाधान करती है किंतु विश्व के इतने सारे देशों की समस्याओं का समाधान अकेली भारत सरकार के बस की बात नहीं है। अतः इन सभी देशों को चाहिए कि वे अपने देश की सरकार, सरकारी हिंदी सेवी संस्थाएँ तथा स्वयं सेवी हिंदी संस्थाओं से भी सहायता लें और हिंदी के निरंतर प्रचार-प्रसार में लगे रहें।

गयाना के पूर्व राष्ट्रपति की पत्नी एवं गयाना हिंदी प्रचासभा की अध्यक्षा सुश्री वर्षिनी के अथक प्रयासों का ही यह फल है कि मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गाँधी संस्थान एवं हिंदी प्रेमियों का एक स्वयं सेवी ग्रुप मिलकर गयाना के लिए हिंदी का पाठ्यक्रम बनाने वाले हैं।

अध्याय पाँच - विश्व हिंदी सम्मेलनों का परिचय :-

पाँचवां अध्याय विश्व हिंदी सम्मेलन को समर्पित है। अब तक नौ विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं और दसवां सम्मेलन, सितंबर 2015 में होने जा रहा है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में विश्व हिंदी सम्मेलनों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। विश्व के हर कोने से हिंदी प्रेमी इस सम्मेलन में सहभागी होते हैं तथा हिंदी की वैश्विक

स्थिति, विकास, अध्ययन-अध्यापन एवं साहित्य पर विचार विमर्श करते हैं। हिंदी के अधिकाधिक विकास पर जोर दिया जाता है।

अध्याय छः - हिंदी की वर्तमान गतिविधियाँ :-

(क) छठे अध्याय में पूरे विश्व में हिंदी की वर्तमान गतिविधियों का वर्णन किया है। हिंदी के क्षेत्र में पूरे विश्व में कौन-कौन से नए कदम उठाए जा रहे हैं तथा हिंदी भाषा के विकास से संबंधित नई खबरें, विभिन्न देशों में आयोजित विश्व हिंदी दिवस और नाटकों के मंचन का विवरण छठे अध्याय में दिया गया है।

उपलब्धियाँ

'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य' इस विषय पर शोध करने के पश्चात् कई उपलब्धियाँ सामने आती हैं। सार रूप से प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नांकित हैं -

(क) इस शोध प्रबंध द्वारा विश्व के सभी देशों में हिंदी की संपूर्ण जानकारी एक ही जगह, पहली बार हिंदी पाठकों के सामने प्रस्तुत हो रही है।

(ख) विश्व के कई देशों में जाकर यह सामग्री एकत्रित की गई है। मॉरीशस के विश्व हिंदी सचिवालय जाकर वहाँ से जानकारी हासिल की है जहाँ पूरे विश्व के देश हिंदी से संबंधित अपने देश की जानकारी यहीं दर्ज करते हैं। यही कारण है कि लगभग सटीक सामग्री मिल पाई है।

(ग) यह शोध कार्य एक संदर्भ ग्रंथ के रूप में मार्गदर्शक साबित हो सकता है।

(घ) इस प्रबंध द्वारा विदेशों में हिंदी शिक्षण के लिए हिंदी सिनेमा की भूमिका, पर जानकारी उपस्थित करने का प्रयास किया है।

(ङ) अंतरजाल पर उपलब्ध पत्र-पत्रिकाएँ, हिंदी की वर्तमान गतिविधियों तथा समाचारों की एकत्रित सूचनात्मक जानकारी प्रस्तुत की है।

(च) विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के सहयोग से शोधकर्ता ने यथासंभव, सत्य एवं प्रासंगिक सामग्री प्राप्त की है।

(छ) सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के संदर्भ में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, उसका यथासंभव व प्रामाणिक ब्यौरा रेखांकित है।

(ज) शोधकर्ता को विश्व के विविध देश एवं हिंदी के संदर्भ में ही कार्यरत संस्थाओं तथा साहित्यकारों से मिलकर साक्षात्कार करने का अवसर मिला तथा उन सभी प्राप्त जानकारियों को इस शोध-प्रबंध द्वारा प्रस्तुत किया है।

(झ) हिंदी की आरंभिक कुछ दुर्लभ हस्तलिखित पत्रिकाएँ तथा पुस्तकों के मौलिक रूप को देखने का सुअवसर मिला।

इस शोध प्रबंध के समग्र अध्ययन के आरंभ से अंत तक शोधकर्ता को विविध विदेशी संस्थानों, विद्वानों तथा जनसंपर्क से प्राप्त अनुभवों के सार रूप में हिंदी के वैश्विक रूप के ही विराट दर्शन हुए।

आधुनिक प्रासंगिकता

(क) भारत आज एक सशक्त विश्वशक्ति के रूप में उभर रहा है। अतः विश्व के सशक्त देश, हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

(ख) वर्तमान भारतीय सरकार की 'भारत में बनाओ' या 'मेक इन इंडिया' नीति के फलस्वरूप भारतीयों से बहतर साझे एवं संपर्क स्थापित करने के लिए विदेशी, हिंदी सीख रहे हैं।

(ग) भाषायी कूटनीति के अंतर्गत आजकल सभी महान देशों के नेता अच्छे संबंध बनाने के लिए भारत यात्रा के दौरान हिंदी में वार्तालाप करने का प्रयत्न करते हैं।

(घ) वर्तमान में वेब पर हिंदी की अधिक से अधिक सामग्री प्राप्त हो रही है। और इसकी गति बढती ही जा रही है।

(ङ) दक्षिण एशियाई उपभोक्ता बाजार में भारत के तीव्र गति से बढ़ते कदम हिंदी का महत्त्व निरंतर बढ़ा रहे हैं।

(च) वर्तमान में भारतीय सिनेमा और टेलीविजन में हिंदी आधुनिक मीडिया की एक प्रमुख भाषा बन गई है।

(छ) विश्व में आधुनिक मीडिया एवं हिंदी सिनेमा के माध्यम से भी हिंदी अध्यापन हो रहा है।

आजकल के आधुनिक युगीन मोबाइल फ़ोन एवं कम्प्यूटरों में हिंदी उपलब्ध है।

भावी शोध की संभावनाएँ

वस्तुतः विश्व में कई हिंदी साहित्यकार हैं उनके जीवन, साहित्य पर कई अनुसंधान हो सकते हैं। एक ही रचनाकार पर विभिन्न दृष्टिकोणों से अनुसंधान किया जा सकता है। विश्व साहित्य का कई भाषाओं से हिंदी में तथा हिंदी साहित्य का विश्व की अन्य भाषाओं में अनुवाद कार्य हुआ है और इसकी न तो सम्पूर्ण सूची कहीं उपलब्ध है और न ही इन अनुवाद साहित्य पर अनुसंधान हुए हैं। विश्व की पत्रकारिता बहुत ही समृद्ध है उस पर भी शोध होना आवश्यक है। हिंदी के प्रचार में संलग्न कई संस्थाएँ है जो हिंदी के लिए स्वेच्छा से कार्य कर रही हैं उन पर बहुत अच्छा अनुसंधान कार्य हो सकता है। कई देश हैं जहाँ हिंदी में बहुत काम हो रहा है इन देशों पर अनुसंधान हो सकते हैं।

(क) अमेरिका में हिंदी साहित्य

(ख) मॉरीशस में हिंदी साहित्य

(ग) नवप्रवासी देशों का हिंदी साहित्य - विविध आयाम

(घ) प्रवासी देशों का हिंदी साहित्य - स्वरूप एवं विशेषताएँ

(ङ) एशिया तथा खाड़ी देशों में हिंदी

(च) गिरमिटिया देशों में हिंदी की अस्मिता

(छ) विश्व की पत्रकारिता

(ज) विश्व की हिंदी सेवी संस्थाएँ

(झ) विश्व के देशों का हिंदी अनुवाद

(ञ) सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिंदी

(ट) हिंदी और अंतरजाल - हिंदी के तीव्रता से बढ़ते कदम

(ठ) विश्व के विदेशी हिंदी विद्वान - व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

(ड) विश्व में हिंदी मीडिया

(ढ) मॉरीशस में हिंदी - एक अनुशीलन

(ण) फिजी में हिंदी - एक अनुशीलन

(त) गिरमिटिया देशों की हिंदी - भारतीय संस्कृति के विशेष संदर्भ में

वस्तुतः हर शोध विषय की अपनी एक सीमा होती है। यह शोध-कार्य भी अपनी सीमा में संपन्न हुआ है। वास्तव में अध्ययन क्रम में ऊपर निर्दिष्ट विषय उभर कर आए हैं। अपनी विषय-सीमा में शोधकर्ता ने उपर्युक्त विषयों को लेकर यथासंभव चर्चा अवश्य की है किंतु ये विषय स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग करते हैं। आशा है आने वाले समय में उपर्युक्त विषयों पर शोधार्थी स्वतंत्र रूप से शोध कार्य करेंगे।

अब तक संपन्न कार्य

अनन्य विश्वविद्यालयों की पीएच.डी. विषय की तालिका अनेक प्रयासों के उपरांत भी प्राप्त नहीं हो सकी। मेरी जानकारी में इस प्रकार का काम अन्यत्र नहीं हुआ है। कुछ हिंदी की प्रयोजन मुलकता पर कार्य हुआ है किंतु वैश्विक परिदृश्य पर अब तक कोई अनुसंधान नहीं हुआ है।

शोध द्वारा समाज को लाभ

(क) विदेशों में हिंदी की वर्तमान तथा वास्तविक स्थिति पर विस्तृत जानकारी एक ही जगह एकत्रित रूप में प्राप्त होगी।

(ख) इतनी साड़ी जानकारी एक ही जगह प्राप्त होने से अध्येता शोध के लिए प्रेरित होंगे।

(ग) हिंदी के बारे में सच सामने आएगा। हिंदी को लेकर जो भी गलत धारणाएँ हैं, जैसे हिंदी के प्रति निराशा का प्रचार, वे दूर होंगी।

नए अनुसंधान कर्ताओं के लिए विश्व में हिंदी के अन्य आयामों के बारे में कुछ करने या जानने की जिज्ञासा होगी।

समग्र निष्कर्ष

इस शोध प्रबंध में हिंदी भाषा के विकास की, भारत से लेकर विश्व तक की यात्रा का दर्शन हुआ है। विश्व के उन सभी देशों में हिंदी की स्थिति पर विचार किया गया है जहाँ पर हिंदी भाषा का अस्तित्त्व है। विश्व के इन देशों में हिंदी के इतिहास से लेकर उसके वर्तमान एवं भविष्य पर दृष्टिक्षेप किया है। हिंदी के विकास में हिंदी शिक्षण का महत्त्व बताते हुए इस दिशा में उठाए गए कदमों पर दृष्टि डाली है। मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों के लोग जो भारतीय गिरमिटिया प्रवासियों की वे संतानें हैं जो चार-पाँच पीढ़ियों बाद अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अपने भाषा-संस्कृति-प्रेम मात्र के बल पर अपने देश में हिंदी को आगे बढाने के लिए संपूर्ण जीवन न्यौच्छावर कर बैठे हैं। इस भावना से बंधे हृदय विश्व स्तर पर हिंदी के पक्ष में किए जा रहे प्रत्येक कार्य को असीम आस्था से देखते हैं। वही आस्था पाई जाती है अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया आदि उन नए प्रवासियों के बीच जिनमें देश से दूर देश को जीवित रखने के लिए भाषा की अनिवार्यता की समझ देखी है। यह इनके विश्वास का ही फल है कि आज हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप एक विस्तृत अभियान का रूप धारण करता जा रहा है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में कई हिंदी भाषाविद एवं हिंदी की संस्थाएँ निरंतर प्रयत्नशील हैं इनके अनंत प्रयासों को इस शोध-प्रबंध द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अंत में हिंदी के समकक्ष हो रही अनेकानेक गतिविधियों पर प्रकाश डाला है ताकि पूरे विश्व में हिंदी के तीव्र गति से बढ़ते क़दम सबके सामने प्रस्तुत हों।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

क्र.सं. पुस्तक संपादक/लेखक प्रकाशन प्रकाशन वर्ष

(i) **चेतना का आत्मसंघर्ष - हिंदी की इक्कीसवीं सदी**, श्री कन्हैयालाल नन्दन, 2007

(ii) **जनसंचार एवं पत्रकरिता**, डॉ. नदाफ रेशमा, 2010

(iii) **टेलिविज़न की कहानी**, डॉ. कश्यप श्याम-कुमार मुकेश, 2008

(iv) **ट्रिनिडाड के आमने सामने**, डॉ. जगासिंह बीरसेन, 1997

(v) **पहला गिरमिटिया**, किशोर गिरिराज, 2011

(vi) **प्रवासी भारतीयों की हिंदी सेवा**, श्रीमती कैलाश कुमारी सहाय

(vii) **प्रवासी संसार**, संपादक श्री राकेश पांडेय, विश्व हिंदी सम्मेलन विशेषांक, 2007

(viii) **फिजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य**, वर्मा विमलेश कांति, 2012

(ix) **ब्रिटेन में हिंदी**, श्रीमती उषा राजे सक्सेना, 2005

(x) **भारतेंदु-युग और हिंदी भाषा की विकास-परंपरा**, शर्मा रामविलास, 2010

(xi) **भाषा और प्रौद्योगिकी**, डॉ. प्रसाद विनोद कुमार, द्वि.सं. 2008

(xii) **भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ - विश्व हिंदी सम्मेलन ग्रन्थ**, कालिया रविन्द्र, हिंदी अनुभाग, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, 2012

(xiii) **भाषा, भाषा विज्ञान और राजभाषा हिंदी**, दुबे महेंद्रनाथ, कु. डॉ. दुबे मीनाक्षी, 2010

(xiv) **भाषा - चिंतन के नए आयाम**, डॉ. शर्मा रामकिशोर, 2006

(xv) **भाषाविज्ञान की भूमिका**, शर्मा देवेन्द्रनाथ-शर्मा दीप्ती, पाँचवीं आवृत्ति 2012

(xvi) **मीडिया कालीन हिंदी - स्वरूप एवं संभावनाएँ**, डॉ. चव्हाण अर्जुन, 2005

(xvii) **मॉरीशस का इतिहास**, वर्मा मुनीन्द्र नाथ. 1984

(xviii) **विदेशों में हिंदी पत्रकारिता**, डॉ. पवन कुमार जैन, 1993

(xix) **विश्व मंच पर हिंदी-नए आयाम**, डॉ. गंभीर सुरेन्द्र; डॉ. बेदी सुषम; डॉ. संधीर अंजना; डॉ. जयराजन पी., विदेश मंत्रालय - भारत सरकार, भारतीय विद्याभवन, यू.एस.ए., 2007

(xx) **विश्व हिंदी पत्रिका**, विश्व हिंदी सचिवालय, 2009

(xxi) **विश्व हिंदी पत्रिका**, विश्व हिंदी सचिवालय, 2010

(xxii) **विश्व हिंदी रचना,** भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, 2003

(xxiii) **सरल हिंदी व्याकरण एवं रचना**, सिंह रूबी-ऋचा, आई.एस.बी.एन.-978-93-80679-55-6

(xxiv) **स्मारिका, सातवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन**, सूरीनाम, 2003

(xxv) **हिंदी का विश्व संदर्भ**, उपाध्याय करुणाशंकर, 2010

(xxvi) **हिंदी भाषा का वृहत ऐतिहासिक व्याकरण**, द्विवेदी हजारीप्रसाद, 2011

(xxvii) **हिंदी भाषा के अध्येता**, भाटिया कैलाशचंद्र, 2010

(xxviii) **हिंदी भाषा**, द्विवेदी महावीर प्रसाद, 2004

(xxix) **हिंदी भाषा - इतिहास और स्वरूप**, डॉ. शर्मा राजमणि, 1998

(xxx) **हिंदी व्याकरण रचना**, दाभोलकर मधुसुदन, गुरुकुल प्रतिष्ठान-पुणे, द्वितीय संस्करण अक्तूबर 2009

(xxxi) **हिंदी की विश्व यात्रा**, प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण, 2005

(xxxii) **A history of Indians in Guyana**, Nath Dwarka, Second Revised Edition, 1970

पत्र-पत्रिकाएँ :-

(क) **गगनांचल - विश्व हिंदी सम्मेलन विशेष विशेषांक**, 9वां विश्व हिंदी सम्मेलन, 22 से 24 सितंबर, 2012, जोहान्सबर्ग, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, वर्ष 35, अंक 4-5 (संयुक्तांक), जुलाई-अक्तूबर, 2012

(ख) **विश्व हिंदी पत्रिका 2009** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

(ग) **विश्व हिंदी पत्रिका 2010** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

(घ) **विश्व हिंदी पत्रिका 2011** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

(ङ) **विश्व हिंदी पत्रिका 2012** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

(च) **विश्व हिंदी पत्रिका 2013** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

(छ) **विश्व हिंदी पत्रिका 2014** - विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस

शब्दकोश :-

क्र.सं. कोश ग्रंथकार प्रकाशन प्रकाशन वर्ष

(i) **नालन्दा विशाल शब्द सागर**, नवल, आदीश बुक डिपो, संस्करण, 2013

(ii) **बृहत हिंदी कोश**, प्रसाद कालिदास, ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस - 1 द्वि. सं. संवत, 2013

(iii) **राजपाल अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश**, डॉ. बाहरी हरदेव, 2010

(iv) **राजपाल हिंदी शब्दकोश**, डॉ. बाहरी हरदेव, 2010